निकोलाई ओस्त्रोव्स्की

जय जीवन!

लेख
भाषण
पत्र

अनुवादक: भीष्म साहनी
चित्रकार: सेर्योगिन

दूसरा संस्करण

Николай Островский
ДА ЗДРАВСТВУЕТ ЖИЗНЬ!
На языке хинди

प्राक्कथन

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की

कितनी उज्ज्वल कीर्ति है जिसे लेखक निकोलाई ओस्त्रोव्स्की अपने पीछे छोड़ गया है। आज उसके उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' का तरुण नायक, काली काली आंखोंवाला पावेल कोर्चागिन, संसार भर के, हर देश और जाति के सहस्रों स्त्री-पुरुषों और बच्चों के लिए जीवन भर का साथी बन गया है, ऐसा साथी जो अपने दृढ़-संकल्प और साहस से, अपने अदम्य जीवन-प्रेम से, कठिनाइयों से जूझनेवाली अपनी दृढ़ता से, एक मिसाल क़ायम कर उन्हे अनुप्राणित करता रहता है।

ओस्त्रोव्स्की ने एक जगह लिखा है: "वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली है जिसकी रचनाएं उसकी मृत्यु के बाद भी मानव-जाति की सेवा करती रहती हैं।" जैसा उसका जीवन था और जो काम उसने कर दिखाया, उससे स्वयं ही उसकी वह कामना पूरी हो गयी।

क्षण भर के लिए कल्पना कीजिये कि समय ने अपने पन्ने पीछे की ओर उलट दिये हैं—कि ओस्त्रोव्स्की अभी जीवित है। १९३५ का वर्ष और दिसम्बर का महीना। 'अग्नि-दीक्षा' छप चुकी है और सोवियत जनता ने अपने एक योग्य और देशभक्त पुत्र के निःस्वार्थ श्रम की सराहना की है। ओस्त्रोव्स्की को लेनिन पदक से विभूषित किया गया है। और अब वह सोची से मास्को आया है ताकि अपनी दूसरी किताब 'तूफान के जाये' पर अपना काम जारी रख सके। आप ४०, गोर्की स्ट्रीट में उसके कमरों में उससे मिलने जाते हैं।

बड़ी आशा और उत्साह से आप चौड़ी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए दूसरी मंजिल पर पहुंचते हैं, फिर ड्योढ़ी लांघकर घण्टी बजाते हैं।

दरवाजा खुलता है। इसके बाद एक और दरवाजा खुलता है और आप अपने को उसके कमरे मे खड़ा पाते है।

वह सामने लेटा हुआ है – एक कृशकाय व्यक्ति, कमर तक कम्बल ओढ़े हुए। उसका क्षीण किन्तु अनुभूतिशील चेहरा – एक चिन्तनशील तथा एकाग्र मानसिक प्रयास करनेवाले व्यक्ति का चेहरा – किसी अन्तःप्रेरणा से चमक रहा है। उसके चेहरे पर उसके आन्तरिक विचार, अपनी प्रत्येक गतिविधि और परिवर्तन मे उसी तरह झलक रहे हैं जैसे शीशे में प्रतिबिम्ब। ऊंचा, उन्नत ललाट, दाहिनी भौंह के ऊपर एक छोटा-सा गड्ढा, कई बरस पहले के एक ज़ख्म का निशान। गहरी धंसी हुई आंखें बिल्कुल खुली हैं, मानो अब भी देख रही हों। वह ख़ाकी रंग का फ़ौजी कोट पहने हुए है। लेनिन पदक छाती पर चमक रहा है।

कमरे में कुछ कुछ अंधेरा है, बड़ी खिड़की पर मोटे मोटे पर्दे टंगे हुए हैं ताकि सड़क पर की आवाजें अन्दर न आ सके।

बायी ओर दीवार पर, पलंग के ऊपर, लेनिन की तसवीर टंगी है, दायी ओर कोने मे एक मेज है। कमरे मे एक चमड़े का सोफा है, पियानो, किताबों की अलमारी, तथा हैनरी बारबूस की मूर्त्ति।

पर अब आपके पास इधर-उधर देखने का वक़्त नहीं है। आपका मेजबान, जिसे आपके बारे में पहले से बतला दिया गया है, आपसे बातें करने लगा है। उसकी आवाज में यौवन का ओज है। वह आपको अपने पास बैठने को कहता है, और बड़ी कठिनाई से केवल अपने बायें हाथ की हथेली हिला पाता है। अब उसके शरीर के सभी अवयवो मे से केवल हाथों मे ही कुछ थोड़ी गति रह गयी है। अभिवादन में वह आपका हाथ दबाता है, और जितनी देर तक आप उसके पास रहेंगे, वह सारा वक़्त आपका हाथ अपने हाथ में लिये रहेगा।

आप सोचते है कि शायद आपके हाथ को इस तरह पकड़ने से और अपनी चेतन उंगलियों द्वारा उसे दबाते रहने से, उसकी मानसिक दृष्टि के आगे आपका चेहरा स्पष्ट हो रहा है और वह समझ रहा है कि किस ढंग का आदमी उससे मिलने आया है।

"जब मैं आपका हाथ अपने हाथ में लेता हूं," वह कहता है, मानो आपके अनुमान की पुष्टि कर रहा हो, "तो मैं आपकी बात को

ज्यादा अच्छी तरह समझ पाता हूं, आप मेरे सामने अधिक सजीव हो उठते हैं। इससे मुझे बड़ी सहायता मिलती है।"

जब वार्तालाप बढ़ निकलता है तो आप भूलने लगते हैं कि जो आदमी आपके सामने लेटा हुआ है वह अन्धा भी है और रोगग्रस्त भी।

"जो प्रभाव मुझपर ओस्त्रोव्स्की के व्यक्तित्व का पड़ा," उसके एक मित्र माते जाल्का ने लिखा है, "उसमें परस्परविरोधी बातें मिलती हैं, परन्तु मुख्यतया मैं उससे मिलकर प्रोत्साहित और प्रसन्न हुआ। ये सब बातें कि वह सीधा पीठ के बल लेटा है, खाट के साथ जुड़ा हुआ है, अन्धा है इत्यादि—ये केवल बाहर की बातें रह जाती हैं। भीतरी सत्य यह है कि उसमें बल है, साहस है, वह एक वीर योद्धा है। उसमें अब भी लाल फ़ौज के एक सिपाही की आन है। वह समझता है कि वह अब भी सेना की पंक्ति में आगे बढ रहा है। और वह निःसन्देह सेना की पंक्ति में है, सबसे आगे। उसकी शारीरिक स्थिति बिल्कुल गौण, प्रासंगिक-सी बात मालूम होती है: इसके कारण उसे दुःख है, पर वह स्थायी नहीं, अजेय नहीं, किसी तरह भी निर्णायक नहीं।"

यह बिल्कुल सच है! उसके पास बैठते हुए, उसकी उत्साह भरी बातों को सुनते हुए, उसके विचारों की तीव्र उत्कंठित उड़ान को अनुभव करते हुए, आप भूल जाते हैं कि आप एक बीमार के पास बैठे हैं। "जब मैं अपनी आंखें बन्द करता हूं..." वह कहता है—और आपको यह ख्याल तक नहीं रहता कि उसकी आंखें पिछले कई बरसों से अन्धी हैं। वह अपने "नजले" का जिक्र करता है—और आप समझते हैं कि उसे केवल जुकाम की तकलीफ है। वह कहता है—"मैं पढता हूं," "मैं लिखता हूं," "मैं जाने की सोच रहा हूं," "मुझे अभिलेख-संग्रहालय में इसकी खोज करनी होगी," "मैं कांग्रेस में बोलने के लिए अपना भाषण तैयार कर रहा हूं"। आंखों से अन्धा है पर उसकी नजर कई आंखोंवालों की नजर से तेज है। सारा वक़्त बदन में दर्द रहता है, बीमारी ऐसी है जिसका कोई इलाज नहीं—तिसपर भी उससे इतना ओज और मानवप्रेम विकीर्ण होता है, कि आपका मन गर्व से भर उठता है। अनुकम्पा से नहीं, कदापि नहीं! और आप अपने प्रमाद का ख़याल करके लज्जा से गड़ जाते हैं कि किस तरह कई काम जो आज या कल या परसों किये जा सकते थे अधूरे पड़े रह गये।

"बीमारी इनसान का सबसे बड़ा शत्रु नही," वह कह रहा है, "नेत्रहीन होना बहुत भयानक है, पर इसपर भी काबू पाया जा सकता है। पर एक चीज है जो सबसे अधिक भयानक है: वह है सुस्ती। केवल सुस्ती। जब मनुष्य के दिल मे काम करने का शौक नही, आन्तरिक आग्रह नही, जब रात को सोते वक़्त वह इस प्रश्न का उत्तर नही दे सकता. 'आज के दिन मैंने कौनसा काम पूरा किया?' तो यह बहुत ही. चिन्ताजनक स्थिति है। खतरा इसी में है। उस समय चाहिए कि उसके मित्र उसे मिलकर समझायें और उसके बचाव के साधन ढूंढें–क्योंकि उसपर विपत्ति आनेवाली है। इसके विपरीत, यदि मनुष्य काम के प्रति अपना उत्साह बनाये रखे, और काम करता जाय, तो कुछ भी हो, रुकावटो और कठिनाइयो के बावजूद, वह मनुष्य एक सामान्य क्रियाशील प्राणी बना रहता है। उसके बारे मे कोई चिन्ता नहीं होती।"

वह कहे जा रहा है, और धीरे धीरे अधिकाधिक खुलने लगता है:

"मैं तुम्हें भेद की बात बताऊं: मनुष्य कई बार बड़ा तुच्छ और विनाशी जीव हो उठता है। वही आदमी वास्तव में मनुष्य कहा जा सकता है जिसके सामने कोई ऊंचा आदर्श हो, जीवन का कोई ध्येय हो। तब उसका जीवन एकांगी नही रहता–तब वह पेट के लिए या मेदे के लिए या शरीर के किसी अंग-विशेष के लिए नही जीता। उसके जीवन मे एक पूर्णता आने लगती है। और इसी से मनुष्य और अन्य जीवों के भेद का पता चलता है। इसी मे मनुष्य की शक्ति निहित है। एक ऐसा आदर्श है जो न केवल व्यक्तियों को बल्कि राष्ट्रों तक को सच्चे वीरों में परिणत कर सकता है। वह है कम्युनिज्म का, जनता के सुख के लिए संघर्षरत रहने का आदर्श। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं बोल्शेविक हूं, कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हूं। और इसके नाते मैं एक मनुष्य हूं, मैं उस तरह जी सकता हूं जैसे कि एक मनुष्य को जीना चाहिए। मैं यह भी कह सकता हूं, दिखावे के तौर पर नही, बल्कि सच्चे दिल से, कि मैं सुखी प्राणी हूं।"

सच है, ओस्त्रोव्स्की सुखी था। उसके कहने और करने में कोई अन्तर न था। जितना ही अधिक कोई उसे समझ पाता था, उतना ही अधिक वह उसके जीवन के इस सत्य से प्रभावित हो उठता था।

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की का जन्म २९ सितम्बर १९०४ में हुआ।

पिता एक शराब के कारख़ाने में काम करते थे, पर आमदनी इतनी न थी कि परिवार का पालन कर सकें, इसलिए मां को लोगों के घरों में रसोई बनाने का काम करना पड़ता था। जब निकोलाई १२ बरस का हुआ तो वह भी रसोइये का काम करने लगा। बाद में वह एक भण्डार का मजदूर और फिर इंजन की भट्टी में कोयला झोंकनेवाले एक स्टोकर का सहायक बन गया। और उसके बाद वह किसी बिजली-मिस्त्री की शागिर्दी करने लगा। १९१९ मे वह युवा कम्युनिस्ट लीग (कोम्सोमोल) मे शामिल हो गया, और स्वेच्छा से लड़ाई पर चला गया। उसी वक्त से उसका जीवन कम्युनिस्ट पार्टी के महान् कार्य के साथ एक अटूट संबंध मे बंध गया।

इस तरह १५ साल की उम्र मे ओस्त्रोव्स्की गृह-युद्ध में कोतोव्स्की और बुद्योन्नी के नेतृत्व में लड़ा। फिर शान्तिपूर्ण निर्माण-कार्य के समय उसने बड़ी वीरता से काम किया—रेलवे वर्कशाप बनाने, रेलवे लाइनें लगाने, नदी में लकड़ी के कुन्दे बहाने इत्यादि में। फिर युवा कम्युनिस्ट लीग के एक कार्यकर्ता की हैसियत से, पहले बरेज्दोव और फिर इज्यस्लाव्ल जिलों में अपने समूचे जन्मजात उत्साह के साथ काम में जुटा रहा। "जो जलता नहीं, वह धुएं में अपने आपको नष्ट कर देता है," उसने एक जगह लिखा है, "यह एक अमर सत्य है। जीवन की ज्वलन्त शिखा, मैं तेरा अभिवादन करता हूं!" और जो भी काम पार्टी और लीग ने उसके जिम्मे सौंपा, वह उसे अपने यौवन की समूची शक्ति और उत्साह के साथ करता रहा।

१९२४ के अन्तिम दिनों मे ओस्त्रोव्स्की सख़्त बीमार पड़ गया। रोग रीढ की हड्डी में था। अपने छोटे-से जीवन मे उसने हर तरह की तकलीफें झेली थीं—बचपन में गरीबी, फिर युद्ध के घाव, युद्ध के बाद कड़ा परिश्रम जिसमें न आराम था न नींद—ये सब मिलकर जैसे अब उसके स्वास्थ्य को कुचलने लगी।

ओस्त्रोव्स्की जो सदा क्रियात्मक संघर्ष में भाग लेता रहा था, और जीवन के निर्माण में संलग्न रहा था, अब पिछड़ गया और सबसे पीछे कहीं "आखिरी सैन्य पंक्ति" में रह गया। [illegible] समय सोवियत भूमि के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक निर्माण-कार्य के प्रति अदम्य उत्साह की लहर दौड़ रही थी। यह वे दिन थे जब देश एक ही लम्बे डग में

आगे बढ जाने के लिए अपनी पहली पंचवर्षीय योजना की तैयारी कर रहा था। उद्योग और कृषि की फिर से व्यवस्था की जा रही थी। एक सास्कृतिक क्रान्ति देश को उद्वेलित किये हुए थी। ऐसे निर्माण-कार्य में, जिसकी तुलना इतिहास में कहीं नहीं मिलती, युवाजन इकट्ठे हो रहे थे, ओस्त्रोव्स्की की ही पीढ़ी के युवक इस कड़े किन्तु सुखद परिश्रम में जुटे हुए थे।

इसलिए बाध्य होकर निष्क्रिय पड़े रहने के कारण वह और भी दु:खी था।

पर देश ने उसकी सहायता की। इलाज के लिए उसे देश के सर्वोत्कृष्ट अस्पतालों और विश्रामगृहों में भेजा गया: खारकोव, येवपातोरिया, स्लाव्यान्स्क, मास्को, सोची इत्यादि में वह रहा। और स्वयं उसने बरबस कोशिश की कि वह किसी भांति फिर काम करने लग जाय, सक्रिय सैनिकों की पंक्ति में खड़ा हो पाय।

"अस्पताल की चहारदीवारी के बाहर जीवन की प्रत्येक गतिविधि में उसकी गहरी रुचि थी। वह खूब पढ़ता, और अपने बीमार साथियों के साथ अखबार पढने, राजनीतिक विषयों तथा तात्कालिक घटनाओं पर बहस करने की व्यवस्था करता। वह एक दृढाग्रही कम्युनिस्ट होने के नाते अपना लक्ष्य जानता था। वह जानता था कि उसे किस चीज के लिए लड़ना है... उसके प्रखर व्यक्तित्व के सामने उसकी बीमारी मानो सिकुड़कर तुच्छ हो जाती थी, अपना अस्तित्व खो बैठती थी।" यह विचार ओस्त्रोव्स्की के बारे में नर्स आन्ना पाव्लोवना दवीदोवा का था जो खारकोव के चिकित्सा-प्राविधिक अनुसन्धान गृह में काम करती थी। और यही विचार ओस्त्रोव्स्की के बारे में उन सभी लोगों का था जो उन दिनों उसके सम्पर्क में आये—छोटे से छोटे युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों से लेकर, वयस्क कम्युनिस्टों तक। यही विचार उसके मित्रों—इन्नोकेन्ती पाव्लोविच फेदेनेव, ख्रिसान्फ पाव्लोविच चेर्नोकोजोव, अलेक्सान्द्रा अलेक्सेयेवना जिगिर्योवा—का भी था जिन्होंने मुसीबत के दिनों में उसकी सहायता की थी।

"एक लक्ष्य है जिसके लिए मुझे जीना है—कहीं पर मेरी जरूरत है,"—इस विचार की प्रेरणा ने उसे सहने की क्षमता दी, अपने शारीरिक कष्टों पर काबू पाने की शक्ति दी।

इस काल में ओस्त्रोव्स्की की मानसिक दृढ़ता, घोर आत्मनियंत्रण, दृढ़ संकल्प और एकलक्ष्यता उभरकर सामने आ गये। जितनी ही उसकी कठिनाइयां बढ़ती गयी उतनी ही दृढ़ता से वह अपने उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए संघर्षरत रहा, कि वह फिर किसी तरह काम करनेवालों की पंक्ति में खड़ा हो सके।

तदनुरूप ओस्त्रोव्स्की मास्को के स्वेर्दलोव कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय का छात्र बन गया और पत्रव्यवहार द्वारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ग्रन्थों का अध्ययन करने लगा।

एक छोटे-से क्रिस्टल रेडियो-सेट से उसे बडी सहायता मिली। जो विषय वह पढ रहा था, उनपर बाक़ायदा रेडियो पर लेक्चर हुआ करते थे, और वह इन्हें सुनने में कभी न चूकता था।

एक स्थानीय पुस्तकालय से उसके साथी उसे पुस्तकें, अख़बार और पत्रिकाएं लाकर देते रहते।

द्मीत्री पाव्लोविच खोरुजेन्को, जो उन दिनों नोवोरोसीस्क बन्दरगाह पर पुस्तकालय का अध्यक्ष था, कहता है कि "मैं उसे ढेर की ढेर किताबें लाकर देता, किताबों के बण्डल रस्सियों से बांध बांधकर उसके पास ले जाता। वह विलक्षण आदमी कुछ ही दिनों में सब की सब पढ़ डालता। पहले पहल मैं हर एक किताब का नाम इत्यादि इसकी पाठक-पुस्तिका मे नोट करा देता। पर मुझे गोंद के साथ बार बार नये पन्ने जोडने पड़ते जिससे वह मोटी होने लगी। आख़िर पुस्तकालय के सभी नियमों और उपनियमों का उल्लंघन करते हुए, मैं केवल पुस्तकों की संख्या दर्ज करने लगा, साथ में तफसील कुछ न देता। मैं दूकान से किताबें लेकर सीधे इसके पास ले जाता, उन्हें रजिस्टर मे चढ़ाने से भी पहले, ताकि वह अपने मतलब की किताबें ख़ुद चुन ले।"

ओस्त्रोव्स्की का दृष्टिकोण जैसा जनता के प्रति था वैसा ही पुस्तकों के प्रति भी था—एक तन्मय, क्रियाशील सैनिक का दृष्टिकोण।

मक्सीम गोर्की के प्रति वह विशेषतया आकृष्ट हुआ।

"कैसी विलक्षण रचना है!" उसने गोर्की के [illegible] 'न[illegible]ी पक्षी' के बारे में कहा था। "यही तो उन्मत्त [illegible]न [illegible] के लिए आत्म-विश्वास से भरपूर, [illegible] [illegible]वन और स्वच्छन्दता के उद्दीप्त स्वप्नों को साकार करने [illegible] महत्वाकांक्षाएं लिये हुए!

एक बारूद का गोला है जो एक विशालकाय सैनिक ने अपनी बलवती बाहु से प्रगति और संस्कृति के शत्रुओं के शिविर में फेंका है। हां, गोर्की सर्वोत्कृष्ट लेखक है, ऐसा गीत पहले कभी किसी ने नहीं लिखा।"

पूश्किन, लेर्मोन्तोव, गोगोल, नेक्रासोव, तोल्स्तोय, चेख़ोव, कोरोलेंको, गेरफिमोविच, फ़ूर्मानोव, शोलोख़ोव, फ़देयेव, नोविकोव-प्रिबोई, फेदिन, बलज़ाक, विक्टोर ह्यूगो, ज़ोला, जैक लन्दन, ड्राइज़र, केलरमन, बारबूस – इनकी और अन्य कितने ही लेखकों की रचनाएं इस काल में ओस्त्रोव्स्की ने बार बार पढ़ी।

विशेष तौर पर उसने गृह-युद्ध सम्बन्धी साहित्य को – उपन्यास, लेख, दस्तावेज, संस्मरण – संग्रहबद्ध रूप में हों या पत्रिकाओं में छोटे छोटे लेखों के रूप में – सबको बड़े ध्यान से पढ़ा।

उसने अपनी दिन-चर्या निश्चित कर रखी थी, इतना समय राजनीतिक साहित्य को, इतना उपन्यासों को, इतना चिट्ठी-पत्री को, इत्यादि। पहले इस कार्यक्रम में सैर भी शामिल थी, पर बाद में सैर छोड़नी पड़ी, क्योंकि शरीर बरदाश्त न कर सकता था। कार्यक्रम में, "वक्त जो जाया हुआ" नामक एक शीर्षक भी रहता जिसके नीचे नाश्ता, भोजन, शाम का भोजन, आराम इत्यादि पर ख़र्च हुए वक़्त का विवरण रहता।

वह जीवन के साथ केवल "चिपटे रहना" नहीं चाहता था। जैसा कि ओस्त्रोव्स्की ने बाद में कहा, उसने "अपने अन्तरतम में अपने जीवन-मार्ग की रूप-रेखा स्वयं बना ली थी"। वह अपना लक्ष्य जानता था। और उसने अपना स्थान क्रियाशील लोगों की पंक्ति में बना लिया था।

ज़ाहिर है कि उसने इसी काल में लेखनी हाथ में लेने का संकल्प किया।

१९२७ में नोवोरोसीस्क से प्योत्र निकोलायेविच नोविकोव के नाम अपने एक पत्र में उसने कहा: "मैं कुछ लिखने की सोच रहा हूं – एक तरह की 'ऐतिहासिक-गीतमय-वीर गाथा'। सचमुच – मजाक़ नहीं करता, मैं बड़ी गंभीरता से लिखने की सोच रहा हूं। मैं केवल यह नहीं जानता कि उसका नतीजा क्या निकलेगा।"

उस समय वह गृह-युद्ध के वीरों – कोतोव्स्की और उसके सैन्यदल – के बारे में सोच रहा था। उसने १९२७ की शरद् में लिखना शुरू किया और १९२८ के शुरू में उसे समाप्त कर दिया।

अब उसकी दिन-चर्या में 'लिखने' को भी नियमित रूप से समय मिलने लगा और पहली दिलचस्पियां पीछे हटती गयी। नाश्ते के फ़ौरन ही बाद, चुपके से वह अपने सिरहाने के नीचे से एक मोटी-सी कापी निकाल लेता और लिखना शुरू कर देता। कई बार वह इसमे इतना लीन हो जाता कि उसे काम से छुड़ाकर भोजन कराना कठिन हो जाता। वह खीज उठता और कहता कि लोग उसे इस "बेमतलब भोजन" के लिए इतना तंग क्यों करते हैं; या वचन देकर कहता कि कुछ ही दिनों में—ज्यो ही वह काम से निबट लेगा—वह सब के सब भोजन एक साथ खा लेगा।

जब कहानी लिखी गयी तो उसे उसने ओदेसा मे अपने पुराने सैनिक साथियों के पास भेजा। कोई दो हफ़्ते बाद उनका जवाब आया—एक ही संयुक्त चिट्ठी के रूप में, कि रचना सामान्यतया अच्छी है, केवल कहीं कहीं विवरणों मे सुधार की जरूरत है। ओस्त्रोव्स्की की ख़ुशी का ठिकाना न था।

पर जब पाण्डुलिपि को ओदेसा से वापिस भेजा गया तो वह कहीं रास्ते मे खो गयी, उसकी कोई दूसरी नकल मौजूद नही थी। कहानी का कहीं पता न चला। "बहुत देर के बाद," ओस्त्रोव्स्की की पत्नी लिखती है, "निकोलाई इस सदमे को भूल पाया।" वह बहुत दुःखी हुआ पर जल्दी ही उसने फिर अपने आपको संभाल लिया। और इसके बाद कभी इस गहरे सदमे की चर्चा नही की, न कभी चिट्ठियो मे, न अपने घरवालो से या मित्रों के साथ बातचीत में।

अपने पहले साहित्यिक प्रयास के प्रति साथियों के इस प्रोत्साहन [illegible] ओस्त्रोव्स्की का अपनी योग्यता में विश्वास बढ़ गया। उसने अपनी पढ़ाई फिर शुरू कर दी, ताकि अपने इस नये कार्य-क्षेत्र के नियमों मे कुशलता प्राप्त कर सके। और साथ ही मन मे वह एक नयी पुस्तक की रूप-रेखा आंकने लगा।

ऐसे समय में जब जान पड़ता कि वह ज्यादा दिन नहीं जिएगा, जब शरीर की निरुद्धता के साथ साथ दृष्टिहीनता आने लगी थी, और सब कुछ ख़त्म होता जान पड़ता था, ओस्त्रोव्स्की [illegible] निकोलायेविच नोविकोव को एक पत्र में लिखा ([illegible]

"मैंने अपने जीवन को उपयोगी बनाने का एक और उपाय सोचा है, और केवल इसी से जीवन को सार्थकता मिल सकती है। मेरी यह योजना बडी कठिन है, सरल बिल्कुल नही। यदि मैं इसे क्रियान्वित कर पाया तो इस बारे मे तुम्हे और लिखूगा। मेरे जीवन-मार्ग में कुछ भी अनिश्चित नही। मेरे जीवन की गतिविधि सदा सीधी होती है, इसमें कोई घुमाव या हेर-फेर नही होते। मैं जानता हूं कि मैं कहां खड़ा हूं और मेरे लिए उद्विग्न होने का कोई कारण नही। मैं ऐसे लोगो से स्वभावतया घृणा करता हू और उन्हे निकृष्ट समझता हूं जो जीवन के निर्मम आघात पड़ने पर रोने-बिलखने लगते हैं।

"मैं आज बेशक अपनी खाट से जा लगा हूं। पर इसका मतलब यह नही कि मै बीमार हूं। यह कहना बिल्कुल गलत होगा, मूढ प्रलाप होगा। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। क्या हुआ जो मेरी टांगें काम नही करती और मैं कुछ देख नही सकता। यह तो बिल्कुल एक भ्रम है–तुच्छ और पैशाचिक परिहास!"

कितनी विलक्षण, कैसी अद्‌भुत संकल्प-दृढता है! मृत्यु को चुनौती देनेवाली! और ऐसे समय मे जब जान पडता था कि मौत किसी वक़्त भी आकर उसे दबोच सकती है। उसका शरीर धीरे धीरे नष्ट हो रहा था और डाक्टर बेबस थे। वह जानता था कि वह कभी भी बिस्तर पर से अब नही उठ पायेगा, न कुछ देख सकेगा, न चल-फिर सकेगा। तो इससे क्या हुआ?

उसने अपना रास्ता ढूढ़ निकाला था। वह अपनी रचना के पन्नों द्वारा जीवन मे क्रियाशील रहेगा!

वह जानता था, बहुत पहले से जानता था कि उसे क्या लिखना है। वह नयी पीढी के लोगों के लिए एक पुस्तक होगी: क्रान्ति के एक सेनानी की कहानी, जिसे किसी तरह के भी कष्ट और कठिनाइयां हतोत्साह नही कर पाती। यह उसकी अपनी कहानी होगी, जो वह युवको के लिए लिखेगा, इस आशा से कि "वह मजदूर लड़का जिसे मैं जानता था"–पावेल कोर्चागिन–अपने पाठकों को उस संघर्ष की प्रेरणा दे पाये जिस संघर्ष मे उसने स्वयं भाग लिया था।

उसकी पाण्डुलिपियों को देखते हुए जो अब ओस्त्रोव्स्की स्मारक-संग्रहालयों मे रखी हैं (मास्को, सोची तथा शेपेतोव्का मे) यह साफ़

पता चल जाता है कि इन किताबों पर उसे कितनी कड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी।

पहले कोई भी उसकी सहायता करनेवाला नही था। उसकी पत्नी दिन भर व्यस्त रहती, अपने काम में और सार्वजनिक कार्यो मे, और शाम के वक़्त वह सदा थकी होती। वह वहां लेटे लेटे, अपनी कठोर अकड़ी हुई उंगलियों मे पेंसिल को जैसे-तैसे पकड़कर लिख रहा होता – या यों कहिये कि एक के बाद दूसरे शब्द की, बड़ी कठिनाई से रेखाएं खीच रहा होता। कई बार एक रेखा पिछली रेखा पर चढ़ जाती और दोनों विकृत हो जाती।

फिर एक यन्त्र बनाया गया जो सहायक सिद्ध हुआ। एक सादा गत्ते का दोहरा टुकड़ा लिया गया, जिसके ऊपरवाले भाग में आठ मिलिमीटर चौड़ी सीधी लाइनें काट ली गयी। इनके अन्दर चलती हुई पेंसिल टेढ़ी पंक्ति में न लिख सकती थी और इस तरह प्रत्येक पंक्ति सीधी और स्पष्ट लिखी जाती।

इस काल में ओस्त्रोव्स्की अधिकतर रात के वक़्त काम किया करता, जब सब लोग सो रहे होते। सोने से पहले उसकी पत्नी या मां २५-३० काग़ज़ और बहुत-सी पेंसिलें छीलकर उसके पास रख जाती। जब सुबह होती, तो सब कागज़ लिखे हुए मिलते। दिन के वक़्त मित्र और परिवार के लोग उन्हे बड़े ध्यान से नक़ल कर लेते।

"क्रियात्मकता की ज्वलन्त शिखा" – इस नाम से रोमां रोलां ने ओस्त्रोव्स्की को पुकारा था। इस दीप्त शिखा को बुझाने के लिए जितनी ही तेज और विषम आन्धियां चलती, उतनी ही इसकी लौ और तेज़ होती जाती।

ओस्त्रोव्स्की ने 'अग्नि-दीक्षा' को दो भागों में लिखा। यह उपन्यास उसके अपने जीवन पर आधारित था। उसे आशा थी कि वह एक तीसरा भाग 'कोर्चागिन का सौभाग्य' के नाम से ("अवश्यमेव") लिखेगा (उसके जीवन की सुखमय घड़ियों की चर्चा पहले दो भागों मे नही है)। उसने एक दूसरे उपन्यास 'तूफ़ान के जाये' का प्रथम भाग लिखा जिसे वह अपनी मृत्यु के कुछ ही दिन पहले समाप्त कर पाया। इसके दो भाग और लिखकर वह इसे पूरा करना चाहता था। ("केवल किताब लिखने के लिए नही परन्तु इसे अपने हृदय की आग से प्रज्वलित करने के

लिए।") एक फिल्म लेखक के साथ मिलकर उसने 'अग्नि-दीक्षा' की पट-कथा लिखी। उसका विचार एक बच्चों की पुस्तक लिखने का भी था जिसका नाम वह 'पाव्का का बचपन' रखना चाहता था ("यह मुझे अवश्यमेव लिखना है"); इसके अतिरिक्त एक पुस्तक बुद्योग्नी के बारे में; एक सग्रह हास्यरस की कहानियों का। इसके अलावा लेख लिखना, युवा कम्युनिस्ट लीग तथा लेखक-सम्मेलनों में भाषण देना... अखबारों, पत्रिकाओ, पुस्तकों की रोजाना पढ़ाई... इसके कमरे में "मिलनेवालों का तांता" लगा रहता जिनमे लेखक, ऐक्टर, पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रसिद्ध सामूहिक फार्मो के किसान, लेनिनग्राद के युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य, उसके अपने नगर शेपेतोव्का से आये हुए लोग इत्यादि होते। वह टेलीफोन पर बातें करता, रेडियो सुनता, अपने विभिन्न पत्रकारों की चिट्ठियो का जवाब देता। जब भी कभी उसे किसी की तनिक भी सहायता करने का अवसर मिलता तो उसे हार्दिक प्रसन्नता होती।

इन सब बातो से उसे जीवन मे परिपूर्णता का भास होता था—यह सुखमय आभास कि मैं भी और लोगों की तरह काम कर रहा हूं, सैन्य पक्तियो मे आगे बढ़ रहा हूं।

वह जितने दिन जिया, बड़ा कर्तव्यपरायण रहा।

"मैं जानता हूं कि मैं बहुत दिन नही जिऊंगा," उसने लिखा, "मेरे अन्दर एक आग है जो मुझे खाये जा रही है, और उसे नियन्त्रण में रखने के लिए मुझे अपनी समूची संकल्प-शक्ति को लगाने की ज़रूरत रहती है। इस समय तो मैं ज्यों-त्यो ऐसा करने में समर्थ हूं। मुझे इस अवसर से पूरा पूरा लाभ उठाना है, जो प्रकृति ने मुझे सौप रखा है, इसके चुक जाने से पहले मैं जो कुछ भी अपनी जनता के लिए लिख सकता हू, मुझे लिखना होगा। मेरे पास समय थोडा रह गया है ... मुझे जल्दी करनी होगी।"

नवम्बर १९३६ में ओस्त्रोव्स्की की नयी पुस्तक 'तूफान के जाये' के पहले भाग की पाण्डुलिपि पर विचार करने के लिए मास्को में एक सयुक्त बैठक हुई। यह बैठक उसी के घर पर हुई और इसमे सोवियत लेखक संघ के अध्यक्षमण्डल तथा सोवियत सघ की लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति ने भाग लिया। विचार-विनिमय के बाद ओस्त्रोव्स्की ने मैत्रीपूर्ण आलोचना के लिए सबको हार्दिक धन्यवाद

दिया और वचन दिया कि एक दिन आराम करने के बाद ("मैं अपने को इतने भर विश्राम की इजाजत जरूर दूगा") वह फिर इस किताब पर, प्रेस के लिए आख़िरी पाण्डुलिपि तैयार करने के काम पर जुट जायेगा। वह किसी भी स्वस्थ आदमी के लिए पूरे तीन महीने का काम था; पर ओस्त्रोव्स्की ने उसे एक महीने मे करने का निश्चय किया।

"मुझे रात को नींद नही आती," उसने कहा, "इससे भी मदद मिलेगी। कई लोग अपने रोग का इलाज आराम द्वारा करते हैं और कुछ लोग—काम द्वारा।"

वास्तव में काम द्वारा ही उसने अपना 'इलाज' किया: सुबह नौ बजे से लेकर रात के दस, ग्यारह, कभी कभी बारह बजे तक, काम करता, बीच में केवल थोड़ी थोड़ी देर के लिए किसी किसी वक़्त आराम कर लेता।

उसके परिवार के लोग बड़ी चिन्ता के साथ यह सब देख रहे थे। वह सचमुच अपनी बची-खुची शक्ति होम कर रहा था। उन्होने इसकी मिन्नतें की कि थोड़ी मुद्दत के लिए काम स्थगित कर दो और आराम करो, पर वह विलम्ब की बात सुन तक न सकता था। बड़ी बेरहमी के साथ उसने अपने आपको जोते रखा और अपने सहायकों को भी, जिन्हे वह अपने "सदरमकाम के कर्मचारी" कहा करता था।

इसके विस्तर के साथ एक मेज लगी रहती थी। उसपर तथा कुर्सियों और सोफ़े पर पाण्डुलिपियों की प्रतिया पड़ी होती, जिनपर इनके सम्पादकों ने अपनी टिप्पणियां लिखी होती। पन्ना पन्ना करके काम आगे बढ़ रहा था। पहले लेखक की रचना का मूल पाठ किया जाता; फिर हर प्रति के एक एक पन्ने पर दी गयी टिप्पणियो का।

अपने मन में एक एक शब्द, एक एक वाक्य को तौलते हुए ओस्त्रोव्स्की कही शब्द बदलता, कहीं जोड़ता, कही काटता, और इस तरह उपन्यास का आख़िरी रूप तैयार होने लगा। एक बात स्थिर करने के बाद वह अपने सहायकों से और भी तेजी से काम करने का आग्रह करता: "लगे रहो दोस्तो, लगे रहो!" यही उसकी एक मात्र मांग होती।

दिन पर दिन बीतते रहे। यह कड़ा श्रम जारी रहा। इसे स्थगित किया जाता तो केवल भोजन के लिए, अख़बारों और चिट्ठियो को पढ़ने के लिए, और प्रातः तथा सायं रेडियो पर ख़बरें सुनने के लिए।

आख़िरी पन्ने का संशोधन ११ दिसम्बर को हुआ।

"'तूफ़ान के जाये' के पहले भाग पर जो काम करना बाक़ी था आज मैंने उसे समाप्त कर दिया," उसने अपनी मां को लिखा, "इस तरह मैंने अपना वचन पूरा कर दिया है जो लीग की केन्द्रीय समिति को दिया था कि मैं १५ दिसम्बर तक किताब ख़त्म कर दूंगा। पिछले सारे महीने मे हर रोज़ 'तीन पाली' काम किया; अपने साथ काम करनेवालो को बुरी तरह थका मारा। सुबह से लेकर गहरी रात गये तक उनसे काम लेता रहा, और बीच मे कोई छुट्टी तक नही दी। बेचारी लड़किया! न मालूम वे मेरे बारे मे क्या सोचती होंगी। मैंने सचमुच उनपर बहुत ज़ुल्म किया है। पर अब यह और नही होगा। मैं बयान नही कर सकता कि कितना थक गया हूं, पर किताब ख़त्म हो गयी है।"

कुछ दिन आराम करने के बाद ओस्त्रोव्स्की 'तूफ़ान के जाये' के दूसरे भाग पर काम करना चाहता था। उसकी एक फ़ाइल में इसके लिए इकट्ठी की गयी ऐतिहासिक सामग्री के संक्षिप्त विवरण और कुछ एक पन्ने उपन्यास के भी लिखे हुए पड़े थे। उसे आशा थी कि वह उपन्यास को (भाग २ और ३) अक्तूबर क्रान्ति की बीसवी सालगिरह तक–यानी एक साल से भी कम समय मे–लिख डालेगा।

पर वही पत्र जो उसने मा को लिखा और जिसमे से ऊपर उद्धरण दिया गया है उसकी अन्तिम रचना थी।

१५ दिसम्बर को बीमारी का एक और दौरा आया जो अन्तिम और घातक सिद्ध हुआ। जिस तरह वह दर्द से छटपटाया, वह किसी भी इनसान के लिए असह्य होता। विवश होकर उसने मार्फ़िया का इंजेक्शन लेना स्वीकार किया।

पर उसने 'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' के दफ़्तर को टेलीफोन किया–

"क्या माड्रिड के मोर्चे पर साथी अब भी डटे हुए हैं?"

फ़ाको के फ़ासिस्ट लशकर स्पेन की राजधानी का घेरा डाले बैठे थे। माड्रिड का मोर्चा अभी तक क़ायम था और ओस्त्रोव्स्की ने उल्लसित होकर कहा–

"ठीक है: तो मैं भी डटा रहूंगा!"

पर क्षण भर बाद, उदास-सी आवाज मे बोला–

"पर इसकी संभावना नज़र नहीं आती।"

बीमारी का दौरा इतनी तीव्रता के साथ आया कि बरसों के कड़े परिश्रम से थकी-हारी दुर्बल देह इस हमले को सहन न कर सकी।

डाक्टरों की सब कोशिशें निष्फल रहीं। वे इस दौरे को रोक नही पाये। मौत बढ़ी चली आ रही थी।

ओस्त्रोव्स्की जिस साहस के साथ जिया उसी साहस के साथ उसने मौत का सामना किया।

एक दिन – २१ दिसम्बर को – वह अपनी नर्स से पूछने लगा जो उसके कमरे में काम करती थी कि वह कितने बरस से नर्स का काम कर रही है।

"२६ बरस से," उसने जवाब दिया।

"और इस दौरान मे तुमने बड़े दुःख और यातनाएं देखी होंगी, तुम्हारा काम ही जो ऐसा है?"

"हा, बेशक, बहुत कुछ देखा है।"

"और अब मेरी बारी है, मैं भी तुम्हें बहुत ख़ुशी नही पहुंचा पाऊंगा।"

बड़ी मुश्किल से नर्स अपने आंसू रोक पायी।

"तुम क्या कह रहे हो?" आश्वासन देने का विफल प्रयास करती हुई वह बोली। "तुम कुछ ही दिनों मे ठीक हो जाओगे। मुझे पक्का विश्वास है। और तुम्हे स्वस्थ देखकर मुझे कितनी ख़ुशी होगी।"

"नही, नही, मैं अपनी हालत अच्छी तरह जानता हूं। मैं तुम्हे ख़ुश नही कर पाऊंगा। पर अफसोस। मुझे अपना काम समाप्त करने के लिए केवल एक साल की और जरूरत थी। मै कितना काम अधूरा छोड़े जा रहा हूं। और मेरी लीग – वह मुझसे कितनी चीज़ों की आशा करती है।"

उसी रात, जब उसकी पत्नी उसके सिरहाने बैठी थी, वह कहने लगा –

"प्यारी राया, मेरी तबीयत बिगड़ती जा रही है। मुझे बहुत दर्द है। डाक्टर मुझे सच सच नही बताते। मुझे लगता है कि यह दौरा मुझे लेकर रहेगा।"

थोड़ी देर तक वह चुपचाप लेटा रहा। केवल उसकी भवें तनी हुई थी, जैसे वह पीड़ा को दबाने की चेष्टा कर रहा हो।

"जो कुछ मैं तुम्हें कह रहा हूं, इसे तुम मेरे आख़िरी वाक्य समझो। हो सकता है मैं इसके बाद अपनी चेतना खो बैठूं। मैंने बुरा जीवन नहीं बिताया। मैं जो कुछ हूं अपना बनाया हुआ हूं। कुछ भी आसान न था, कोई भी बात अपने आप सीधी नहीं हुई। मैं सदा संघर्ष करता रहा और—तुम तो जानती हो—मैंने कभी हार नहीं मानी। और अब मैं तुम्हें यही बताना चाहता हूं कि यदि कभी जीवन तुम्हारे लिए कठिन हो उठे तो मुझे याद कर लेना। एक और बात। जहां भी तुम हो, जिस काम में भी लगी हो, पढ़ना और सीखना जारी रखना। इसे कभी नहीं छोड़ना। अध्ययन के बिना कभी कोई उन्नति नहीं कर सकता। और हमारी माताओं को नहीं भूलना। जीवन भर उन्हे हमारी चिन्ता रही है। मुझे उनपर दया आती है। हम उनके कितने ऋणी हैं। कितने ऋणी हैं! हमने उनके लिए क्या किया है? उनका ख़्याल रखना। उन्हें कभी नहीं भूलना।"

२२ दिसम्बर १९३६ को ओस्त्रोव्स्की की मृत्यु हुई। उस समय उसकी अवस्था केवल ३२ वर्ष की थी।

ऐसा था उस अद्भुत वीर का अन्त—जिसके जीवन की आख़िरी सांस भी कम्युनिज़्म के महान् लक्ष्य के लिए निछावर हुई। कैसा साहसपूर्ण, उन्मत्त, और सौन्दर्य से भरा उसका जीवन था!

पर ऐसे मनुष्य कब मरते हैं?

मौत ने उसके हाथ से उस वक़्त कलम छीन ली जब वह अपने रचनात्मक श्रम के शिखर पर था। पर उसकी अनुपम रचनाएं हमारे पास हैं, उसके सत्य से अनुप्राणित वाक्य, उसके जीवन का उत्कृष्ट आदर्श—कितना संक्षिप्त, पर कितना महान्!

इस पुस्तक में अपनी पत्नी, माता तथा मित्रों को लिखे उसके पत्र, उसके लेख, भाषण तथा भेंट करनेवालों से की गयी बातचीत शामिल है।

सब मिलाकर यह सामग्री मानवी साहस तथा श्रेष्ठता का एक हृदयस्पर्शी अभिलेख है।

ओस्त्रोव्स्की को आशा थी कि वह एक पुस्तक 'कोर्चागिन के सौभाग्य' के बारे में लिख पायेगा, जो 'अग्नि-दीक्षा' की ही कहानी का अगला हिस्सा होगी, पर मौत ने इजाजत नहीं दी।

ये लेख और पत्र अपने ढंग से वही कहानी कहते हैं, जो वह एक दूसरे रूप में कहना चाहता था, पर कह न पाया।

से० त्रेगुब

लेख

भाषण

एक साधारण दिन

'दुनिया–एक दिन' संग्रह के लिए लिखा गया एक लेख

(२७ सितम्बर, १९३५)

टेलीफोन की घण्टी बज उठी, और सपनों के चंचल चित्र सहसा मिट गये। जागते ही, सबसे पहले तीव्र पीड़ा का आभास होने लगा जो शरीर के प्राय: निर्जीव अवयवों को चीरने लगी है। क्षण भर पहले मैं एक स्वप्न देख रहा था, एक स्वप्न कि मैं जवान हूं, ओजस्वी हूं, और अपने युद्धाश्व पर सवार, हवा की तरह तेज़ गति से, चढ़ी सूर्य से मिलने क्षितिज की ओर बढ़े जा रहा हूं। मैं अपनी आंखें नही खोलता। इसकी जरूरत भी क्या है? मुझे अब याद हो आया है। आठ बरस पहले इस बीमारी ने मुझे खाट से जा लगाया, मेरे शरीर को निरुद्ध कर दिया, मुझे आंखों से अन्धा करके अनन्त रात्रि और अन्धकार मे ला फेका। आठ बरस पहले!

शरीर में तीव्र पीड़ा होने लगी है, असह्य, भयानक और निष्ठुर! मैं अपने दांत पीसने लगा हूं–दर्द को दबाने का यह मेरा पहला प्रयास है। टेलीफ़ोन की घण्टी फिर बज उठती है, इससे मुझे सहायता मिलती है। जीवन की पुकार है कि मैं इसपर क़ाबू पाऊं। मां अन्दर आती हैं, हाथों में प्रातः की डाक लिये हुए, पुस्तकें, अख़बार, चिट्ठियों का पुलिन्दा। कई एक दिलचस्प आदमियों से आज मुझे मिलना भी है। जिन्दगी मुझे बुला रही है। पीड़ा और यातना का अन्त हो! प्रायः रोज की तरह आज भी सुबह के इस छोटे-से द्वन्द्व-युद्ध में जीवन की विजय होती है।

"जल्दी से मेरा हाथ-मुंह धुला दो, मां! और फिर कुछ नाश्ता मिल जाय!"

जब मां नाश्ते की ख़ाली थाली वापिस ले जाती हैं तो मेरी सेक्रेटरी अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना के क़दमों की आवाज आती है; वह रोज की तरह, ऐन वक़्त पर आ पहुंची है।

मुझे बाग़ मे, पेड़ों के नीचे बिठाया जाता है। मेरे दिन भर का काम वहा मेरा इन्तजार कर रहा है। यदि मुझे जीना है तो जल्दी करनी होगी। यही कारण है कि मेरी इच्छाएं इतनी उद्वेलित रहती है।

"अखबार पढकर सुनाओ, अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना। इटली-एबीसीनिया के सीमा प्रदेश की क्या ख़बर है? पागल फ़ासिज्म, हाथ में बम का गोला उठाये, उस तरफ निकल पड़ा है। कौन जाने कि वह कब बम फेंक दे, और कहां फेंक दे?"

अखबारों मे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की चर्चा है, जो अत्यन्त जटिल और उलझे हुए हैं; और दिवालिया साम्राज्यवाद के विरोधाभासों की, जो कभी सुलझ नही सकते। जंग का भय, काले बादल की तरह संसार पर मंडरा रहा है। मृतप्राय पूजीवाद ने अपनी आख़िरी दानवी शक्ति का प्रयोग करते हुए, फासिस्ट नारकीय कुत्तों को खुला छोड़ रखा है। यह फ़ासिस्ट बड़ी शीघ्रता से, हाथ में रस्सी और कुल्हाड़ा लिये हुए, पूजीवादी संस्कृति को पीछे की ओर मध्य-युग में खीचे लिये जा रहे हैं। यूरोप के वातावरण में सांस लेना असह्य हो उठा है। जहां जाओ, खून की गन्ध आती है। १९१४ के भयानक बादल फिर छाने लगे है जो अन्धों को भी नजर आ जायेंगे। सारी दुनिया बड़ी तेज़ी से हथियारो से लैस हो रही है।

"बस बहुत है, अब घर की ख़बर सुनाओ, अपने देश में क्या हो रहा है?"

और मैं लेटे लेटे अपनी प्यारी मातृभूमि के हृदय की धडकन सुनने लगता हूं। वह मेरे सामने खड़ी है, यौवन और सौन्दर्य की प्रतिमा—हमारी सोवियत भूमि, उल्लसित, स्वस्थ, अजेय। केवल उसी ने—मेरी समाजवादी मातृभूमि ने—शान्ति तथा संस्कृति की ध्वजा फहरायी है। उसने, और केवल उसी ने जातियों मे सच्चा भ्रातृभाव स्थापित किया है। इस मां की सन्तान होने का मुझे कितना गर्व है!

अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना मेरे नाम आयी चिट्ठियां पढ़कर सुनाने लगी है। वे हमारे असीम सोवियत संघ के हर प्रदेश में से आयी हैं—ब्लादिवोस्तोक से, ताशकन्द, फरग़ाना, तिफ़्लीस, बेलोरूस से, उक्रइना, लेनिनग्राद, मास्को से।

अहा, मास्को; मास्को! संसार का हृदय! ये पत्र मेरे देश ने

मुझे लिखे हैं—अपने एक बेटे को जो नौसिखिया लेखक है और जो 'अग्नि-दीक्षा' नामक एक उपन्यास का रचयिता है। हजारों की संख्या मे खत हैं, जिन्हें मैंने बड़े प्यार से फाइल मे लगा रखा है—और मेरी ये सबसे बड़ी दौलत है। मुझे ख़त लिखनेवाले कौन हैं? सब लोग! फ़ैक्टरियों में काम करनेवाले युवक, काले सागर और बाल्टिक समुद्र पर काम करनेवाले जहाजी, वायुसैनिक, तरुण पायोनियर—सभी अपनी उन भावनाओं और विचारों को बड़े आग्रह से व्यक्त करना चाहते हैं, जो मेरी किताब ने पैदा किये हैं। और हर एक ख़त से मुझे नयी ख़ुशी मिलती है, नया ज्ञान मिलता है। यह एक ख़त है, श्रम का आह्वान: "प्रिय साथी ओस्त्रोव्स्की, हम तुम्हारे नये उपन्यास 'तूफ़ान के जाये' का बड़ी बेताबी से इन्तजार कर रहे हैं। इसे जल्दी जल्दी ख़त्म करो। हम जानते हैं यह बहुत बढ़िया किताब होगी। यह मत भूलना, कि हम इन्तज़ार में हैं। हम तुम्हारे स्वास्थ्य और सफलता की कामना करते हैं। बेरेज्निकी आमोनिया वर्क्स के कामगार।"

एक और ख़त से मुझे सूचना मिलती है कि बहुत-से प्रकाशन गृह मेरी पुस्तक अगले साल छापेंगे—मिलाकर ५ लाख २० हज़ार प्रतियां। यह तो पूरी एक सेना हुई, किताबों की सेना।

मुझे ऐसा सुनाई दिया है जैसे दरवाजे के सामने कोई मोटर आकर रुकी है। फिर क़दमों की आवाज़। "नमस्ते!" आवाज़ मेरी पहचानी है—इंजीनियर माल्त्सेव आया है, उस विश्रामगृह का निर्माण-अध्यक्ष, जिसे उक्रइना की सरकार ने लेखक ओस्त्रोव्स्की को उपहार-स्वरूप देने का विचार किया है—एक ख़ूबसूरत-सा बंगला, समुद्र से थोड़ी ही दूर, सायेदार बाग में। वह अपने नक़्शे खोलकर बैठ जाता है।

"यह आपका पढ़ने का कमरा, यह पुस्तकालय, यह आपकी सेक्रेटरी का कमरा। यहां गुसलख़ाना होगा और ये कमरे आपके परिवार के लिए। एक खुला बरामदा होगा जहां गरमी के मौसम में आप बैठकर काम कर सकते हैं। ख़ूब रोशनी और धूप आयेगी। ताड़ और मैग्नोलिया के पेड़ होंगे।"

हर एक चीज का प्रबन्ध किया गया है। ठीक है, मैं यहां पर आराम से काम करूंगा। हर ब्योरे में मुझे अपनी मातृभूमि की सहानुभूति का आभास मिलता है।

"क्या आपको पसन्द है?" माल्त्सेव पूछता है।

"बहुत!"

"तो क्या हम बनाना शुरू कर दें?"

वह चला जाता है। अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना अपनी कापी खोलती है। अब शाम तक कोई भेंट करनेवाले नहीं आयेंगे। लोग जानते हैं कि मैं व्यस्त हूं। अगले कुछ घण्टे हम जी तोड़ मेहनत करते हैं। मुझे अपना पास-पड़ोस सब भूल जाता है, और मैं केवल अतीत में रहता हूं। यह १६१६ का तूफ़ानी साल है। तोपों की आवाज। रात्रि के अन्धकार में आग के शोले भड़कते हैं। हस्तक्षेप करनेवालों की सशस्त्र फ़ौजों ने हमारे देश पर धावा बोल दिया है, और शत्रु के विरुद्ध मेरे उपन्यास के वीर युवक, अपने बुजुर्गों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ाई में कूद पड़े हैं।

"चार बज गये," अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना धीरे से कहती है, "अब आपको आराम करना चाहिए।"

शाम का भोजन। घण्टे भर का आराम। शाम की डाक: अख़बार, पत्रिकाएं और फिर चिट्ठियां। थोड़ा-सा अध्ययन – या वास्तव में श्रवण। पर्ल बक की रचना 'धरती माता'। सूर्य पश्चिम की ओर ढलने लगा है। मैं देख नहीं सकता परन्तु सायंकाल का शीतस्पर्श अनुभव कर पाता हूं।

बहुत-से कदमों की आवाज। फिर हंसने की आवाज, साफ, जैसे घण्टियां बजती हैं। मुझसे भेंट करनेवाले आ पहुंचे हैं: हमारी वीर सोवियत युवतियों की एक टोली, जिन्होंने हवाई जहाज से कूदकर उतरने और देर से छतरी खोलने का दुनिया भर में रेकार्ड कायम कर दिया है। और उनके साथ, सोची निर्माण-क्षेत्र से आये युवा कम्युनिस्ट लीग के कुछ सदस्य। इस शान्त उद्यान में भी बैठे बैठे मुझे शहर के निर्माण-कार्य की आवाज सुनाई दे रही है। और कितनी स्पष्टता से मैं उसे अपनी आंखों के सामने देख सकता हूं – सोची की दिन प्रतिदिन फैलती हुई पक्की सड़कें, महलों के से विशाल नये स्वास्थ्य-गृह जहां साल भर पहले झाड़-झंखाड़ के अलावा और कुछ न था।

सायंकाल। सारा घर शान्त है। मुझसे भेंट करनेवाले जा चुके हैं। मुझे पुस्तक-पठन सुनाई जा रही है। फिर, दरवाजे पर हल्की-सी थाप। आज की आख़िरी भेंट: 'मास्को डेली न्यूज' के संवाददाता के साथ। वह टूटी-फूटी रूसी भाषा में बात करते हैं।

"क्या यह ठीक है कि आप किसी जमाने में साधारण मजदूर थे?"

"हां, मैं भट्टी में कोयला झोंकने का काम करता था।"

मुझे उसकी पेंसिल की आवाज सुनाई देती है, जो कागज पर तेज तेज चल रही है।

"आप इस कष्टमय यन्त्रणा के कारण बड़े दुःखी रहते होंगे? नेत्रहीन, खाट के साथ आप बरसों से जुड़े हुए हैं। आप देखने और चल-फिर सकने के आनंद से वंचित हैं, क्या आपका मन निराशा से नहीं भर उठता?"

मैं मुस्कराने लगता हूं।

"मेरे पास इसके बारे में सोचने के लिए वक़्त ही नहीं है। सुख की भी कई किस्में हैं। और मैं खुश हूं, बहुत खुश हूं। मेरा व्यक्तिगत दुःख इस रचनात्मक श्रम के अद्‌भुत, अविस्मरणीय सुख में, इस ज्ञान में कि मैं भी समाजवाद के विराट दुर्ग के निर्माण में योग दे रहा हूं, बिल्कुल खत्म हो जाता है।"

रात। मैं सोने की तैयारी कर रहा हूं—मैं थका हुआ हूं पर गहरे सन्तोष का भी अनुभव कर रहा हूं। जीवन का एक दिन और बीत गया। एक साधारण दिन। और मैं इसे अच्छी तरह से व्यतीत कर पाया।

आत्म-कथा

'मोलोदाया ग्वार्दिया' (तरुण रक्षक) पत्रिका के सम्पादक-मण्डल के नाम जनवरी १६३२ में लिखा हुआ पत्र*

मैंने यथार्थ सत्य को साहित्यिक रूप में वर्णन करने का प्रयास किया। जिन साथियों की चर्चा हुई है, वे भी वास्तविक हैं। उनमें से कुछ अब नहीं रहे, संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हुए; बाकी जीवित हैं और काम कर रहे हैं।

---

*यह पत्र 'अग्नि-दीक्षा' के पहले भाग की पाण्डुलिपि के साथ भेजा गया था।—सं०

मैं सभी मुख्य पात्रों को जानता था, और मैंने सचाई के साथ उन्हे चित्रित करने की कोशिश की है। उनके गुण और अवगुण दोनों दिखाने की कोशिश की है।

कहानी का घटना-स्थल उक्रइना का शेपेतोव्का नामी छोटा-सा नगर है। मेरा उद्देश्य मजदूरो के बच्चों का बचपन और यौवनकाल दिखाना था, और वह कड़ा श्रम जो बचपन से ही उनके भाग्य मे लिखा होता है। फिर यह दिखाना कि वे कैसे वर्ग-संघर्ष की ओर आकृष्ट होते हैं। मैंने केवल वास्तविक घटनाओं को आधार मानकर काम किया है, जिससे मेरा क्षेत्र कुछ कुछ सीमित हुआ है। कही कही, यथार्थ घटनाओं ने मुझे दबा-सा दिया है। पर यदि मैं यथार्थता के आधार पर न लिखता तो मेरी रचना काल्पनिक होती और कहानी की घटनाएं जैसे घटी वैसे बयान करने मे मैं असफल रहता।

कई एक पात्रों के यथार्थ नाम वैसे के वैसे रखे गये हैं, पर कुछ एक के नाम काल्पनिक हैं।

ऐसे लोग आज भी जीवित है जिन्होंने १९१९ में शेपेतोव्का में पेत्लूरा के सैनिकों का हत्याकांड, १९२० की सर्दियों में पोलिश व्हाइट्स का आतंकपूर्ण शासन, गुप्त पार्टी संगठन के क़ैदी सदस्यों की फांसी, जर्मनों का आगमन, इंजन की टीम द्वारा जर्मन सैनिक की हत्या अपनी आखों से देखी, या वे लोग जो अन्य प्रासंगिक घटनाओं में सामने आते हैं।

मैंने उन्हें वह अध्याय पढने को कहा जिनमें उनका जिक्र आता है, और उन्होने मेरे व्योरे की सत्यता का समर्थन किया है।

मेरी यही एक इच्छा थी कि मैं यह संस्मरण एक किताब के रूप में अपने तरुण युवकों के सामने रख पाऊं। मैं अपनी पुस्तक को न कहानी न कथा, और न उपन्यास कहकर पुकारता हूं। मैं इसे केवल 'अग्नि-दीक्षा' कहता हूं। मैं नीचे संक्षेप में अपनी जीवनी का विवरण दे रहा हूं।

मेरा जन्म सन् १९०४ में एक मजदूर के घर में हुआ। बारह बरस की उम्र में मैं काम करने निकला। शिक्षा – प्राथमिक। पेशा – बिजली के कारीगर का शागिर्द। १९१९ में युवा कम्युनिस्ट लीग में शामिल हुआ, और १९२४ में पार्टी में। गृह-युद्ध में लड़ा। १९१५ से

१९१९ तक रसोइया, गोदाम का मजदूर, बिजलीघर में कोयला झोंकनेवाले का सहायक इत्यादि काम किये। १९२१ में कीयेव के रेलवे वर्कशापों में काम किया। १९२२ में ईंधन की लकड़ी ढोने के लिए जो रेल की पटरी बिछाई गयी थी इसमें काम करनेवाले तूफानी दल के साथ काम किया। वहां सर्दी लग गयी और फिर मियादी बुखार हो गया। बड़ी देर तक बीमार पड़ा रहा। मैं ठीक तो हो गया, पर १९२३ के शुरू में स्वास्थ्य फिर बिगड़ गया, जिसके कारण शारीरिक काम करने की मनाही कर दी गयी। इसके स्थान पर सीमा प्रदेश में अन्य काम दिया गया। १९२३ में सैनिक टुकड़ी का कमिस्सार नियुक्त किया गया। अगले कुछ साल युवा कम्युनिस्ट लीग में जिला और क्षेत्र के मुख्य कार्यकर्ता के पद पर काम करता रहा। १९२७ में मेरी सेहत ने बिल्कुल जवाब दे दिया, और वर्षों के संघर्षमय जीवन से मैं बिल्कुल निचुड़ गया। इसलिए उक्रइनी लीग की केन्द्रीय समिति ने मुझे वापिस बुला लिया। मेरी बीमारी का इलाज करने और मुझे फिर से क्रियात्मक काम के योग्य बनाने की हर मुमकिन कोशिश की गयी है, पर अभी तक इसमें सफलता नहीं मिली। संगठन सम्बन्धी काम करने में असमर्थ होने के कारण मैं मार्क्सवादी अध्ययन मण्डलियों में तथा युवा पार्टी सदस्यों को सिखाने के लिए प्रचारक का काम करने लगा। यह काम मैंने बीमारी की हालत में किया। फिर एक और सदमा पहुंचा। मेरी नजर जाती रही। मुझे अध्ययन मण्डलियों को छोड़ना पड़ा। पिछला सारा साल मैंने अपनी किताब पर काम किया। शारीरिक रूप से मैं वह सब कुछ खो बैठा हूं जिसे कोई इनसान खो सकता है। जो बाक़ी बचा है, वह यौवन का अक्षत ओज है, और यह उन्मत्त कामना कि मैं अपनी पार्टी और अपने वर्ग के हित में किसी भी तरह उपयोगी सिद्ध हो सकूं। मेरी किताब और कुछ नहीं, बीती घटनाओं को साहित्यिक रूप में बताने का प्रयास मात्र है। लिखने की यह मेरी पहली कोशिश है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का सदस्य,
पार्टी-कार्ड नं० ०२८५९७३
निकोलाई अलेक्सेयेविच ओस्त्रोव्स्की।

'अग्नि-दीक्षा' कैसे लिखी गयी

जो काम मैंने इस उपन्यास पर किया उसकी चर्चा करने से पहले, मैं कुछ शब्द अपने बारे में कहना चाहता हूं।

गृह-युद्ध के तूफानी काल में और उसके कुछ वर्ष बाद मेरा स्वास्थ्य बुरी तरह गिर गया। पिछले कुछ वर्षों से मैं अपनी खाट से जुड़ा हुआ हूं। मैं बिल्कुल चल-फिर नही सकता। दो बरस पहले मेरी बाई आंख जाती रही। दाई पहले ही अन्धी हो चुकी थी। यह कहना गलत न था कि "ऐसी रुकावटो के होते हुए कोई आदमी काम नही कर सकता"।

और मुझे भी ऐसी जान पड़ता था कि अन्धा होने के कारण मैं कोई काम नही कर पाऊंगा। जिन विचारों तथा प्रभावों को अन्तःप्रेरणावश मैं कागज़ पर लिख डालना चाहता था, वे इतने विविध होते और उन्हे शब्दबद्ध करना इतना कठिन जान पड़ता कि मैं सोचता कि दूसरे के हाथों से लिखवाकर मैं उन्हे कहा तक व्यक्त कर पाऊंगा।

हाथ में क़लम पकड़कर मित्र को पत्र लिखना, अपनी भावनाओ तथा विचारो को अबाध और सशक्त रूप से व्यक्त करना आसान है। पर ज्यों ही आपको यह पत्र किसी तीसरे आदमी द्वारा लिखवाना पड़े तो पत्र मे सजीवता तथा आत्मीयता कहां रहेगी?

फिर भी, चूंकि मेरे लिए और कोई चारा न था, मैंने इस ढंग से काम करना शुरू कर दिया—अपनी किताब बोल बोलकर लिखवाने लगा, और बड़ी अधीरता से इन्तजार करने लगा कि इसका परिणाम कैसा निकलेगा। और अब जबकि किताब लिखी जा चुकी है, तो मैं भी पूरी आस्था के साथ अपने नेता का वह वाक्य दोहरा सकता हूं कि "कोई दुर्ग ऐसा नही है जिसे बोल्शेविक फ़तह न कर सकें।"

यह बात सर्वथा सत्य है, साथियो, इनसान कठिन से कठिन तथा कठोरतम परिस्थितियो में भी काम कर सकता है। कर ही नही सकता बल्कि उसे जरूर करना चाहिए, यदि परिस्थितियां बदल नही सकती।

इनसान यह काम कर सकता है यदि उसका संकल्प दृढ हो, वह दृढाग्रही हो, और यदि उसे कोई एकान्त जगह काम करने के लिए मिल सके। हा, एकान्त स्थान का होना जरूरी है। उसके बिना कोई ठोस काम नही हो सकता। यदि आपके साथ उसी कमरे में छः आदमी और

रहते हों और दो उनमें से ख़ासे चुलबुले नौजवान हों, और सब छ: के छ: निरन्तर बातें करते रहते हों, तो साहित्यिक काम क्या होगा?

पुस्तक की यथार्थ पृष्ठ-भूमि के अतिरिक्त मैं यहा कुछ एक अन्य बातो की भी चर्चा करूंगा जिनका कहानी के साथ कोई सम्बन्ध नही।

बहुत दिन पहले की बात है जब मुझे उन घटनाओं के बारे में लिखने की प्रेरणा मिली जो मेरी आंखों के सामने घटी थी, और जिनमे से कुछ एक में मैंने भाग भी लिया था। पर मैं उन दिनो युवा कम्युनिस्ट लीग का कार्यकर्ता था और संगठन सम्बन्धी काम मे व्यस्त रहता था। साथ ही इतने कठिन काम से कुछ डरता भी था।

मेरा पहला साहित्यिक प्रयास—और यह काम साहित्यिक न था, बल्कि घटनाओं का उल्लेख मात्र था—एक निबन्ध के रूप मे था जिसे मैंने एक और साथी के साथ मिलकर उस सम्पादक मण्डल के आग्रह पर लिखा था जो उक्रइना की युवक संस्थाओं का इतिहास तैयार कर रहा था। अतः यह पुस्तक ही मेरा पहला प्रयास है। पर इसकी तैयारी मे मैंने कई बरस ख़र्च किये। बीमार होने के कारण मेरे पास वक़्त बहुत था—जो मुझे पहले कभी न मिल पाता था। मैंने पढना शुरू कर दिया, बड़ी उत्सुकता और लालसा के साथ: मुझे मुद्दत से किताबो की भूख रही थी जिसे मैं अब शान्त करना चाहता था। हर बुराई मे कोई न कोई भलाई छिपी रहती है।

बीमारी के पहले साल मे मैंने पाठ्यक्रम की उन सब किताबों को अच्छी तरह से पढ़ लिया जो कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष के लिए निर्धारित है। साथ ही सोवियत लेखकों की रचनाओ से पूरी पूरी जानकारी प्राप्त करते हुए मैंने अपने अल्प साहित्यिक ज्ञान की पूर्ति करने की कोशिश की।

इस दीर्घ और व्यापक तैयारी के बिना मेरे लिए कुछ भी लिखना असम्भव होता।

मै चाहता था कि मजदूरों के बच्चों की एक टोली की कहानी लिखू—बचपन से लेकर उस समय तक जब वे पार्टी में दाख़िल होते है। मेरी इस कहानी का घटना-काल १६१५ से लेकर आज तक का है।

पार्टी तथा युवा लीग ने, जब से वे बने है, लाखों योग्य आदमी तैयार किये है जो आज पार्टी तथा अपने वर्ग की नि.स्वार्थ सेवा कर रहे है।

गृह-युद्ध के दिनों में वे लाल फ़ौज में लड़े, और उसके बाद, देश की आर्थिक दुरवस्था पर क़ाबू पाने के लिए संघर्ष किया। पुनःस्थापना के काल मे वे रचनात्मक श्रम में लगे रहे। और अब वे समाजवाद की स्थापना के पथ पर अग्रसर हैं, जिसकी प्रगति पिछले कुछ वर्षों में व्यापक हो उठी है। और इस संघर्ष से, इस प्रगति से, सर्वहारा साहित्य को अक्षय सामग्री मिलती है।

इन चीजों का लिखना अत्यन्त जरूरी है—उन लाखों-करोड़ों युवकों के लिए जो अब युवा कम्युनिस्ट लीग में शामिल हो रहे हैं; उस पीढ़ी के लिए जिसने मजदूर वर्ग के युवकों के उस गौरवमय संघर्ष को नही देखा और न ही उसमें भाग लिया है, जो उन्होंने अपने बुज़ुर्गों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर, हमारे जनतन्त्र को जीवित रखने के लिए किया।

मैंने लिखना शुरू किया। और फ़ौरन ही मैंने पहली भूल की: एक घटना को विना किसी प्रसंग के चुना और लिख डाला। इस तरह विना किसी क्रम के कहानी को लिखना शुरू किया।

इस अंश का प्रयोग नही हो पाया। उसे पुस्तक में कही भी नही रखा जा सकता था।

कुछ मुद्दत बाद मैंने 'लितेरतूर्नाया उचोबा' (साहित्यिक अध्ययन) पत्रिका में पढा कि कई लेखक अपनी पुस्तकों को अन्त से शुरू करते हैं, कई वार बीच मे से, और शुरू का हिस्सा सबसे आख़िर में लिखते हैं।

यह सब शायद सिद्धहस्त लेखकों के लिए ठीक होगा; पर शुरू करनेवालो को शुरू से ही लिखना चाहिए और स्थिरता के साथ अन्त तक लिखते चले जाना चाहिए। यह आगे चलकर उनके लिए अधिक लाभकारी होगा।

श्रावबोतेपेश* उक्रइना में एक छोटा-सा नगर है, जो पहले वोलिन प्रदेश में था। वह एक महत्वपूर्ण रेलवे जंकशन है। गृह-युद्ध के समय यहां कई वार क्रान्ति की फौजों और प्रतिक्रियावादियों के बीच मुठभेड़ हुई।

संघर्ष की उग्रता का अनुमान इसी एक बात से लगाया जा सकता है कि शेपेतोव्का ने (उलटा पढ़ो तो श्रावबोतेपेश) क़रीब करीब ३०

---

*श्रावबोतेपेश—'अग्नि-दीक्षा' में ओस्त्रोव्स्की शेपेतोव्का नगर का यह नाम रखना चाहता था।—सं०

बार हाथ बदले। मेरी पुस्तक में वर्णित लगभग सभी घटनाएं सच्ची हैं।

मुझे वह हत्याकाण्ड विशेषतया याद है जो इस नगर में कर्नल गोलुब के द्वारा हुआ। और मैं सोचता हूं कि इस क़त्लेग्राम को, जो यहूदी आबादी पर किया गया था, मैं बयान करने में सफल नहीं हुआ। मैं इतना कह सकता हूं कि जो पाशविक अत्याचार सचमुच हुआ वह मेरे ब्योरे में पूरी तरह नहीं आ पाया।

जर्मन सैनिक की हत्या और दण्ड देने के लिए भेजी गयी गाड़ी का रोक लेना बिल्कुल उसी वर्णन के अनुसार है जो मुझे इंजन के चालकों ने बताया। तीनों के तीनों व्यक्ति आज जिन्दा हैं, बोल्शेविक पार्टी के सदस्य हैं और उसी पुराने स्टेशन पर काम करनेवाले वीर-कामगारों में से हैं।

किसी एक या दूसरे चरित्र के बारे में लिखाते समय मैं पहले उसका चित्र अपने मन में बना लेता हूं। मेरी याददाश्त अच्छी है इसलिए मुझे इससे बड़ी सहायता मिलती है। आदमी तो मुझे कभी नहीं भूलते। दस बरस बीत जायें, फिर भी वे मुझे स्पष्ट याद रहेंगे। जो दृश्य मैं लिखाता हूं, उसकी रूप-रेखा अपने मन में बना लेता हूं, जिससे मैं उसे भली भांति देख सकू। वह हर वक़्त मेरी आंखों के सामने रहता है। जब वह मुझे नजर आना बन्द हो जाये तो मेरे लिए लिखाना भी असम्भव हो जाता है। मैं सोचता हूं कोई भी नया लेखक, दृश्य-चित्रण या चरित्र-चित्रण सजीवता से बयान नहीं कर सकता यदि वह उसे इस तरह अपनी कल्पना मे देखता न रहे। विचित्र बात यह है कि ऐसे चित्र मुझे सबसे अच्छे उस वक़्त नजर आते हैं जब मैं संगीत सुन रहा होता हूं। हां, संगीत कोमल और सुरीला होना चाहिए। वायलिन इस काम के लिए उत्कृष्ट है।

सेर्योजा की मृत्यु का दृश्य मैंने इसी तरह लिखा था। रेडियो पर उस समय 'कार्कोशिया की स्वरलहरी' बज रही थी। मैंने यह दृश्य लिखाया नहीं, स्वयं हाथ से लिखा।

नये लेखकों की सहायता के लिए तथा उन्हें सिखाने के लिए हमारे मुख्य लेखक पत्रिकाओं में जो लेख लिखते हैं, उनमें अधिक स्थान तो सिद्धान्त सम्बन्धी सामान्य प्रश्नों को दिया जाता है, पर उनके काम के क्रियात्मक, शैली सम्बन्धी पहलू या अध्याय-गठन इत्यादि पर कुछ भी नहीं लिखा जाता। इन चीजों को वे अनावश्यक और गौण समझते हैं।

पर यह ठीक नही। एक नये लेखक के लिए यह बड़ा ज़रूरी है कि उसे टक्नीक और विधि इत्यादि की जानकारी हो।

बहुत-सी शक्ति इसलिए जाया हो जाती है, कि नये लेखकों को उन चीज़ो को ढूढ़ना-खोजना पड़ता है जिन्हें अनुभवी लेखक कब के पा चुके होते हैं।

सब के सब लेखकों ने अपने साथ नोट-बुक रखने के महत्व के बारे मे लिखा है। वे बिल्कुल ठीक कहते हैं। कितने ही महत्वपूर्ण विचार तथा भावनाए इसलिए खो जाती हैं, कि उन्हे फ़ौरन उसी समय लिख नहीं लिया जाता। अन्य लोगों के माध्यम से लिखना कितना कठिन है, ऐसा होते हुए भी, मैंने भी एक नोट-बुक रखना शुरु कर दिया है। और उसका अभी से मुझे लाभ होने लगा है।

मेरी पुस्तक मे चरित्रों के अधिकांश नाम काल्पनिक हैं। प्योदोर ज़ुखराई, जिसके नाम का मैंने केवल पहला हिस्सा वैसे का वैसा रहने दिया है, गुबेर्निया चेका* का प्रधान नही था, बल्कि उसके एक विशेष विभाग का अध्यक्ष था। मैं नही जानता कि मैं कहा तक इस फ़ौलाद के बने बाल्टिक जहाजी तथा क्रान्तिकारी का चरित्र अंकित कर पाया हूं। हमारी पार्टी में ऐसे कामरेड मौजूद हैं जिन्हें कोई आंधी, कोई तूफ़ान रोक या गिरा नही सकता। कितने अद्भुत लोग है ये!

रिपोर्ट पेश करता हूं

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की सोची नगर समिति के सामने दी गयी रिपोर्ट तथा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर, १६ मई, १६३५

साथियो, युवा कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति ने सोवियत लेखकों से आग्रह किया है कि वे अपनी रचनाओं में आज के युवा क्रान्तिकारी का चित्रण करे। 'अग्नि-दीक्षा' उसी आदेश का परिणाम है। मध्ययुग से लेकर आज तक के विश्व-साहित्य पर ज़रा विचार कीजिये। आप देखेंगे

* चेका – क्रान्ति-विरोधियों के ख़िलाफ़ संघर्ष करनेवाली असाधारण कमीशन। – सं०

कि इस काल की उत्कृष्ट कृतियों में जिन युवकों का चित्रण मिलता है वे सब शासक वर्ग के युवक थे। पूंजीवादी साहित्य के महान लेखकों ने बड़े सजीव और सशक्त ढंग से अपने वर्ग के युवको को चित्रित किया है: उनके जीवन, उनके चरित्र-निर्माण, तथा उनकी आकांक्षाओं को। किस भांति उनकी सारी शिक्षा गौरव प्राप्ति के उद्देश्य से होती है; किस भांति वे पैतृक सम्पत्ति पाकर उसे और बढ़ाने की चेष्टा करते है, मजदूर वर्ग का ख़ून चूसने के साधनों को और भी विकसित करते हैं।

सोवियत लेखको के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि उन्हें अपनी रचनाओं मे आज के, सर्वहारा क्रान्ति के समय के क्रान्तिकारी को चित्रित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उन युवकों को जिन्होने अपने पिताओं के साथ सोवियत शासन की स्थापना के लिए संघर्ष किया, और जो आज समाजवाद के निर्माण में संलग्न है। ये वीर कितने विलक्षण और साहसी है! हमारे साहित्य मे ऐसे चरित्र (तरुण नायक) बहुत कम मिलते है। हमारा जीवन हमारी पुस्तकों से कही अधिक वीरतापूर्ण है।

मैं लेखक क्योंकर बन गया? बीमारी ने मुझे काम के लिए असमर्थ बना दिया था। मै अपने साथियों के बीच काम नही कर सकता था, चल-फिर नही सकता था, मेरी आखें नही थी। जीवन ने मेरे सामने एक काम रखा कि मैं किसी दूसरे साधन को अपनाऊं जिससे मैं बढ़ते सर्वहारा की पंक्तियों में फिर से स्थान पा सकू। लिखना एक ऐसा कार्य है जो उस वक़्त भी किया जा सकता है जब मनुष्य चल-फिर या देख तक न सकता हो।

लिखू तो क्या? मेरे साथियों ने कहा: "तुमने जो स्वयं देखा, जो अनुभव किया, उसी के बारे मे लिखो। उन लोगों के बारे मे लिखो जिन्हें तुम जानते हो, उस वातावरण को आंको, जिसमें तुम पले हो, उन लोगों के बारे मे लिखो जो पार्टी के झण्डे के नीचे, सोवियत शासन के लिए लड़े।" इस तरह यह 'अग्नि-दीक्षा' का पहला और मुख्य विषय बन गया। मैंने चार साल तक (१९३०–१९३४) उस पुस्तक पर काम किया। हमारे युवकों ने इसे पसन्द किया है, और मेरे लिए यह सबसे बड़ी ख़ुशी की बात है।

मै सोचता हूं कि एक बात मुझे स्पष्ट कर देनी चाहिए। पत्रिकाओं मे जो लेख छपते है उनमें मेरे उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' को बहुधा आत्म-

कथा – निकोलाई ओस्त्रोव्स्की की कहानी – बतलाया जाता है। यह ठीक तो है किन्तु पूर्णतया ठीक नही। कोई उपन्यास मुख्यतया कलात्मक रचना होती है। और उपन्यास के रूप में लिखते हुए मैंने लेखक के इस अधिकार का, कि वह अपनी कल्पना द्वारा जो चाहे लिख सकता है, उपयोग किया है। मेरा उपन्यास यथार्थ घटनाओं पर आधारित है, परन्तु वह कोई दस्तावेज नही। अगर उसे दस्तावेज बनाने का अभिप्राय होता तो वह किसी दूसरे ढंग से लिखा जाता। यह एक उपन्यास है, युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य, ओस्त्रोव्स्की की जीवन-कहानी नही। मेरे लिए यह बता देना जरूरी है ताकि कोई मेरी भर्त्सना न करे कि मुझमें बोल्शेविक विनम्रता नही है।

मैं यहा कहानी के बारे में और कुछ नही कहूंगा। आप सबने इसे पढ़ लिया है...

यह किताब रूसी, उक्रइनी, पोलिश तथा मर्दोवी भाषाओं में छप चुकी है। अब इसका अंग्रेजी, फ्रांसीसी और जर्मन भाषाओं में अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी लेखक संघ द्वारा अनुवाद किया जा रहा है और यह 'अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य' पत्रिका में भी छपेगी। इसका अनुवाद बेलोरूसी तथा सोवियत जातियों की कई अन्य भाषाओं में किया जा रहा है। १९३२ से १९३४ तक कुल ७०,००० प्रतियां छप चुकी हैं। १९३५ में बहुत-सी भाषाओं में इसकी कुल डेढ़ लाख प्रतियां छपेंगी।

आजकल मैं एक दूसरे उपन्यास 'तूफान के जाये' पर काम कर रहा हूं, जिसमें पोलिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध उक्रइना के सर्वहारा तथा किसानो का संघर्ष दिखाया जायेगा। काल: १९१८ का अन्तिम भाग तथा १९१९ का आरंभिक भाग होगा। इस पुस्तक में मेरा लक्ष्य अपने युवकों का शत्रु से परिचय कराना रहा है। अक्तूबर क्रान्ति के बाद अब एक नयी पीढ़ी सामने आ रही है। इस पीढ़ी के लोगों ने कभी कोई जमींदार या कारख़ानेदार या ज़ारशाही जेनदार्म नही देखा – कभी उन लोगों को नही देखा जिन्होने गैलीशिया तथा उक्रइना की धरती को मजदूरों के ख़ून से रंगा था।

अपनी इस नयी किताब में मैं इन ज़ालिमों को दिखाऊंगा, अतीत का यथार्थ चित्र पेश करूंगा। मैं यह काम अपने युवकों के लिए कर रहा हू, ताकि वे आनेवाली लड़ाइयों में – अगर लड़ाई हमपर लादी जाय – तो

पीछे न रहें। मैं यह किताब उन युवकों के लिए लिख रहा हूं जिनके भाग्य में अपनी सोवियत मातृभूमि की रक्षा के लिए शायद लड़ना लिखा हो—ताकि वे सशस्त्र होकर उन सब दुश्मनों को खदेड़ दें जो इसकी सीमाओं को लांघने का दुःसाहस करें।

"तूफ़ान के जाये' एक राजनीतिक उपन्यास है; इस कारण कठिनाइयां और भी बढ़ जाती है। १९१८-१९१९ मे उक्रइना और पोलैण्ड की राजनीतिक स्थिति, जब कि जनतन्त्र में आग लगी हुई थी और युद्ध-क्षेत्र हज़ारों मील तक फैला हुआ था, बड़ी जटिल थी, और उसे व्यक्त करने के लिए बड़ी मर्मज्ञता तथा सूक्ष्मता की जरूरत है। यह काम आसान नहीं। इसे ठीक तरह कर पाने के लिए गृह-युद्ध कालीन ऐतिहासिक अभिलेखों को पढ़ने की ज़रूरत है।

दुर्भाग्यवश यहां सोची में मैं इस सामग्री का उपयोग नही कर सकता। यह सामग्री केन्द्रीय अभिलेख-संग्रहालय में पड़ी है। इस समय केवल जो थोड़ा बहुत मेरे पास है, या जो कुछ मैंने पहले कही पढ़ा है, उसी के आधार पर मैं काम कर रहा हूं।

उपन्यास के अन्त में मेरा इरादा पोलिश व्हाइट्स की कीयेव में शिकस्त तथा उक्रइना से उनके निष्कासन का वर्णन करना है।

और उपन्यास की समाप्ति पहली घुड़सवार फ़ौज के विजय अभियान पर होगी।

यह ठीक है कि उस समय पोलैण्ड के सामन्तों का मटियामेट नहीं हो पाया था। वे बच निकले थे और जिसे वे स्वयं "विस्तुला का चमत्कार" कहते है, उसने उनकी रक्षा की थी। हम बोल्शेविक जानते हैं कि चमत्कार नही हुआ करते। और यदि इन सामन्तों ने फिर कोई शरारत शुरू की तो दोबारा कोई चमत्कार न होगा। यह हम विश्वास के साथ कह सकते है।

यह कहने की आवश्यकता नही कि मै पहले से ही अपने काम का ख़ाका बना लेता हूं। यह ठीक है कि यह कोई पंचवर्षीय योजना नहीं होती। इतना आगे तक देखने की मुझमें हिम्मत नही। मैं एक वक़्त में अपने जीवन के केवल एक ही साल का प्रोग्राम बना सकता हूं। मुझे आशा है कि मैं इस साल के अन्त तक, अपने नये उपन्यास का प्रथम भाग पूरा कर लूंगा। उसके बाद बाल प्रकाशन गृह के लिए 'पाव्का का

बचपन' नामक किताब, जो कि 'अग्नि-दीक्षा' की परिपूरक होगी, लिखने का इरादा रखता हूं। बालकों के लिए यह किताब लिखने में मुझे बडी प्रसन्नता होगी। उन्हें नयी नयी किताबें चाहिए। उनकी इस ज़रूरत की ओर ध्यान नही दिया जाता।

आप जानते है युवा कम्युनिस्ट लीग की उक्रइनी केन्द्रीय समिति ने 'अग्नि-दीक्षा' की एक बोलती फ़िल्म बनाने का निश्चय किया है। शीघ्र ही उक्रइनी स्टूडियो से साथियों की एक टोली पट-कथा पर मेरे साथ काम करने के लिए यहा आयेगी।

अपने साल भर का प्रोग्राम पूरा करने की मैं हर मुमकिन कोशिश करूंगा। नया उपन्यास 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका में छपेगा–यदि वह मजूर हुआ तो। 'मोलोदाया ग्वार्दिया' के ही प्रोत्साहन से मैंने साहित्यिक क्षेत्र मे पदार्पण किया था। और मेरे रचनात्मक कार्य में वह अब भी निरन्तर सहायता कर रही है।

पार्टी तथा युवा कम्युनिस्ट लीग की ओर से मुझे जो सहानुभूति प्राप्त हुई है, मैं उसके लिए भी अपना आभार प्रकट करना चाहता हूं। मेरे काम को आसान बनाने के लिए मुझे हर तरह की मदद की गयी है। इस सहानुभूति से मुझे नयी शक्ति मिलती है। इससे मैं पूर्णतया महसूस करने लगता हूं कि मैं फिर सैन्यपंक्ति में आ खड़ा हुआ हूं। मैं सच्चे दिल से कह सकता हूं कि मैं सुखी हूं। यह ठीक है कि डाक्टर लोग सोचते है कि मैं जल्दी ही अपनी 'आख़िरी छुट्टी' लेकर विदा हो जाऊंगा। पर उन्होने यह बात पाच साल पहले भी कही थी, पर ओस्त्रोव्स्की फिर भी पाच साल निकाल ही गया, और उसका पक्का इरादा है कि कम से कम तीन साल तो और निकालेगा ही...

मुझे सैंकड़ो ख़त युवा कम्युनिस्ट लीग की देश-व्यापी शाखाओं की ओर से आते है कि मै अपना संघर्ष जारी रखू। उनसे मेरी आत्मा को बल मिलता है, और मैं आलस्य मे अपना एक दिन भी खो देना पाप समझने लगता हूं।

२४ घण्टों मे मैं दस-बारह घण्टे काम करता हू। जीवन मे मुझे जल्दी जल्दी काम करना है।

बस मुझे इतना ही कहना है। अब मै आपके सवालों का जवाब देने के लिए तैयार हूं।

...रचनात्मक मोर्चे पर ऐसे काल आते है जब मैं गहरी उत्तेजना तथा तेजी से आगे बढ़ता हूं। उस समय मेरा सारा ध्यान लिखने पर केन्द्रित हो जाता है, कई कई हफ़्ते गुजर जाते हैं, जब मैं कुछ नही पढता – केवल अखबार देख पाता हूं। पर फिर, जब मेरे मन में जमी सामग्री कागज पर निकल चुकती है तो मेरा कार्यक्रम इसके उलटा चलने लगता है।

जितनी भी पत्रिकाएं छपती हैं, सब मेरे पास आती है। मैं 'बोल्शेविक' को तथा साहित्यिक आलोचना को नियमित रूप से पढ़ता हूं। मैं हर उस उपन्यास को पढ़ता हूं, जिसे किसी तरह की भी ख्याति प्राप्त होती है। हरेक चीज को जो छपकर निकलती है पढ़ना असम्भव है।

अपना नया उपन्यास शुरू करने से पहले मैंने आठ महीने तक अध्ययन किया। मैंने विश्व-साहित्य की मौलिक पुस्तकों को पढा। 'युद्ध और शान्ति', 'आन्ना करेनिना' और अन्य बहुत-सी पुस्तकों को मैंने बार बार पढ़ा है।

लेखकों की कांग्रेस ने मुझे राह दिखायी। विशेषकर गोर्की और कामरेड ज्दानोव के भाषणो ने। तीन सप्ताह हुए मुझे इस कांग्रेस का पूरा विवरण मिला है। मैं इसे दोबारा, बड़े ध्यान से, इसके एक एक ब्योरे को पढ़ूंगा।

मैं हर तरह से ख़ुश हूं। कमी है तो केवल स्वास्थ्य की। मैं प्रसन्न हूं, मेरा मानस स्वच्छ है, मैं सुखी हूं। इसमें बनावट की कोई बात नही।

जय जीवन!

लेनिन पदक की प्राप्ति पर दिया गया भाषण
सोची, २४ नवम्बर, १९३५

हमारे देश की क्रान्तिकारी सरकार ने मुझे एक महान पुरस्कार देने का निर्णय किया है। मैं इसके जवाब मे क्या कह सकता हूं? हमने सदा उन विलक्षण वीर पुरुषों, पुराने बोल्शेविकों, के आदर्श पर अपने को ढालने की कोशिश की है जो विषम लड़ाइयो में से हमारा नेतृत्व करते हुए आज हमें वहा तक ले आये है जहा हम समाजवाद की धरती पर सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे है। हम युवकों ने सदा उनका अनुसरण क

की कोशिश की। हम उन्हें पूजते थे। हम तन-मन से अपने नेताओं, अपने नायकों का अनुसरण करते थे। और जब बीमारी ने मुझे खाट पर ला पटका तो मैंने अपने गुरुओं, पुराने बोल्शेविकों को यह दिखाने के लिए अपना सब कुछ सौंप दिया कि नयी पीढ़ी के युवक कभी, किसी हालत में भी हार नही मानेंगे। मैंने अपनी बीमारी का मुकाबला किया। उसने मुझे तोड़ने की, सैन्यपंक्ति से मुझे बाहर निकालने की कोशिश की पर मैंने ललकारा – "हम हथियार डालनेवालों में नहीं हैं!" मुझे विश्वास था कि मैं विजयी होऊंगा। मैंने अपना काम जारी रखा क्योंकि हमारी पार्टी की संवेदनापूर्ण सहानुभूति मुझे प्राप्त थी। और आज मैं सोल्लास जीवन के आमने-सामने खड़ा हूं क्योंकि मैं फिर से सैन्यपंक्ति में पहुंच गया हूं।

केवल लेनिन की कम्युनिस्ट पार्टी ही हमें क्रान्ति के प्रति निःस्वार्थ प्रेम की शिक्षा दे सकती थी। मेरी यह कामना है कि हर युवक कामगार एक वीर योद्धा बने। इससे बढ़कर कोई ख़ुशी नही कि आदमी यह जान पाये कि वह अपने कामगार वर्ग तथा पार्टी का एक सच्चा सपूत है। मैं यह कह सकता हूं कि इससे भिन्न कुछ हो भी नहीं सकता। इस धरती के युवक कुछ और बन भी नही सकते, क्योंकि उनकी पीठ पर हमारा युवा देश है, अवस्था में केवल १८ वर्ष का, पर सुन्दर और तरुण, स्वस्थ और सशक्त। शत्रुओं से हमने अपने देश की रक्षा की। हमने उस निर्माण-कार्य में योग दिया जिससे वह आज इस स्थिति पर पहुंचा। और अब हम एक सुखमय जीवन में प्रवेश कर रहे हैं, और हमारे सामने एक गौरवमय भविष्य है, ऐसा गौरवमय कि उसकी प्राप्ति के संघर्ष में कोई भी हमे रोक नही सकता। इसलिए जैसा कि 'प्राव्दा' ने लिखा, अन्धा सैनिक अपनी जनता के बढ़ते क़दमों के साथ अपना क़दम मिलाये चलता जा रहा है।

जिस देश ने विश्व-क्रान्ति का झण्डा फहराया है, उस देश के जीवन का मैं अभिवादन करता हूं!

संघर्ष का अभिवादन करता हूं! इस महान देश के नौजवानो आगे बढ़ो!

अपनी इस अल्पवयस्का मातृभूमि के सच्चे सपूत बनो!

हमारी बलवती पार्टी, जो हमें कम्युनिज्म की ओर ले जा रही है, अमर रहे!

मेरे जीवन का सबसे सुखमय वर्ष

'इज़्वेस्तिया' अख़बार में प्रकाशित लेख

१ जनवरी, १९३६

अगर कोई मुझसे पूछे कि मेरे जीवन का सबसे सुखमय वर्ष कौनसा था, तो मैं कहूंगा: "१९३५"।

उस सैनिक की ख़ुशी का कोई ठिकाना नही जिसके संकल्प तथा निरन्तर उद्योग को उसके देश ने सराहा हो और जिसकी छाती पर, ऐन जहां दिल धड़कता है, लेनिन पदक चमक रहा हो!

१९३५ का साल मेरे लिए एक पूर्णता का साल था, जब मैंने अपने रचनात्मक काम का, अपने अध्ययन और विकास का, अपनी प्रगति का आरंभिक काल समाप्त किया।

आज जब मैं १९३६ का स्वागत करता हूं तो मेरे हृदय में आशाएं हैं, रचनात्मक आकांक्षाएं हैं और काम करने की असीम इच्छा हिलोरें ले रही है। इसी इच्छा से अनुप्राणित हो मैं मास्को आया हूं ताकि मैं राष्ट्रीय अभिलेख-संग्रहालय के निकट रह सकूं। अपने नये उपन्यास 'तूफ़ान के जाये' के नाते, मेरे लिए ऐसा करना नितान्त आवश्यक है।

२ जनवरी को, मास्को में काम करने का मेरा पहला दिन होगा। उस रोज़ मैं गृह-युद्ध सम्बन्धी अभिलेखों को पढ़ना शुरू कर दूंगा।

जब मैं मास्को में पहुंचा तो मेरे दिल में यह उत्कट इच्छा थी कि मैं फ़ौरन काम पर जुट जाऊं। मेरे आदरणीय डाक्टर-मित्रों को मुझे इस बात पर राज़ी करने में बड़ी कठिनाई हुई कि मैं कुछ दिन आराम कर लूं।

जब मैं अपने देश के उन महान वीरों, फ़ैक्टरियों तथा निर्माण-क्षेत्रों में काम करनेवाले उन बहादुर स्ताख़ानोवाइट कामगारों के उत्साहपूर्ण भाषण पढ़ता हूं, तो मैं उनकी भावनाओं को तन-मन से अंगीकार करने की चेष्टा करता हूं। ये भाषण श्रम-जनित उल्लास तथा गहरे सन्तोष से भरे होते हैं। मैं भी अक्सर ऐसी ही भावनाओं का अनुभव करता हूं जब दिन भर ख़ूब काम करने के बाद, रात को थककर, किन्तु प्रसन्नचित्त, पड़ते ही सो जाता हूं।

पिछले कुछ महीनों से मैं अपने नये उपन्यास पर बिल्कुल कोई

काम नही कर पाया। परिस्थितियों ने विवश कर दिया था कि काम को स्थगित कर दू। पर अब मैं फिर अपने नायकों की ओर लौट रहा हूं, फिर १६१६ की सर्दियों में, बरफ से ढके उक्रइना में लौट रहा हूं। मेरे सामने भट्टी मे कोयला झोंकनेवाला वह तरुण स्टोकर, आन्द्रेई प्ताख़ा, घुघराले सुनहरी बालों वाला, जीवन की तरह सजीव, खड़ा है। उसकी साहसपूर्ण भूरी आखें मेरी भर्त्सना करती हुई मुझे घूरे जा रही है—

"तुमने हमे धोखा दिया है, दोस्त। क्या तुम्हें असंख्य घोड़ों की टाप सुनाई नही दे रही? क्या अभी तक जंग में हमारे भेजे जाने का वक्त नही आया?"

और उसी के साथ, काली काली आंखों वाली सुन्दर ओलेस्या कोवाल्लो खड़ी है। मुझे ओलेस्या बहुत प्यारी लगती है। मैं जानता हूं कि वह एक दिन बड़ी अच्छी युवा कम्युनिस्ट बनेगी, और अपने बूढ़े पिता इंजन-चालक कोवाल्लो की सहायिका बनेगी जो गुप्त रूप में काम करनेवाला एक बोल्शेविक है।

मेरे युवा मित्रो, मैं तुम्हें वचन देता हूं कि अब तुमसे फिर कभी जुदा नही हूंगा।

युवा कम्युनिस्ट लीग की दसवीं कांग्रेस के सामने मेरी रिपोर्ट

यह लेख ७ जनवरी, १६३६ को, सोवियत संघ की लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग की दसवीं कांग्रेस की तैयारी के समय लिखा गया

यह कांग्रेस एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समय पर होने जा रही है, जब समाजवाद की इस धरती पर हमे अतुलनीय विजय और सफलताएं प्राप्त हुई हैं।

प्रत्येक नया साल हमारे जीवन में महान परिवर्तन ला रहा है। अतीत के साथ इसकी तुलना करके हम विस्मित रह जाते हैं। कितने विस्तृत पैमाने पर और कितनी शीघ्रता के साथ हम एक नया जीवन, नये सम्बन्ध, नयी संस्कृति, नयी राष्ट्रीय सम्पत्ति बनाते चले जा रहे हैं। आज हमारी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के हर क्षेत्र मे समाजवाद की जीत हो रही है, हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति बढ रही है। यह केवल सर्वहारा को सभी

विरोधी वर्ग-शक्तियों को कुचलने के बाद ही संभव हो सका है। शक्तिशाली स्ताख़ानोवाइट आन्दोलन, उन सब रूढ़िवादी मापदण्डों को तोड़कर, जो हमारी उत्पादन शक्तियों को रोके हुए थे, आज हमारे सामने श्रम-वीरता के उत्कृष्ट नमूने पेश कर रहा है। हमारी समूची जनता ज्ञान और संस्कृति के शिखर की ओर बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में हमारी पार्टी की सच्ची सहायक, युवा कम्युनिस्ट लीग के सामने बड़े महत्वपूर्ण और गंभीर सवाल है, जिनका हल करना लीग की दसवी कांग्रेस का कर्तव्य है।

हमारे देश के युवकों का प्रशिक्षण, उनका बोल्शेविक, कम्युनिस्ट प्रशिक्षण, लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग का एक बुनियादी काम है। इसलिए आज यदि हम प्रत्येक युवा लेखक से, जो लीग मे जन्मा है और इसी की पंक्तियों में जिसने शिक्षा ग्रहण की है, यह माग करे कि वह लीग की इस विजय-कांग्रेस के सामने इस सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट पेश करे तो यह सर्वथा उचित होगा।

मैं लीग की क्रान्तिकारी प्रथाओं का सच्चा अनुसरण करते हुए एक संक्षिप्त-सी रिपोर्ट पेश करूंगा जैसी कि युद्ध-क्षेत्र से भेजी जाती है।

आज मैं दसवी कांग्रेस का अभिवादन, एक क्रियाशील सदस्य के नाते, उसकी पंक्तियों में लड़नेवाले सैनिक के नाते कर रहा हूं। इससे मुझे हार्दिक सन्तोष मिलता है। लीग में रहकर ,लीग के लिए ही काम करते हुए मैं इस सत्कार योग्य सदस्यता का अधिकारी बन पाया हूं। इस समय जब यह कांग्रेस होने जा रही है, मैं अपने उपन्यास 'तूफान के जाये' पर काम कर रहा हूं। मैं सारा वक़्त अपने पात्रों के साथ रहता हूं। ये पात्र सोवियत सत्ता के युवा सैनिक है। मेरी आंखों के सामने गृह-युद्ध के दिनों की युवा कम्युनिस्ट लीग के चित्र घूमते रहते है। इन चित्रो का आज भी लीग के साथ अटूट सम्बन्ध है।

मैं इस इच्छा से प्रेरित होकर काम करता हूं कि मैं अपने युवा साथियों के सम्मुख उस जमाने का यथार्थ चित्रण कर सकूं जब कि मजदूर वर्ग के उत्कृष्ठ सपूत अपना ख़ून बहा रहे थे ताकि हमें आज की ख़ुशियां प्राप्त हो सकें, ताकि हमारा आज का जीवन सुन्दर और उल्लासपूर्ण हो सके। मेरे युवा साथियों ने ज़ार सरकार की राजनीतिक पुलिस का कोई आदमी नहीं देखा। मैं उन्हे वह संघर्ष दिखाना चाहता हूं जो हमें श्रमजीवी जनता के घोर शत्रुओं, शोषको और जेलरों के

विरुद्ध लड़ना पड़ा। उन सौभाग्यशाली युवकों को जो अक्तूबर क्रान्ति के दिनों में पैदा हुए, यह जानना चाहिए कि श्रमिक वर्ग ने किस भांति, कैसे विकट संघर्ष के बाद आजादी हासिल की। इस तथ्य को दिल में बिठाकर ही, समाजवाद की नयी पीढ़ी के युवक अपने बुजुर्गों के स्नेह के पात्र बन सकेंगे, और सशस्त्र डाकू फासिस्टों से अपनी मातृभूमि की रक्षा कर सकेंगे।

इस उपन्यास पर काम करते हुए मैं आज लीग के साथ घनिष्टतम संपर्क में हूं। मैं उसी नगर से लीग की उक्रइना कांग्रेस का प्रतिनिधि चुना गया हूं, जहा १७ बरस पहले मैं लीग का सदस्य बना था। मैं उसी कांग्रेस पर बोलने के लिए अपना भाषण तैयार कर रहा हूं, और मेरे भाषण का विषय आज के हमारे युवाजन होंगे।

हमें कैसे युवकों की जरूरत है? जिन्दगी की मांग आज उनसे बहुत कुछ है। हमारे क्रान्तिकारी देश के युवक अन्य पूंजीवादी देशों के युवकों से सर्वथा भिन्न हैं।

इन १८ वर्षों में, जब से लीग की नींव रखी गयी है, हम उनकी श्रेष्ठता को देख रहे हैं। उनका बाहरी रूप तथा सांस्कृतिक स्तर बदलता रहा है, पर वे अपने हृदय में सदैव क्रान्तिकारी सर्वहारा की श्रेष्ठतम परम्पराओं और महत्वाकांक्षाओं को लिये रहे हैं।

हर समय और स्थान पर युवा कम्युनिस्ट लीग के अग्रगामी युवकों के दिल में उन महत्वाकांक्षाओं की ज्वाला जलती रहती है, जिनकी चिंगारी उस समय सुलगी थी जब वे क्रान्ति-पथ पर उतरे थे। हम लीग के १९१७, १९१९ और १९२०, अर्थात् गृह-युद्ध काल के सदस्यों को भली भांति जानते हैं; हम पुनःस्थापना-काल, पुनर्निर्माण-काल तथा महान पंचवर्षीय योजनाओं के काल के लीग के सदस्यों को भी जानते हैं।

आज लीग के एक सदस्य में वे नये गुण नजर आते हैं, जिनसे आज के तथा पिछले युग की भिन्नता का पता चलता है। इन चन्द वर्षों में हमारे देश ने अत्यधिक प्रगति की है, और इसी के अनुसार समाज की मांग भी हमारे युवकों से बढ गयी है।

और यह मांग इतनी ही बड़ी है जितनी कि हमारी सफलताएं और हमारा भविष्य।

हम जब अपने युवको के बारे में सोचते हैं, तो उन्हें सबसे आगे लड़नेवाले योद्धाओं के रूप में देखते हैं; निर्माताओं के रूप में, संस्कृति तथा औद्योगिक विकास के शिखर तक पहुंचनेवालों के रूप मे; उत्साही,

प्रसन्नचित्त, ज्ञान की अमिट प्यास लिये हुए; कम्युनिस्ट सदाचार-नियमों का पालन करते हुए; और समाजवाद के महान आदर्श के लिए निःस्वार्थ आसक्ति लिये हुए।

हमारे युवकों के बारे में हमारी यह धारणा है, और इसी को मैं उक्रइनी लीग कांग्रेस के सम्मुख पेश करूंगा।

विशेषकर मैं इस सोवियत धरती की युवतियों का ज़िक्र करूंगा। कितनी भी कठिनाइयां इनके सामने क्यों न हों, ये किसी बात में भी अपने साथी युवकों से पीछे नहीं रहती हैं, कई एक बातों में तो वे उनसे भी आगे हैं।

मेरी संक्षिप्त रिपोर्ट समाप्त हुई।

मैं लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग की दसवीं कांग्रेस का, विजयी युवकों की कांग्रेस का अभिवादन करता हूं!

बोल्शेविक पार्टी, जिसने हमें शिक्षा दी, हमें वर्तमान स्थिति तक पहुंचाया, अमर रहे!

मेरे अपने नगर की युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों के नाम

उक्रइना की लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग के शेपेतोव्का क्षेत्र के सम्मेलन को भेजा गया अभिवादन-पत्र

प्रिय साथियो!

मेरी प्रबल इच्छा है कि आप मेरे दिल की धड़कन को सुन पायें, अपने युवा मित्रों के प्रति मेरे दिल की गहरी आसक्ति को महसूस कर पायें, और अपने हाथों में मेरे हाथ का मैत्रीपूर्ण स्पर्श अनुभव कर पायें। आप तक मेरा हार्दिक अभिवादन पहुंचे! मुझे इस बात का गर्व है कि शेपेतोव्का ज़िले ने मुझे क्षेत्र के सम्मेलन के लिए अपना एक सदस्य चुना है। मैं इस सम्मान और विश्वास के लिए आपका आभारी हूं!

मुझे खेद है कि मैं अपनी इन आन्तरिक भावनाओं को आपके मंच पर से व्यक्त करने में असमर्थ हूं। पर मैं आपके साथ हूं। मैं भी आप ही की तरह एक सैनिक हूं। मैं लीग की आगामी दसवीं कांग्रेस

मे एक सैनिक तथा लीग के एक सदस्य के नाते भाग लूंगा। मैं अब भी, अपने उस काम के आधार पर जो मैं लीग में रहकर लीग ही के लिए कर रहा हू अपने को लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग की सदस्यता के गौरवमय पद का अधिकारी कह सकता हूं। मेरे पार्टी-कार्ड के अन्दर एक दूसरा छोटा-सा कार्ड भी रखा है, मेरा लेनिनवादी लीग की सदस्यता का कार्ड, जो इस बात का साक्षी है कि मैंने अपना सारा जीवन लीग की सेवा में बिताया है और इसी कारण मैं इसे सावधानी के साथ सुरक्षित रखता हूं।

आज से १७ बरस पहले, १९१९ में, शेपेतोव्का में केवल हम पाच आदमी युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य थे। तब यह एक छोटी-सी टोली थी जिसे शेपेतोव्का की पार्टी-समिति तथा क्रान्तिकारी समिति ने संगठित किया था। मैंने इन पांचों व्यक्तियों के बारे में अपने उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' मे लिखा है। आज यहां सैकड़ों सदस्य हैं, सैकड़ों नही, हज़ारों। हमारी महान पार्टी के नेतृत्व मे लेनिनवादी लीग फली-फूली है और सुदृढ़ हो पायी है। नये तरुण सैनिक सामने आये हैं—जो उन दिनो बच्चे थे। नयी क्रान्तिकारी पीढ़ी के सैनिकों की संख्या बढ रही है जिन्होंने कम्युनिज्म के आदर्श पर अपने को न्योछावर कर रखा है और प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। शेपेतोव्का के पहले लीग-सदस्यों ने बड़ी वीरता से पोलिश सामन्तों, पेत्लूरा तथा हर तरह के डाकुओं और लुटेरो का मुकाबला किया। और लीग की दूसरी पीढ़ी के युवक, जिनका प्रतिनिधित्व आप करते हैं, उतनी ही वीरता से लड़ेंगे जितनी वीरता से पहली पीढ़ी लड़ी थी।

सीमाप्रान्तो मे लीग का विशेष उत्तरदायित्व है।

मेरी मनोकामना है कि हमारी पार्टी के सच्चे सहायक सदा जागरूक रहें!

मैत्रीपूर्ण अभिवादन, मेरे नगर के लीग-सदस्यो!

हमारा सुखी जीवन अमर रहे, जिसे हमने जनता के शत्रुओं के विरुद्ध विकट संघर्ष के बाद हासिल किया!

महान कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद जिसके नेतृत्व में हम विजयी हुए!

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की

मास्को, १ फरवरी, १९३६

लेखक के उंचे पद का गौरव बनाये रखें!

सोवियत संघ की लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग की दसवीं कांग्रेस में भाषण के लिए तैयार की गयी प्रस्थापनाएं

मास्को, १७ अप्रैल, १९३६

प्रिय साथियो, मैं बड़ी चिन्ता और व्यग्रता के साथ आपके सामने इस मंच पर उपस्थित हुआ हूं, क्योंकि मैं भी "मानवात्मा के शिल्पियों" की उसी टुकडी का सैनिक हूं जिसकी यहा इतनी कड़ी आलोचना की गयी है। आज हम एकत्रित होकर, जातियों के अपने शक्तिशाली संघ की नयी पौध का जब निरीक्षण करते है, तो हम क्या देख पाते है? आप स्वयं देख सकते है: जीवन पूरे वेग से आगे बढ़ रहा है। आजाद जनता, बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में नित नयी सफलताएं प्राप्त कर रही है। पर इस विजयी प्रगति मे "मानवात्मा के शिल्पियों" की टुकडी पीछे रह गयी है, और बिना लाग-लपेट के कह दू, कि उन महत्वपूर्ण कार्यों को जिनका उत्तरदायित्व इसपर था, निभा नहीं पायी। हम क्या देखते है? लड़ाई के मोर्चे पर साहसी योद्धाओ का एक दस्ता तीव्र गति से आगे बढ गया है। प्रगति-पथ पर ये कभी पीछे नही हटते। इनके हथियारो को कभी जंग नही लगता। अलेक्सान्द्र फदेयेव अपने लाल छापेमारो को साथ लिये मोर्चे पर जा पहुचे है; और शान्त दोन दरिया के किनारे किनारे शोलोखोव अपने कज़ाक-बोल्शेविकों को इकट्ठा कर रहे है; व्सेवोलोद विश्नेव्स्की अपने वाल्टिक के क्रान्तिकारी जहाजियों को लेकर समुद्री मोर्चे पर उतरे है; यानोव्स्की अपने 'घुड़सवारों' के साथ आगे बढ़कर हमारे सैनिकों की पंक्तियों में आ मिले है। हां, और इनके अतिरिक्त दस एक और अच्छे लड़ाकू भी है। सारा का सारा दस्ता यही कुछ है। पर बाकी लोग कहा है? हमारी टुकड़ी में तो लगभग ३,००० सैनिक है! हमारी टुकड़ी का कमाण्डर ऊंचे कद का, सफेद वालों वाला कमाण्डर—प्रसिद्ध और सम्मानप्राप्त, अपनी कला में सिद्धहस्त, अपनी मूछों पर हाथ फेरते हुए, धीरे से बड़े गंभीर लहजे मे कहता है: "इन घिसटनेवालों का . करूं? पीछे कहीं बैठे नाश्ता कर रहे होंगे—अगले दस्ते से कही ५० मील

होंगे। उनकी पाकशाला पीछे कहीं दलदल में धंस गयी है। मेरे पके बालों को ये लज्जित कर रहे है।"* यह मज़ाक़ है जरूर, मगर एक कड़वा मज़ाक़, इसमे सचाई कम नही।

हमारे युवाजनो मे जीवन के प्रति अनुराग है। वे ज्ञान, कला, संगीत के प्यासे है। वे आस लगाये बैठे हैं कि हमारे लेखक और कवि सुन्दर, उत्साहपूर्ण गीत लिखेंगे, जिनमे शब्द और संगीत दोनों हृदय की गहराइयो को छूनेवाले होंगे। वे सजीव, प्रेरणापूर्ण, सच्ची और कलात्मक पुस्तके मागते हैं। इस माग को पूरा करना हमारा गौरवपूर्ण कर्तव्य है। क्या सोवियत साहित्य में इतनी रचनात्मक योग्यता है कि वह इन मांगो को पूरा कर सके?

हा, है तो!

हमारी महत्वाकांक्षा सदा बनी रहे

किताबों की संख्या भले ही कम हो परन्तु वे अच्छी जरूर हों। हमारी आलमारियों मे घटिया पुस्तकों के लिए कोई स्थान नही है। किसी को भी यह अधिकार नही कि वह पाठकों का वक़्त जाया करे, ईमानदार श्रमिकों के अवकाश का हनन करे।

केवल वही आदमी किसी को कुछ सिखा सकता है जो स्वयं उससे अधिक जानता हो।

लेखक का यह कर्तव्य है कि वह पूंजीवाद के बचे-खुचे प्रभाव को जड़ो से उखाड़ फेंके जो अब तक लोगों के मस्तिष्क पर छाये हुए हैं।

---

*"मानवात्मा के शिल्पियों" की टुकड़ी वाक्याश से ओस्त्रोव्स्की का तात्पर्य सोवियत लेखकों के समूह से है। उसका संकेत अलेक्सान्द्र फ़देयेव की रचना 'पराजय', मिखाईल शोलोखोव की रचना 'शान्त दोन', यूरी यानोव्स्की की 'घुड़सवार', व्सेवोलोद विश्नेव्स्की की 'आशावादी दुःखान्त कथा' तथा 'क्रोन्स्टाड्ट के वीर' नामी उनकी फिल्म की पट-कथा की ओर है। पके बालों वाले, लेखकों की टुकड़ी के कमाण्डर से तात्पर्य मक्सीम गोर्की से है, जो सोवियत लेखक संघ के अध्यक्ष थे।—सं०

आज का हमारा पाठक एक कठोर और निर्मम आलोचक हो गया है। कोई भी उसे भूसा खिलाने की कोशिश न करे। जनता को बेवकूफ बनाना असम्भव है। इससे काम नही चलेगा। हमारा पाठक हमारी रचना मे जहां कही भी कोई वात झूठी, कुटिल या कृत्रिम देखेगा उसे फ़ौरन पकड़ लेगा। वह आपकी किताब अन्त तक पढ़ेगा भी नही, उसे फेंक देगा, उसकी निन्दा करेगा, और बाद में जिस किसी से बात करेगा, आपकी बुराई करेगा। और जब एक बार आप अपनी प्रतिष्ठा खो बैठे तो दोबारा वह मिलने की नही।

लेखक के ऊंचे पद को हमें सोवियत भूमि में ऊंचा ही बनाये रखना होगा। और यह केवल सच्चे श्रम, अथक परिश्रम, अपनी शक्ति के हर कण से–शारीरिक तथा नैतिक, अनवरत अध्ययन से, निर्माण-संघर्ष में स्वयं भाग लेने से ही सम्भव है, तभी लेखक सबसे आगे की पंक्ति में अपना स्थान बना सकता है। पिछली सफलताओं तथा ख्याति पर सन्तुष्ट होकर बैठ जाने से काम न चलेगा। हमारे देश के अग्रगामी लोग, स्ताख़ानोवपंथी, कभी अपनी सफलताओं से सन्तुष्ट होकर बैठ नहीं जाते। वे अपने वीरतापूर्ण काम द्वारा श्रम-क्षेत्र में अपना नेतृत्व बनाये रखते हैं। यह उनके लिए एक गौरव की बात हो गयी है। पर बहुत-से लेखक एक अच्छी किताब लिखने के बाद अपनी प्रशंसा से सन्तुष्ट हो बैठ जाते हैं। ज़िन्दगी की रफ़्तार तेज़ होती है। गतिहीनता को जीवन कभी क्षमा नही करता। और जीवन की गति ऐसे लेखकों को पीछे छोड़ जाती है। यही उनकी दु:खान्त कहानी बनती है।

ख्याति से "ख़तरा"

जब देश किसी युवा सैनिक की वीरतापूर्ण साधनाओं की प्रशंसा करता है, तो इसका यह मतलब नही कि वह अपने को इसका अधिकारी मानकर यथार्थ जीवन को भूल जाये। अपने देश की धरती पर तुम्हारे पांव मज़बूती से जमे होने चाहिएं। सामूहिकता में रहो। याद रखो कि सामूहिकता में ही तुमने शिक्षा पायी है। जिस दिन तुमने सामूहिकता को छोड़ दिया, समझ लेना कि तुम्हारा अन्त आ पहुंचा। विनम्रता

सैनिक का आभूषण है। दम्भ और उद्दण्डता पिछले पूंजीवादी युग की विरासत है। ये दोष व्यक्तिवाद से पैदा होते हैं। जितना ही कोई सैनिक विनम्र होगा, उतना ही आदरणीय होगा। और यह सत्य लेखकों पर भी पूर्णतया लागू होता है।

नयी भावनाएं

दोस्ती, ईमानदारी, सामूहिकता, मानवता—ये हमारे साथी हैं। साहस और बहादुरी की शिक्षा, क्रान्ति के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और शत्रु से घृणा—ये हैं हमारे नियम। जो दुश्मन हथियार लेकर हमारे देश में घुसेगा उसे यहां मौत और अपने सर्वनाश के अलावा कुछ नही मिलेगा। एक पूजीवादी फ़ौज का सैनिक जिसने अपने हथियार फेंक दिये हैं और लड़ना छोड़ दिया है, वह हमारा दुश्मन नही है। हम उसकी सहायता करेंगे जिससे उसका दिमाग़ साफ हो और वह अपनी बन्दूक अपने उत्पीड़को के विरुद्ध मोड़ सके। परन्तु वह शत्रु जो हथियार बाधे आयेगा, उसके प्रति हमारी घृणा की कोई सीमा न होगी। सशस्त्र संघर्ष में सोवियत भूमि के युवा सैनिक का केवल एक ही लक्ष्य, केवल एक ही आकांक्षा होती है—अपने दुश्मन का नाश। मातृभूमि के लिए प्रेम जो शत्रु के प्रति घृणा की आग में पड़कर कई गुना अधिक तीव्र हो चुका है—केवल ऐसा ही प्रेम हमें विजयी बना सकता है। और घृणा करने के लिए लोगों को अपना दुश्मन पहचानना चाहिए, उसकी निकृष्टता से, उसके कपट से और उसकी पाशविकता से परिचित होना चाहिए। और यह सब बताना लेखक का कर्तव्य है।

गोर्की की मृत्यु पर एक तार

इस गहरे सदमे से मेरी आत्मा कांप उठी है। गोर्की हमें छोड़कर चले गये। सोचते ही मन व्याकुल हो उठता है। वह कल हमारे बीच थे, सोचते-विचारते थे और हमारी मातृभूमि की, जिसके हित उन्होंने अपनी समस्त रचनात्मक प्रतिभा को पूर्णतः समर्पित कर दिया था, महान सफलताओं पर खुशियां मनाते थे। सोवियत साहित्य का उत्तरदायित्व

कितना बढ़ गया है, क्योंकि उसका संगठन-कर्ता और प्रेरक उसे छोड़कर चला गया है।

अलविदा, प्रिय गोर्की, हमारे स्नेह के अविस्मरणीय केन्द्रविन्दु!

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की

सोची, १९ जून, १९३६

एक भेंट

जो 'न्यूज़ क्रानिकल' के मास्को संवाददाता राडमैन को ३० सितम्बर, १९३६ को दी गयी

राडमैन: मेरा इरादा था कि मैं लंदन से लौटते ही आपसे मास्को मे मिलूगा। पर आप वहा नही थे। आप पहले ही सोची जा चुके थे।

ओस्त्रोव्स्की: जी, मैं १५ मई को मास्को से चला आया था।

राडमैन: आप गर्मियों मे कहा काम करते है?

ओस्त्रोव्स्की: यहां इस ओसारे के नीचे या वरामदे मे। दोनों स्थान ठण्डे और सामेदार हैं।

राडमैन: आप जानते हैं कि बाहरी देशो मे आजकल आपकी रचना बहुत प्रचलित है।

ओस्त्रोव्स्की: मैंने भी ऐसा ही सुना है। मेरी किताब का अनुवाद फ़्रांसीसी, डच और अंग्रेजी में हो रहा है। जो साथी हमारे सोवियत लेखकों की रचनाओं का अनुवाद करवाते हैं उन्होने किसी अंग्रेज प्रकाशक के साथ—मैं उसका नाम नही जानता—एक क़रार पर दस्तख़त भी कर दिये है।

राडमैन: 'गलैक्ज' होंगे शायद, या 'अनविन'।

ओस्त्रोव्स्की: अंग्रेजी संस्करण थोड़ा छोटा होगा। ५३ पन्ने कम होंगे। पर केवल व्यापारिक कारणों से, राजनीतिक कारणों से नही। तीन महीने से अनुवाद तैयार है, इसलिए उम्मीद है जल्दी ही पुस्तक प्रकाशित हो जायेगी। किताब चेक और जापानी भाषाओं मे निकल चुकी है। कनाडा में एक संस्करण तैयार हो रहा है। न्यूयार्क में वह पुस्तक दैनिक पत्र 'नोवी मीर' में, धारावाहिक रूप में, रूसी भाषा में प्रकाशित हो रही है।

राडमैन: मैंने कुछ ही दिन हुए 'अग्नि-दीक्षा' पढ़नी शुरू की,

और अभी अधिक नहीं पढ़ पाया। रूसी भाषा में पढ़ना मेरे लिए कठिन है। अंग्रेज़ी मे बहुत कम रूसी साहित्य अनूदित हुआ है।

ओस्त्रोव्स्की: ठीक है, केवल 'शान्त दोन' और 'अछूती भूमि की जुताई' का एक भाग, बस यही कुछ हुआ है। जब जापानी संस्करण निकला तो मैं हैरान रह गया क्योंकि वहां राजनीतिक पुलिस का सेंसर बहुत कड़ा है।

राडमैन: पर वह तो केवल उन चीज़ों के लिए जो राजनीतिक दृष्टिकोण से ख़तरनाक हों। यों जापान में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या काफ़ी है।

ओस्त्रोव्स्की: तो क्या 'अग्नि-दीक्षा' को आप ख़तरनाक नहीं समझते?

राडमैन: मैंने चूंकि बहुत कम पढ़ा है इसलिए कह नहीं सकता। पर मैं इतना जानता हूं कि बाहरी देशों में आपका व्यक्तित्व लोगों को बहुत प्रभावित करता है। किताब पर भी आपके व्यक्तित्व की छाप है-क्यों, क्या ऐसा नहीं है?

ओस्त्रोव्स्की: पहले पहल मैं बड़े ज़ोर से इस बात से इनकार करता रहा कि कहानी मेरे जीवन से ली गयी है। पर अब इससे इनकार करने की कोई ज़रूरत नहीं। किताब में जो लिखा है सच है, उसे किसी तरह भी अलंकृत करने की कोशिश नहीं की गयी। बात यह है कि इसे एक लेखक ने नहीं लिखा है। मैंने कभी एक पंक्ति भी इससे पहले नहीं लिखी थी। केवल यही नहीं कि मैं लेखक नहीं था, मेरा साहित्यिक काम से कभी कोई वास्ता न था, पत्रकारिता तक से नहीं। किताब एक भट्टी में कोयला झोंकनेवाले ने लिखी थी जो युवा कम्युनिस्ट लीग का कार्यकर्ता बन गया था। एक चीज़ जिसने मेरा पथ-निर्देश किया, वह था यह दृढ़-संकल्प कि मैं कभी भी कोई झूठी बात न कहूंगा। फिर, जब मैंने अपने जीवन की यह कहानी लिखनी शुरू की तो मैंने इसके प्रकाशन के बारे में कभी सोचा तक न था। पुस्तक युवा इतिहास सम्पादक मण्डल के लिए गृह-युद्ध के रेकार्ड के तौर पर लिखी गयी थी, साथ ही उसमे श्रमिक संस्थाओं के निर्माण तथा उक्रइना मे युवा कम्युनिस्ट लीग के शुरू के हालात दर्ज थे। पर साथियों का ख़याल था कि उसमें साहित्यिक गुण भी हैं। उपन्यास की दृष्टि से 'अग्नि-दीक्षा' मे बड़ी त्रुटियां है, जो कि

एक पेशेवर लेखक कभी नही होने देगा। उसमे बहुत-से प्रासंगिक चरित्र है, जो केवल एक या दो बार सामने आते है, बाद में उनका कही जिक्र नही मिलता। पर चूकि ये लोग यथार्थ जीवन में मौजूद थे इसलिए ये मेरी पुस्तक में भी आये। यदि मै उस पुस्तक को आज लिखता तो उसमें अधिक सन्तुलन होता और वह ज्यादा अच्छी लिखी जाती; पर वह अपना महत्व और आकर्षण खो बैठती। किताब मे वही लिखा गया है जो सचमुच हुआ, वह नहीं जो हो सकता था। वह सत्य के प्रति गंभीर निष्ठा के साथ लिखी गयी और यही उसका प्रधान गुण है। वह काल्पनिक रचना नही है, और वह उस तरह लिखी भी नही गयी जिस तरह उपन्यास लिखे जाते है। अब मैंने एक लेखक की तरह लिखना आरम्भ कर दिया है, ऐसे पात्रों का चित्रण करता हूं जिन्हें मैंने जीवन में नहीं देखा और ऐसी घटनाओं का वर्णन करता हूं जिनमे मैंने भाग नही लिया।

राडमैन: उस जगह पर जहां पावेल अपनी मां के पास घर लौटकर जाता है पढ़ते हुए मुझे रोमां रोलां की याद हो आई। आपने उसे अत्यधिक संक्षेप में लिखा है। वह उसका एक परिच्छेद बना डालते। लेकिन यह निहायत दिलचस्प है। और मैं, आप जानते हैं, बड़ा छिद्रान्वेषी पाठक हूं। उसे पढ़ते समय ऐसा भास होता है जैसे आप एक लेखक का निर्माण होता देख रहे हैं। न जाने 'तूफ़ान के जाये' कैसी रचना होगी।

ओस्त्रोव्स्की: वह मेरी पहली पुस्तक से भिन्न होगी—शैली मे भी और कथानक के गठन में भी। पाठक के लिए कहानी में आकर्षण होगा—शायद उसमें रोमानी ताना-बाना हो, शायद वह मन को छू ले, पर पुस्तक इतनी महत्वपूर्ण न होगी जितनी कि 'अग्नि-दीक्षा' थी। वह बिलकुल काल्पनिक होगी। न पात्र और न ही उनके काम वास्तविक होंगे। कलाकार का यह अधिकार है कि वह इतिहास के प्रवाह को दिखाये, बशर्ते कि उसे वह विकृत न करे।

राडमैन: 'अग्नि-दीक्षा' की कुल कितनी प्रतियां छपकर आयी है?

ओस्त्रोव्स्की: अब तक १५ लाख। पर इस साल कुछ और संस्करण निकलनेवाले हैं, और इनको मिलाकर प्रतियों की संख्या कुल साढ़े सत्तरह लाख या बीस लाख तक जा पहुंचेगी।

इन दो-तीन बरसों में इसके ५२ संस्करण निकल चुके हैं, जिनमें से ३६ तो इसी साल निकले हैं। जिस विस्तृत पैमाने पर हम प्रगति कर रहे हैं, यह उससे भी बढकर है। किताब ने लोगों के दिलों मे जगह पायी है, विशेष तौर पर युवकों के; क्योंकि साहित्यिक गुणों के साथ जिनके विना इसका तनिक भी प्रभाव न होता—इसमें गहरी सचाई है। जिन लोगों के वारे में मैंने इसमें लिखा था, यह उन तक जा पहुंची है, और उन्होने मुझे खत लिखे हैं। उनमें से किसी एक ने भी यह नही लिखा कि कही भी घटनाओं या चरित्रों को विकृत किया गया है।

सभी पात्र और वे सभी घटनाएं जिनमें उन्होने भाग लिया है, पूर्ण यथार्थता के साथ वयान किये गये हैं बिल्कुल वैसे ही जैसे वे घटे। उनके गुण और दोष, सुख और दुःख—सभी पहलू दिखाये गये हैं।

राडमैन : सच सच कहूं, जो वात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती है, वह है आपकी कम्युनिज़म के आदर्श के प्रति श्रद्धा। जीवन ने एक आदमी को एक ऐसी स्थिति में ला रखा है जहां वह क्रियात्मक काम नही कर सकता—न किसी कारखाने मे न फैक्टरी में। पर वह काम करने के और साधन ढूढ़ निकालता है। ऐसे आदमी के लिए दिल मे इज्जत होती है। इसी लिए मैं आपसे मिलना चाहता था। आप एक कुशल कलाकार हैं। साथ ही आपका जीवन लोगों को आपकी ही तरह काम करने तथा समाज के लिए उपयोगी बनने की प्रेरणा देता है। आपका आदर्श वाक्य कि "कभी हथियार नही डालेंगे" बहुत लोगों को आपके क़दमों पर चलने के लिए प्रोत्साहित करता है। क्या रोला आपसे मिलने आये थे?

ओस्त्रोव्स्की : जव वह मास्को मे आये तव मैं वहां पर नहीं था। पर मुझे आशा है कि अगली वार जव वह सोवियत संघ में पधारेंगे तो मैं उनसे मिल पाऊंगा।

राडमैन : मुझे यकीन है कि एक दिन आप पर एक ग्रन्थ लिखा जायेगा। वह समय अभी नही आया, पर विदेश मे अब भी लोग आपको जानते हैं। निस्सन्देह आप एक रोज़ अपना सम्पर्क बड़े बड़े लेखकों से बना पायेंगे। देश के वाहर भी आपकी ख्याति उसी तरह फैलेगी जिस तरह आज देश के अन्दर फैल रही है। पूंजीवादी लोग मनुष्य के साहस की बड़ी क़द्र करते हैं। आपके साहस को वोल्शेविज़म से प्रेरणा मिलती है।

पूंजीवादी यह जानने पर मजबूर हो जायेंगे कि बोल्शेविक साहस क्या चीज है और किस भांति पार्टी इसकी शिक्षा देती है। आपकी पुस्तक से वे उस आदमी के बारे में जान पायेंगे जिसे अपने देशवासियों का स्नेह प्राप्त हुआ, जिसका यहां की सरकार ने सम्मान किया और जो उसकी चिन्ता करती है।

ओस्त्रोव्स्की : कामरेड (इस शब्द से नाराज नही होना। जिस अर्थ में हम इसका प्रयोग करते है, उस अर्थ मे वह क्रान्ति के दिये हुए उत्कृष्ट शब्दो में एक है), मैं जानना चाहता हूं कि आपकी धारणाएं क्या है।

आप एक पूंजीवादी अख़बार के संवाददाता हैं। परन्तु – आप का निजी मत क्या है? अगर आपमे साहस है तो आप सच सच बतायेंगे।

राडमैन : पिछले पांच साल मे, जब से मैं मास्को मे हूं, मेरे बहुत-से कम्युनिस्ट दोस्त बने हैं, और मैं जानता हू कि वे मुझे अपना विश्वासपात्र समझते है। आपकी सरकार के विदेश-विभाग मे मुझे एक मित्र-पत्रकार समझा जाता है। 'न्यूज़ क्रानिकल' एक उदारतावादी अख़बार है। मैने अन्य कई एक अख़बारों मे काम करना इसलिए छोड़ दिया कि उनका रवैया सोवियत संघ के प्रति पक्षपातपूर्ण था। मैंने यहा काम करने का निश्चय इसलिए किया कि मै यहां रहना चाहता था, आपके देश के जीवन का अध्ययन करना चाहता था। मेरे मन में इस बारे में कोई संशय नही कि सभ्यता का आगामी रूप कम्युनिज्म होगा।

ओस्त्रोव्स्की : निस्सन्देह! पर पूंजीवादी देशों मे पत्रकार झूठ बोलने पर मजबूर किये जाते हैं। इतना ही नहीं, समूची राजनीतिक पार्टियां अपने सब कामों में झूठ बोलती हैं। अगर वे सच बोलें तो जनता उन्हें छोड़ देगी। मजबूर होकर वे हर तरह की चालें खेलती हैं, ताकि दोनों जनसमूहों – शासक समूह तथा श्रमिक समूह – का समर्थन उन्हें मिलता रहे।

हमारी पार्टी के ८० प्रतिशत सदस्य सर्वहारा में से हैं। वे ईमानदार श्रमजीवी हैं, और केवल उन्ही को शासन करने का अधिकार है। हमपर दोष लगाया जाता है कि हम कला की कृतियों का नाश कर रहे हैं। परन्तु आप स्वयं देख सकते हैं कि यह कितना नीच किस्म का लांछन है। कही पर भी कला इतनी सुरक्षित नही है जितनी कि हमारे देश मे। किस देश में शेक्सपीयर को उस शौक़ से पढ़ा जाता है जैसे कि इस

देश मे? ठीक है, हमारे श्रमजीवी उसे पढ़ते हैं, जिन्हें जाहिल कहा जाता है। और मानवता का प्रश्न? कहा जाता है कि हम तो यह शब्द ही भूल चुके हैं। कैसा घृणित झूठ है यह! सच तो यह है कि हमने अपने दुश्मनों के साथ इतना मानवोचित व्यवहार किया कि उसके कारण हमें स्वयं बहुत कष्ट झेलने पड़े। जिस जीवन की हम कल्पना करते हैं वह सारी मानवजाति के लिए है।

राडमैन: हां, यहां सोची में साफ़ नजर आ रहा है कि सरकार श्रमजीवियों के स्वास्थ्य तथा विश्राम के प्रति कितनी चिन्ताशील है।

ओस्त्रोव्स्की: यह तो अभी शुरूआत है। जब एक पहिया घूमने लगता है तो शुरू में ही उसकी रफ़्तार फ़ी मिनट १५०० चक्र नहीं हो सकती। वह धीरे धीरे बढ़ती है। पर क्या आपको वेल्स की रचना 'रूस पर अन्धकार के साये' याद है? वे मानते थे कि क्रेम्लिन मे स्वप्न देखनेवाले और रोमांसप्रेमी रहते हैं जो परियों की कहानियां बुनते फिरते हैं। अजीब बात है कि इतने योग्य तथा बुद्धिमान मनुष्य का दृष्टिकोण इतना सीमित हो। वह भविष्य के बारे में काल्पनिक कहानियां तो गढ़ता है और देखता है (विकृत रूप में) कि आज से १५०० साल बाद क्या होगा, लेकिन जो सचमुच आंखों के सामने हमारे देश में घट रहा है, उसकी ओर आंखें मूदे हुए है।

राडमैन: कम्युनिज्म के विषय पर पाश्चात्य देशों के विचारकों के साथ आजकल जो बहस चल रही है, उसमें रोलां और बारबूस जैसे व्यक्तियों के विचार सबसे बड़ा तर्क हैं। दुनिया जानती है कि आपके काम पूरे उतर रहे हैं। लिथुआनिया का एक प्रोफ़ेसर, कुछ दिन हुए, सोवियत संघ का दौरा करने आया, और उससे मैंने भेंट की। वह यहा बीस साल के बाद आया था। वह कहने लगा कि बाहर लोग यह समझते हैं कि एक बार निजी सम्पत्ति का ख़ात्मा कर देने के बाद यहा बोल्शेविक कभी भी कोई काम नही कर पायेंगे, क्योंकि काम के लिए कोई प्रेरणा न होगी। पर वास्तव मे उसने देखा कि सब काम हो रहे हैं। गाड़ियां चल रही हैं, होटल खुले हैं, इत्यादि। इसके अलावा उसने देखा कि बड़े विस्तृत पैमाने पर निर्माण-कार्य हो रहे हैं। उसने यह भी देखा कि जनता के सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा करने के लिए अत्यधिक काम हो रहा है। जब वह आया था तो उसका मन पक्षपात से भरा हुआ था, पर

जब वह गया तो इस विश्वास के साथ कि कम्युनिज्म एक बहुत बड़ी ताकत है। वह दर्शनशास्त्र और धर्म का अध्यापक है और उसे सोवियत संघ में नास्तिकता का होना बिल्कुल नापसन्द था। परन्तु वह कहने लगा कि कम्युनिस्ट ईसाइयत के सिद्धान्तों का अनुसरण करते हैं, और चाहे उन्हें पसन्द हो या नहीं ,वे अन्त में ईसाई बन जायेंगे।

ओस्त्रोव्स्की: हम कम्युनिस्ट भौतिकवादी हैं और हम जानते है कि मानवता के उत्पीड़न का यन्त्र कितना भयानक हो सकता है। वह यन्त्र अपना काम कर चुका है। वक़्त था जब पूंजीवाद ने सभ्यता के क्षेत्र में बड़ा रचनात्मक काम किया। शोषण पर आधारित होते हुए भी उसने सम्पत्ति की उपज को विस्तृत किया। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। पर आज क्या हो रहा है—तेल के कनस्तर और हज़ारों टन कॉफ़ी समुद्र में फेंक दी जाती है...इसे इसके अलावा और क्या कहेंगे कि यह विनाश के चिन्ह हैं, पूंजीवाद के अन्त के चिन्ह हैं। लक़वा पड़ने लगा है। अब केवल ताज़ा खून ही नया विकास, नयी रचना कर सकता है। पर उसे अब नया ख़ून नहीं मिल सकता। वह केवल कम्युनिज्म को ही मिल सकता है। कम्युनिज्म का अर्थ सकल विश्व का पुनर्जन्म है। और यह शासक वर्ग के लिए बड़ी भयावनी बात है। विदेशों में राजनीति की बागडोर उन लोगों के हाथ में है जिन्हें पागलख़ाने में होना चाहिए। एक भी पागल के हाथ में पिस्तौल आ जाये तो वह घातक हो सकती है; पर हम उन लोगों का क्या कहें जो करोड़ों मनुष्यों को, अपने सारे राष्ट्र को मौत के घाट उतारने पर तुले हुए हों, सारी दुनिया को ख़ून से रंगना चाहते हों? बाहर के लोग क्यों अभी तक यह समझने में असमर्थ हैं कि सोवियत संघ का लक्ष्य विनाश नहीं है?

राडमैन: अब वे समझने लगे हैं।

ओस्त्रोव्स्की: क्या सचमुच?

हिटलर और मुसोलिनी जैसे भयानक और घृणित डिक्टेटरों को इतिहास उन्हें कभी नहीं भूलेगा। और वह निकृष्ट राक्षस—पूंजीवादी पत्रकारिता। पत्रकार के लिए कैसी अजीब स्थिति है—या तो वह पैसे के लिए झूठ बोले, या नौकरी से हाथ धोये। अगर वह हृदय से ईमानदार है तो झूठ बोलने से इनकार कर देगा, पर अधिकांश दबाव में आ जाते हैं। वहां

अपने नाम को कलंक से बचाये रखना आसान नहीं। और यह कितनी भयानक ज़िन्दगी है। जब पत्रकार झूठ बोलते हैं तो वे जान-बूझ कर झूठ बोलते हैं। वे हमेशा जानते हैं कि सच क्या है, फिर भी धोखा देते हैं। यह वेश्यावृत्ति है। फासिस्ट भली भांति जानते हैं कि अच्छाई क्या है और कहा है। पर वे सारी अच्छाई का नाश केवल इसलिए कर देना चाहते हैं कि वे उससे घृणा करते हैं। और श्रमिकों के समूह के समूह उनकी पत्रिकाओं को पढ़ते हैं, और उनमें से बहुत से उनकी बातों को सच मान लेते हैं। सबसे बुरी बात तो यह है।

हम उस लड़ाई को अच्छा समझ सकते हैं जो खुली, सशस्त्र, ईमानदार है। मैं खुद सैनिक रहा हूं, और मैंने शत्रुओं की हत्या की है, और जब मैं लड़नेवालों का नायक था तो मैंने उन्हें इकट्ठे होकर लड़ने और मारने के लिए उकसाया भी था। पर मुझे याद नहीं कि मैंने कभी एक बार भी उस सैनिक को मार डालने का हुक्म दिया हो जिसने हथियार डाल दिये हों और आत्मसमर्पण कर दिया हो। ऐसे सैनिक इसके बाद दुश्मन नहीं रहते। क्या कारण है कि हमारे सैनिकों के दिल में, जो दस मिनट पहले इतनी दृढ़ता से उनके विरुद्ध लड़ रहे थे, उनके प्रति इतनी सहानुभूति उमड़ आयी? मैं अपने बारे में कह सकता हूं, कि मैंने तम्बाकू की आख़िरी चुटकी भी उनके हवाले कर दी। ऐसी भी घटनाएं हुई जहां कुछ आदमी जो पहले माखनो के थे और हाल ही में हमारी सैनिक-टुकड़ी में आये थे, फौजी क़ैदियों से बुरा सलूक करने लगे, परन्तु हमने फौरन उन्हें रोक दिया और उन्हें अपना दृष्टिकोण समझाया।

मैं अपने बारे में इतना कह सकता हूं कि मैं यदि कोई ऐसा काम करूं जिसे मैं जानता हूं कि गलत है, तो कोशिश करने पर भी मेरे मन में सन्तोष न होता। और आप जानते हैं—जिन सैनिकों को हमने कैद किया उन्हें अपना साथी बनाने में हमें प्रचारकों की ज़रूरत नहीं हुई। हमारे साथियों का वर्ताव प्रचार से कहीं अधिक उपयोगी होता था, जिससे उनकी आंखों के सामने वे झूठ खुलते थे जो उनके अफसरों ने उनके मन में भर रखे थे। पोज़नान के किसान जैसे कैदी फौरन ही समझ गये कि उन्हें किसी किस्म का ख़तरा नहीं और वे जल्दी ही हमारा पक्ष लेने लगे। पर

इसके विपरीत पोलिश अफसरों का बर्ताव लाल फ़ौज के कैदियों के साथ कितना भिन्न था! अपने को वे संस्कृति के रक्षक कहते हैं! कितनी अश्लील गालिया वे कैदियों को दिया करते थे, उनकी आंखें निकाल लेते, उन्हें घोर पीड़ा पहुंचाते, उनका अपमान करते। और पाश्चात्य देशों में पोलैण्ड को सभ्यता का रक्षक माना जाता था। मैंने स्वयं अपने सामने पोलिश अफ़सरों को कैदियो पर ज़ुल्म करते देखा। चूंकि यह सब बातें मेरे अनुभव की हैं, इनके बारे मे लिखने का मुझे पूरा पूरा हक़ है। यही कारण है कि मेरे हृदय में फ़ासिस्टों के विरुद्ध इतनी आग धधकती है।

मैं जानता हूं कि पूंजीवादी शोषण क्या चीज़ है। मै ग्यारह बरस का था जब मैंने मजदूरी शुरू की, और रोज तेरह घण्टे, कभी कभी पन्द्रह घण्टे भी काम करता था, और इसके बदले मे जो इनाम मिलता उसमें घूंसों की कमी न होती थी। घूंसे, इसलिए नही कि मेरा काम बुरा था, नहीं, मै सदा ईमानदारी से काम करता था, परन्तु इसलिए कि मुझसे इतना काम नही बन पाता था जितना कि मेरा मालिक मेरे शरीर में से निचोड़कर निकाल लेना चाहता था। यह रवैया शोषकों का कामगारों के प्रति दुनिया भर मे है। और वे मानवता के ढोल पीटते है! अपने घरों में वाग्नर और बीथोवन का संगीत सुनते है, और जिन लोगों को वे यातनाएं देते हैं उनकी हालत देखकर उनके मन को ज़रा भी ठेस नही लगती। उनका हित कामगारो पर किये गये अमानुषिक व्यवहार पर आधारित है, जिन्हे वे बड़ी घृणा से असभ्य कहकर पुकारते हैं। पर पूंजीवादी शोषण में एक कामगार सुसंस्कृत कैसे हो सकता है? क्या स्वयं शोषक ही उसे मध्ययुग मे नहीं धकेल देते?

हममे भी त्रुटियां है। पर हमारी त्रुटियां पुराने जीवन की विरासत हैं ...

राडमैन: आप किन त्रुटियों के बारे मे सोच रहे है?

ओस्त्रोव्स्की: एक तो यह कि हमारी ग्रामीण जनता पिछड़ी हुई है। हमारे गांवों में अब भी बहुत लोग रूढ़िवादी हैं। सदियों तक हमारे किसानों को पशुओं का सा जीवन बिताने पर मजबूर किया गया, ज्ञान के सब दरवाजे उनके लिए बन्द थे, जान-बूझकर उन्हें मूढ़ और अशिक्षित रखा जाता था। लोग केवल इंजील और शैतान के बारे में कहानिया पढ़ा करते थे। और जब अल्पसंख्यक जातियों का सवाल उठा, तो यह

नीति और भी दृढ़ता के साथ अपनायी गयी। अब यही पवार्दिनियाई जनतन्त्र अपनी उन मध्य-युगीन प्रथाओं, पद्धतियों और स्त्रियों के प्रति अमानुषिक व्यवहार को, जो अतीत के जीवन का अंग था, छोड़ पाया है। जातियों को एक दूसरी के विरुद्ध भड़काते रहना पूंजीवादी नीति का एक अंग है। हमारे लिए यह समझना आसान है कि पूंजीवादी, पीड़ित जनता के संगठन से क्यों इतना डरते हैं।

राडमैन: दो सप्ताह हुए लित्वीनोव से मेरी एक लम्बी भेंट हुई। उनका विश्वास है कि हिटलर सोवियत संघ के विरुद्ध जंग जल्दी छेड़ देना चाहता है, कि जंग जरूर होगी।

ओस्त्रोव्स्की: अक्तूबर के दिनों के बाद सब कुछ बदल गया है। ज़ार का रूस अब नही रहा। हमारी फ़ौज कभी किसी पराजित राष्ट्र पर जुल्म नही करेगी। और हमारी लाल फ़ौज के आदमी जानते हैं कि जर्मनी की जनता हमारी दुश्मन नही है... हम अन्त में विजयी होंगे, एक के बाद दूसरा नगर जीतेंगे, क्योंकि प्रतिक्रियावादी फ़ौजों के विरुद्ध क्रान्तिकारी फ़ौजों की सदैव जीत होती रही है। संघर्ष बहुत कड़ा होगा। हिटलर ने राष्ट्रीय अपमान की भावना का पूरा पूरा लाभ उठाया है, उसका उपयोग करते हुए उग्र राष्ट्रीयतावाद को उभारा है। यह एक बड़ी भयानक बात है। यहां, हमारे संघ में, १६८ पृथक् जातियां हैं—फिर भी हमारे लोगों में सच्चा भ्रातृभाव है। बीस बरस पहले मैंने स्वयं यहूदियों के साथ बहुत ही बुरा वर्ताव होते देखा था। आज वे बातें असंभव, अविश्वसनीय जान पड़ती हैं। लाल फ़ौज, अपने सैनिकों के प्रशिक्षण के वक़्त, राजनीतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देती है। १६२३ तक मैं स्वयं एक दस्ते का कमिसार था। पोलैण्डवालों की ही मिसाल लीजिये। हम कभी उन्हें अपना दुश्मन कहकर नही पुकार सकते थे। यह एक जुर्म समझा जाता था। वे हमारे मित्र हैं, केवल बन्दी और गुलाम हैं। हर जगह उत्पीड़न और जुल्म एक से नहीं। एक जगह फासिस्टवाद है दूसरी जगह प्रजातन्त्रवाद, और हम उन्हें एक स्तर पर नही देखते, हालांकि दोनों में पूंजीवाद का शासन है... फ़ासिस्टवाद जर्मनी और इटली की प्रत्येक सुन्दर, श्रेष्ठ तथा सच्ची वस्तु का नाश कर देना चाहता है। और अगर उसने हमें लड़ने पर मजबूर किया तो हम आगे बढ़कर हमला करके लड़ेंगे, क्योंकि विजय उन्ही की होती है जो आगे बढ़के लड़ते हैं। पर

हम अपनी फ़ौज का प्रशिक्षण बिल्कुल किसी आक्रमण की भावना से नही करते। और एक बात: लड़ाई के मैदान में फ़ासिस्टों की भले ही कैसी भी स्थिति हो, लड़ाई के मैदान के पीछे उन्हें कभी चैन से बैठना नही मिलेगा।

राडमैन: निस्सन्देह! छोटे छोटे लड़कों और बच्चों तक को मालूम है कि फ़ासिस्टवाद क्या है।

ओस्त्रोव्स्की: इसके विपरीत, जहां, जिस इलाक़े पर भी हमारा अधिकार हुआ, वहां महीने भर के अन्दर हमारे मित्र बनने लगेंगे। हमारा अनुशासन फ़ौलादी अनुशासन है, हमारी फ़ौज कभी कही भी ज्यादती नहीं करेगी। गृह-युद्ध में हमें जगह जगह, जहा भी व्हाइट अधिकारी रह चुके थे फासियों और हत्याकाण्डो के निशान मिलते, और उन्हें देखकर हमारे आदमियों में बदला लेने की भावना भड़क उठती। पर हमने कभी उन्हें निरस्त्र जनता के विरुद्ध नहीं लड़ने दिया। कभी भी कमिसारों के द्वारा अमानुषिक कार्रवाइयां नही हुई। हमारे आदमियों ने अपने लाल झण्डे का गौरव सदैव बनाये रखा।

राडमैन: ठीक है, आपके मित्र हर जगह, बड़ी संख्या में है। मै यह समझता हूं और जानता हूं। और निर्णायक काल में पूजीवादी तथा निम्न पूंजीवादी बुद्धिजीवी आपकी तरफ़ हो जायेंगे। मुझे विश्वास है, कि उस समय इंगलैण्ड, अमेरिका तथा फ़ांस के मज़दूरों की यही हार्दिक इच्छा होगी कि वे सोवियत संघ की सहायता करे। इतिहास का चक्र बड़ी धीमी रफ़्तार से चलता है पर आज जिस तेज़ी से वह चलने लगा है, वैसा पहले कभी नही चला।

ओस्त्रोव्स्की: आपके साथ इस तरह का वार्तालाप मेरे लिए विशेषतया रुचिकर है। बाहर क्या हो रहा है? विशेषकर आपके सहकर्मी पत्रकार, जो सचाई से परिचित है, जो यथार्थ स्थिति को जानते है, क्या सोचते है? उनकी सहानुभूति किसके साथ है? मै इस समय अंग्रेज़ी पूंजीवादियों के प्रमुख पत्रकारों के बारे में सोच रहा हूं। आप मेरा मतलब समझते हैं—मै एक लेखक के नाते यह पूछ रहा हूं।

राडमैन: अधिकांश प्रमुख व्यक्ति तथा प्रमुख पत्रकार फ़ासिस्ट है। आप जानते है जिस वर्ग में मनुष्य पैदा हुआ हो उसका गहरा प्रभाव होता है। उनमें से लगभग सभी पत्रकार पूंजीवादी वर्ग मे से आये हैं।

ग्रौर यह भय कि उनके हाथ से ग्रच्छी ग्रच्छी नौकरियां ग्रौर बड़ी बड़ी तनख़ाहें निकल जायेंगी, उन्हें फ़ासिस्ट बनाये हुए है। पर बहुत-से ऐसे भी हैं जो सचमुच यह समझ नहीं पा रहे कि क्या हो रहा है। ग्राप लोग इस बात को बडा महत्व देते हैं कि कौन ग्रादमी किस वर्ग से ग्राया है। ग्रौर यह बिल्कुल ठीक भी है। यह चीज़ ग्रादमी का जीवन-पथ निर्धारित करती है।

ग्रोस्त्रोव्स्की : इंगलैंड एक ग्रजीब नीति का ग्रनुसरण कर रहा है। मैं केवल दोष निकालने के लिए यह नही कह रहा हूं। उसके राजनीतिक व्यवहार में स्पष्टता नही। कुछ मालूम नही पड़ता कि वह कल क्या करेगा – किस दिशा में वह घूम जायेगा ग्रौर किसका साथ देगा।

राडमैन : कुछ मुद्दत हुई मैं 'ग्रावज़र्वर' के प्रकाशक गार्विन से मिला था। उस पत्र के लिए मैं ग्रपना साप्ताहिक लेख लिखता हूं। हम छः घण्टे से ज्यादा तक बातें करते रहे। गार्विन लार्ड ऐस्टर ग्रौर गोल्डविन के साथ गहरे सम्पर्क में है, ग्रौर इंगलैंड की नीति के हर पहलू से ग्रच्छी जानकारी रखता है। मैंने उसे बड़ी तफ़सील के साथ बताया कि सोवियत उक्रइना में क्या हो रहा है: सामूहीकरण, ग्रौर लोगो में विशाल स्तर पर संस्कृति तथा शिक्षा का विकास। वह कहता है कि एक पत्रकार को ईमानदार होना चाहिए ग्रौर वही लिखना चाहिए जो वह महसूस करता है। पर मैं देखता हूं कि 'ग्रावज़र्वर' को भेजे गये मेरे लेखों की छपने से पहले ऐसी काट-छांट कर दी जाती है, कि मैं जो कुछ कहना चाहता हूं उसका कुछ भी नही रह जाता ग्रौर पाठक को सोवियत संघ का यथार्थ ज्ञान कुछ भी नही हो सकता। हां, जब मैंने उसे बतलाया कि मैंने उक्रइना मे क्या कुछ देखा, तो वह बोला कि ठीक है, बोल्शेविकों ने बहुत कुछ किया है, पर जर्मन नेतृत्व में ग्रौर भी ज्यादा हो सकता है। वह हिटलर का समर्थक है। ग्रौर वह ग्रकेला ही नही।

ग्रोस्त्रोव्स्की : पूंजीवादी ग्रखबारों के पढ़नेवाले क़लम के लुटेरों के शिकार बने हुए हैं। दिन प्रतिदिन उन ग्रख़बारो में सोवियत संघ को बदनाम किया जाता है – ग्रौर ग्रन्त में पाठक उनकी बातों पर विश्वास करने लगता है। ग्रखबारों में लिखनेवाले सचाई को जानते हैं। वे सबसे पहले जंग के ख़तरे को भांप लेते हैं। वे दुनिया भर में शक्तियों के ग्रापसी सम्बन्ध को जानते हैं। उन्हें रुककर थोड़ा सोचना चाहिए कि वे कैसा काम कर रहे हैं, ग्रौर किधर जा रहे हैं।

राइमंन : मेरे लिए यह सवाल कब का निर्धारित हो चुका है। इंगलैंड और अमेरिका दोनों में कम्युनिस्ट पार्टी ताक़त पकड़ रही है, और बहुत-से पत्रकार उसमें शामिल होने लगे हैं।

ओस्त्रोव्स्की : इससे आदमी की आगे की ज़िन्दगी निर्धारित होती है। उसका जीवन व्यापक आन्दोलन के साथ एकरूप हो जाता है। पत्रकारों में कई अच्छे ईमानदार आदमी मौजूद हैं। और यदि दस में से एक भी शोषकों का साथ छोड़ दे, और उसका दिल कलुषित न हो पाये, तो यह बड़ी ख़ुशी की बात है...

एक साझा लक्ष्य, एक साझा संघर्ष मनुष्य को कठिनाइयों पर क़ाबू पाने का साहस देता है। पिछले आठ साल से न मैं हिल-डुल सकता हूं न कुछ देख सकता हूं। आप नहीं जानते, आप समझ भी नहीं सकते कि यह कितनी विकट स्थिति है जब मनुष्य चल-फिर तक न सके। यह सबसे मुश्किल बात है, उस आदमी के लिए भी जो बिल्कुल स्वस्थ है, जिसका शरीर पीड़ा और यातना से मुक्त है। और क्या कहूं, आदमी तो सोते हुए भी चलता है।

राइमंन : मुझे बताइये—यदि आपके सामने कम्युनिज़म का लक्ष्य न होता, तो क्या आप अपनी स्थिति को उस तरह बरदाश्त कर पाते, जैसा कि अब कर रहे हैं?

ओस्त्रोव्स्की : कभी नहीं! अब मेरा निजी दुर्भाग्य मेरे लिए गौण हो गया है। और यह समझना मुश्किल नहीं... यदि इनसान के पास-पड़ोस की ज़िन्दगी भयावनी और उदास हो, तो वह अपने निजी सुख की शरण लेता है। उसकी ख़ुशी सारी की सारी अपने परिवार में केन्द्रित रहती है—अर्थात् केवल व्यक्तिगत रुचियों के घेरे में रहती है। जब ऐसा हो, तो कोई भी निजी दुर्भाग्य (जैसे बीमारी, नौकरी छूट जाना इत्यादि) उसके जीवन में विषम संकट पैदा कर देता है। उस आदमी के लिए जीवन का कोई लक्ष्य नहीं रहता। वह एक मोमबत्ती की तरह बुझ जाता है। उसके सामने कोई लक्ष्य नहीं जिसके लिए वह प्रयास करे, क्योंकि उसके लक्ष्य केवल निजी ज़िन्दगी तक सीमित होते हैं। उसके बाहर, उसके घर की चारदीवारी के बाहर, एक क्रूर जगत् बस रहा होता है जिसमें सभी दुश्मन हैं। पूंजीवाद जान-बूझकर शत्रुता और विरोधभाव का पोषण करता है। वह भयाकुल रहता है कि कहीं काम करनेवाले लोग

एका न कर लें। इसके विपरीत हमारी पार्टी सहचारिता और गहरी मैत्री की भावना को प्रोत्साहित करती है। और इससे, इस भावना से कि वह मित्र-समूह का एक अंग है, हर इनसान को असीम नैतिक बल मिलता है।

मैंने जिन्दगी की सबसे क़ीमती चीज खो दी है—जिन्दगी को देखने की क्षमता। इसके बदले में मुझे मिली है असीम पीड़ा, जो क्षण भर के लिए भी मुझे चैन नही लेने देती। इसने मेरी संकल्प-शक्ति की भयानक परीक्षा ली है, क्योंकि, सच मानिये, अगर मैं अपनी पीड़ा की सोचने लगू तो मैं पागल हो जाऊं। मेरे मन में सवाल उठा: क्या मैंने वह सब काम कर लिया है जो मैं अपनी शक्ति के अनुसार कर सकता था? मेरा मन साफ़ है। मैंने ईमानदारी से जिन्दगी गुजारी है, संघर्ष में अपना सब कुछ होम किया है। और मेरे सामने है अंधेरी काली रात, और अनवरत पीड़ा। मैं किसी भी शारीरिक सुख का अनुभव नही कर सकता। ख्राक तक लेना मेरे लिए घोर यातना होती है। ऐसी स्थिति में आदमी क्या करे?

पर पार्टी हममें एक पवित्र उत्तरदायित्व की भावना का पोषण करती है: कि जब तक जीवन का टिमटिमाता चिराग बुझ नही जाता, संघर्ष किये जाओ। एक हमले की मिसाल दूं। एक सैनिक जख़मी होकर गिर पड़ता है, उसे सबसे अधिक दर्द इस बात से होता है कि वह संघर्ष में अपने साथियों की मदद नही कर सकता। हममें जिन आदमियों को छोटे-मोटे ज़ख़म आते भी थे तो वे कभी मोर्चे को छोड़कर नही जाते थे। एक दस्ता आगे बढ़ता चला जा रहा है। उसमें से बीस एक सैनिको के सिरों पर पट्टियां बंधी हैं। इस प्रथा का जन्म हमारे संघर्ष मे से हुआ था। यह गर्व की भावना हमारी शिक्षा का अंग थी। बाहरी देशों मे हर तरह के भूस्वामी और सामन्त अपने अपने वंश की प्राचीनता पर गर्व करते हैं। हम सर्वहारा का भी अपना गर्व है। और अब जब कोई साथी यह याद करे कि वह किसी जमाने में भट्टी में कोयला झोंकनेवाला था तो यह याद करते हुए उसका दिल गर्व से भर उठता है। जिस दुनिया में आप रहते उसमें इसका कोई महत्व नहीं। वहा मजदूरों की कोई हैसियत नही...

मैं बड़े गर्वीले स्वभाव का व्यक्ति रहा हूं। मैंने कभी किसी दुर्भाग्य को चुपचाप सहन नही किया, न ही कभी किसी को अपना अपमान करने

दिया है। मुझे कभी कोई अपना दास नही बना सका। मै पन्द्रह पन्द्रह, अठारह अठारह घण्टे दिन में काम करता रहा—और मै ईमानदारी से काम करता था, कभी किसी यन्त्र को बिगाड़ता नही था। पर जो कोई मुझपर हाथ उठाता तो मै लड़ पड़ता। 'अग्नि-दीक्षा' मेरे ही जीवन की समूची कहानी है, जो क्रमशः एक साल के बाद दूसरे साल की घटनाएं सुनाती है।

राडमैन: बताइये ,पाश्चात्य लेखको में कौन कौन से प्रमुख लेखकों से आपकी भेंट हुई है?

ओस्त्रोव्स्की: मैंने हाल ही में लिखना शुरू किया है, और केवल अभी अभी मेरी किताब इतनी अधिक संख्या में छपने लगी है। जब मै मास्को लौटकर जाऊंगा तो विदेशों के कई लेखकों के साथ बहुत बार बातचीत होगी। और विशेषकर—रोला के साथ।

राडमैन: आपको लेनिन पदक कब मिला?

ओस्त्रोव्स्की: उसे मिले कल पूरा एक साल हो जायेगा।

राडमैन: क्या यह सच है कि पुस्तक की पहली पाण्डुलिपि खो गयी थी?

ओस्त्रोव्स्की: हां, और मैंने उसपर किस क़दर काम किया था! मुझे इन बातों का कोई अनुभव न था, इसलिए मैंने वही कापी भेज दी जो मेरे पास थी।

राडमैन: आप मास्को में, कहा पर ठहरेंगे?

ओस्त्रोव्स्की: मेरे पास वहां, शहर के ऐन मध्य में, फ़्लैट है। इसलिए मैं अपने साथियों से दूर नही होऊंगा। पर बहुतों को मालूम नही कि वह कहां पर है। आप जानते है कि देश के युवको में मेरे लिए एक गहरी भावना उमड़ आयी है, और युवा लोग मुझे मिलने के लिए बड़े उत्सुक है। पर मुझमे इतनी ताक़त नही कि मिलनेवाले १०० आदमियों में से १० को भी मिल पाऊं।

राडमैन: यहां सोची में आप कैसे मिलनेवालों से अपने को बचाये रखते है?

ओस्त्रोव्स्की: साथियों ने कहा कि वे यहां एक चौकी बिठायेंगे। पर मै यह सुनना भी गवारा न कर सकता था। अगर मै स्वयं हर एक को नहीं मिल सकता तो कम से कम मेरा घर तो सब के लिए खुला

होना चाहिए। युवक आयें और बेशक आकर देखें कि यह सदा प्रसन्नचित, साहसी आदमी कैसे रहता है। मैं अपने पाठकों से अपने आपको कैसे छिपाये रख सकता हूं?

राडमैन: आप पढ़ते क्या हैं?

ओस्त्रोव्स्की: सभी मुख्य अख़बार और सर्वश्रेष्ठ उपन्यास। मेरे लिए पढ़ना जरूरी है। जीवन प्रगति कर रहा है, और मैं पीछे पीछे घिसट नही सकता। पठन-पाठन मे दिन के वहुत से घण्टे व्यतीत होते है।

राडमैन: और आपका स्वास्थ्य?

ओस्त्रोव्स्की: अगर आप मेरे डाक्टर से पूछें तो वह कहेगा: "पिछले तीस वरस से मैं केवल उसी आदमी को वीमार समझता रहा हू जो अपने को वीमार वतलाता था। पर यह आदमी विचित्र है। किसी को मालूम नही होगा कि यह बीमार है। पर तो भी इसका दिल तवाह हो चुका है, इसकी वात-नाड़ियों मे इस क़दर तनाव है कि वे किसी समय फट सकती हैं, और इसके शरीर के अवयवों में भयानक दुर्बलता आ गयी है। इसे अगले तीन साल तक बिल्कुल कोई काम नही करना चाहिए, केवल खाना और सोना चाहिए। और अनातोल फ़ास और मार्क ट्वेन के अतिरिक्त किसी और लेखक की रचनाओं को नही पढ़ना चाहिए। और वह भी थोड़ी थोड़ी मिकदार में।" पर मैं काम करता हूं, दिन में पन्द्रह घण्टे काम करता हूं। कैसे? डाक्टर इसे समझ नही सकते। पर इसमे कोई अलौकिक वात नही। वास्तव में, मैं सचमुच बीमार हूं। मुझे तीव्र पीड़ा होती है; दिन हो या रात, वह किसी वक़्त भी शान्त नही होती।

राडमैन: आप कितने घण्टे सोते हैं?

ओस्त्रोव्स्की: रोजाना सात-आठ घण्टे।

राडमैन: जब आपकी बीमारी शुरू हुई उस वक़्त आप क्या करते थे?

ओस्त्रोव्स्की: मैं एक राजनीतिक कार्यकर्ता था—युवा कम्युनिस्ट लीग की एक जिला-समिति का सेक्रेटरी था। और इसका अर्थ है सुवह छः से रात के दो वजे तक काम करता था। निजी काम के लिए कोई समय न था।

गृह-युद्ध के वाद मैं वापिस रेलवे वर्कशापों में चला गया। यह १६२१ की वात है। वहां मैं १६२३ तक बिजली-मिस्त्री का काम करता रहा। फिर १६२३ में मैं सीमा पर वापिस चला गया, क्योंकि मैं

वर्कशापों में काम करने योग्य न रहा था। मैंने डाक्टरों को चकमा दिया और उनसे फ़ौज मे जाने की इजाजत ले ली। एक साल तक मैं कमिसार के पद पर फौज मे रहा। फिर १९२७ तक युवा कम्युनिस्ट लीग का कार्यकर्ता रहा। उस वक़्त मैं बीमार था। १९२७ मे बीमारी ने मुझे काम करने से बिल्कुल लाचार कर दिया। मैं पहले पहल फ़ौज में १९१९ मे भरती हुआ, जब मेरी उम्र १५ वरस की थी। फौज ही मे मैं युवा कम्युनिस्ट लीग का सदस्य बना।

राडमैन: मैं कई लोगो से मिल चुका हूं। उनमे से कई एक विशिष्ट व्यक्ति थे, और निहायत दिलचस्प। मैंने लित्वीनोव से बातें की हैं, जैसा कि पहले कह चुका हू। पर मैंने आपके साथ इस वार्तालाप से आज बहुत कुछ सीखा है। मैं इसे कभी नही भूलूंगा।

आप साहसी पुरुष हैं। और आपका साहस आपकी कम्युनिज्म मे निष्ठा से पैदा हुआ है। क्यों, ठीक है न?

ओस्त्रोव्स्की: ठीक है। मैं जानता हूं कि किसी भी क्षण मेरे जीवन का अन्त हो सकता है। जब आप मुझसे विदा होकर जायं, तो ऐन मुमकिन है कि आपके पीछे पीछे एक तार मेरी मौत की सूचना देती हुई आपको मिले। इससे मैं डरता नहीं हूं। इसी लिए मैं, बिना ख़तरे का ध्यान किये, बराबर काम किये जा रहा हूं। अगर मैं स्वस्थ होता तो अपनी शक्ति अधिक सोच-समझकर ख़र्च करता, ताकि मैं अधिक काम कर सकूं। पर मैं ऊंची चट्टान के कगार पर खड़ा हूं, किसी समय भी मैं लुढ़ककर खाई में गिर सकता हूं। यह मैं अच्छी तरह जानता हू। दो महीने हुए मुझे पित्त की बीमारी हुई। मैं हैरान हूं कि मैं बच कैसे गया। पर ज्योंही बुखार उतरा, मैंने काम करना शुरू कर दिया। और मैं लगातार २० घण्टे रोज़ाना तक काम करता रहा, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं मैं किताब ख़त्म होने से पहले न मर जाऊं।

मुझे महसूस होता है कि मेरा जीवन ख़ात्मे पर है, और मुझे उस एक एक मिनट का उपयोग करना है जो मेरे पास बच रहा है। उस समय तक, जब तक मेरा हृदय प्रज्वलित और दिमाग़ साफ़ है। मौत मेरा पीछा कर रही है, इस कारण जीवन के प्रति मेरा आग्रह और भी तीव्र हो रहा है। यह कोई क्षणिक, छोटी-सी वीरता की बात नहीं। मैंने हर उस दुःख पर काबू पाया है जो जीवन से मुझे मिला: अन्धापन,

गतिहीनता, अविश्वसनीय शारीरिक पीड़ा। और मैं इस सब के बावजूद एक बड़ा सुखी आदमी हूं। नही, केवल इस अर्थ में नही कि मै सफल हुआ हू और हमारी सरकार ने मुझे पुरस्कृत किया है। इससे पहले भी मैं कम सुखी न था। मैंने अपने काम में सांसारिक सफलता के लिए कभी प्रयास नही किया। मैं चाहता हूं कि आप इस बात को समझें। अगर कल मुझे फिर उसी ख़ाली, छोटी-सी कोठरी में बैठा दिया जाय जिसमे मैंने अपना काम करना शुरू किया था, तो इससे मुझे कोई फ़र्क नही पड़ेगा।

राडमैन: पार्टी का ध्यान आपकी ओर कब आकृष्ट हुआ?

ओस्त्रोव्स्की: मुझे कभी यह महसूस नही हुआ कि पार्टी कभी मेरे प्रति उदासीन थी। मुझे पेंशन दी गयी; मेरी चिकित्सा सबसे अच्छे विश्रामगृहों तथा मास्को के चिकित्सालयों मे हुई। मेरे नौ आपरेशन हुए। पर मैंने विशेष अनुदान लेने से सदा इनकार किया है, क्योंकि मेरे पास अपनी जरूरत के लिए काफ़ी कुछ रहा है, और १९३२ मे मै फिर सैनिक पंक्तियो में जा मिला, जब मेरी किताब को जनता ने स्वीकार किया। पहला भाग १९३२ में प्रकाशित हुआ, दूसरा १९३४ मे।

राडमैन: आपने इसका नाम 'अग्नि-दीक्षा' क्यों रखा?

ओस्त्रोव्स्की: लोहा तब सख्त होता है जब पहले तेज आग मे और फिर सहसा ठण्डक में उसे रखा जाता है। इससे यह मजबूत होता है, और इसे कोई तोड़ नही सकता। उसी भांति हमारी पीढ़ी मजबूत बनी थी, संघर्ष मे और भयानक परीक्षाओं में। इस तरह हमने जीवन के हमलों के विरुद्ध डटकर खड़े होना सीखा।

मै मामूली पढ़ा हुआ था। १९२४ तक मुझे रूसी भाषा भी ठीक तरह से न आती थी। पर मैंने पढ़ना शुरू किया और बड़ी मेहनत की। इस तरह मै बुद्धिजीवी बना। शुरू में मेरी जानकारी भी बहुत कम थी, केवल उतनी ही जो मै राजनीतिक शिक्षा से ग्रहण कर पाया। उन शुरू शुरू के दिनो में मेरे लिए वही काफ़ी थी। मेरा सबसे अधिक अध्ययन बीमारी के काल मे हुआ, क्योंकि बीमारी में मेरे पास वक़्त बहुत था। २४ मे से २० घण्टे तक मैं पढा करता। ६ बरस जो मै बिस्तर पर पड़ा रहा तो मैंने अनगिनत किताबें पढ़ डाली।

राडमैन: मैं इस भेंट के लिए आपका आभारी हूं। मुझे आशा है मै फिर आपसे मास्को मे मिल पाऊंगा।

ओस्त्रोव्स्की: मुझे आशा है कि इस वार्तालाप के बाद आपके दिल में सद्भावना बनी रहेगी। हम विश्वास करनेवाले लोग हैं।

राइमैन: यहां मैं आपसे सहमत नहीं। आप लोग अब पहले से अधिक सतर्क हैं और हर तरह के आदमी का पहले से कम विश्वास करते हैं। और यह अच्छी बात है। यह जरूरी भी है—हालांकि मुझे कई बार यह देखकर दुःख होता है कि मेरा पूरा पूरा विश्वास नहीं किया जाता। आप लोगों को सदा सावधान रहने की जरूरत रहती है।

ओस्त्रोव्स्की: मेरी प्रबल इच्छा लोगों पर विश्वास करने की होती है, कि उन्हें अपने नेक और ईमानदार मित्र समझूं। यदि मैं पूंजीवादियों का प्रतिनिधि होता तो मुझे किसी से आदर या विश्वास पाने की आशा न होती। पर मैं काम करनेवालों में से हूं और सोचता हूं कि यह मेरा हक है कि मुझे प्रत्येक आदमी का आदर मिले। हम यहां एक नये समाज का निर्माण करने में लगे हुए हैं। आपके देश में भी बहुत-से लोग यह समझने लगे हैं।

राइमैन: मेरे एक परिचित सज्जन को इंगलैण्ड से यहां ओत्तो यूल्येविच श्मीत्त* के न्योते पर बुलाया गया। वह आर्कटिक प्रदेश पर एक किताब लिखने का विचार कर रहा है। वह उत्तरी इलाक़े मे गया और वहां एक दिन उसे कुछ जहाजी मिले। उन्होंने उससे पूछा कि वह किस प्रकाशक के लिए किताब लिख रहा है। "एक पूंजीवादी प्रकाशक के लिए," उसने उत्तर दिया। "पर इसका अर्थ है कि तुम्हारी किताब सोवियत पद्धति के विरुद्ध होगी। तुम्हें हमारी पद्धति की आलोचना करनी पड़ेगी, जो न करोगे तो पुस्तक छपेगी नहीं। तो फिर तुम कैसे कह सकते हो कि तुम सोवियत संघ के मित्र हो?"

और वह अपने को सोवियत संघ का मित्र प्रमाणित नहीं कर सका। जनता आज सच्ची मित्रता चाहती है। अगर कोई अपने को मित्र कहता है तो उसे सावित करके दिखाना होगा।

ओस्त्रोव्स्की: यदि आपने अपनी ईमानदारी और मर्यादा को क़ायम रखा है, तो यह भी बहुत बड़ी बात है। मैं जानता हूं कि यहां पर बहुत

---

*ओत्तो यूल्येविच श्मीत्त—विशिष्ट सोवियत वैज्ञानिक तथा ध्रुव अनुसन्धानक।—सं०

कुछ ऐसा है जो आप आसानी से समझ नहीं सकते। आप क्रान्ति से पहले के रूस को नहीं जानते। आप उन भयानक, नारकीय परिस्थितियों की कल्पना भी नहीं कर सकते। केवल वही आदमी जो हमारे भयानक अतीत से परिचित है, वही हमारे आज के विस्तृत काम का ठीक तरह से मूल्यांकन कर सकता है।

और यह सोचना भी हमारे लिए कठिन है कि दुनिया में ऐसे लोग भी बसते हैं जो चाहते हैं कि जो कुछ हम बना पाये हैं उसे नष्ट कर दिया जाय और उसे तबाह करके हमें फिर से पहली-सी गुलामी की जंजीरों में बांध दिया जाय।

मुझे आशा है कि आप अपनी सत्य-निष्ठा पर दृढ़ रहेंगे। इसमें अक्सर ख़तरा होता है। इसके लिए साहस की जरूरत है।

आपको समझना होगा कि कोई कारण था जिससे क्रान्ति उठी। मजदूरों को पूरा हक था कि वे उन लोगों को जो उन्हें दास बनाये हुए थे, हटा दें, गुलामी को ख़त्म कर दें, और नये स्वतन्त्र जीवन का निर्माण करें। और ऐसे लोग हैं जो इस सब को तबाह करना चाहते हैं, जो एक नयी जंग छेड़ना चाहते हैं।

राडमैन: हम सही रास्ता ढूंढ निकालेंगे। मुझे इसका विश्वास है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मैं आपके बारे में, निकोलाई ओस्त्रोव्स्की के बारे में, आपके साथ हुए आज के वार्तालाप के बारे में, इंगलैण्ड और अमेरिका की अख़बारों में लेख लिखूंगा...

जो सुख श्रम में है वह और किसी चीज में नहीं

'प्राव्दा' के संवाददाता से भेंट

सोची, अक्तूबर, १९३६

कुछ दिन हुए मैंने अपने उपन्यास 'तूफ़ान के जाये' का पहला भाग समाप्त किया है (१३ फ़र्मे)।

सब मिलाकर उपन्यास तीन भागों में होगा। कुछ ही दिनों में, अपनी 'छुट्टी' ख़त्म होने पर मैं दूसरे भाग पर काम करना शुरू कर दूंगा।

मैं यह आस लगाये बैठा हूं कि मैं तीनों भाग अक्तूबर क्रान्ति की बीसवी सालगिरह तक समाप्त कर पाऊंगा। पर, दुर्भाग्यवश मैं इसका वचन नही दे सकता, क्योंकि एक बोल्शेविक जिस बात का वचन देता है, वह पूरा करके छोड़ता है, और मेरे कपटी स्वास्थ्य का कोई विश्वास नही, मैं कोई तारीख निर्धारित करूं और वह उसे उलट दे। इसलिए यदि मेरी यह इच्छा पूरी हो पायी तो मुझे बहुत ख़ुशी होगी।

आज भी बहुत-से लोगो का विश्वास है कि कवि और लेखक प्रेरणा की घड़ियों में ही रचनात्मक काम कर सकते हैं। शायद यही कारण है कि कई लेखक बरसों तक कुछ नही लिखते – प्रेरणा की राह देखते रहते हैं।

प्रेरणा श्रम के दौरान में आती है। इसका मुझे पक्का विश्वास है। एक लेखक को काम करते रहना चाहिए, ईमानदारी से, हमारे देश के अन्य निर्माताओं की तरह – जैसा भी वक़्त हो, जैसी भी उसकी मन:स्थिति हो। क्योंकि श्रम सब ज़ख्मों की मरहम है।

जो सुख श्रम में है वह और किसी चीज मे नही।

छुट्टी लेने का मुझे 'हुक्म' हुआ है* – और मैं बड़ी बेताबी से उस दिन के इन्तजार में हूं कि कब यह ख़त्म हो, और मैं फिर से काम पर जुट सकू।

तुम मेरी योजनाओं के बारे में पूछते हो। तुम्हें ऐसे हृदयोत्तेजक सवाल नही पूछने चाहिए। क्योंकि इसमे मैं अपने आप को भूलकर, अपनी तरंग मे एसी विचित्र महत्वाकांक्षाएं सुनाने लगूगा कि तुम हैरान रह जाओगे।

मैं एक किताब बच्चों के लिए लिखना चाहता हूं। फिर एक काल्पनिक उपन्यास और तत्पश्चात् 'अग्नि-दीक्षा' का आख़िरी भाग

---

*इस आकांक्षा से कि किसी तरह 'तूफान के जाये' समाप्त हो सके, ओस्त्रोव्स्की ने थोड़ी-सी देर के लिए भी आराम करने से इनकार कर दिया। पर उसके स्वास्थ्य को देखते हुए विश्राम अनिवार्य हो गया था। और सोची की पार्टी समिति ने अपने अधिकार युक्त निर्णय से जिसका पालन ओस्त्रोव्स्की के लिए पार्टी अनुशासन के अधीन लाजमी था, उसे छः हफ़्ते के लिए काम छोड़कर आराम करने पर बाध्य किया। – सं०

लिखना चाहता हूं। उसका नाम मैं 'गोर्शागिन का सौभाग्य' रखूंगा। साथ ही मैं पढ़ना चाहता हूं—विस्तृत अध्ययन और गहरा अध्ययन—और यह अध्ययन मैं अपनी जिन्दगी के आखिरी दिन तक करते रहना चाहता हूं।

इसमें कोई विरोधाभास नहीं। यह मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है। और, इन सब योजनाओं को पूरा करने के लिए मुझे कम से कम दस बरस और जिन्दा रहने की जरूरत है।

न जाने डाक्टर इसपर क्या कहेंगे। सच सच कहूं, मैं दीर्घायु होने के सब रेकार्ड तोड़ देना चाहता हूं। हमारे इस देश में जीवन अत्यन्त सुन्दर हो उठा है!

मेरे सपने

'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' पत्र के साहित्यिक विभाग के प्रबंधक से० त्रेगुब के साथ वार्तालाप

नवम्बर, १६३६

(एक अपूर्ण अभिलेख)

त्रेगुब: आपके स्वप्न किस प्रकार के होते हैं?

ओस्त्रोव्स्की: मैं अपने सपनों पर यदि दस मोटे मोटे ग्रन्थ भी लिख दूं, तो भी वे समाप्त न होंगे। मैं हर वक़्त स्वप्न देखता रहता हूं, सुबह से शाम तक, हां, और रात को भी। किस चीज के? यह कहना मुश्किल है। यह कोई फ़िज़ूल-सा सपना नहीं जो दिन प्रतिदिन, और एक महीने के बाद दूसरे महीने तक चलता रहे। वह हर वक़्त बदलता रहता है—सूर्योदय की तरह, या सूर्यास्त की तरह... मैं समझता हूं कि स्वप्न देखना जीवन मे फिर से ताजगी लाने का अद्भुत साधन है। जब मेरी बहुत-सी ताकत खर्च हो जाती है, और मैं एक निःशेष बैटरी की तरह कमजोर महसूस करने लगता हूं तब मुझे अपने मे नयी ताकत पैदा करने के साधन ढूंढने पड़ते हैं, कोई ऐसी चीज जिससे मेरी ताकत फिर से जुट सके। मेरे स्वप्न—चाहे वे कभी कभी कपोल-कल्पित जान पड़ें पर वे सदा इस धरती के होते हैं, इस जीवन के होते हैं। मैं असम्भव के सपने कभी नही देखता।

...मैं अपने देश की, अपने जनतन्त्र की शक्ति को कई गुना बढा सकूं–यह इच्छा कभी भी इतनी तीव्र नही होती जितनी कि स्वप्न देखते समय। यदि इनसान पूंजीपतियों की सारी की सारी दौलत, अरबो रूबल ले ले, उनकी सभी मशीनें–वह सब सामान जो अनुपयोगी और निरर्थक उनके हाथों में पड़ा हुआ है; यदि इनसान उनके मजदूरो को ला सके, भूखे, परिश्रम से थके-हारे, दरिद्रता और यातना की अन्तिम सीमा तक पहुंचे हुए–यदि इनसान उन्हे यहां ला सके और उन्हे काम और नया जीवन दे सके। और मेरी आखो के सामने एक जहाज आ जाता है, जो उन्हे यहा हमारे पास ला रहा है। उनसे आनन्दभरी भेट मेरी आखों के सामने आती है। लोग आज़ाद और प्रसन्न हैं।

सपनों की कोई सीमा नही होती... अक्सर मेरे मस्तिष्क के किसी कोने मे एक छोटी-सी चिनगारी जल उठती है, और मेरी आखों के सामने एक दृश्य बढने और फैलने लगता है और एक विजयपूर्ण प्रयाण के दृश्य में परिणत हो जाता है। ऐसे सपनो से मुझे बहुत लाभ होता है। प्रेम, निजी सुख–मेरे सपनो मे इनके लिए बहुत कम स्थान है। आदमी अपने से कभी झूठ नही बोलता। उस खुशी से बढकर, जो एक सैनिक को मिलती है, मेरे लिए कोई और ख़ुशी नही। जो बिलकुल निजी है, वह अल्पजीवी है। उसकी संभावनाएं कभी इतनी विशाल नही हो पाती, जितनी कि उस चीज की जो कि समूचे समाज से सम्बन्ध रखती है। मै इसे अपने जीवन का सबसे गौरवमय कर्तव्य समझता हूं, सबसे गौरवमय लक्ष्य, कि मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य के लिए जो सघर्ष चल रहा है उसमें मैं एक सैनिक बनूं, और वह भी सबसे छोटा सैनिक नहीं। मेरा कर्तव्य है कि मैं उस संघर्ष में नायक के स्थान पर लड़ूं। मैं अपने सपनों में कभी भी केवल हुक्म बजा लानेवाले के रूप में अपने को नहीं देखता।

मैं इन सपनों को कभी भी शब्दबद्ध नही कर पाऊंगा। इन अद्भुत, हृदयग्राही विचारों को ठीक तरह से व्यक्त करने की क्षमता किसी मे भी नही है।

कभी कभी, कोई मूढ़मति मेरे सामने इस किस्म की शिकायत करने लगता है कि उसकी पत्नी किसी दूसरे को प्रेम करने लगी है, और अब उसके लिए जीवन निस्सार हो गया है। इस तरह की बकवास। रा

वक्त उसके मुह मे से लार टपकती रहती है। और मैं दिल में सोचता हूं: अगर मुझे वह सब कुछ मिला होता जो इसके पास है—स्वास्थ्य, हिल-डुल सकने वाले हाथ-पांव, इस असीम संसार में घूम-फिर सकने की क्षमता, (यह एक खतरनाक स्वप्न है और मैं इसे देखने से अपने को रोके रखता हू)—यदि मेरे पास वह सब कुछ होता तो मैं क्या करता? अपनी कल्पना में मैं उठ खड़ा होता हूं, जवान, स्वस्थ, छाती ताने हुए मैं कपड़े पहनता हूं और बाहर छज्जे पर आ खड़ा होता हूं, और जीवन-प्रवाह मेरे सामने वह रहा होता है...फिर क्या? मैं चलूंगा नही, मैं तो दौडूगा—दौड़े बग़ैर मैं रह नही सकता। मैं रेलगाड़ी के साथ साथ, सारा रास्ता भागता हुआ शायद मास्को जाऊंगा, लिख़ाचोव मोटर-कारख़ाने मे जाऊंगा और सीधे अपने साथियों के पास जा पहुंचुंगा, और जाते ही एक भट्टी का मुह खोल दूंगा, ताकि जल्दी से जल्दी कोयले की बास सूघ सकू, और भट्टी को कोयले से भर सकूं। मैं साठ-सत्तर दिन का काम एक दिन में करूंगा। मैं इतना काम करूंगा कि कोई विश्वास भी नही कर पायेगा। मेरे दिल में जिन्दगी की भूख होगी, बिल्कुल पागलो की सी। और अपने शरीर को थकाने के लिए मुझे वहुत काम करना पड़ेगा, वहुत शक्ति लगानी पड़ेगी। गतिहीनता से, नौ बरस की गतिहीनता से छुटकारा पाने के बाद मैं काम पर यों जुट जाऊंगा कि छोड़ूंगा ही नही जब तक कि जी न भर जाय।

ये विचार मेरे मन मे उठते है, जब कोई बेवकूफ, लार टपकाता हुआ, मेरे सामने आकर रोता है कि उसके सामने जीवन का कोई लक्ष्य नही। अगर मेरे पास वह सब कुछ होता जो उसके पास है तो अगर मेरी पत्नी, एक बार नही, पचास बार भी मुझे धोखा देगी, तो भी मैं परवाह नही करूंगा। सदा मन में यही भावना रहेगी कि जीवन एक विलक्षण चमत्कार है।

हमारे देश के हर व्यक्ति का यह पावन कर्तव्य है कि वह साहसी वीर बने। हमारे देश मे हर इनसान मे योग्यता है, बुद्धि है—सिवाय निठल्ले और आलसी लोगों के। वे योग्य बनना चाहते ही नहीं। शून्य में से तो केवल शून्य ही निकलता है। पत्थर मे से जल नही निकलेगा। जो ज्वाला बनकर जलता नही वह धुएं मे ही अपने आपको नष्ट कर देता

है। यह शाश्वत सत्य है। हे जीवन की ज्वलन्त शिखा, मै तुझे प्रणाम करता हूं!

यह कभी मत सोचना कि मै दु.खी हूं, या उदास हूं। मै यह कभी भी नही था। जब तक जीवन मे मेरी जीत नहीं हुई, मेरा संकल्प कभी नही टूटा–मैंने कभी हार नही मानी। मुझे मालूम तो नही था कि जिन्दगी यह रुख पकडेगी। मै युवा अध्ययन-मण्डल का काम करते हुए बहुत खुश रहा करता था। तब मेरे शरीर में ताक़त थी। मै तीन तीन घण्टे तक लगातार बोल सकता था। जितनी देर मैं बोलता रहता, सुननेवाले बीस युवकों मे से एक भी न हिलता था, ऊची सास तक लेने की आवाज न आती थी। अग्नि-दीक्षा आज भी मौजूद है, और यह ज्ञान भी कि जीवन का कोई लक्ष्य है, कि मेरी जरूरत कही पर है। यदि मनुष्य सैंकड़ों को नही सिखा सकता तो पाच को ही सिखा दे, एक को ही सिखा दे। और यह छोटी चीज नहीं, पाच बोल्शेविक तैयार करना मामूली बात नही।

पर जब इनसान यह महसूस करे कि उसमे काम करने की इच्छा ही नही रही, तब उसकी स्थिति चिन्ताजनक समझनी चाहिए।

अहंवादी सबसे पहले गिरता है। वह केवल अपने मे और अपने लिए जीता है। और एक बार उसके अहं को चोट लग जाय, तो उसके जीवन के आधार टूट जाते हैं। उसे अपने सामने अहं तथा मौत की भयावनी काली रात के अलावा कुछ नजर नही आता। इसके विपरीत, जो मनुष्य अपने को समाज के जीवन में खपा देता है–उसको गिराना आसान नही। उसे मारने से पहले तुम्हें उसके समाज को, उसके देश को तबाहोबरबाद करना होगा। मै जख्मी हो गया हूं, पर मेरी सैनिको की टुकड़ी जीवित है और उसी तरह काम कर रही है। और युद्ध-भूमि में पड़ा हुआ मृतप्राय सैनिक, जब अपने साथियों की विजयध्वनि सुनता है तो उसका हृदय एक पूर्णता से, गहरे सन्तोष से भर उठता है। एक सैनिक के लिए इससे भयंकर कोई स्मृति नही कि उसने कभी ग़द्दारी की थी, अपनी टुकड़ी को तबाह करवाया था। मरते दम तक वह इस विश्वासघात की आग में जलता रहेगा।

कम्युनिज्म मे भी व्यक्तिगत स्तर पर भ्रम, क्लेश इत्यादि होंगे।

पर लोगों का जीवन संकीर्ण व्यक्तिगत दायरे में फंसा नही रहेगा। जीवन में सौन्दर्य का आविर्भाव होगा।

हमारे साथियों की वीरता क्षणभंगुर वीरता नही होती। व्यक्तिगत दु.ख उनके लिए गौण है। जब मनुष्य संघर्ष करना छोड़ देता है तो उसके जीवन में दुःख आने लगता है।

जीवन का प्रत्येक दिन मेरे लिए यातना और पीड़ा के विरुद्ध विकट संघर्ष का दिन होता है। मेरे जीवन में दस साल से यही चल रहा है। जब तुम मेरे होंठों पर मुस्कान देखते हो, तो यह मुस्कान सच्ची और सच्चे सुख की सूचक होती है। इन सब यातनाओं के होते हुए भी मैं खुश हूं और इस खुशी का स्रोत है उन नित नये महान कार्मों की सम्पन्नता जो मेरे देश मे हो रहे हैं। यातना और पीड़ा पर विजय पा लेने से बढ़कर कोई सुख नही। इसका यह अर्थ नही कि मनुष्य केवल जीता भर रहे, सास भर लेता रहे (हालांकि इसकी भी उपेक्षा नही की जा सकती)। मेरा अभिप्राय संघर्ष और विजय से है।

मैं जब मास्को से यहां आया तो थका हुआ और बीमार था। मैं बहुत परिश्रम करता रहा था। पर मेरी बीमारी से मेरे ओज की क्षति नही हो पायी। बल्कि इससे वह एक जगह सिमटकर इकट्ठा हो गया है। मैं अपने आपसे कहा करता हूं: "याद रखो, संभव है तुम कल मर जाओ, जब तक तुम्हारे पास समय है, काम करते जाओ!"

और मैं काम में जुट गया। मेरे आस-पास के लोग हैरान रह गये। मैं बड़े उत्साह और उल्लास से काम करता था।

मैं ऐसे आदमी से घृणा करता हूं जो उंगली दुःखने पर छटपटाने लगता है, जिसके लिए पत्नी की सनक क्रान्ति से अधिक महत्व रखती है, जो ओछी ईर्ष्या में घर की खिडकियां और प्लेटें तक तोड़ने लगता है। या वह कवि जो हर क्षण ठंडी सांसें भरता हुआ व्याकुल रहता है, कुछ लिख पाने के लिए विषय ढूढता-फिरता है, और जब कभी विषय मिल जाता है तो लिख नही पाता क्योंकि उसका मूड ठीक नही, या उसे जुकाम हो गया है और नाक चल रही है। उस आदमी की तरह जो गले मे मफलर लपेटे डरता-कापता घर से बाहर नही निकलता कि कहीं हवा न लग जाय। और अगर उसे थोड़ी-सी हरारत हो जाय तो डर से उसका

खून सूखने लगता है, वह बिलखने लगता है, और अपना वसीयतनामा लिखने बैठ जाता है। इतना डरो नहीं, साथी। अपने जुकाम के बारे में सोचना छोड़ दो। काम करने लगोगे तो तुम्हारा जुकाम ठीक हो जायेगा।

और उस लेखक से भी घृणा करता हूं जो एक बैल की तरह हृष्ट-पुष्ट है पर पिछले तीन साल से अपनी किसी अपूर्ण पुस्तक मे से एक टुकड़ा बार बार अपने श्रोताओं को सुना सुनाकर पैसे कमा रहा है। हर बार पढने के उसे दो सौ पचास रूबल मिल जाते हैं। "अब भी दुनिया में खासे बेवक़ूफ मौजूद हैं," वह दिल ही दिल मे कहता और हसता है, "मुझे अगले छः साल तक एक शब्द भी लिखने की जरूरत नही।" उसके पास लिखने के लिए वक़्त ही नही। वह खाने, सोने और औरतों के पीछे भागने में व्यस्त है—वैसी भी औरते हों, सुन्दर या असुन्दर, सत्तरह बरस की हों या सत्तर बरस की। स्वास्थ्य—हा, स्वास्थ्य का वह धनी है; पर उसके हृदय में कोई चिनगारी नही।

मैं कई शानदार वक्ताओं को जानता हूं। वे अपने शब्दों से अद्‌भुत चित्र खींच सकते हैं, और अपने श्रोताओं को सदाचार और नेकी से रहने का उपदेश देते हैं, पर उनके अपने जीवन मे ये गुण नही होते। मंच पर खड़े होकर वे अपने श्रोताओं को बड़े बड़े काम करने का सदुपदेश देते है, पर उनका अपना जीवन घृणित और कुत्सित होता है। आप उस चोर की कल्पना करें जो ईमानदारी की शिक्षा देता है, जो ऊंची आवाज़ में चिल्ला चिल्लाकर कहता है कि चोरी करना पाप है—और जब वह बोल रहा होता है, अपने श्रोताओं को ध्यान से देखता भी रहता है कि किसकी जेब वह सबसे आसानी से काट सकता है। या उस भगोड़े को लीजिये, जो ख़ुद युद्ध-क्षेत्र से भागकर आया है, और सच्चे सैनिकों को स्वेच्छा से आगे बढने का उपदेश दे रहा है। हमारे सैनिको को उस जैसों के साथ कोई हमदर्दी नही। अगर वह उन्हे कही मिल जाय, तो मार मारकर उसे अधमरा कर देंगे। और हमारे बीच ऐसे लेखक भी मौजूद है जो कहते कुछ हैं और करते कुछ और। यह चीज़ लेखक के धन्धे से मेल नही खाती।

लेखक का दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब उसके विचार, उत्कृष्ट और सजीव, उसकी कलम पर नही आ पाते; उसके दिल में तो

की ज्वाला होती है, पर जब उसे कागज पर रखता है, तो वह अधबुझी, ठण्डी राख होती है। जिस सामग्री पर लेखक काम करता है, उसको अपनी आवश्यकतानुसार गढ़ना इतना कठिन होता है कि उससे बढ़कर कठिन काम दुनिया मे न होगा।

मैं अपने नये चरित्रों, 'तूफान के जाये' के युवकों और युवतियों से प्यार करने लगा हूं: राइमन्द से, बेपरवाह आन्द्रेई से, उस मितभाषी, नाजुक युवक प्शेनीचेक से, उस गोल-मटोल प्यारी-सी ओलेस्या, और सुन्दर सारा से—जो बाद मे इतनी शानदार क्रान्तिकारी निकली। मुझे उन सब से प्यार है। मैं हर वक़्त उनके बारे में, सोचता रहता हूं और उनमे से कई एक का भविष्य तो अभी से मेरे सामने स्पष्ट होने लगा है।

ओलेस्या फौज के कमाण्डर शाबेल को, जो उसके दिल मे आन्द्रेई का स्थान लेने लगेगा, व्याह करने का वचन दे देगी। पर वह उससे कहेगी: "मैं जंग के बाद तुम्हारी हो जाऊंगी, पर पहले नही।" वह एक रोज़ शराब पीकर आयेगा और उसके विश्वास को तोड़ देगा। इसे ओलेस्या कभी क्षमा नही करेगी। और फिर उसके सामने आन्द्रेई आ खड़ा होगा—लड़ाई मे से अकस्मात् बचकर आया हुआ, जहां ओलेस्या को खो बैठने की निराशा में वह जान-बूझकर मरने के लिए तैयार होकर गया था। और ये दोनो जीवन मे एक साथ रहेंगे। प्शेनीचेक की कहानी असाधारण और अत्यन्त रोचक होगी। लड़ाई में उसकी एक टांग कट जायेगी और वह अपनी टुकड़ी पर बोझ बन जायेगा। वह सोचेगा कि जब मैं लड़ नही सकता तो जीवन मे मैं किसी काम का नहीं रहा। फिर, वसन्त ऋतु मे, उस चक्की मे जहा वह काम करता है, फ़्रान्सीस्का उसे मिलेगी जो उसको अपने प्रेमपूर्ण हृदय से लगाकर उसे अपना प्यार देगी, पर वह ज्यादा देर तक उसके साथ नही रह पायेगी। उसके नारी-गर्व को चोट लगेगी जब लोग अनुकम्पा भरी आंखों से उसे और उसके प्रेमी की ओर देखेंगे। वह उसे छोड़ जायेगी। प्शेनीचेक अन्तःप्रेरणावश अपनी सैनिक टुकड़ी की ओर जायेगा। वह अपने साथी सैनिकों से याचना करेगा कि मुझे फिर से साथ मिला लो, पर वे केवल हंस देंगे। वे कहेंगे: "जाओ और बत्तखें पालो। हमें तो लड़ना है।" फिर भी वह किसी तरह उन्हें मना लेगा। और कुछ नहीं तो वह उनका बावर्ची ही बनकर

रहेगा। उसका पेशा भी तो पेस्ट्री बनाना है। वे उसे अपने रक्षाशिविर मे ले जायेंगे, और वहा वह उनका खाना बनाने लगेगा, और उन्हे स्वादिष्ट मिठाइया बना बनाकर खिलायेगा, जैसी कि उन्होने कभी पहले नही खायी। वह सर्वप्रिय हो उठेगा। पर उसका दिल तो एक सैनिक का दिल है। वह इस क़िस्म के जीवन से क्योंकर सन्तुष्ट होगा। वह उनकी मशीनगनें साफ़ करने लगेगा, और उनके पुर्जे अलग करने और जोड़ने मे मदद देगा। मशीनगनों को वह इतनी अच्छी तरह से जान जायेगा कि वह आखें बन्द करके उन्हे खोल सकेगा और उनके पुर्जे जोड़ सकेगा। और ज्यो ज्यों वक़्त गुज़रता है वह मशीनगन चलाने लगता है, और ऐसी कि उससे शत्रु का दिल दहलने लगता है। लोग उस लगडे मशीनगन चालक के गीत गाने लगते हैं जो किसी से नही डरता और जो दुश्मन का सफ़ाया किये बिना नही रहता। दो बार उसे पदको से सम्मानित किया जाता है। अब वह बैसाखियो पर उचकता हुआ नही चलता। उसके लिए एक लकड़ी की टाग बना दी गयी है। उसे फिर फ़ान्सीस्का मिलती है, और विजय के गौरव मे वह फिर उसके पास आ जाती है। यह है मेरे चरित्रों के भाग्य और उनके आपसी सम्बन्धो की रूपरेखा।

डायरी? नही, मै डायरी नही रख सकता। डायरी मे सब कुछ होना चाहिए, प्रेम की स्फूर्ति तक, गुप्त से गुप्त सपनों तक। दरअसल यह अपने आपसे वार्तालाप के समान है, जो स्पष्ट और सच्चा हो। इसके लिए बड़े साहस की जरूरत है। इस ख़्याल से लिखना कि वह बाद में कभी छपेगी, इतिहास बनेगी, यह मेरी नजरों मे घृणित चीज़ है। वह डायरी नही होगी, एक साहित्यिक कृति होगी। मेरे लिए डायरी रखना अनिवार्य हो जाता यदि मै स्वयं डायरी लिख पाता। पर मैं कदापि अपने गहरे आन्तरिक भावो को किसी दूसरे के हाथ से नही लिखवा सकता (ऐसा कोई भी व्यक्ति नही कर सकता)। कई बाते ऐसी होती हैं जिन्हें स्वयं, अपने लिए भी स्वीकार करना कठिन होता है। कई ऐसी भावनाएं होती हैं जिन्हे निरावरण नही किया जा सकता, जैसे हम लोगों के सामने नंगे, वस्त्रहीन होकर नही आ सकते। शायद इस नग्नता मे सौन्दर्य हो, पर ऐसा करना असंभव होता है। अनेक इच्छाएं और भावनाएं दिल की गहराइयों में रहती हैं, जिन्हे डायरी को भी नहीं

सौंपा जा सकता। परन्तु – यदि मनुष्य के आन्तरिक संसार और इर्द-गिर्द की दुनिया का आपस मे विरोध बहुत बढ़ जाय तो उसे चाहिए कि वह रुक जाय और अपने आपसे पूछे: यदि मैं अपने विचारों को अपने सामने भी स्वीकार करने मे लज्जित महसूस करता हूं, तो मैं आदमी किस प्रकार का हूं?

मनुष्य के जीवन मे कोई भी बात इतनी लज्जाजनक न होनी चाहिए कि वह उसे लिख तक न सके। ऐसी डायरी बड़ी ज़रूरी चीज़ है। यह मनुष्य के अपने चरित्र-निर्माण में बड़ी सहायक होती है। फ़ूर्मानोव की डायरी तथा उसके रेखाचित्र बहुमूल्य सामग्री हैं।*

मुझे अपनी तीव्रतम आलोचना का निशाना बनाइये!

'तूफ़ान के जाये' नामक उपन्यास के प्रथम
भाग पर वाद-विवाद करने के लिए की गयी सोवियत
लेखक संघ की कार्य-समिति की बैठक
के आशुलिपिक अभिलेख से
१५ नवम्बर, १९३६

शायद आप मुझे यहां भाषण देते हुए देखकर हैरान होंगे – कि लेखक ही सबसे पहले बोलने लगा।

मैं इस बैठक का इन्तज़ार इस दृढ़ विश्वास के साथ करता रहा हूं कि इससे मुझे बहुत-सी बातों में सहायता मिलेगी।

मेरी एक प्रार्थना है, और यह प्रार्थना मैं अपने ख़तों में और बातचीत में भी अपने साथियों के सामने बार बार दोहराता रहा हूं। मुझे मेरे काम की कमज़ोरियां और त्रुटियां बोल्शेविक स्पष्टवादिता के साथ – दृढ़ता और बेशक, निर्दयता के साथ, बतलाइये। यह, मेरे विचार मे, हमारी बहस का आधार होना चाहिए। इससे न केवल मुझे बल्कि

---

*द्मीत्री फ़ूर्मानोव का प्रसिद्ध उपन्यास 'चपायेव' बहुत हद तक उन डायरियों पर आधारित है जिनमें फ़ूर्मानोव ने गृह-युद्ध के काल में अपने विचार, प्रभाव तथा घटनाओं को नोट कर रखा था। – सं०

हम सबको लाभ होगा। मेरी स्थिति ऐसी है कि कठोर आलोचना के लिए मुझे विशेष आग्रह करना पड़ रहा है। साथी मेरी जिन्दगी को जानते हैं, और यह भी जानते हैं कि और लोगों के जीवन से यह किस भांति भिन्न है। इसी लिए मुझे डर है कि यह जानकारी कड़ी आलोचना के रास्ते में बाधक होगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। आप सब जानते हैं कि एक किताब का मूलतः परिवर्तन करना कितना कठिन है। पर यदि उसकी भी जरूरत हुई तो वह भी मुझे करना होगा।

मेरी सानुरोध प्रार्थना है कि आप मुझे साहित्य-क्षेत्र में नौसिखिया मानकर न चलिये। मुझे अब लिखते हुए छः बरस हो चले हैं, और अब वक़्त है कि मैं लिखने के बारे में कुछ सीख पाऊं। आप अपनी मांग को ऊंचा रखिये, बहुत ऊंचा। यह मुख्य बात है जो मैं आपसे कहना चाहता हूं। मुझे ऐसा लेखक मानिये जो अपने काम कर हर तरह से जवाबदेह है—कलाकार के नाते भी और एक कम्युनिस्ट के नाते भी। हमारी शक्तिशाली जनता चाहती है कि हमारे सोवियत लेखकों की रचनाएं कलात्मक और ज्ञानवर्द्धक हों। और हमारे लिए इन उचित मांगों को पूरा करना गौरव की बात होनी चाहिए।

आज हमारे बीच गोर्की नहीं है—वह महान लेखक और विलक्षण पुरुष जो साहित्य में तुच्छता और अश्लीलता का बड़ी दृढ़ता और जोश के साथ विरोध करते रहे। मुझे विश्वास है कि इस सदमे के बाद हमारे लेखक संघ का प्रत्येक पार्टी सदस्य, तथा हर बोल्शेविक लेखक जो पार्टी में नहीं है, अपने काम मे अधिक गंभीरता से अपना उत्तरदायित्व निभायेगा।

इसी सिलसिले में मैं कुछ शब्द मैत्री सम्बन्धी अपनी धारणा के बारे मे भी कहना चाहूंगा। मैंने सोवियत साहित्य में युवा कम्युनिस्ट लीग के माध्यम से प्रवेश किया। हमारी पार्टी तथा लीग की प्रथाओं में, रचनात्मक कार्य में, मित्रता के अतुलनीय उदाहरण मिलते है, ऐसे उदाहरण जो हमें अपने तथा अपने साथियों के श्रम का आदर करने की शिक्षा देते हैं, जो हमे यह दिखाते हैं कि सच्ची मित्रता, स्पष्टवादिता, सचाई तथा अपने साथियों की ग़लतियो की आलोचना मे पनपती है। यदि यह न भी हो तो भी पाठकगण लेखक को ठीक रास्ता सुझा देते

है। यह अनिवार्य है, क्योंकि कोई भी पाठक घटिया पुस्तकों को नहीं पढ़ना चाहता।

हम लेखकों के बीच इस सुन्दर मैत्री को बढ़ाना होगा, क्योंकि हमारे बीच अब भी बीते दिनों के वातावरण के कुछ एक दोष मौजूद है, जब लेखक एक 'एकान्तवासी भेड़िया' माना जाता था।

वक्त आ गया है कि हम खुले दिल से और ईमानदारी से एक दूसरे के साथ हाथ मिलायें। पुरानी दलबन्दियों और झगड़ों के बचे-खुचे विषैले अशों को, आलोचना और बहस के गलत तरीकों को, उस काल की उन सब बातों को जिनमें अपने दल के हित को सोवियत साहित्य के हित से ऊंचा समझा जाता था—सदा के लिए त्याग दें।

हमारे बीच इस किस्म के लोग भी मौजूद है जिन्हें 'ईमानदार बकवासी' कहा जा सकता है, जो निरन्तर बातें तो करते है पर काम कुछ नही करते, हालांकि हमारे देश में लेखक का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व काम करना होता है—रचनात्मक काम करना, और अपने आपको उन्नत बनाना। इनके अलावा एक और प्रकार के लोग भी मौजूद है—'साहित्यिक छिद्रान्वेषी'। इन्हे कही पर भी कोई गुण नजर नही आता, न ही इनके दिल में किसी की प्रतिष्ठा का मान है। ये हमारे देश के प्रमुख लेखकों का तिरस्कार करते है, उनके घृणित उपनाम बनाते है, उनके बारे मे गन्दे मज़ाक और बकवाद फैलाते फिरते हैं। इस किस्म के लोग केवल बकवादी नही। यह उनसे भी बुरे है। हमें ऐसे बकवादियों का, अफवाहें फैलानेवालों का कड़ा विरोध करना होगा। जरूरत इस बात की है कि एक स्वच्छ ताजा हवा बहने लगे जो इस सब कचरे को साफ कर जाय।

हमारी आज की बैठक हाल ही मे हुई सोवियत लेखक संघ की कार्य-समिति की एक मीटिंग के बाद हो रही है, जिसमें हमारे एक लेखक साथी की रचनाओ पर विचार किया गया था। मुझे आशा है कि इस बैठक में भी बहस उसी ऊंचे स्तर पर होगी।

आप सबने मेरे उपन्यास 'तूफान के जाये' का पहला भाग पढ लिया है। यह मेरे ढाई बरस के परिश्रम का फल है। मेरी इच्छा है कि इसकी गलतियो पर बहस हो। इससे हम एक दूसरे के अधिक समीप आयेंगे। क्या हम सबका यह लक्ष्य नही कि सोवियत साहित्य सबसे उत्तम, सबसे

तथा पोलैण्ड के भूस्वामियो तथा पूंजीपतियों के विरुद्ध मजदूर वर्ग और किसानो का संघर्ष दिखाया गया है।

दूसरे भाग में पिल्सूदस्की की फ़ौजों का एकत्रीकरण, उनका उक्रइना के एक भाग पर क़ब्ज़ा कर लेना और पेत्लूरा के साथ गठ-जोड, जिसने बाद मे बिलकुल अपने को उनके हाथों बेच दिया, इनका वर्णन होगा मोर्चो की दूसरी तरफ़, छोटी छोटी टोलियों को शृंखलाबद्ध करके लाल फौज संगठित करना, किसानों का जमीदारों के विरुद्ध संघर्ष, विद्रोहों का फूट पडना, जो विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध बोलशेविक नेतृत्व में समूची जनता के आन्दोलन में परिणत हो जाते हैं और लाल फ़ौज की पेत्लूरा के गिरोहों पर बार बार विजय – इन सबका वर्णन होगा।

तीसरे भाग मे उस प्रगट हस्तक्षेप का जिक्र होगा, जो एन्तेन्त ने सामन्त-पूजीवादी पोलैण्ड द्वारा किया। साथ ही बारहवी फ़ौज के बहादुराना मुक़ाबिले का जिक्र होगा जिस छोटी-सी फ़ौज के सैनिक बेसरोसामान, नंगे पांव लड़ते थे। उनकी गिनती केवल १३ हजार थी जब कि दुश्मन की सेना साठ हज़ार थी और हर तरह के सामान से लैस और सशस्त्र थी।

पोलैण्ड के सैनिक कीयेव पर क़ब्ज़ा कर लेते है। पोलिश पूंजीवादी विजय की मस्ती में झूम रहे हैं। पर घुड़सवार फ़ौज की फ़ौलादी ताकत उमान के पास जमा होने लगती है। फिर इसके बाद एक भयानक हमला, और पोल पीछे हट जाते हैं। हमारा विजयी हमला और उक्रइना से दख़लन्दाज़ों का निष्कासन। इस पुस्तक में फ़ासिस्टो की कला-विध्वंसक प्रवृत्ति का चित्रण किया जायेगा जो सुन्दर भवनों और शानदार पुलों इत्यादि को तोड़ते हैं, जो भी उनके हाथ लगे उसका क्रूरता तथा बर्बरता से नाश करते हैं। गांव आग से तबाह होते है, रेल की पटरियां और स्टेशन उड़ा दिये जाते हैं। पाशविक व्हाईटगार्ड – जो अपने को "संस्कृति के रक्षक" कहते थे – खून से लथपथ मार्ग पर चलते हुए नजर आते हैं।

ऐसी वह पृष्ठ-भूमि होगी जिसके सामने मैं अपने युवा पात्रों का संघर्ष दिखाऊंगा, किस तरह वे अपनी मातृभूमि को आजाद करने के लिए बोल्शेविक नेतृत्व में लडे। घटना-चक्र के विकास में, मैं यह दिखाना चाहूंगा कि किस भांति इन तरुण कामगारों की वीर टोली, कम्युनिस्ट

तथा युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य, बड़े होते हैं, और संघर्ष की आग में से फ़ौलाद बनकर निकलते है।

यह है समूची पुस्तक की रूपरेखा। आपने देखा कि मैंने चरित्रों के व्यक्तिगत भविष्य के बारे मे कुछ नही कहा। जरूरत हुई तो मैं इनका ख़ाका भी पेश कर दूंगा।

उपसंहार

साथियों की राय ठीक है कि किताब जल्दी तैयार होनी चाहिए। पर इसपर मुझे, आज के विचार-विमर्श की रोशनी मे, काम करना होगा। और मै साफ़ साफ़ कहूंगा कि इस मीटिंग से मुझे काम के बारे में बड़े स्पष्ट और ठोस सुझाव मिले है, मैंने बड़े ध्यान से इनको सुना है।

मुझे कामरेड गेरासिमोवा का भाषण बहुत पसन्द आया। उन्होने महत्वपूर्ण बातों को बड़ी स्पष्टता के साथ व्यक्त किया है।

और अब दो शब्द किताब के बारे में।

यह जाहिर है कि पाण्डुलिपि पर और काम करने की जरूरत है। मैंने स्ताव्स्की तथा अन्य साथियो के विचार समझ लिये हैं। किताब को असफल नही माना गया, पर यदि ऐसा निर्णय भी होता तो उसे भी मैं उसी तरह साहस के साथ सहन करता जिस तरह जीवन के और सदमे और असफलताएं एक सैनिक बरदाश्त करता है।

हम जानते हैं कि विजय प्राप्त करना आसान नही होता, विजय का मार्ग सीधा और समतल नही है। इतिहास में ऐसी किसी भी विजय का जिक्र नही मिलता।' प्रत्येक विजय, चाहे वह हमारे देश की विजय हो, या हममें से किसी एक की, कठिनाइयो पर क़ाबू पाकर ही प्राप्त होती है।

यदि आज यह स्पष्टतया दिखाया गया होता (और मेरी अनुभूति इन बातो के प्रति बड़ी तीव्र हुआ करती है, मुझे ज्यादा कहने की जरूरत नही होती)—अगर आज यह निर्णय किया गया होता कि मेरी पुस्तक नाकामयाब रही है तो इसका केवल एक ही परिणाम होता: मैं कल प्रातः से फिर काम मे बड़ी तेजी से जुट जाता। यह मैं डींग नहीं मार रहा हूं। केवल अच्छे अच्छे वाक्य नही गढ़ रहा हूं। जीवन में यदि संघर्ष न हो

तो वह मेरे लिए जीवन ही नही। धिक्कार है ऐसे जीवन पर जिसमें केवल जीवित भर रहना ही लक्ष्य हो। जीवन का अर्थ ही संघर्ष है।

जब कोलोसोव ने मुझे कहा कि 'अग्नि-दीक्षा' पर फिर से पूर्णतया काम होना चाहिए, तो मैंने इनकार नहीं किया, हालांकि उस वक्त यह मेरे लिए बेहद मुश्किल काम था क्योंकि मुझे निमोनिया हो चुका था और मैं बहुत कमजोर पड़ गया था।

मैंने अब समझ लिया है कि इस किताब की मुख्य कमजोरियां क्या क्या हैं। एक और बात भी मेरी समझ में आ गयी है: कि इन बैठको से वक्त ज़ाया नही होता।

कल मैं आराम करूंगा—इतने भर विश्राम की मैंने अपने को इजाजत दे दी है। परसों, मैं आपके सुझावों को फिर से अच्छी तरह पढ़ूगा, और फिर पुस्तक के उन अंशों पर, जिन्हें, स्ताव्स्की के शब्दों में नया रूप देने की ज़रूरत है, फिर से काम करूंगा। मेरे ख़्याल मे ३ महीने जमकर काम करूं तो यह काम पूरा हो जायेगा। पर यदि रोज़ाना तीन शिफटों में काम किया जाय तो तीन महीने की जगह एक महीने में काम पूरा किया जा सकता है। मुझे रात को नीद नही आती, इससे सहायता मिलेगी। कई लोग अपने रोग का इलाज आराम द्वारा करते हैं और कुछ लोग—काम द्वारा। आज से एक महीने बाद आशा है, मैं अपनी पाण्डुलिपि युवा कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति को पहुंचा दूंगा, जो शायद स्वीकृत होगी।

आपकी कही हुई बहुत-सी बातों से मुझे दूसरे भाग के लिखने में भी बड़ी मदद मिलेगी। क्योंकि जिसपर आज हमने विचार किया है वह तो मेरे उपन्यास का—जैसा कि मैं उसे बनाना चाहता हूं—केवल तीसरा भाग है। अब मैं आपकी कही गयी बातों को, आपकी मैत्रीपूर्ण आलोचना को ध्यान में रखते हुए काम शुरू कर सकता हूं। और आशा करता हूं कि जिन साथियों ने यह इच्छा प्रकट की है कि पुस्तक जल्दी तैयार हो उन्हें भी सन्तोष होगा।

महीने भर के अन्दर लीग की केन्द्रीय समिति को 'तूफान के जाये' का पहला भाग, उन त्रुटियों को दूर करके मिल जाना चाहिए जिनपर आज विचार किया गया है। पर बात एक और भी है—और मेरे साथी, जो कि सब के सब लेखक हैं, मेरी बात को समझेंगे: एक

लेखक को अपनी किताब पर अपने हाथ से ही काम करना चाहिए। उसे स्वयं ही विचारना और आवश्यकतानुसार लिखना चाहिए। जिस लेखक को भी अपनी किताब प्यारी है, वह उसे पूरा करने के लिए किसी दूसरे के हाथ में नही दे सकता, भले ही वह दूसरा आदमी कितना ही योग्य क्यों न हो। इसे सब भली भांति समझ सकते हैं।

यदि आप, मौसम के मध्य मे 'पचशत' टोली * के पास जाकर कहें कि "लाइये, मैं आपकी जगह जुताई कर दूं," तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि वे कभी नही मानेंगी। "हम स्वयं इसे पूरा करेंगी," उनका जरूर यही जवाब होगा। मेरा मतलब किसी तरह भी उस आलोचना के महत्व को कम करने का नही है जो यहा पर की गयी है। उससे मुझे अपनी पुस्तक में सुधार करने मे बड़ी मदद मिलेगी। पर यह काम मैं स्वयं ही करूंगा।

हां, मुझे अवश्य किसी योग्य सम्पादक की जरूरत है। यह ठीक है। इससे ऐसी गलतियां, जैसे "पन्ने जैसे आंसू" तो दूर हो जायेंगी जो कि 'अग्नि-दीक्षा' के ४० वें संस्करण तक चलती गयी।

मैं साधारण-सा मजदूर हूं, मैंने यह नही सोचा कि पन्ना हरे रंग का होता है। यह एक बचकाना ग़लती थी। पर इसे लिखे आज ६ बरस हो चुके है।

लीग की केन्द्रीय समिति मेरी गणना लीग के सक्रिय सदस्यो मे करती है। जब से मै लीग में शामिल हुआ हूं एक बार भी कभी सुस्ती के कारण या केन्द्रीय समिति के आदेश का पालन न करने पर मेरी भर्त्सना नही की गयी। यह काम भी मैं जितनी जल्दी हो सका, कर दूगा। मैं पूरी संजीदगी से यह बात कह रहा हूं। किताब को कई दर्जे बेहतर बनाने की जरूरत है, ताकि इसके छपने पर मुझे शर्मिन्दा न होना पडे। बहुत-से मित्रों का विचार है कि लेखक की पहली किताब सबसे अधिक जानदार

---

* इस हवाले का सम्बन्ध उस सामूहिक आन्दोलन से है जो मरीया देमचेंको और मरीना ग्नातेंको नामक सामूहिक फार्म की लडकियों की सफलता को देखकर शुरू किया गया था। उनकी सफलता यह थी कि उन्होने अपनी टोली के साथ सन् १६३५ में फ़ी हेक्टर ५०० सेन्टनर्स चुकन्दर पैदा करके रेकार्ड कायम किया था। —सं०

श्रौर सबसे अधिक सारपूर्ण होती है, और दूसरी किताब का लिखना बड़ा कठिन काम होता है। प्रिय मित्रो, जो बातें आपने कही हैं मैं उन सब पर विचार करूंगा और उनके अनुसार काम करूंगा। इस तरह की मैत्रीपूर्ण बैठकें और भी अधिक होनी चाहिए।

जो कुछ अलेक्सान्द्र सेर्गफ़िमोविच, फ़देयेव, असेयेव तथा वलेरिया गेरासिमोवा ने कहा है, उस सब ने मुझपर गहरा असर किया है। मुझे केवल यही कहना है कि आपको अधिक कड़ी आलोचना करनी चाहिए थी। इस सिलसिले में साथी असेयेव ने कुछ प्रगति जरूर दिखायी है।

हममें से कोई भी व्यक्ति जो अकेला काम करता है, ग़लतियां कर सकता है। आदमी कितना ही योग्य क्यों न हो, जो योग्यता और शक्ति समूह में है वह अकेले काम करने में नहीं।

प्रिय मित्रो, आपकी स्पष्ट, यथार्थ तथा सच्ची आलोचना के लिए, जो आज यहां हुई, मैं आपका आभारी हूं। हमारा अब एक दूसरे से परिचय हुआ है। अब कामरेड गेरासिमोवा मेरे लिए अधिक सजीव हो उठी है, और फ़देयेव भी। मुझे इन साथियों के अस्तित्व का भास हमारे संघर्ष तथा निर्माण में होता रहा है, पर मैं पहले इन्हें कभी मिल न पाया था।

मुझे आशा है कि मेरे उपन्यास के दूसरे भाग पर भी इसी तरह विचार किया जायेगा। और तब भी बन्दूकें निस्संकोच दाग़ी जायेंगी।

और अन्त में, प्रिय साथियो, इस अत्यन्त उपयोगी परामर्श के लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

पत्र

अपने परिवार को

खारकोव, २३ मार्च, १९२५

कुटुम्बी जन,

कुछ दिन हुए आपका पत्र मिला, पर डाक्टरो की तरह तरह की चिकित्सा के कारण मैं जवाब न दे सका।

प्यारे पिताजी, मुझे आपके बाजू के बारे में जानकर अत्यन्त चिन्ता हुई। मुझे आशा है कि आप इसका पूरी तरह से ध्यान करते रहेंगे ताकि तकलीफ़ और न बढे। परम प्रिय पिताजी, मुझे इसका बहुत दुःख है। आजकल घर से जब कोई खत आता है तो सबसे पहले मैं उसके नीचे तीन हस्ताक्षरों को खोजता हूं – मां का, कात्या* का और आपका। हर एक चिट्ठी मे आप भी, कुछ न कुछ सबके साथ अवश्य लिख दिया कीजिये।

आजकल ये लोग मुझे बड़ी तेज़ दवाइयां दे रहे हैं, जिनका असर भी जल्दी होने लगा है, टागों की सूजन तो अभी से थोड़ी कम हो गयी है। थोड़ा दर्द ज़रूर है पर इसकी कोई परवाह नही। मुझे अभी अभी इयोडोफार्म का इंजेक्शन और न मालूम कितनी और दवाइयां दी गयी है, इसी लिए इस वक़्त मेरी तबीयत कुछ ठीक नही। फिर भी अब मेरी आस बंधने लगी है कि शायद इस साल के आखि़र तक मैं अपने घर लौट सकूंगा और आप लोगों के बीच रह सकूंगा। इसकी पहले मुझे बहुत आशा न थी। शायद अब भाग्य साथ देगा।

यह स्थिति है। कृपया अपने बारे में विस्तार से लिखिये। और

---

*कात्या – ओस्त्रोव्स्की की बहिन, येकातेरीना अलेक्सेयेवना ओस्त्रोव्स्काया। – सं०

मीत्या* को कहिये कि वह भी मुझे लिखे। मैं हर वक़्त चिट्ठियों के इन्तज़ार में रहता हूं। इस वक़्त बस इतना ही। बाद में फिर लिखूंगा। मेरी ओर से सब पड़ोसियों को सादर नमस्कार।

आपका प्रिय पुत्र
कोल्या।

मुझे ख़त ज़रूर लिखिये। आपकी ख़बर मुझे ज़रूर मिलती रहे। मैं मा के लिए तीन टिकट भेज रहा हूं।

पिता के नाम

खारकोव, ८ अप्रैल, १९२५

परम प्रिय पिताजी,

मैं आपको यह ख़त अपनी आज की स्थिति और आगे की संभावनाएं बतलाने के लिए लिख रहा हूं। जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं, आजकल ये लोग मुझे दोनों घुटनों में आयोडीन के इन्जेक्शन और अन्य दवाइयां दे रहे हैं। इन्जेक्शनों से बहुत दर्द होता है। तीन-चार दिन तक मुझे बुख़ार रहता है, और फिर इन्जेक्शन लगने लगते हैं, और फिर वही क्रम शुरू हो जाता है। यह बहुत कड़ा इलाज है। इसे बरदाश्त करना बड़ा कठिन है, पर शायद इसी से कुछ फ़ायदा भी हुआ है। सूजन बहुत कुछ कम हो गयी है। केवल थोड़ी-सी बाक़ी रह गयी है। चूंकि मैं बहुत कमज़ोर हो गया हूं, ये लोग मुझे किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान पर भेजने की सोच रहे हैं। १५ मई को सीज़न शुरू होता है। कुछ ही दिनों में मुझे स्थिति का पता चल जायेगा। प्रोफ़ेसर ने लिख दिया है कि मुझे सचमुच इसकी ज़रूरत है, और हम दरख़ास्त दे रहे हैं। इसलिए प्यारे पिताजी, यदि भाग्य ने साथ दिया तो मैं स्वस्थ होकर लौटूंगा, अपनी प्यारी पार्टी का काम करूंगा, और आपकी भी सहायता करूंगा। अक्सर आपके ख़तों में ऐसे दुःखपूर्ण शब्द होते हैं जिनसे मालूम पड़ता है कि आप कष्ट में हैं। इससे मुझे बड़ा क्लेश होता है। मेरे प्यारे पिताजी

---

*मीत्या – लेखक का भाई, द्मीत्री अलेक्सेयेविच ओस्त्रोव्स्की, 'अग्नि-दीक्षा' में पावेल कोर्चागिन के बड़े भाई अर्त्योम के नाम से चित्रित। – सं०

और माताजी, मैं आप लोगों को वचन देता हूं – बस कुछ देर और सहन करें, मैं लौट आऊंगा। शायद इस साल के आख़िर तक। फिर स्थिति बेहतर हो जायेगी। आपकी यथासम्भव सहायता करूंगा। मैं अपना सर्वस्व आपके चरणों में रख दूंगा। मुझे अपने लिए किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। मैं कम्युनिस्ट हूं।

साभिवादन

कोल्या।

भाई के नाम

ख़ारकोव, १५ अप्रैल, १९२५

मेरे सबसे अच्छे, प्राणों से प्यारे भाई मीत्या,

कल मुझे आपका ख़त मिला। मैं अविलम्ब जवाब दे रहा हूं।

आपके पत्र बड़े उदास किन्तु स्नेहपूर्ण और भ्रातृभाव से भरे होते हैं। आपकी सदा ही मेरे प्रति ऐसी भावना रही है, और मैं जानता हूं भविष्य में भी बनी रहेगी।

प्यारे मीत्या आपके ख़त से मुझे आपका सच्चा भ्रातृ-प्रेम मिला, जो सदा आपके दिल में मेरे लिए रहता है। इसके लिए, प्यारे भाई, मेरा हार्दिक धन्यवाद!

आप सच मानिये, मेरी हालत इतनी ख़राब नहीं जितनी कि आपने सुन रखी है। मेरी टांगों के काटने की बात – यह प्रोफ़ेसर वागनर के वापिस लौटकर आने से पहले की है। वह जर्मनी गया हुआ था। उसके सहायकों का ख़याल था कि अगर और किसी चीज़ से फायदा न हुआ तो संभव है यह करना पड़े। मैं उन्हें कभी यह काम नहीं करने देता, यकीन मानिये। इससे तो मैं बिल्कुल लाचार हो जाता। पर इस बात को भी हुए अब पाच महीने बीत चले हैं। आजकल वे मेरा इलाज किसी नये तरीक़े के अनुसार कर रहे हैं, जिससे सूजन क़रीब क़रीब जाती रही है। बिल्कुल मामूली-सी बाक़ी रह गयी है। आज मुझे आख़िरी इंजेक्शन लगेगा, क्योंकि इस इलाज के मुताबिक इतने ही इंजेक्शनों की ज़रूरत थी। हां, एक ख़बर सुनिये। ये लोग मुझे एक स्वास्थ्यप्रद स्थान में भेज रहे हैं। प्रोफ़ेसर कहता है कि मुझे जाना होगा। स्वास्थ्यप्रद स्थान के लिए कल कमीशन ने मेरे स्वास्थ्य की जांच की थी।

चलेगा कि मैं कहां भेजा जाऊंगा। हमारा प्रोफ़ेसर हर साल स्लाव्यान्स्क स्वास्थ्य-केन्द्र मे १५ मई से काम करने जाता है। वहां के शल्य-चिकित्सा विभाग का संचालक वही है। और वह चाहता है कि मुझे वहीं भेजा जाय ताकि वह मेरा ध्यान रख सके। उसने मुझे एक सिफ़ारिशी चिट्ठी भी कमीशन के नाम दी कि मुझे स्लाव्यान्स्क भेजा जाय। मेरा ख़याल है कि मुझे वहीं भेजा जायेगा। कमीशन के सामने पेश होने के लिए इन्होंने मुझे निश्चित समय से दो दिन पहले बिस्तर पर से उठने की इजाज़त दे दी। मैं अब चल सकूंगा।

तो प्यारे मीत्या, आपने देख लिया कि स्थिति अच्छी है। जिस चीज की मुझे आशा थी, वही सच निकलती आ रही है। और मैं स्वास्थ्य-केन्द्र में शायद एक महीने के बजाय तीन महीने रहूं। प्रोफ़ेसर कहता है: "मैं तुम्हे वहा उतनी देर रखे रखूगा जितनी देर रहने की तुम्हे ज़रूरत है।" इसलिए, प्यारे भाई, सब कुछ ठीक चल रहा है। और जहां तक मेरी टागों की बात है, उनके काटने का सवाल ही पैदा नही होता। मुझे भी तो आराम चाहिए। मेरा एक और साथी जो पार्टी सदस्य है और मेरा अच्छा मित्र है, मेरे साथ जायेगा। हम दोनों को एक ही जगह भेजा जा रहा है। इसके बाद, प्यारे मीत्या, कुछ आस बंधती है, और यह बिलुकल निराधार नही, कि मैं आप सबके पास बिल्कुल स्वस्थ होकर घर लौटूंगा।

प्यारे भाई, मेरा दिल कितना आपसे मिलने को चाहता है। जी चाहता है मैं लौटकर आऊं और आपके साथ मिलकर काम करूं। घर के सब लोगों को—मा, पिताजी, और हर एक को—मेरे बारे में बतला दें। जब मैं घर आऊंगा (जो शायद इस साल के अन्त में होगा) तो मुझे केन्द्रीय समिति की ओर से थोड़ी आर्थिक सहायता, १५० या २०० रूबल, मिलेगी। इसलिए शुरू में मेरे लिए पैसों का प्रबन्ध हो जायेगा, और बाद में मैं खुद काम कर सकूगा। इतना जान लें, मेरे प्यारे भाई, कि मैं कभी कोई बात आपसे नही छिपाता, और न कभी आगे छिपाऊंगा। और मैं एक कम्युनिस्ट के नाते आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरी स्थिति सुधर रही है।

मैं आपको सब कुछ लिखता रहूंगा।

आपका

बोर्या।

आ० पा० दवीदोवा* को

[येवपातोरिया], ३ जुलाई, १९२६

परम प्यारी गाल्का,

तुम्हें ख़त लिखने में मुझे थोड़ी देर हो गयी है। तुम्हें कारण तो मालूम ही है... अब मैं तुम्हें अपनी स्थिति सक्षेप मे बता दू।

डाक्टर कहते हैं कि मुझे यहा एक महीने के लिए और रहना होगा। उन्होंने अपना निश्चय केन्द्रीय समिति को भेज दिया है, और मैं अब यहा पर टिका हुआ हूं और उनके जवाब का इन्तजार कर रहा हूं।

मिट्टीवाला इलाज ख़त्म हो गया है, और अब मुझे किसी दूसरे आरोग्य-स्थल में भेजा जा सकता है, समुद्र के किनारे, जहा मैं वालू पर लेटकर सूर्यस्नान कर सकता हूं। वहा ज्यादा मजा रहेगा। समुद्र का रंग इतना भूरा नही जितना कि यहां नजर आता है।

पर मेरी सेहत पहले से अच्छी नही। मैं पहले ही डरता था, मिट्टी के इलाज से मेरी रीढ़ की हड्डी में वेहद दर्द होने लगा। उन्होंने हड्डी का एक्सरे लिया और—दूसरे जोड़ में स्पाण्डिलाइटिस का रोग निकला।

विनमांगे बीमारी मिल गई। एक और उलझन खड़ी हो गयी। पतवार फिर एक ओर घूम गयी। नयी नयी तकलीफें अपने लिए ढूढ निकालने में मुझसे कुशल कौन होगा—मानती हो कि नही? ख्याल है कि थोड़ी ही देर वाद कोई और मुसीवत आयेगी, और इसी तरह यह क्रम निरन्तर चलता रहेगा...

...फिर आज की घटनाओं पर लौट आऊं—जीवित रहने का संघर्ष जारी है ताकि फिर काम पर लौट सकूं। यह मोर्चा बहुत कड़ा है, मेरी सारी ताक़त सोख डालता है, यहां तक कि मुझे फिर से खड़ा हो पाने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कितनी ताकत मेरी इसमे नष्ट हो रही है!

---

*आन्ना पाव्लोवना दवीदोवा—ख़ारकोव की मैडिको-मेकैनिकल इन्स्टीट्यूट की एक नर्स, जहां १९२५ मे ओस्त्रोव्स्की इलाज के लिए रहा।—सं०

कौन जीतेगा? इसका निर्णय अभी तक नहीं हो पाया, हालांकि दुश्मन (मेरी बीमारी) को और कुमक (स्पाण्डिलाइटिस) मिल गयी है।

अपने बारे में लिखना। मैं तुम्हारे ख़त के इन्तजार मे हूं। बाद में और लिखूंगा।

कोल्या।

आ० पा० दवीदोवा को

[नोवोरोसीस्क], १८ जुलाई, १९२९

प्यारी गालोच्का,

आख़िर तुम्हारी ओर से भी ख़त आया। मैं तो सोचने लगा था कि तुम मुझे भूल ही गयी हो, या मुझे लिखना नही चाहती। मैंने तुम्हे दो पत्र लिखे, जानती हो, एक ख़त इन्स्टीट्यूट के पते पर और दूसरा ज़्मियेव्स्काया रोड के पते पर—और तुम्हारी ओर से एक शब्द नहीं। कुछ रोज़ हुए मैंने नोविकोव को लिखा कि यदि तुम्हें मिले तो तुम्हे एक दोस्ताना-सी झिड़की दे दे।

अब बीती को भूल जाओ।

मेरे बारे में। खेद है कि मेरा स्वास्थ्य निश्चित तौर पर गिर रहा है—धीरे धीरे, शनैः शनैः पर निस्सन्देह। कुछ ही दिन हुए कि मेरे बायें बाज़ू और कन्धे ने हरक्त करना बन्द कर दिया। मुझे पहले ही दायें कन्धे के जोड़ मे ऐन्कीलोसिस था, वह तुम्हें मालूम है। अब बायां भी गया। पहले उसमे दर्द होता रहा, और फिर वह कठोर हो गया और उसका हिलना-डुलना बन्द हो गया।

अब मैं बालों को कंघी तक नही कर सकता, और तो क्या करूंगा। अब मेरा बाया कूल्हा सूज गया है और दर्द करता है। मैं बड़ी मुश्किल से अपनी टांग को इधर-उधर हिला पाता हूं। इसमें कोई शक नहीं कि यह भी जल्द ही बिल्कुल कठोर हो जायेगी। अब मेरे जोड़ नही हिलते, वे भी नहीं जो कुछ अर्सा पहले हिल-डुल सकते थे। पूर्ण जड़ता आती जा रही है।

तुम भली भांति जानती हो कि इसका क्या मतलब है। मैं भी समझता हूं। पर मैं सिवाय इसके कि लेटे लेटे यह सब देखता रहूं, कुछ कर नही सकता। बीमारी धीरे धीरे मेरी इस आशा को मुझसे छीन रही है कि मैं कभी स्वस्थ हो पाऊंगा। इस बीमारी को रोकने के लिए जो दिनोदिन बढ़ती जा रही है और मुझे अपनी दबोच में लिये जा रही है कोई क्या कर सकता है? रीढ़ का दर्द अब कमर तक ही सीमित नहीं, ऊपर भी, रीढ़ के छठे जोड़ में भी होने लगा है। इसका मतलब शायद दो में से एक चीज है: या तो एक या दो और जोड़ों में स्पाण्डिलाइटिस हो गया है, या फिर मेरी रीढ़ में तपेदिक नही, वही बीमारी है जो मेरे अन्य जोड़ों में है।

रात के वक़्त मुझे बेहद पसीना आता है। रात भर मुझे दायी करवट पर पड़े रहना पड़ता है, और इससे मैं बहुत थक जाता हूं। मैं सीधा नहीं सो सकता। और बायी करवट इसलिए नही हो सकता कि मेरा कूल्हा बहुत सूजा हुआ है। दिन भर मैं सीधा लेटा रहता हूं। एक क़दम नही चल सकता। बिस्तर पर पड़ा रहता हूं। यह है मेरी सामान्य स्थिति की रूप-रेखा। कोई बहुत सुखकर नही है। मैंने मिख़ाईल इवानोविच को पत्र लिखा है–पर, दुर्भाग्यवश, कोई जवाब नहीं आया। इसकी मुझे बहुत परवाह नहीं। मुझे कभी भी डाक्टरी पेशा अच्छा नहीं लगा, पर अब तो मैं उसे सहन ही नही कर सकता। अगर मैं तुम्हे, तुम्हारे इसी धन्धे से सम्बन्धित होने के नाते पत्र लिखूं, इस नाते नही कि तुम एक बड़ी प्यारी, और गुणवती लड़की हो, तो मेरे पत्र बहुत सुखकर नहीं होंगे। कई बार, गालोच्का, दर्द बहुत तेज हो उठता है, पर उस समय भी मैं इसे चुपचाप सहन कर लेता हूं, जैसे कि पहले कर लिया करता था। मैं किसी से इस विषय पर बात नही करता, न ही शिकायत करता हूं। मेरी भावनाओं मे जड़ता आ गयी है, न मालूम कैसे। मैं पहले से अधिक गंभीर हो गया हूं, और खेद से लिखना पड़ता है कि अब अवसर उदास रहता हूं।

प्यारी गालोच्का, तुमने ख़ुश रहने तथा दृढ़ संकल्पी होने के लिए लिखा है। मेरी प्यारी, नन्ही-सी गालोच्का, ख़ुशी और दृढ़ संकल्प! दृढ़ संकल्प तो है, पर ख़ुशी–यह जा चुकी है। इसे ...

ने मार डाला है। शायद अगर ज़रा भी कम शारीरिक पीड़ा होती, तो तनाव कुछ कम पड़ जाता। पर अब मुझे कई बार दान्त भीचने पड़ते हैं ताकि कही भेड़िये की तरह चिल्लाने न लगूं—क्रूर, कभी समाप्त न होनेवाली चिल्लाहट।

तुम्हें मार्ता पूरिन* के बारे में कहां से पता चला?

ज़रूर नोविकोव ने तुम्हें बतलाया होगा। ठीक है न? मैं इस बारे में तुम्हें फिर कभी लिखूंगा। यह मेरे जीवन का—जो शुरू मे ही गलने-सड़ने लगा था—एक पन्ना है जिसके बारे में किसी को बहुत मालूम नही। अगर तुम्हारे पास कभी वक़्त हो, दो या तीन मिनट भी, तो तुम, कभी-कभार मुझे पत्र ज़रूर लिखती रहना।

मिख़ाईल इवानोविच को कहना कि उसके पत्र न लिखने पर मैं उसका शुक्रिया अदा नही कर सकता। मेरी ओर से फाईना येव्सेयेवना और अपनी माता व बहिन को मेरा सादर अभिवादन कहना। तुम बड़ी प्यारी लड़की हो, मै जानता हूं। और तुम और मैं, तुम्हारे एक छोटे-से भाषण के बाद, एक दूसरे से इस कदर मिलने लगे हैं कि मेरा जी चाहता है कि तुम्हारा हाथ अपने हाथ में लेकर दबाता रहूं, मेरी प्यारी, गुणवती गालोच्का—मेरी नन्ही "दादी"!

नि० ओस्त्रोव्स्की (कोल्या)।

आ० पा० दवीदोवा को

नोवोरोसीस्क, २२ अक्तूबर, १६२६

प्यारी गालोच्का,

मास्को के पते पर लिखा हुआ तुम्हारा ख़त कल मुझे मिला। और मैं जितने दिन ख़ारकोव में रहा कितना अकेला रहा! अगर मुझे तुम्हारा पता मालूम होता तो मैं ज़रूर पहुंचता और शायद तुम्हें अपनी बातों से थका मारता।

पर दुर्भाग्यवश ऐसा हो नहीं पाया। और वह मनहूस इन्स्टीट्यूट!

---

*मार्ता पूरिन—'अग्नि-दीक्षा' में मार्ता लोउरिन।—सं०

नही ले सकता। किसी को मुझे करवट दिलानी पड़ती है। मैं चल भी नही सकता — ज्यादा से ज्यादा १० कदम, और वह भी बडी कठिनाई के साथ। निस्सन्देह स्पोण्डिलाइटिस ही है। केवल यह मालूम नही कि उसकी कौनसी क़िस्म।

मुझे बताओ गालोच्का, क्या मिख़ाईल इवानोविच इन्स्टीट्यूट में है? मैं उसे अपनी स्थिति खोलकर लिखना चाहता हूं और पूछना चाहता हूं कि क्या मैं कार्सेट बाध लूं क्योकि रीढ़ में इतनी तकलीफ़ है। जब तुम्हे फ़ाईना येव्सेयेवना मिले तो इस बारे में उससे भी पूछना — कि क्या कार्सेट बाधने से मुझे कुछ फ़ायदा होगा?

तुम देख रही हो कि स्थिति बुरी है। कितनी भी चेष्टा क्यो न करूं अपनी शारीरिक व्याधियों के जाल में से मैं बाहर नही निकल सकता। मैं नीचे ही नीचे जा रहा हूं, ऊपर को उठना नामुमकिन हो रहा है।

जिन्दगी का ख़ात्मा कर देने की जो प्रबल इच्छा उठती है, उससे बचने के लिए बड़े दृढ संकल्प की जरूरत है। कई कई दिन इतने भयंकर हो उठते है कि सब ओर अन्धकार ही अन्धकार नजर आता है। पर जो भी हो, मै अपने आपको काबू में रखे रहता हूं। जीवन मे इतना आकर्षण है, सघर्ष के कारण और हमारे निर्माण-कार्य के कारण, कि इसे छोडा नही जा सकता। मैं इस उम्मीद पर जिये जा रहा हूं कि किसी रोज फिर अपने काम पर लौट सकूगा। पर इस दौरान ज़िंदगी चोट पर चोट कर रही है, और मैं इसका जवाब नही दे सकता।

पर एक आशा का और अवलम्ब लूगा — अगली गरमियो और समुद्र का। यदि इनसे लाभ हुआ तो सब ठीक हो जायेगा। मैं अपने मित्रो के सम्बन्ध मे जानना चाहता हूं। वे सब कहां है? क्या इन्स्टीट्यूट अब भी बन्द है? क्या इसका मतलब है तुम्हारे पास आजकल कोई काम नही? मेरी ओर से अपनी माताजी, बहिन तथा फ़ाईना येव्मेयेवना, सब को सादर अभिवादन कहना। बाद मे लम्बा ख़त लिखूंगा। आजकल शारीरिक कष्ट अधिक होने के कारण बहुत कम लिख सकता हूं और वह भी बुरा।

मैं प्यार से तुम्हारा हाथ दबा रहा हूं गालोच्का।

निo ओस्त्रोव्स्की (कोल्या)।

पिता और बहिन को

नोवोरोसीस्क, २४ अक्तूबर, १६२६

पूज्य पिताजी, प्रिय कात्या,

मुझे अपने काग़जात वक़्त पर मिल गये। धन्यवाद! आपने मेरी जरूरत की सब चीजें भेज दी। किसी तरह समय कट रहा है, बस। नहीं, नहीं, तकिया मत भेजिये और कोट भी नहीं। कोट बेच दो मा, अगर उसका कुछ मिलता है तो, और उससे अपनी जरूरत की कोई चीज़ ले लो। मुझे उसकी जरूरत नहीं। मैं बीमार हूं। मेरी टागों मे इतना दर्द नही जितना कि मेरी रीढ़ की हड्डी में है। मुझे बिस्तर पर लेटे रहना पड़ता है। बस लेटा रहता हूं, और पढ़ता रहता हूं। मेरी सेहत बिल्कुल चौपट हो गयी है। कुछ भी करूं इसमे कोई सुधार नजर नहीं आता। अब यही चाहता हूं कि गरमी का मौसम आ जाय। तब मैं समुद्र के किनारे, अनापा मे रह सकता हूं। मुझे आपको ख़त लिखे कुछ समय हो गया है, क्षमा मागता हूं। पर मेरे पास अपने दर्दों और पीड़ाओं के अलावा कुछ लिखने को नही, और इनके बारे मे मैं लिखना नही चाहता। मैं इनसे लाचार हो चुका हूं। सुधरने का कहीं सकेत मात्र भी नही, हर रोज़ हर चीज वैसी की वैसी रहती है। पूज्य पिताजी, आपका स्वास्थ्य कैसा है? मुझे पत्र लिखिये। मेरा सबको सप्रेम अभिवादन तथा शुभकामनाएं।

आपका

कोल्या।

भाई को

नोवोरोसीस्क, २ नवम्बर, १६२६

प्यारे मीत्या,

आपका ख़त आज ही मिला और मैं उसी वक़्त जवाब देने लग गया हूं। मेरे प्यारे भाई, आपको मेरे बारे मे चिन्ता नही करनी चाहिए। इसकी जरूरत नही। यह ठीक है कि मेरी हालत अच्छी नहीं—मैं

बीमार हूं, इत्यादि, पर इसके बारे में तो आप कब से जानते हैं। मैंने अभी तक हार नही मानी। गरमियों तक तो जरूर अपने आपको बचाये रखूंगा। आप विश्वास रखिये। हम इस बारे मे कर भी तो कुछ नही सकते। मुझे तो बिस्तर पर पड़े पड़े सब सहन करता है, बस।

आप समझ लें, प्यारे भाई, कि मै आपको सब कुछ लिख देता हूं, जैसी भी स्थिति है, कभी कुछ नही छिपाता। अगर मेरी स्थिति गंभीर हो उठी, तो मै आपसे छिपाऊंगा नही। आपको सब लिखकर बता दूंगा। अगर अपने भाई को मैं अपनी हालत नही बताऊंगा तो फिर किसको बताऊंगा? मै जरूर बीमार हूं और नजर आता है कि अस्पताल के बाहर नही रह सकता। पर मैं अपना मन गिरने नही देता, अपना संकल्प नही छोड़ता — आप जानते हैं। मै शिकायत नही करता, चीख़ता-चिल्लाता नही, जैसे चल सकता हूं, चलता जाता हूं। यह ठीक है कि स्थिति कभी कभी बड़ी कठोर हो उठती है... पर आपके आने की बिल्कुल जरूरत नही। अगर हालात नाजुक हो उठे, तो मै आपको रोकने की चेष्टा नही करूंगा। पर इस समय ऐसे कोई चिन्ह नजर नहीं आते। मै यहां तक बरदाश्त करता आया हूं, और ख़्याल है गरमियों के आने तक बरदाश्त किये रहूंगा, उसके बाद देखूंगा। मेरी स्थिति भयानक नही है। केवल एक तरह का पागलपन है।

यहा पर गरमी है, धूप खिलती है, जब कि मै सोचता हूं आपकी तरफ पतझड़ का मौसम आ चुका होगा। आपने लिखा है कि आप काम कर रहे हैं। कहां पर? और क्या काम — फिटर का या कण्डक्टर का? हमारे बुजुर्गों और बाकी सब लोगों का क्या हाल है? मुझे सब ख़बर दीजिये। मैं भी वैसा ही करूंगा, पर मेरे पास कोई खबर देने को नहीं। मैं पत्र लिखना शुरु करता हूं तो देखता हूं कि कुछ भी नही लिख सकता। हर दिन दूसरे जैसा होता है।

मेरी शुभकामनाएं,

आपका भाई
बोन्या।

आ० पा० दवीदोवा को

नोवोरोसीस्क, ७ जनवरी, १९२७

प्यारी गालोच्का,

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मुझे याद नही कि हाल ही मे मैंने तुम्हें ख़त लिखा था या नही, पर कोई बात नही, मैं आज फिर लिखूंगा। जब स्थिति पहले से भी अधिक अंधकारमय नज़र आने लगती है, तो मैं अपना मन ठीक रखने के लिए उन गिने-चुने लोगों को पत्र लिखने लगता हूं जो मेरा संपर्क किसी न किसी तरह बाहर के संसार से बनाये रख सकते हैं जिससे कि आजकल मैं बिल्कुल दूर हो गया हूं।

मेरा यहां कोई मित्र नही। मेरा मतलब है ऐसा कोई नही जिसे हम मित्र कहते हैं। ज़रूर मेरे आस-पास बहुत-से लोग हैं [जो] मुझपर बड़े मेहरबान हैं। [परन्तु] उन्हें दकियानूसी परिवार का नमूना समझो। मेरा काम उनके साथ ज्यों-त्यों चल रहा है, पर ज़ाहिर है कि मैं उनसे वह चीज़ नही हासिल कर सकता जो मुझे अपने लोगों से मिलती है। अपने कम्युनिस्ट मित्रों तथा साथियो से दूर हो जाने के कारण मैं उदास हो उठता हूं। इतने महीने गुज़र गये, एक भी साथी को देख तक नही पाया, कभी किसी की ओर से कोई खत नही आया कि निर्माण-कार्य में हमारा जीवन कैसे ढल रहा है, या हमारी पार्टी और उसका काम कैसे चल रहा है—हालात ने मजबूर कर दिया है कि मैं ऐसे लोगो के साथ रहूं और घूमू (यदि कोई बिस्तर से जुड़ा होने पर घूम-फिर सकता है तो) जिनके पास मुझे आन्तरिक सन्तोष देने के लिए कुछ नही और जिसका कारण मैं समझ सकता हूं।

तुम जानती हो कि मेरे जीवन मे पार्टी ही मेरा सर्वस्व है। और तुम समझ सकती हो कि मेरे लिए इस स्थिति में रहना, जिसमें कि पार्टी के साथ सब सम्पर्क छूट जायं, कितना कठिन होगा। ऐसा सम्पर्क भी जो ख़ारकोव में था। लगता है मैं शून्य में रह रहा हूं। मेरे अन्दर एक नयी किस्म की भावना बढ़ने लगी है, जिसे सचमुच तुम निरर्थक जीवन कह सकती हो, क्योंकि जीवन कभी कभी इतना शून्य हो उठता है कि हर प्रकार के दुर्बल विचार और संकल्प-विकल्प मन पर अपना प्रभुत्व जमाने लगते हैं। तुम इसे और लोगों से ज्यादा अच्छी तरह समझ सकती हो, कि

यदि एक आदमी पशु-समान नही, संकीर्ण हृदय, स्वार्थी और मूर्ख नहीं तो उसके लिए जीवन कभी कभी अन्धकारमय हो उठेगा। कई लोग हैं जो केवल जिन्दा भर रहने से ही सन्तुष्ट हैं, केवल यही चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा देर तक जिन्दगी से चिपके रहें, और अपनी यथार्थ स्थिति पर आंखे मूदे रहें।

कुछ वर्ष पहले ऐसी स्थिति को सहन करना मेरे लिए आसान था। उस समय मैं भी उसे उसी तरह झेलता जैसे अधिकांश लोग झेलते हैं। पर अब स्थिति बदल गयी है। और अब अगर भयानक घड़ियां आती हैं, तो इसमे लज्जा की बात कुछ नही। तीन वर्ष हो चले हैं, तीन वर्ष से जीवन के लिए संघर्ष कर रहा हूं—बार बार मैं खदेड़ा गया हूं और मुझे धकेलकर एक एक कदम पीछे हटा दिया जाता रहा है। अगर अन्त तक संघर्ष करते रहने की प्रवृत्ति, जो मेरे स्वभाव का एक अंग है, न होती, तो मैंने कब का अपने को गोली का निशाना बना लिया होता। क्योंकि इस तरह कोई चल नही सकता। एक ही रास्ता है, कि मनुष्य इसे अपने लिए विकट संघर्ष का सुअवसर समझे।

तुम उस चीज को याद करो जिसने हम दोनों को एक दूसरे का मित्र बनाया। इन्स्टीट्यूट मे शुरू शुरू के वे दिन। मैं उन्हें कभी नही भूल सकता। मै उन दिनों एक भेड़िये के बच्चे के समान था, जिसे पकड़कर पिंजरे मे डाल दिया गया हो। अब मैं एक थका-हारा भेड़िया हूं, जो अपने आखिरी दिन गुजार रहा है।

हमें जीवन से, अपने इस संघर्ष से और उस काम से अगाध प्रेम है, जिसके द्वारा एक नयी दुनिया का निर्माण हो रहा है। यह नयी दुनिया पहली से कई गुना बेहतर होगी। जीवन का एक भी अवसर रहते हम जीवन को त्याग नही सकते। हमी जीवन को उसकी सच्ची यथार्थता में देख पाये है।

मेरे लिए गर्मी का मौसम निर्णायक होगा।

स्वयं तो मुझे सुधार की कोई आशा नही जान पड़ती। पर देखें क्या होता है। मैंने तुम्हें सब कुछ नही लिखा। बाद में, किसी दूसरे खत मे लिखूंगा। मैं अब थक गया हूं...तुम्हारी चिट्ठियां इतनी कोमल होती हैं, गालोच्का। हालांकि हम दोनों बिल्कुल अलग अलग क्षेत्रों से आये हैं फिर भी कुछ है जिसने हमें अपनत्व में बांध दिया। मेरी

नन्ही दादी, इतनी कोमल, इतनी छोटी-सी, मैं तुम्हारे हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर बार बार सहला रहा हूं।

तुम मुझे ज़रूर ख़त लिखती रहना। क्योंकि अब मेरे दिन साधारण दिनों से अधिक अंधकारमय हो उठे हैं।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

प्यो० नि० नोविकोव* को

[नोवोरोसीस्क], २२ अक्तूबर, १९२७

प्रिय पेत्या,

हमारी ख़तोकिताबत बाक़ायदा नहीं हो पाती—पर आदमी क्या करे। मैं क्षमा नहीं मांगूगा। तुम थोड़ा मुझे कोसोगे, फिर चुप हो जाओगे—क्या मैं नहीं जानता?—और फ़ैसला कर लोगे कि ऐसे "अव्यवस्थित तत्वों" का सुधार नहीं हो सकता। मेरी ओर से कोई विशेष खबर नहीं। सारा वक़्त बिस्तर पर पड़ा रहता हूं। मैं कुछ लिखने की सोच रहा हूं—एक तरह की "ऐतिहासिक-गीतमय-वीर गाथा"। सचमुच—मज़ाक नहीं करता, मैं बड़ी गंभीरता से लिखने की सोच रहा हूं। मैं केवल यह नहीं जानता कि उसका नतीजा क्या निकलेगा। मैं दिन-रात पढ़ता रहता हूं। मुझे सब किताबें मिल जाती हैं, जो भी चाहूं—मैं एक बहुत बड़े पुस्तकालय का सदस्य बन गया हूं—और बड़े चाव से किताबें पढ़े जा रहा हूं। विज्ञान और बीच बीच में—अपना दिमाग साफ़ करने के लिए—उपन्यास भी, सब आधुनिक किताबें। कैसी बढ़िया बात है!

तुम आजकल क्या कर रहे हो? वक़्त कैसे गुजारते हो? सच तो यह है कि तुम अभी तक जीवन के किनारे किनारे चल रहे हो, उसके अन्दर नहीं घुस पाये। जरा सोचो तो पेत्या, मेरे मित्र, अगर मेरे पास तुम्हारी टांगें होतीं तो मैं अब तक सारे सोवियत संघ के एक छोर से दूसरे छोर तक, दस बार दौड़ता हुआ, आ जा चुका होता।

कल्पना में तुम्हारा हाथ दबा रहा हूं, प्रिय मित्र। फ़ील और आन्ना को मेरा अभिवादन कहना।

तुम्हारा कोल्या ओस्त्रोव्स्की।

---

*प्योत्र निकोलायेविच नोविकोव—ओस्त्रोव्स्की का एक मित्र।—सं०

अपने परिवार को

[मत्सेस्ता], २० जून, १९२८

सुहृद्जनो,

लो एक ख़बर सुनो – बिल्कुल तार की शैली में ख़बर दूंगा:

१. मुझे मत्सेस्ता के खनिज जल में पहली बार नहलाया गया (पांच मिनट)। जिसे तुम ऐश कहते हो। यह कोई साधारण चश्मे का पानी नहीं था। ख़तरनाक स्थितिवाले रोगियों के लिए एक बहुत बड़ा स्नानगृह है। स्ट्रेचर में लिटाकर या बीमारों की पहियोंवाली कुर्सी में बिठाकर वहां रोगियों को लाया जाता है। बहुत साफ़-सुथरा और सुविधाजनक है।

यह चिकित्सालय पहाड़ पर स्थित है। चारों तरफ़ जंगल, ताड़ के पेड़ और फूल हैं। भगवान जानता है, बड़ा ही सुन्दर दृश्य है! स्नानगृह लगभग २०० क़दम नीचे है। एक प्रकार की खुली गाड़ी में हमें वहां ले जाया जाता है। और कर्मचारी अपने काम में कितने दक्ष हैं, एक बार भी धक्का या झकोला नहीं लगता! इनमें से बहुत-से मेरे मित्र बन गये हैं। नर्सें भी उम्र की छोटी हैं, और वे मुझे 'प्राव्दा' पढ़कर सुनाती हैं इत्यादि। किसी ग़लतफ़हमी में न रहना। "इत्यादि" का प्रयोग बिल्कुल निर्दोष है।

इससे आगे: डाक्टरों ने मेरा निरीक्षण किया है। कहते हैं मत्सेस्ता के जल में नहाना हितकर होगा। हर बात की पहले से व्यवस्था कर ली गयी है। पहले पांच दिन के बाद – मालिश, ग़ुसलख़ाने में ही। दिन के वक़्त, एक ख़ास तरह की कुर्सी में मुझे घर से बाहर, ताड़ के वृक्षों के नीचे ले जाते हैं। जिन दिनों मैं नहीं ले जाया जाता, उनकी संख्या जोड़ ली जाती है। एक बाकायदा अधिकारयुक्त निर्णय लिया जायेगा कि मुझे यहां डेढ़ या दो महीने रहने की ज़रूरत है, केवल एक महीना काफ़ी नहीं। भोजन के समय एक नर्स मेरे पास बैठती है, मुझे खिलाने के लिए। उन्होंने शुरू में ही देख लिया था कि मैं बहुत खाने का शौक़ीन नहीं हूं, हालांकि इस दौरे के बाद मैं घर की ख़ुराक से तीन गुना खाने लगा हूं। दिन में पांच बार भोजन करता हूं और निस्सन्देह ये लोग पेट में ठूंस देते हैं – भगवान बचाये इनसे!

मेरे कमरे का साथी एक बहुत बढ़िया कामरेड है – पुराना बोल्शेविक

ग्रौर मास्को नियन्त्रण कमीशन के अध्यक्षमण्डल का सदस्य। हमारे पास बातें करने का बहुत मसाला है।

कहीं कोई अड़चन नहीं। मुझे नीद भी अच्छी आती है। रात के समय यहा गहरा सन्नाटा रहता है। और दिन भर खिड़कियां खुली रहती हैं। मुझे जरूर यहां ग्राराम मिलेगा। कात्या मेरी प्यारी, मुझे बड़ा खेद है कि तुम यहां मेरे पास नहीं हो। यह स्थान सुखूमी से भी अधिक सुन्दर है। मेरी प्यारी, नन्ही-सी बहिन, तुम्हारे दुख के बारे मे सोचकर मेरे दिल को बहुत क्लेश होता है।

बहुत बहुत प्यार से,

कोल्या।

अ० अ० जिगिर्योवा* को

[मत्सेस्ता,] १ अगस्त, [१९२८]

प्यारी शूरा,

तुम्हे गये केवल एक दिन हुआ है। केवल एक दिन। परसों मै शहर चला जाऊंगा। पर ये दिन मेरे लिए न मालूम क्यो, बिल्कुल शून्य-से हैं।

लोगों से मेल-जोल बढ़ाना दुःख का कारण होता है, और—इससे भी बढ़कर—पहले दोस्ती और मित्रता बढ़ाना जब कि मनुष्य मेरी तरह भ्रमण करता-फिरता हो, क्योकि जब जिन्दगी उसे मित्रों से जुदा कर देती है तो यह कितना दुःखद होता है।

मैं तुम्हे बार बार ख़त लिखूंगा, और उनमे सब कुछ लिखता रहूंगा...

पान्कोव इस समय मेरे पास बैठा बाते कर रहा है, पर मैं केवल यही सोच रहा हूं कि इस वक़्त तुम कहा होगी और क्या सोच रही होगी।

मेरी प्यारी कामरेड, प्यारी शूरा। मैं तुमसे कितना कम मिला हूं, फिर भी तुम मेरे कितने समीप आ गयी हो।

मैं जल्दी ही तुम्हें एक लम्बा-सा पत्र लिखूंगा, और उसमें सब बातें लिखूंगा।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

---

*अलेक्सान्द्रा अलेक्सेयेवना जिगिर्योवा—ओस्त्रोव्स्की की एक मित्र। 'अग्नि-दीक्षा' में इसी नाम से चित्रित।—सं०

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, २५ अगस्त, १६२८

प्यारी शूरा,

आज मैं अकेला हूं। राया* एक ज़िला कांफ्रेंस में गयी है। राया के सार्वजनिक काम के बारे मे – उसका काम ट्रेड-यूनियन मे बढ़ रहा है। इस काम मे वह अधिकाधिक व्यस्त रहने लगी है, जिससे जाहिर है, मैं अधिकाधिक अकेला रहा करूंगा। पर इसमे कोई तबदीली करने का प्रश्न ही नही उठता, विशेषकर जब कि वह सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता (उम्मीदवार) के लिए दरख़ास्त देने की सोच रही है। लीग मे उसका आख़िरी साल है (वह अब २३ वर्ष की हो चुकी है)। मैं उसे आवश्यक राजनीतिक शिक्षा दे रहा हूं...

जब से मेरी अपनी राजनीतिक सूझ जागी है, मैं बहुत-से श्रमिकों को पार्टी मे लाने में सफल हुआ हूं। दुर्भाग्यवश अब उनसे मेरा सम्पर्क टूट गया है, पर मैं जानता हूं कि सब के सब पार्टी के अच्छे सदस्य बने हैं। जब मेरे काम के द्वारा एक और साथी, जो पहले कम्युनिस्ट आन्दोलन के बाहर रहा हो अब हमारे साथ शामिल हो जाय, तो इससे मुझे बेहद ख़ुशी होती है।

पर कुछ साथी ऐसे भी है जो एक भी आदमी का नाम नही ले सकते जिसे वे सिखाकर अपने असर से पार्टी मे ला पाये हों। उन्होंने सदस्यता के लिए बड़े यान्त्रिक ढंग से लोगों की सिफारिश की है – पर मैं इस तरह काम नही करता।

इस बीमारी मे, जब तेज़ दर्दों से मुझे कुछ चैन मिलता है, तो मैं अपना उत्साह इने-गिने काम करनेवालों पर ख़र्च करता हूं जो मेरे पास रहते हैं (इस समय राया) ताकि उनकी वर्ग-चेतना को एक दिशा में ढालकर उन्हें नये जीवन के लिए संघर्षपरायण बना सकूं। मैं अपने काम के परिणाम को इस रूप मे देख रहा हूं कि भविष्य मे जब कभी युद्ध छिड़े तो हमारे साथ विश्वास के पक्के कुछेक पार्टी कामरेड होंगे।

---

*राया – ओस्त्रोव्स्की की पत्नी, राईसा पोरफ़ीर्येवना ओस्त्रोव्स्काया। – सं०

मैं जानता हूं कि वे संख्या मे बहुत ही थोड़े हैं, पर इस समय मैं इतना ही कर सकता हूं...

कामरेड शूरा, जब... तुम्हे कोई भी ख़बर मिले तो मुझे लिखना। मुझे छोटे छोटे किन्तु यथार्थ और सजीव कार्यों की सूचना देती रहना।

धिक्कार है इन आंखों को, ये मुझे उसी तरह धोखा दिये जा रही हैं। मैं लिख तो रहा हूं, पर हज़ार कोशिश करने पर भी देख नही सकता कि क्या लिख रहा हूं। मुझे डर है कि मैं एक के ऊपर दूसरा शब्द लिख जाता हूं, और तुम जब पढ़ नहीं पाओगी तो मुझे कोसोगी...*

'प्राव्दा' के लिए धन्यवाद। तुम यहा के हालात से वाकिफ़ हो। एक अंक मिलता है तो दूसरा नही मिलता। कितनी शरमनाक बात है।

क्षमा करना दोस्त, तुम इस लम्बे ख़त से ऊब उठी होगी।

दिल ही दिल में तुमसे हाथ मिला रहा हूं।

तुम्हारे नन्हें बेटे को प्यार।

राया की ओर से अभिवादन।

कोल्या ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, २९ अक्तूबर, १९२८

प्रिय कामरेड,

तुम्हारे ख़त इतने कम और इतनी देर देर के बाद क्यों आते हैं? क्या तुम सारा वक़्त काम करती रहती हो? ऐसा भी होता है, मैं जानता हूं। बीच का अन्तर मुझे शायद बहुत लम्बा प्रतीत होता है, क्योकि अब मुझे कोई भी पत्र नही लिखता। या इसलिए कि केवल तुम्हारे साथ ही मैं गहरे सम्पर्क में हूं, और अपने जीवन की दैनिक घटनाओं पर लिखकर तुम्हें तंग करता रहता हूं। अपनी आंखो की हालत देखते हुए किसी

---

*ओस्त्रोव्स्की की नजर इस समय तक ख़राब हो चुकी थी। उसकी कई एक चिट्ठियो में ऐसे शब्द और वाक्य मिलते हैं जो पढ़े नही जा सकते, पक्तिया एक दूसरी पर चढ़ी हुई, शब्द दोवारा लिखे हुए, और अन्य भूलें इत्यादि मिलती हैं।—सं०

और को खत नहीं लिखता। शायद चिट्ठियों के इस ताते से तुम तंग आ गयी होगी, ये तुम्हारा वक़्त बर्बाद करती हैं, जो तुम बेहतर काम में लगा सकती हो। पर यदि ऐसा है तो मुझे ज़रूर लिख देना। यह सब पुराना शिष्टाचार न तो तुम्हारे अनुकूल है और न मेरे ही। अगर तुम मेरे पत्रों से तंग आ गयी हो, तो मुझे कह दो, मैं कोशिश करूंगा कि इतना लिखना कुछ देर के लिए स्थगित कर दूं। मैं लिखना बिल्कुल बन्द नहीं करूंगा – इसका वचन मैं हरगिज़ नहीं दे सकता। पर ऐसी मूसलाधार बारिश न होगी। बस, यही कहना है। अब मैं ख़त शुरू कर सकता हूं। हमें यहां आये तीन दिन हो गये हैं। और हम बाक़ायदा पूंजीपतियों की तरह रह रहे हैं। एक बड़ा कमरा है, जिसमें तीन खिड़कियां हैं, और तीनों में से धूप बाढ़ की तरह अन्दर आती है। बिजली और २४ घण्टे पानी (केवल पानी पम्प चलाकर निकालना पड़ता है)। अब मैं लम्बी लम्बी सांस ले सकता हूं और जितनी धूप चाहूं वह भी। मुझे यह २६ दिन तक नज़र नहीं आयी थी। उस तहखाने में जहां हम रह रहे थे, मेरा दम घुटता था – शारीरिक अर्थ में भी और नैतिक अर्थ में भी। अब मैं सर्दी का सारा मौसम यहीं बिताऊंगा।

...हम 'क्रास्नाया मोस्क्वा' चिकित्सालय के नज़दीक रहते हैं। राया के लिए यह जगह ज़रा ज़्यादा दूर है, क्योंकि उसे मीटिंगों इत्यादि में जाना होता है, पर कोई चारा नहीं। और शूरोच्का, यह जगह बेहद सुन्दर है। हम यहां अगली गरमी के मौसम में बड़े मज़े से आराम करेंगे। प्रिय मित्र, इसे भूलना नहीं। शूरा, अगर तुम नहीं आयी, और अपने बेटे को नहीं लायी तो मेरी तुम्हारी सदा के लिए लड़ाई हो जायेगी। समुद्र तक पहुंचने के लिए दस मिनट चलना, चीनियों के नन्हें पांवों के लिए भी – मेरा मतलब है तुम्हारे जैसे नन्हे पावों के लिए भी – बहुत ज़्यादा नहीं। मत्सेस्ता में जहां गुसलख़ाने तक पैदल चलकर जाया करते थे, उससे कम फ़ासला यहां होगा। और यहां एक बहुत बड़ा बाग भी है। और तुम जानती हो शूरोच्का, अगर तुम और मैं मत्सेस्ता में नहाने भी चले जायं तो तुम्हारा बेटा यहां समुद्र-तट पर नहा सकता है और धूप में खेल सकता है। हमारे घर से भी वह नज़दीक रहेगा। और फिर, चिकित्सालय के बाद तुम यहां आराम कर सकती हो। मैं मज़ाक नहीं करता – तुम मेरे खत का यह अंश अपने बेटे को पढ़कर सुनाओ और फिर देखो, वह तुम्हें चैन से बैठने नहीं

देगा, जब तक कि तुम 'लेनिनग्राद – सोची' गाड़ी पर सवार न हो जाओगी। हां, ल्योन्या को तुम्हें चैन से बैठने भी नही देना चाहिए, नही तो शायद तुम 'भूल' जाओ, या वैसी ही कोई बात हो जाय।

तुम्हे उस वक़्त यहां आने का निमन्त्रण देना फ़जूल होता जब कि हम उस तहख़ाने में रह रहे थे। पर अब तो मै एक पूजीपति हूं (मेरी सीमित धारणाओं के अनुसार) – हमारे पास एक बहुत बड़ा कमरा है।

क्या तुम मेरे पत्र पढ़ सकती हो?

(इस पत्र का अन्तिम भाग उपलब्ध नही।)

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची], १६ नवम्बर, १६२८

प्यारी शूरा,

तुम्हारे सब पत्र मिले। तुम्हारी ओर से कोई भी समाचार न मिलने पर मै चिन्तित हो उठा था, और सोचने लगा था कि शायद तुम इस पत्र-व्यवहार से तंग आ गयी हो। अब मुझे अपनी भूल मालूम हुई है...

मेरी कितनी उत्कट इच्छा है कि मैं इस वक़्त तुम्हारे साथ होऊं और अपने बोल्शेविक साथियो के साथ बाते करूं। इससे मुझे कितना सुख मिलेगा...

मैं कई बार इतना लाचार हो उठता हूं – शारीरिक तथा नैतिक दोनों अर्थो मे – कि मैं बयान नही कर सकता। तुम इसकी ज़रा कल्पना करो शूरा, कि तुम्हारे चारो ओर संघर्ष चल रहा है, और तुम्हारे हाथ-पाव बंधे हुए हैं; तुम कुछ कर नही सकती, केवल ताकती भर रहती हो...

प्यारी शूरा, मेरी प्रिय मित्र, मुझे ख़त लिखती रहो। मुझे तुम्हारे ख़तों की बड़ी ज़रूरत है।

ल्योन्या को मेरा प्यार देना।

कोल्या।

मैं तुम्हे अपनी साथिन राया और उसकी प्रगति के बारे में कुछ लिखना चाहता हूं। वह मेरी राजनीतिक छात्रा है, और उसे उन्नति करते,

नया व्यक्तित्व पाते देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी होती है। आजकल वह अपने काम मे तन-मन से लगी हुई है... कोई दिन ऐसा नही, कोई शाम ऐसी नही जब उसकी कोई मीटिंग या कांफ़्रेंस या कुछ और न होता रहता हो। वह भागती हुई, उत्साह से भरी मेरे पास अपने नये काम और ड्यूटिया लिये आती है, और हम इकट्ठे उनपर विचार करते हैं। आजकल वह बहुत व्यस्त है, सारा वक़्त इधर से उधर भागती-फिरती है, नगर-सोवियत के चुनाव की तैयारियो मे योग दे रही है।

नगर-सोवियत में नये लोगों को और श्रमजीवियों को लाकर उसे फिर से नया रूप देना कितना अच्छा होगा।

मेरा कोई इरादा राया के इस विकास को तनिक भी रोकने का नही। इस बढ़ते श्रमजीवी की मैं यथाशक्ति, यथासंभव सहायता कर रहा हू...

कोल्या।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची], २६ नवम्बर, १६२८

परम प्रिय शूरा,

मुझे इस वक़्त तुम्हें यह ख़त नही लिखना चाहिए, क्योंकि मैं परेशान हो उठा हूं, और बिना सोचे उसी वक़्त लिख देना...

जब मेरे जीवन का वास्तविक आधार – यह आशा कि मैं फिर से संघर्ष में भाग ले सकूगा – छूट जायेगा, तो मेरे लिए सब कुछ ख़त्म हो जायेगा।

कई बार यह सोचकर कि कितनी शक्ति, कितना असीम बोल्शेविक प्रयास मुझे अपने आपको किसी अंधेरे कूप में गिरने से बचाये रखने के लिए व्यय करना पड़ता है, मेरा मन क्षोभ से भर उठता है। यही शक्ति किसी अच्छे काम मे लगा पाता तो उपयोगी हो सकती थी।

मैं अपने आस-पास के लोगों को देखता हूं – बैलो की तरह हृष्ट-पुष्ट मगर मछलियों की तरह उनकी रगों में ठण्डा ख़ून बहता है – निद्राग्रस्त, उदासीन, शिथिल, ऊबे हुए। उनकी बातों से क़ब्र की मिट्टी की बू आती है। मैं उनसे घृणा करता हूं। मैं समझ नही सकता कि किस तरह स्वस्थ

ग्रौर तगड़े लोग, ग्राज के उत्तेजनापूर्ण जमाने मे ऊब सकते है। मै कभी इस तरह नहीं रहा, ग्रौर न ही रहूंगा...

काश कि मैं तुमसे मिल पाता ग्रौर तुमसे बातें कर पाता। तुम उन व्यक्तियों मे से हो जिनपर मुझे विश्वास है... पार्टी की एक बुजुर्ग सदस्या...

मैं जीवन में किस मार्ग पर चलूगा, इसकी रूप-रेखा मैंने दिल ही दिल में बना ली है। मैं जानता हूं हम किस ग्रोर चले जा रहे है ग्रौर कैसे। नही, मैं किसी चौराहे पर नही खड़ा हू...

ग्रपने रेडियो-सेट के बारे मे ग्रभी कुछ नही कह सकता। जब यह पूरा का पूरा जुड़ जायेगा, तो मैं तुम्हें लिखूगा कि उसपर लेनिनग्राद स्टेशन ग्राता है या नही।*

नन्हे बेटे को मेरा प्यार।

तुम्हारा

कोल्या।

ग्र० ग्र० जिगिर्योवा को

[सोची], ३० जनवरी, १६२६

प्यारी शूरोच्का,

मुझे चिन्ता होने लगी है। लगभग ३४ दिन गुजर गये ग्रौर तुम्हारी तरफ़ से एक लफ़्ज़ तक नही ग्राया। क्या बात है? या क्या तुम्हारा एक एक मिनट काम को ग्रर्पित हो जाता है?

मैंने पहले भी तुम्हे ग्रपना नया पता लिख दिया था, ग्रब फिर लिखता हूं—सोची, उलित्सा वोइकोवा, ३६। पुराने पते पर भेजी हुई चिट्ठियां ग्रब भी हमे मिल जाती है।

यहां ग्राजकल वसन्त है। कभी-कभार रात को थोड़ा पाला पड़ता है...

ग्राज से ग्राठ दिन बाद ये लोग मेरी ग्राखों का ग्रापरेशन करेगे।

---

*ग्रोस्त्रोव्स्की इस समय बिना देखे ग्रधिकतर स्पर्श से (इस वक़्त तक ग्रोस्त्रोव्स्की करीब क़रीब बिल्कुल ग्रन्धा हो चुका था) ग्रपने लिए एक रेडियो-सेट तैयार कर रहा था।—सं०

जहां तक मैं सोच सकता हूं, मुझे बहुत कम विश्वास है कि मेरी नज़र लौट आयेगी। पर मुझसे जो बन पड़ेगा करूंगा ताकि बाद में पश्चात्ताप न हो कि इस मोर्चे पर मैं लड़ने से घबरा उठा था।

मैं अपनी स्थिति तथा जो कुछ भी उसके साथ सम्बन्धित है, उसे भली भाति जानता हूं। जिस स्पष्टता से मैं इन सब बातों को समझता हूं, और कोई नही समझता। इसमे कोई अनावश्यक उत्तेजना या क्लेश नही, पर स्थिति को, सम्पूर्ण स्थिति को मैं पूरी तरह समझता हूं।

कर्पूर के दो इंजेक्शन मुझे लग चुके हैं। मेरा दिल बेशक बहुत मजबूत है, फिर भी हमें कर्पूर से उसकी सहायता करनी पड़ी है। पहले से बहुत अच्छा हू हालांकि नब्ज़ बहुत ठीक नही, एक जैसी नही चलती। मुझे यक़ीन है कि गरमी के मौसम तक जिन्दा रहूंगा और गरमी का मौसम भी काट लूगा। उसके बाद देखें क्या होता है।

मुझे अब भी उम्मीद है, शूरोच्का, मेरी प्यारी, कि हम मिलेंगे और दिल की बातें एक दूसरे से कहेंगे।

मेरे पास एक अच्छा कमरा है, जिसमें खूब धूप रहती है... एक और कमरा राया और मां के पास है... ईंधन हमारे पास बहुत है, और कमरे गरम रहते है।

राया को तो मैं कभी देख ही नही पाता। वह सुबह साढ़े छः बजे निकल जाती है (उस वक़्त मैं सो रहा होता हूं), और रात के ११-१२ बजे लौटती है (मैं उस वक़्त भी सो रहा होता हूं)। वह मार्च महीने मे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) में महिला दिवस के अवसर पर शामिल होगी।

नगर पार्टी समिति का व्यवहार बड़ा मैत्रीपूर्ण रहा है। उन्होंने हमारे लिए ईंधन जुटा दिया है और डाक्टर का प्रबन्ध कर दिया है।

डाक्टर मुझे बातें नही करने देते—विशेषतया इस समय। और मैं दिन प्रतिदिन अकेला लेटे लेटे एक महान विश्वव्यापी विद्रोह के गौरवमय स्वप्न देखता रहता हू।

परम प्यारी शूरोच्का, दिल ही दिल मे मैं तुम्हारा हाथ सस्नेह दबा रहा हूं।

निकोलाई।

अ० अ० जिगियोंवा को

[सोची], २० फ़रवरी, १६२६

प्रिय शूरोच्का,

आखिर तुम्हारा पत्र आ ही गया। अब बात साफ हुई कि क्यो इतनी मुद्दत तक तुम्हारी तरफ़ से कोई ख़बर नही मिली – कि तुम गावों मे काम करने गयी हुई थी और बीमार भी रही।

डाक्टरों के बारे में, जैसा तुमने लिखा है, वैसा ही करूगा।

मैं पहले से ही अपनी जांच करवा रहा हू, और कल या परसों फिर डाक्टर आयेंगे। सच तो यह है कि अब मुझे अपने पेट की अजीब अजीब तकलीफ़ों का कारण पता चला है। इनका कारण उस दवाई की बूंदें है जो ये मेरी आखो मे डालते हैं – एट्रोपीन की बूदे। जब मैं बूदे नही डलवाता तो मुंह का स्वाद भी कड़वा नही होता और भूख भी लगती है। किसी भी डाक्टर को यह मालूम नही हो सका। अब मेरी आखो की सुनो। मैं तो अन्धा हो रहा हूं, शूरा। मुझे तो कुछ नजर ही नही आता। जल्द ही नजर पूरी १०० प्रतिशत जाती रहेगी और यह एक भयकर स्थिति होगी।

अगर तुम्हारे डाक्टर मित्र किसी अच्छे विशेषज्ञ से इस बारे मे बात कर सकें तो बड़ा अच्छा होगा। यहा के डाक्टर की रिपोर्ट के आधार पर वे बात करे। यह डाक्टर अवस्था में बहुत छोटा है। यहा ये मुझे नाडी के अन्दर पारे के इंजेक्शन देने की सोच रहे हैं, ताकि मेरा स्वास्थ्य बेहतर हो सके। उम्मीद नही कि मैं इसे स्वीकार करू, क्योकि मुझे इसकी उपयोगिता पर बहुत विश्वास नही।

प्यारी शूरोच्का, मैंने पहले ही तुम्हे लिखा है कि मैं कितना उदास रहा हूं। अब भी वैसी ही हालत है, बल्कि धीरे धीरे अन्धापन आने के कारण तो मन और भी अधिक बेचैन हो उठता है।

पर अब भी किसी तरह मुझमें चलते रहने की शक्ति है। पर इससे अधिक अब मैं जुटा भी नही सकता।

सोचो तो, मेरी प्यारी, जब तुम अपने बेटे के साथ यहां आओगी, तो मैं तुम्हारा चेहरा नही देख पाऊंगा। मैं कितना बेबस हूंगा।

अब शायद, मैं कुछ मुद्दत तक तुम्हें ख़त नहीं लिख सकूंगा। पर तुम समझ जाओगी।

सप्रेम अभिवादन,

कोल्या।

मा और राया की ओर से अभिवादन। ८ मार्च को राया सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की सदस्या हो जायेगी।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची], २१ अप्रैल, १९२९

...बीमार रहना अब मेरा धन्धा हो गया है। मेरी जितनी शक्ति इन निरन्तर बीमारियों में खर्च होती है—अब उसका सौवां हिस्सा भी किसी उपयोगी श्रम में लगता, तो वीबोर्ग का कामगार* भी आसानी से मेरा मुकाबला न कर पाता। पर जैसी स्थिति है, उसमें तो ये सपने साबुन के बुलबुलों की तरह हैं।

इन मुसीबतों में से निकल नहीं सकता। जो घृणा मेरे मन में इनके प्रति उठती है उसे केवल तीखी, तेज गालियां ही व्यक्त कर सकती हैं। सत्य तो यह है—एक घृणित परन्तु ध्रुव सत्य—कि इस साल, १९२९ में, कम से कम इसके शुरू में, मेरी हालत पिछले साल से बुरी है। और अगर इसी तरह तेजी से यह बिगड़ती गयी तो जिन्दगी का ही सफाया हो जायेगा।

मैंने युवकों की एक टोली जुटा ली है—अभी तक वे संख्या में अधिक नहीं, और न ही उनमें बहुत नियमितता है। और मैं उनका बड़ी कठोरता से शोषण करता हूं—उनसे ज़ोर ज़ोर से अख़बार, पार्टी-पत्रिकाएं इत्यादि पढ़वाता हूं। जब भी कोई आदमी पहली बार मुझे मिलने आता है, तो मेरे अभिवादन का रूप ही यही होता है—"मुझे पढ़कर सुनाओ!" और वे पढ़ते हैं। उस वक़्त तक पढ़ते रहते हैं जब तक कि उनकी जिह्वा लड़खड़ाने नहीं लगती। जो कुछ मैं अभी तक नहीं पढ़ पाया था, उसे एक

---

*लेनिनग्राद का वीबोर्ग जिला अपनी क्रान्तिकारी प्रथाओं के लिए प्रसिद्ध था।—सं०

प्यासे की तरह, अतृप्त, मैं बड़ी आतुरता से पढ़ता हूं। "पढो" – यही सबके लिए मेरा नारा है – और मैं मानता हूं कि कुछेक के लिए यह काम बहुत कड़ा और थका देनेवाला होता है। पर इसका फल स्पष्ट है · मैं फिर से गतिमान जीवन के सम्पर्क मे आ रहा हूं।

राया को आदेश मिला है कि वह लीग के युवकों को यहा लाय। मैं उन्हें थोड़ा तैयार करता हूं और फिर – उनका निर्लज्ज शोषण करने लगता हूं। इसका लाभ उन्हें भी है और मुझे भी, हालाकि वे जल्दी थक जाते है। पढ़ाई में उनकी रुचि नही, इसकी जरूरत को उन्होने अभी तक महसूस नही किया।

'बोल्शेविकों'* को पाकर अत्यन्त ख़ुशी हुई। भेजती जाओ, शूरोच्का!

कुछ शब्द ल्योन्या के लिए:

प्यारे ल्योन्या,

तुम्हारी मां लिखती है कि तुम उन्हे वार वार काला समुद्र याद कराते रहते हो। तुम्हारा वाल्टिक बेशक अच्छा होगा, पर काले समुद्र के क्या कहने। यहां इतनी लुभावनी गरमी है, और ताड़ के पेड है – बिल्कुल जैसे यह भूमध्यप्रदेश हो। और बड़े बड़े पहाड़ हैं, जिनकी चोटिया बरफ से ढकी है – वाह वाह, कितना सुन्दर दृश्य है! इसमे कोई हैरानी की बात नही कि तुम रात को इसके सपने देखते हो। पर वह जो तुम्हारी मा शूरा है, वह ऐसा नही सोचती। इसलिए तुम्हारा अब फर्ज यह है कि ज्योंही मा का स्वास्थ्य ठीक हो जाय, और उन्हें छुट्टिया मिल जायं, फौरन दक्षिण जाने के लिए हल्ला मचाना शुरू कर दो। आन्दोलन करो, प्रचार करो... और पूरी कोशिश करो कि जो सीधी गाड़ी लेनिनग्राद से सोची को आती है उसमे बैठ जाओ... मंजूर है, छोटे भाई?

बस, अब अगस्त मे मिलेंगे – ठीक है न? लो, अब हाथ मिलाओ, और मा को मेरा अभिवादन कहो।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

---

*अप्रैल १९२९ मे अ० अ० जिगिर्योवा ने ओस्त्रोव्स्की को 'बोल्शेविक' पत्रिका के पिछले अंकों का एक फाइल भेजा था। – सं०

8*

अपने भाई, बहिन और पिता को

सोची, १९२९

प्रिय मीत्या, कात्या और पूज्य पिताजी,

आपको सूचित किया जाता है कि मां नगर पार्टी समिति के महिला-विभाग की प्रतिनिधि बन गयी है। उन्हें प्रतिनिधि-पत्र मिल गया है और अब वह विभाग की और विविध पार्टी इकाइयों की बैठकों में भाग ले सकेंगी, और इस तरह श्रमिक वर्ग के जीवन में भाग ले सकेंगी। कौन जाने—यदि उनकी इच्छा हुई, और अगर कुछ साहस बटोरकर उन्होंने कुछ राजनीतिक अध्ययन कर लिया, तो वह भी किसी रोज़ पार्टी की सदस्या हो पायेंगी—इस तरह हमारे परिवार का तीसरा व्यक्ति पार्टी सदस्य होगा।

कोल्या।

रो० बो० ल्याखोविच* को

मास्को, विश्वविद्यालय का अस्पताल,
६ जनवरी, १९३०

प्रिय रोज़ोच्का,

आख़िर मैंने कामरेड लीज़ा को अपने क़ब्ज़े में कर लिया है और उसे पत्र लिखने के लिए तैयार कर लिया है—तीन महीनों में पहला ख़त लिखवा रहा हूं। शोचनीय बात तो है ही। सबसे पहले, मेरे एक सवाल का जवाब दो: क्या तुम्हें मेरा वह ख़त मिल गया था जो मैंने तुम्हें सुगूमी के पते पर भेजा था? और अब, मेरी वार्ता सुनो। पहले मैं फिर तुम्हें इमी० ग्रोरजेन्को का सिद्धान्त याद करा देना चाहता हूं कि मित्रता का अन्दाज़ पत्रों की संख्या से नहीं लगाया जा सकता। संक्षेप में स्थिति यों है। मेरी आंखों का आपरेशन अभी नहीं हो सकता—कम से कम उस वक़्त तक नहीं जब तक कि सूजन नहीं जाती। सर्दी के मौसम में मैं आंखों में यों पकड़ा गया हूं जैसे पिंजड़े में चूहा पकड़ा जाता है। मुझे यहां अस्पताल में सर्दी लग गयी थी, और महीना भर मुझे बुख़ार रहा।

---

* रोज़ालिया बोरिसोव्ना ल्याखोविच—ओस्त्रोव्स्की की एक मित्र।—सं०

ज़ालिम इनफ़्लुएंज़ा निकला और अपने साथ कई उलझनो और परेशानियो को लेता आया। अब भी बदन की हरारत ३६° और ३७.५° (६८.५° तथा ६६.५° फ़ा०) के बीच उतरती-चढ़ती रहती है—बुखार का कोई धृष्ट अंश अन्दर बच रहा है जो अब तक जी रहा है और थर्मामीटर को हिलाता रहता है। नतीजा यह हुआ है कि मैं काफी कमजोर पड गया हू (इतनी ताकत भी नही रही कि कामरेड लीज़ा के साथ जो यह खत लिख रही है, लड़ सकूं)। अब मेरे सामने एक ही लक्ष्य है कि सब डाक्टरी चिकित्सालयों से पीछा छुड़ा लूं—बस पीछा छुडा लू, बिना इस बात की परवाह किये हुए कि आगे क्या होगा, और मैं कहा जाऊगा। अस्पताल में जिस तरह दिन कट रहे हैं, उसकी तफ़सील में नही जाऊगा। मैं थक गया हूं और परेशान हो उठा हूं। यहा से निकलने के लिए कई उपाय कर रहा हूं। ये लोग क्रेमलिन के अस्पताल मे भेजने की सोच रहे हैं, पर मैं इस कोशिश में हूं कि यदि मेरा वश चले तो इस और अन्य सभी डाक्टरी चिकित्सालयों से किसी तरह पीछा छुडाऊ।

१० जनवरी। ख़त लिखते लिखते कल अचानक एक बाधा पड़ गयी थी। आज एक पुरुष कामरेड की मदद से आगे लिखवा रहा हू। उसका नाम मीशा है और मेरा मास्को का दोस्त है। रोजा, जहा तुम्हारे पत्रों का सवाल है, हमें सब मिल गये थे। तुम्हारी प्रत्येक चिट्ठी के मिलने पर, मैं खिन्न हो उठता था कि तुम्हे इतनी देर से नही लिख पाया। हां रोज़ा, कल मुझे राया बतलायेगी कि मैं मास्को मे जिस कमरे के लिए कोशिश कर रहा था, उसका क्या हुआ... मैं तुम्हारे भाई के इन्तज़ार मे हूं। राया आजकल १५० प्रतिशत व्यस्त है। हम एक दूसरे को मुश्किल से चार या पांच दिन में एक बार मिल पाते हैं। कुछ दिन हुए पार्टी में जो छंटनी हुई उसमे से वह बच निकली है। एक अच्छा, दोस्ताना वातावरण था, जैसी कि हमे आशा थी। तुमने लिखा है कि हमारे सब पुराने मित्रों की शादियां हो गयी हैं। तो फिर अब तुम्हारी बारी है—अब वक्त आ गया है कि तुम भी ज़िन्दगी के प्रति गंभीर रुख अपनाओ। हां, मुझे शूरा जिगिर्योवा के ज़रूर ख़त आते रहते हैं। और अब, मेरी नन्ही-सी दादी, मुझे ख़ारकोव के सब हालात लिखो, और हमारे दोस्तों के बारे मे भी, और नाराज नही होना अगर मैं वक़्त पर जवाब न दे सकू। तुम सब, एक एक करके, मुझे याद आते रहते हो। मैं उन आदमियो

में से नही हू जो लोगों को इतनी जल्दी भूल जाते हैं। यह मेरा दोष नहीं, मेरा दुर्भाग्य है कि मैं तुम सबको लम्बे लम्बे ख़त नही लिख सकता। और राया तो किसी को खत लिखती ही नही। हर ओर से गुस्से की आवाज़ें आती हैं। जितनी व्यस्त वह बेचारी – मेरी रायकोम* – रह सकती है, रहती है। अगले कुछ दिनो मे मेरे डाक्टरी-इलाज और अन्य बातों में बहुत बड़ी बडी तबदीलियां और नयी नयी बाते होनेवाली हैं। अगर तुम्हें उसी समय पत्र न लिख सकूं तो लगता है जिन्दा न रह सकूंगा। इसलिए – मुझे लम्बे और थोडी थोड़ी देर बाद ख़त लिखती रहो। यही आज की मुख्य नीति है। बाकी सब बेवकूफी है।

मेरा अभिवादन, निकोलाई।

राया के पास तुम्हारा पता मौजूद है, पर मैं इस खत को इसी वक्त भेजना चाहता हूं। इसलिए पेत्या के नाम भेज रहा हूं। वह तुम्हे पहुंचा देगा।

राया तुम्हें प्यार भेजती है।

निकोलाई।

परिवार को

मास्को, १२ जनवरी, १९३०

कुटुम्बीजन,

मैं आपको कई कई दिन तक ख़त नही लिख पाता। यह मेरे लिए एक कठिन काम हो गया है।

सबको मेरा हार्दिक अभिवादन। एक बात मैं अवश्य कहना चाहता हूं। मैं मां को कम्युनिस्ट बनते देखना चाहता हूं। वह स्वयं भी चाहती हैं। अगर मैं इस साल के अन्त तक जिन्दा रहा, तो मैं उनकी, अपनी मजदूर मा की, इस तैयारी में मदद करूंगा। मेरी यह बड़ी देर से इच्छा रही है, पर मैं न जानता था कि इस बारे मे वह क्या सोचती हैं। अब

---

*रायकोम – रायोंनी कोमितेत (ज़िला पार्टी समिति) का संक्षिप्त रूप; ओस्त्रोव्स्की ने अपनी पत्नी का यह उपनाम रखा था। – सं०

मैंने अपने सामने एक लक्ष्य बना लिया है: कि उस वक़्त तक जिन्दा रहूंगा जब तक कि मां पार्टी में शामिल नहीं हो जाती। तब हम सब, हमारा सारा परिवार बोल्शेविक होगा। मैं थक गया हूं, प्यारे सम्बन्धियो। मेरे पत्र न लिखने पर नाराज नहीं होना। इसमें मेरा क़सूर नहीं है।

आप सबको मेरा हार्दिक प्यार तथा कम्युनिस्ट अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[मास्को], २२ फ़रवरी, १९३०

प्यारी शूरोच्का,

शायद तुम हैरान होगी कि तुम्हारे दत्तक बेटे तुम्हें ख़त क्यों नहीं लिखते। यदि मेरे इस जीवन में तनिक भी कहीं से प्रकाश की रेखा आ पाती, कहीं कोई परिवर्तन होता जिससे कुछ भी सुधार का आभास हो पाता, तो मैं फौरन तुम्हें लिखता। पर स्थिति जैसी है, उसमें मैं जानता हूं कि मेरी तकलीफ़ तुम्हारे लिए कितनी चिन्ता और क्लेश का कारण बनी हुई है। मैं तुम्हारे स्वभाव को जानता हूं; और समझता हूं कि तुम हर बात को दिल से महसूस करोगी और मेरी सहायता करना चाहोगी। पर मैं इतना स्वार्थी नहीं हो सकता। जीवन बड़ा निर्मम है, और इसलिए मेरे जैसे मित्र सदा चिन्ता का कारण बनेंगे। जीवन उन लोगों के प्रति सहिष्णु नहीं होता जो अपने पांवों पर खड़े नहीं हो सकते।

समय की कठोर गति को मैं सबसे अधिक जानता और महसूस करता हूं। और मेरे लिए कोई भी चीज अनिश्चित नहीं। परन्तु शूरोच्का, प्रत्येक दिन कितना ही कठोर क्यों न हो, मैं अगले कुछ महीनों के लिए अवश्य जिन्दा रहूंगा—कम से कम एक साल के लिए—जब तक कि मेरी आंखों का प्रश्न हल नहीं हो जाता।

मेरी प्यारी दोस्त, बात यह है कि कई साथियों ने मुझे कुछ एक बातों में धोखा दिया है, जिससे मुझे छोटे छोटे सदमे और धक्के पहुंचते रहे हैं। पर यह तो स्वाभाविक ही है।

यह ठीक है कि जो चीजें आज धूमिल नजर आती है संभव है कल स्पष्ट हो उठें।

और अब मुझे, अपनी पार्टी की बेटी, राया के बारे मे कुछ कहना है। उसे उम्मीदवार पार्टी सदस्या पूरी पार्टी सदस्या बनाया जा रहा है।

राया, मेरी प्यारी राया, पार्टी को मेरी अन्तिम, मेरी सजीव भेंट होगी – जो आगामी युद्धो मे सैनिक बनेगी, एक ईमानदार, तत्पर कार्यकर्त्ता बनेगी।

मैं थक गया हूं, शूरोच्का, मेरा सप्रेम अभिवादन।

मेरी ओर से ल्योन्या तथा बाकी सबको अभिवादन।

कोल्या।

अ० अ० जिगिर्योवा को

मास्को, ३ अप्रैल, १६३०

प्यारी शूरा,

२२ मार्च को मेरा आपरेशन हुआ था। उन्होने मेरे शरीर में से एक पैराथायराइड ग्रन्थि को निकाल दिया है। आपरेशन से मेरी हालत काफी बिगड गयी थी, पर अब कुछ ठीक हू। मुझे मास्को में एक कमरा दिया गया है। प्रोफेसरों का ख्याल है कि इस आपरेशन के बाद मेरा स्वास्थ्य बेहतर हो जायेगा। ज्योंही बदन में कुछ ताकत आयी तो मैं तुम्हे एक खूब लम्बा खत लिखूगा। तुम्हारी ओर से काफी मुद्दत से कोई ख़त नही आया। तुम्हारे दिन कैसे कट रहे है, मुझे जरूर लिखना, चाहे दो पंक्तिया ही लिखो। राया सारा वक़्त मेरे पास रहती है।

सप्रेम अभिवादन,

निकोलाई।

इन पिछले कुछ महीनों के भयावह अनुभवों के बाद मैं १५ अप्रैल के लगभग सोची जाने की सोच रहा हूं।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[मास्को], २२ अप्रैल, १६३०

प्रिय शूरा,

मई दिवस पर मेरा अभिवादन तुम्हें पहुंचे। हालांकि कुछ दिन पहले ही इसे भेज रहा हूं। अस्पताल से मैं उस कमरे में आ गया हूं जो इन्होने

मेरे लिए निश्चित किया है। पता है: मास्को ३४, ग्योर्त्वी पेरेऊलोक १२, कमरा नम्बर २।

मैं चाहता हूं कि २ मई तक सोची चला जाऊं, पर मैं निश्चित कुछ नही कह सकता कि यह सम्भव हो सकेगा या नही... (ज़ाहिर है, कि यह पंक्ति, वह पन्ने पर नही लिख पाया था।–सं०)... पैरायायराइड ग्रन्थि को निकाल दिया, उस रीति के अनुसार जिसका सुझाव लेनिनग्राद के प्रोफेसर ओपल ने दिया था। डेढ़ घण्टे तक आपरेशन होता रहा। शरीर के उस भाग को सुन्न करके आपरेशन किया गया था। उसके नौ दिन बाद तक हालत काफी ख़राब रही–बुख़ार आपरेशन के बाद ४०° (१०४° फ़ा०) तक गया।

अब मैं बहुत कमज़ोर हो गया हूं, पर जान पड़ता है इसका परिणाम अच्छा होगा। मेरे जोड़ो में थोड़ी थोड़ी हरकत आने लगी है।

राया उन दिनों रात-रात भर मेरे पास बैठी रही। तुम समझ सकती हो कि वह कितनी थक गयी होगी। सब कहते हैं कि वह बड़ी दुबली हो गयी है।

सब डाक्टर आग्रह कर रहे हैं कि मुझे फौरन आपरेशन के बाद मत्सेस्ता चले जाना चाहिए, क्योंकि मेरे जोड़ो में जो लवण इकट्ठे हो गये हैं वे पिघलने लगेंगे। मेरे ख़ून मे कैल्सियम की मात्रा बहुत बढ़ गयी है। वह... (यह पंक्ति वह पन्ने पर नही लिख पाया था।–सं०)

आपरेशन के बाद आंखों की सूजन भी कम होने लगी है। अब लगभग महीने भर से उनमे दर्द नही हुआ। अगर सूजन बिलकुल चली गयी तो बहुत अच्छा होगा। तब अवेर्बाख़ आपरेशन करने पर रजामंद हो जायेगा।

तुम पत्र क्यों नही लिखती, शूरोच्का? क्या मुझपर नाराज हो?

मैं तुम्हारे पत्र के इन्तजार में हूं, चाहे दो पंक्तियों का पुर्जा ही लिखकर भेज दो।

और शूरा, क्या हम इस साल नही मिल पायेंगे?

राया पहले की तरह फैक्टरी में काम कर रही है। अब उसपर एक और जिम्मेदारी आ पड़ी है–उन्होने उसे पुस्तकालय की अध्यक्षा बना

दी है। मुझपर उसका इतना वक़्त खर्च हो जाता है कि उसके लिए यह सब काम निभा पाना कठिन हो जाता है।

वह जल्दी ही सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की पूर्ण रूप से सदस्या बन जायेगी।

मैं बहुत कुछ तुम्हें लिखना चाहता हूं, पर मैं बहुत कमजोर हूं शूरोच्का, और अन्धा हूं। मेरी शुभकामनाएं अपने मित्रों को देना, और तुम्हें मेरा सप्रेम अभिवादन।

निकोलाई और राया।

रो० बो० ल्याख़ोविच को

मास्को, ३० अप्रैल, १९३०

प्रिय कामरेड रोज़ोच्का,

मुझमे इतनी ताकत नही कि मैं खत लिख सकूं पर फिर भी मैं एक बार कोशिश जरूर करूंगा। मैं पहले ही काफी यन्त्रणा सह चुका हूं, अब एक और नया सदमा पहुंचा: कि तुम लोग नही आओगे। मैं बड़ी उत्सुकता से तुम्हारी राह देख रहा था। जो मित्रता हमें एक दूसरे से बांधे हुए है उसे साबित करने के लिए चिट्ठियो के अंबार लिखने की आख़िर कोई जरूरत नही होती। जरा रुकूंगा। मुझे अपनी ताकत को सावधानी से ख़र्च करना होगा। तो इस तरह एक धक्का लगने पर, अगले धक्के से अपने को बचाने के लिए मेरे हाथ अपने आप आगे उठ आते है। क्योंकि जब से मैं सोची से आया हूं, बाक्सिंग का बोरा बना हुआ हूं जिसे सीखनेवाले सारा वक़्त घूसे मारते रहते हैं। मैं बाक्सिंग का बोरा इसलिए अपने आपको कहता हूं कि मुझे घूंसे पड़ते तो रहते हैं, पर मैं जवाब नही दे सकता। जो कुछ बीत चुका है, मेरा आपरेशन और तरह तरह की शारीरिक व्याधियां, उन सबके बारे मे इस समय लिखने का कोई लाभ नही। वह सब खत्म हुआ। मैं अधिक गंभीर, उमर मे बड़ा हो गया हूं और—तुम हैरान होगी—मेरा साहस और भी दृढ हो गया है। शायद इसलिए कि इस संघर्ष का अन्तिम चरण निकट आ रहा है।

नाड़ियों के प्रोफेसर बड़े निश्चित रूप से कहते हैं कि मैं साइकस्थीनिया की आखिरी सीमा तक जा पहुंचा हूं। यह ठीक है। पिछले ८ भयानक

महीनों का परिणाम। एक बात साफ़ है, रोज़ोच्का, मुझे ज़रूरत इस बात की है कि मैं यहां से फौरन निकल जाऊं, किसी एकान्त जगह में बैठूं, और मेरे आस-पास मेरे अपने लोग हों। इसका क्या अर्थ है—मेरे अपने लोग? इसका अर्थ है मा, राया, रोज़ा, पेत्या, मूस्या, बेरसेनेव, शूरा, मीत्या ओस्त्रोव्स्की और मीत्या खोरुजेन्को—ऐसे लोग जिनकी सच्ची दोस्ती का मुझे विश्वास है। यहा रुकूगा। एक बहुत कठोर स्थिति का अन्त हुआ है। और इसमें से मैं अपनी सब बहुमूल्य चीजें वैसी की वैसी लेकर निकला हूं। मेरा मन साफ़ है, और मेरे विद्युत्-यन्त्र को कोई क्षति नही पहुंची—मेरा मतलब है मेरा बोल्शेविक हृदय, जो अग्नि-परीक्षा में उत्तीर्ण रहा है—हालांकि मैंने अपनी शारीरिक शक्ति का लगभग ९९ प्रतिशत व्यय कर डाला है।

खत को यहा तक लिखने मे मेरा सारा दिन लग गया है। मैं सोची इसलिए भी जल्दी जाना चाहता हूं कि यहा दिन मे १६ घण्टे मैं अकेले पड़ा रहता हूं। जो आज मेरी स्थिति है उससे अन्त विपत्तिजनक होगा। और उस घिनौने क्रम मे राया अपनी शक्ति के अन्तिम कण भी खो रही है, ज्यादा से ज्यादा दिन में ४ घण्टे सो पाती है। यहां रुकूंगा।

तुम्हारे इस विचार से कि तुम मास्को आना चाहती हो, मैं सहमत हूं (क्योंकि, तुम जानती हो, मैं भी यही पर हूंगा—यदि ज़िन्दा रहा तो)। तुम्हें यहा किसी भी वक़्त काम मिल सकता है। तुम जैसे लोगों की यहा बहुत जरूरत है। जहां तक पार्टी का सवाल है—उस बारे मे तुम और मैं बाद मे बात करेंगे। पर सामान्यतया मेरी राय पूरी पूरी इसके हक में है... पर कोई भी आदमी इस नये जीवन का शतप्रतिशत निर्माता नही हो सकता जब तक कि उसे लेनिन की फ़ौलादी बोल्शेविक पार्टी में सदस्यता का कार्ड न मिला हो। उसके बिना जीवन नीरस और निःसत्व है। आजकल के महान अपूर्व समय में क्या कोई पार्टी के बाहर रह सकता है?.. पार्टी के बाहर जीवन में आनन्द ही कहा है? परिवार, प्रेम—किसी से भी जीवन की पूर्णता का अनुभव नही हो सकता। परिवार का अर्थ है कुछेक व्यक्ति। प्रेम का अर्थ है—एक व्यक्ति। पर पार्टी का अर्थ है—१६ लाख व्यक्ति। केवल अपने परिवार के लिए जीना क्रूर अहंवाद है। केवल किसी एक व्यक्ति के प्रेम के लिए जीना— नीचता है। और केवल अपने लिए जीना निर्लज्जता है। ज़रूर इस लक्ष्य को अपनाओ,

रोजा। धक्के बहुत पड़ेंगे, कई बार वे बहुत यातनापूर्ण होंगे पर अपनी पतवार कम्युनिस्ट पार्टी के साथ लगाये रखो। तब तुम्हारे जीवन में पूर्णता आयेगी, जीवन मे कोई ध्येय होगा, जीने का कोई तात्पर्य होगा। पर यह आसान नही, यह याद रखना। तुम्हें बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। यहां रुकूंगा।

अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना। यदि तुम्हारा स्वास्थ्य टूट गया, तो तुम्हारा सब कुछ टूट जायेगा, तुम्हारा जीवन टूट जायेगा। मेरी हालत देखो। जिन चीजो की तुम्हे चाह है, वे सब मेरे पास हैं, पर मेरे पास बल नही—इसलिए मेरे पास कुछ भी नही। दूसरी बात। हमे अवश्य मिलना चाहिए। अपनी छुट्टियां हमारे साथ—अपने दूसरे परिवार के साथ—आकर बिताओ। अगर स्वास्थ्य टूटने का डर है, तो सब काम फौरन छोड़कर अपना स्वास्थ्य ठीक करो—जो कि सैनिक की केवल मात्र सम्पत्ति है जिसकी क्षतिपूर्ति नही हो सकती। मई दिवस पर मेरी शुभकामनाएं। सबको मेरा सादर अभिवादन।

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

प्यो० नि० नोविकोव को

[सोची], २३ जून, १९३०

प्यारे बच्चे—प्योत्र निकोलायेविच,

देखो, तुम जरा लेनिनग्राद मे अच्छे लडको की तरह, समझदारी से रहना। अपनी आखे किताबो पर लगाये रखना और इधर-उधर आपरेटा पर वक़्त जाया नही करना। चची जिगिर्योवा का पता यह है—वसील्येव्स्की ओस्त्रोव, १३ वी लाइन, नं० ३२, फ़्लैट ४०। प्यारे पेत्या, मैंने सोचा था कि तुम बडे हो गये होगे, पर देख रहा हूं कि तुम्हे अब भी बाप की निगरानी की जरूरत है। जिस तरह तुमने मुझसे बिना पूछे ब्याह कर लिया है, उसके लिए मैं तुम्हे कभी माफ नही कर सकता। आजकल के लडकों का रवैया ही भयंकर हो रहा है। मा-बाप को तो वे क्लेश ही देना जानते है। अच्छा, तो मुझे लिखना कि तुम्हे वहा पर क्या पसन्द आया और कौनसी चीज नयी लगी। मेरी बड़ी ख़्वाहिश है कि तुम मुझे सितम्बर

महीने मे मिलो। और क्या तमारा अब भी ख़ारकोव मे ही है? मैं उसे फिर लिखना चाहता हूं। और कोई खास खबर नही...
बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा बापू
निकोलाई।

प्यो० नि० नोविकोव को

[सोची], ११ सितम्बर, १९३०

पिछले आठ महीने जिस यातना मे कटे है, मै उसके बारे मे कुछ नही लिखना चाहता। सब जहन्नुम मे जाय! पीड़ा और खून का एक निरन्तर दु.स्वप्न था। मरते मरते बचा। सब कुछ होने के बावजूद बस एक ही चीज से मुझे सात्वना मिलती है: कि मै अब तक मौत को चकमा देता आया हूं, या शायद डराकर भगाता रहा हूं। अब एक और बहुत बड़े घाव का चिन्ह नजर आने लगा है–अब की युद्ध के घाव का नही, अस्पताल के घाव का। बस, इस सारे धन्धे से यही सब हासिल हुआ है।

मैंने अपने जीवन को उपयोगी बनाने का एक और उपाय सोचा है, और केवल इसी से जीवन को सार्थकता मिल सकती है। मेरी यह योजना बडी कठिन है, सरल बिल्कुल नही। यदि मैं इसे क्रियान्वित कर पाया तो इस बारे में तुम्हे और लिखूगा। मेरे जीवन-मार्ग मे कुछ भी अनिश्चित नही। मेरे जीवन की गतिविधि सदा सीधी होती है, इसमें कोई घुमाव या हेर-फेर नही होते। मै जानता हूं कि मै कहां खडा हूं और मेरे लिए उद्विग्न होने का कोई कारण नही। मै ऐसे लोगो से स्वभावतया घृणा करता हूं और उन्हे निकृष्ट समझता हू जो जीवन के निर्मम आघात पड़ने पर रोने-बिलखने लगते है।

मै आज बेशक अपनी खाट से जा लगा हूं। पर इसका मतलब यह नहीं कि मै बीमार हूं। यह कहना बिल्कुल गलत होगा, मूढ़ प्रलाप होगा। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। क्या हुआ जो मेरी टांगें काम नहीं करती और मैं कुछ देख नहीं सकता। यह तो बिल्कुल एक भ्रम है–तुच्छ और पैशाचिक परिहास! आज मुझे एक टांग और एक आंख ही मिल जाय तो मै उतना ही सक्रिय सैनिक हो पाऊंगा जितना कि तुममें से कोई भी होगा जो आजकल निर्माण के हर क्षेत्र में संघर्ष कर रहा है।

निकोलाई।

अ० अ० जिगिर्योवा को

मास्को, [जनवरी–जून, १९३१]

प्रिय शूरोच्का,

तुम्हारा पत्र आये छः महीने बीत चुके हैं। एक शब्द तुम्हारी ओर से नही आया, और किसी को तुम्हारे बारे में कुछ भी मालूम नही। पर मैं अब भी आस लगाये बैठा हूं कि ख़त आयेगा। यहा सब कुछ पहले-सा ही है। मैंने जो किताब शुरू कर रखी है–जिसके बारे मे मैंने तुम्हे पिछली चिट्ठी में लिखा था–उसपर काम कर रहा हूं।* मेरी इच्छा है कि तुम, अगर सारी नही पढ सकती तो उसके कुछ हिस्से जरूर पढो। मै तुम्हे भेज सकता हूं। वे टाइप किये होंगे, और उन्हें पढ़ना आसान होगा। मै उनके बारे में तुम्हारे विचार जानना चाहता हूं। पर तुम मेरे *ख़तों का जवाब क्यों नही देती? बताओ, क्या तुम मुझसे नाराज हो? तुम लिखती क्यों नही?*

सप्रेम अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

प्यो० नि० नोविकोव को

मास्को, २६ मई, १९३१

तो पेत्या, मेरी यह तीव्र इच्छा है कि मैं 'अग्नि-दीक्षा' लिखू, सारी की सारी लिखू। पर यह बहुत बड़ा काम है, और रास्ते मे बड़ी कठिनाइया होंगी। मेरे पास ऐसा कोई आदमी नही जिसे मैं बोल बोलकर लिखा सकूं। कठोर स्थिति है। पर मुझमे बैल की सी धृष्टता है। मैं आजकल लोगों को एक ही कसौटी पर परखता हूं: कि वे मेरे लिए लिख सकते है या नही। मै ख़ुद भी लिखता हूं!!! रात के वक़्त, अन्धा तो मैं हूं ही– जब सब लोग सो जाते हैं, और कोई शोर नही होता, जो मेरे काम मे रुकावट डाल सके। इस दुष्टा प्रकृति ने *ऐसे समय मेरी आंखें छीनी हैं, जब मुझे उनकी सबसे अधिक जरूरत थी।*

---

*उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा'।–सं०

जो हिस्से मैं लिख चुका हूं वे मैं तुम्हें और खारकोव के अन्य मित्रों को शायद भेज सकूंगा। पर कितना अच्छा हो जो हम मिल पायें! यदि मेरे मित्र मेरे पास हों तो मेरा जीवन प्रकाशमान हो उठे। एक बात बताओ पेत्या। यदि मैं तुम्हे अपनी पाण्डुलिपि के दस-एक पन्ने टाइप करने के लिए कहूं तो क्या तुम कर दोगे, या तुम्हे बहुत तकलीफ़ होगी? सम्पादक-मण्डल दो या तीन टुकड़े देखना चाहता है और – भला हो इसका! – इसे कापी में लिखी हुई चीज मंजूर नही। इसका टाइप होना जरूरी है, और वह भी काग़ज़ के एक तरफ़। शायद तुम सोचोगे कि मैं तुम्हारा भी शोषण करने लगा हूं। पर तुम मुझे बेशक कह दो कि, जाओ भाड़ मे, और इससे हमारी मित्रता में ज़रा भी फ़र्क नही आयेगा, पेत्या।

तुम्हे और तमारा को सप्रेम अभिवादन।

कोल्या ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

मास्को, २८ जून, [१९]३१

प्यारी शूरोच्का,

इतनी मुद्दत के बाद तुम्हारा ख़त पाकर बेहद ख़ुशी हुई। सबसे बड़ी बात यह है कि तुम जिन्दा हो और किसी हद तक ख़ुश-ख़ुश हो। अब कोई चिन्ता नही। आशा है तुम फिर कभी इतनी देर के बाद ख़त नही लिखोगी।

तुमने मित्रों के बारे में पूछा है... पान्क्रेत का कुछ पता नही। और इस वक़्त मुझे उसकी सख़्त जरूरत है। उसने एक बार मेरे साथ इकरार किया था कि जो काम मैंने शुरू कर रखा है, उसमें सम्पादक के नाते वह जो भी मेरी मदद कर सका, करेगा... रोज़ोच्का काम कर रही है। उसकी शादी अभी नहीं हुई। और बाक़ी सब वैसे के वैसे हैं।

शूरा, तुम मुझे निश्चित तौर पर लिखो कि तुम्हारे पास इस [illegible] के कुछ एक हिस्सों को पढ़ने के लिए समय है या नही। अगर है [illegible] मैं इन्हे ठीक करके तुम्हें भेज दूंगा। यदि तुम्हारे कोई सम्पादक [illegible] के आदमी परिचित हों जो इन्हें पढ़ सकें, तो उनके [illegible] की कोशिश करना।

इस बारे मे मैं बाद मे अधिक विस्तार से लिखूंगा।

मास्को मे मेरे बहुत थोड़े मित्र हैं। ठीक ठीक कहूं तो दो। एक पुराना बोल्शेविक है और दूसरा एक युवक है।

सप्रेम अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

प्यो० नि० नोविकोव को

मास्को, ४ जुलाई, १६३१

...वास्तव मे मैं जल रहा हूं। मेरी शक्ति दिन-ब-दिन क्षीण हो रही है, मैं इसे महसूस कर सकता हूं। केवल मेरा दृढ संकल्प बाकी है, सदा की तरह स्थिर और अटल। पिछले २० दिन से एक पंक्ति नही लिख पाया। काम बिल्कुल ठप्प पड़ गया है। और मैं सोचता हूं, ऐसी अमानुषिक परिस्थितियों में किये गये काम मे गुण क्या होगा? तुम लोग क्यों एक शब्द भी इसके साहित्यिक गुण-दोष के बारे मे नही लिखते? मैं तुम्हारे विचार जानने के लिए उत्सुक हूं। 'अग्नि-दीक्षा' आरम्भ से अन्त तक सच्ची है। मेरा प्रयास है कि मजदूर वर्ग के युवको को सघर्ष और निर्माण-कार्य मे रत चित्रित करूं। मैंने जो कुछ लिखा है, तुम मुझे उसपर अपनी आलोचना भेजो और इसके साहित्यिक गुण-दोष के बारे मे लिखो। तुम क्यो इसके बारे में चुप हो? और पेत्या, यह खत रोज़ा और तमारा को भेज देना।

तुम, पेत्या या तमारा, किसी ने भी सारी की सारी किताब नही पढ़ी है। यह अफसोस की बात है। मैंने बार बार अपने मित्रों को कहा है कि आलोचना के प्रहार मुझपर करें ताकि मुझे त्रुटियो का पता चल सके। और जब तुमने लिखा कि वाक्य बहुत लम्बे है तो मैंने विराम चिन्हों को देखा और मैं आश्चर्यचकित रह गया। जो अध्याय तुमने नही पढ़े, उनमे मुझे ८४० लघु-विराम तथा विराम चिन्ह लगाने पड़े—टाइप की हुई प्रति पर भी। जिसने इसे टाइप किया था वह एक कालिज का विद्यार्थी था!

लेखक-क्लब के हाथों मेरी पुस्तक की आजकल चीर-फाड़ हो रही है और उसे 'मोलोदाया ग्वार्दिया' प्रकाशन गृह के सम्पादक-मण्डल को

सौंप दिया गया है। किसी रोज भी अब उसका फैसला आ पहुंचेगा। लोहे के जिस घेरे में जीवन ने मुझे बन्द कर रखा है, मैं उसी के सीखचों से टक्करें मारने लगा हूं। मैं सबसे पिछली पंक्तियों में से आगे बढ़कर अपने वर्ग के श्रम और संघर्ष की सबसे अगली पंक्तियों में आने की कोशिश कर रहा हूं। यदि कोई ऐसे आदमी हैं जो समझते हैं कि एक बोल्शेविक ऐसी निराश अवस्था में, जिसमें कि मैं जान पड़ता हूं, पार्टी के लिए उपयोगी नहीं हो सकता, तो वे भूल कर रहे हैं। यदि प्रकाशन गृह ने पुस्तक को नामंजूर किया तो मैं इस काम को फिर हाथ में लूंगा। और यह मेरा अन्तिम संघर्ष होगा। मुझे हर हालत में रोजमर्रा के जीवन में फिर से लौटना है। यही मेरी एक लालसा है। जितने अधिक गहरे साये मुझे ढकते जाते हैं, उतनी ही अधिक यह लालसा बलवती होती जाती है।

आप सबको सस्नेह अभिवादन। जल्दी ही सूचना दूंगा—और आशा है वह सूचना विजय की होगी।

निकोलाई।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[मास्को], ६ दिसम्बर, [१९३१]

प्यारी शूरा,

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मित्र! यदि पत्र लिखना मेरे लिए इतना कठिन न होता तो मैं कितने ही पत्र तुम्हें, अपनी प्यारी प्यारी मित्र को, लिखता। मैं इतनी उत्कण्ठा से तुम्हारे पत्र की और अपनी पुस्तक पर तुम्हारी आलोचना की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

प्रिय शूरोच्का, मैं एक पत्र में बयान नहीं कर सकता कि किन परिस्थितियों में किताब लिखी गयी। अगर ये अकथनीय कठोर परिस्थितियां न होतीं तो किताब इससे बेहतर होती, निश्चय ही, इससे कई गुना बेहतर होती। कोई भी आदमी ऐसा नहीं मिल पाया जिसे मैं सुनाता जाता और वह लिखता जाता। कोई एकान्त जगह न थी, कोई शान्ति न थी। कुछ भी नहीं था। अपने विरुद्ध निर्णय करने से पहले मैं एक बार फिर

इस बात की कोशिश करना चाहता हूं कि अपनी पार्टी के लिए बेकार का बोझ न बना रहू। मै साहित्य का गभीर अध्ययन कर रहा हूं। आख़िर मै पढा हुआ भी तो नही हूं, केवल शब्द पहचान सकता हूं। मुझे विश्वास है कि मैंने अब तक जो लिखा है उससे बेहतर लिख सकूंगा। स्वाध्याय और अथक परिश्रम, दोनो से ही उसमे गुण का समावेश होगा। पर यह सब इसी शर्त पर कि प्रकाशन गृह मुझे बिल्कुल कुचल न डालें–पहली ही बार मुझे निकाल बाहर न करे। पर यदि ऐसा हुआ तो यह प्रत्याशित ही तो होगा। मै जानता हू मेरी कृति कितनी कमजोर होगी। तुम्ही मेरे क्लेश का अन्दाज लगा सकती हो। प्रकाशको के पास एक ही कसौटी है–गुण। मुझ जैसे लोगों के लिए लिखना अत्यन्त कठिन है।

तुमने पाण्डुलिपि की निन्दा नही की। यह जानकर मुझे खुशी हुई। इतनी विकट और कठोर परिस्थितियो के बावजूद यदि मै कुछ कुछ अच्छा लिख पाया हूं–यहा तक कि तुम्हे यह किताब निरर्थक और रुचिहीन नही जान पडी–तो यह बडी खुशी की बात है। जहा तक पाण्डुलिपि का सम्बन्ध है, मैं सब अधिकार तुम्हे सौंप रहा हूं। मुझे विश्वास है कि तुम हर मुमकिन कोशिश करके प्रकाशको द्वारा इसपर विचार करवाओगी और उनका निर्णय जान लोगी। तुम्ही और केवल तुम्ही। मेरी माग तो केवल इतनी ही है कि किताब वर्षो तक सम्पादकों की आलमारियों मे पड़ी सड़ती न रहे। नयी जनता साहित्य मे प्रवेश कर रही है, और सम्पादक-मण्डलो को अत्यधिक काम रहता है–हज़ारों पाण्डुलिपियों की बाढ़ लगी रहती है, जिनमें से केवल कुछ एक ही प्रकाशित हो पायेंगी।

मै तुम्हारी ओर से एक लम्बे पत्र की प्रतीक्षा में हूं। मैं बहुत कम तुम्हें लिख पाता हूं, इसके लिए मेरी भर्त्सना नही करना। दूसरो से ख़त लिखवाना आसान काम नही। जब ख़त लिखो तो कोर्चागिन के बारे मे भी लिखना–क्या मैं इस युवा कम्युनिस्ट कामगार का जीवन किसी हद तक सच्चाई के साथ व्यक्त कर पाया हूं?

तुम्हारा जीवन कैसे चल रहा है? हा, मुझे सचमुच तुमसे बहुत लम्बे ख़त का इन्तज़ार है। तुमसे मिलने की मेरी कितनी इच्छा है गूरोच्का! आजकल यहा पाला पड़ रहा है–तापमान शून्य से २०°–२४° नीचे हो गया है (शून्य से ४°–११° फ़ा० नीचे)। बारी बारी से हमारे परिवार के सभी

लोग बीमार पड़े हैं—राया भी। दोस्तों के यहां से ख़त बहुत कम आते हैं। अभिवादन। हमें मत भूलना। मेरी पुस्तक के बारे मे जो कुछ भी अच्छा-बुरा कहा जा रहा है, उसे साफ़ साफ मुझे लिखना।

निकोलाई।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[मास्को], २८ दिसम्बर, [१९३१]

प्रिय शूरोच्का,

मैं यह पत्र अपने हाथ से लिख रहा हूं। क्या मेरी ऊट-पटांग लिखावट तुम पढ सकती हो? मेरे भाई शेपेतोव्का से हमारे पास, ६ दिन रहने के लिए आये हैं। वहा एक पार्टी मीटिंग मे पहले मसौदे मे से पाच अध्याय पढ़े गये। लोगों ने तारीफ की और नगर के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास का एक अध्ययन होने के नाते इसका स्वागत किया। आजकल देश भर में युवा कम्युनिस्ट लीग साहित्य की खोज हो रही है। और 'मोलोदाया ग्वार्दिया' प्रकाशन गृह ने पाण्डुलिपि देखने के लिए मांगी है। पर मैंने निश्चय किया है कि मैं पहले लेनिनग्राद से तुम्हारे जवाब का इन्तज़ार करूंगा। क्योंकि यदि लेनिनग्राद में यह अस्वीकृत हुई तो यहा भी अस्वीकृत होगी।

आजकल मै कुछ भी नही लिख रहा हूं। पिछले चन्द महीनों में जो कुछ मेरे साथ बीती है, उसने मेरी कमर तोड़ दी है। तुम्हारे ख़त का इन्तज़ार है। अपने छोटे भाई को नही भूलना।

कोल्या।

अ० अ० जिगिर्योवा को

मास्को, [३१ जनवरी, १९३२]

परम प्रिय शूरोच्का,

कल ३० तारीख को तुम्हारा पत्र मिला। शूरा, तुम नही जानती कि जब उसे पढ़कर मुझे सुनाया गया तो मेरा दिल कैसे धड़क रहा था। मै बार बार अपने आपसे यही पूछता हूं—क्या सचमुच ख़ुशियां अपनी बांहें फैलाये मेरी ओर बढ़ रही हैं, और मै अभिलेख रक्षालय की अंधियारी मेहराबों में से निकलकर फिर रण-भूमि में अपनी फौज के सैनिकों में शामिल

हो रहा हूं ? क्या यह सचमुच ठीक है कि मैं एक मामूली-सा युवक अपनी पार्टी का तनिक भर ऋण उतार पाऊंगा ? कि मैं अपने जीवन के दिन अकर्मण्यता में गुजारना छोड़ सकूंगा ? मैं बार बार अपने को रोकता हूं। कहता हूं "शान्त रहो, बहुत उत्तेजित नहीं हो। जीवन का फिर एक थपेड़ा पड़ सकता है, जो तुम्हें यों स्वप्न देखने की सजा देगा।"

इसलिए, इस विचार से कि प्रहार मैं ज्यादा आसानी से सह सकूं, मैं अन्दर ही अन्दर यह मानने से इनकार किये रहता हूं कि मैं सफल हुआ हूं। जीवन मुझे केवल यथार्थ में ही विश्वास करने की इजाजत देता है।

राया दिन भर फैक्टरी में रहती है, और मैं कभी कभी लोगों से मिलने के लिए बेचैन हो उठता हूं, चाहता हूं कि आशा और ओज से भरे हुए लोग मेरे आस-पास बैठे हों। इसलिए मैंने निश्चय किया है कि अपने कमरे को यौवन के उन्मत्त उत्साह से भर दूंगा।

मैंने शेपेतोव्का के युवकों की एक साहित्यिक मण्डली बनाने का काम अपने ऊपर लिया है। 'पूत ओक्त्याबर्या' (अक्तूबर-मार्ग) पत्र ने मेरे प्रस्ताव को मंजूर किया है। हर दसवें दिन उसमें एक साहित्यिक पन्ना होता है। इस तरह मैं, स्वयं अधकचरा लेखक होते हुए भी, एक साहित्यिक समुदाय का नेता बन गया हूं। और मेरे पास उक्रइनी भाषा में कविताओं का पहला संकलन आलोचना के लिए पहुंच भी गया है। बस इतनी ही खबर आज तुम्हें देने के लिए है।

शूरोच्का, काश कि मैं तुमसे मिल पाता! इतनी कटुता, इतने विरोधाभास के होते हुए भी—एक उपयोगी रचनात्मक जीवन की नयी आशाएं बंधने लगी है।

बहुत लोग तो मुझे भूल चुके थे, लेकिन अब मैं युवकों के साथ पुनः सम्पर्क बनाने लगा हूं। उन्हें मेरा काम पसन्द है, मैंने जिस नगर के बारे में लिखा, उसके नौजवानों ने उसके संबंध में अपनी अच्छी राय जाहिर की। शिक्षाशास्त्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने लिखा है कि उन्होंने यह पुस्तक पढ़ी और उस पर विचार-विमर्श किया।

यदि तुम तीसरी या चौथी तारीख को मुझे स्वीकृति का शब्द लिखोगी तो मैं समझूंगा कि निकोलाई का पुनर्जन्म हुआ है।

मैं तुम्हारे ख़त के इन्तजार में हूं।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

मास्को, २२ फ़रवरी, १६३२

प्रिय मित्र शूरोच्का,

साहित्यिक मोर्चे पर मेरे बारे मे एक खुशखबरी सुनो – कल मुझसे कुछ लोग मिलने आये – फेदेनेव और उनके साथ कामरेड कोलोसोव, जो 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका के उपसम्पादक हैं। यहा मास्को मे मेरी पाण्डुलिपि पर विचार हुआ है। कामरेड कोलोसोव ने भी उसे पढा है... और वे कल आकर कहने लगे –

"जो सामग्री तुम्हारे पास है वैसी सामग्री हमे और कही नही मिलती। किताब अच्छी है और रचनात्मक कार्य के लिए तुम्हारी सफलता की पूरी सभावना है। किताब ने हमारे दिल पर बडा असर किया। हमने इसे छापने का निश्चय किया है ..मैं तुम्हे और लेखकों से मिलाऊगा। और हम तुम्हे किताब छपने से पहले ही सर्वहारा लेखको के मास्को सम्मेलन का सदस्य बनायेगे।"

उन्होंने नौ-दस दिन के बाद, मेरा उत्तर पाने के लिए फिर आने को कहा है। तो शूरोच्का, यदि लेनिनग्राद मे से मुझे खदेड़ा गया, तो मेरे खडा होने के लिए एक जगह तो बन गयी है – मेरी किताब छापने का एक जगह पर तो प्रस्ताव हो गया है। मगर अभी कोई दस्तावेज नही है, कोई करार लिखा नही गया। केवल बात ही हुई है। परन्तु यह विजय है, करीब करीब। करीब करीब... क्या लेनिन ने हमे केवल लफ़्जो पर विश्वास करने के विरुद्ध चेतावनी नही दी?

और शूरोच्का, लेनिनग्राद के प्रकाशक मेरी किताब के बारे मे क्या सोचते है? सफल हुआ हू या असफल? तुम्हारे ख़त का बडी अधीरता से इन्तजार कर रहा हूं। मैं एक क्षण के लिए भी तुम्हें चैन नही लेने देता। तुम कहती होगी – यह ढीठ अब पीछा कभी छोडेगा या नही? पर मै इस बारे में कोई उत्तर नही दे सकता।

इस काम के कारण पहले सम्बन्ध फिर से जीवित होने लगे हैं। अब उन लोगों के खत आते है जो मुझे कब से भूल चुके थे। श्रम और संघर्ष, तुम्हारा बारंबार अभिवादन! अब उम्मीद बढने लगी है कि कोल्या सचमुच लोहे के पिंजड़े मे से निकल पायेगा और आगे बढ़ते हुए र. ~।र। मे फिर से अपने स्थान पर पहुंच पायेगा।

मैं साहित्यिक अध्ययन करने लगा हूं, और आगे के लिए अपने काम का खाका तैयार कर रहा हूं। पर सबसे पहले और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यही है–अध्ययन, अधिकाधिक अध्ययन...

तुम्हारा
कोल्या।

प्यो० नि० नोविकोव को

मास्को, ४ अप्रैल, १९३२

सारे परिवार की ओर से अभिवादन!

प्रिय पेत्या और मारा, दूसरी बार निमोनिया हो जाने के कारण मेरी कमजोरी अभी तक दूर नहीं हो पायी। दो बार उस कंकाल-वृद्धा–मौत–ने मेरा गला पकड़ा। पर मेरा इस समय मरने का कोई अधिकार न था। इसलिए ४७ दिन की घोर यातना के बाद मैं फिर ठीक होने लगा हूं। इसी से तुम समझ जाओगे कि मैंने क्यों पत्र नहीं लिखा।

दोस्तो, इस काल में मेरी किताब के बारे मे कई अच्छी बाते हुई हैं। संक्षेप में:

पुस्तक के पहले तीन फर्मे १५ अप्रैल को 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका के चौथे अंक में प्रकाशित होंगे–जो कि लीग और पार्टी की केन्द्रीय समितियो की पत्रिका है। बाक़ी अंश बाद के अंको मे आता जायेगा। किताब की शक्ल में छपने से पहले यह पूरी की पूरी पत्रिका मे छपेगी। किताब के रूप में यह लीग की वर्षगाठ पर प्रकाशित होकर आयेगी। अस्थायी तौर पर संस्करण दस हज़ार प्रतियों का होगा।

प्रकाशक चाहते हैं कि मैं दूसरे भाग पर काम करता जाऊं। मुझे अभी से सर्वहारा लेखको के मास्को सम्मेलन का सदस्य बना लिया गया है। इस कमबख्त बीमारी के कारण मेरा 'अग्नि-दीक्षा' के दूसरे भाग पर काम पीछे पड़ गया है।

जीवन के द्वार फिर से मेरे सामने खुल गये हैं। मेरा सबसे प्यारा स्वप्न–कि मैं फिर से सक्रिय संघर्ष में भाग ले सकूं–सच्चा निकल आया है।

मेरे पास रचनात्मक कार्य के लिए सब कुछ है। जीवन अब इतना पूर्ण हो उठा है कि छलकने लगा है। अब मैं श्रम और विकास और

विजय के मार्ग पर फिर चलूंगा! मुझे अपनी शुभकामनाएं दो, साथियो। मेरी जीत आपकी जीत है! क्या तुम मेरे उल्लसित हृदय की धड़कन सुन सकते हो? छापेखाने से ज्यों ही किताब निकली कि पहली प्रति आप दोनों, पेत्या और मारा को भेंट होगी!

तुम्हारा

कोल्या ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[मास्को], ७ मई, [१९३२]

शूरा, प्रिय मित्र,

मुझे ख़त लिखे बहुत दिन बीत गये। तुम्हारा भी यही हाल है। कोई विशेष ख़बर नहीं। स्वास्थ्य ख़राब रहता है। न ठीक, न बीमार, पर तो भी इतनी ताकत नहीं कि कोई भी काम पूरा कर पाऊं।

'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका का चौथा अंक आज छपकर आया। पहली बार मैं यह कह सकता हूं कि मेरी कहानी का कुछ अंश छप गया है।

शूरोच्का, तुम्हें याद होगा, मैंने तुम्हें एक बार लिखा था कि किताब पर लोगों की राय मुझे लिखना, ताकि मैं उसपर विचार कर सकूं। यहां वह मुझे नहीं मिलती। यहां ये लोग—भला हो इनका!—राय नहीं देते। या उसे शायद कहीं लिखकर भूल गये हैं। दूसरे भाग पर काम करने से पहले मैं चाहता हूं कि मुझे अपनी गलतियों का पता चल जाय ताकि मैं उन्हें फिर न दोहराऊं।

फेदेनेव प्रकाशकों के साथ मेरा सब कारोबार चला रहा है। भाग्य ने उसे मेरे पास भेजा है। वह १९०४ से पार्टी में है, और जिन्दगी का बहुत-सा भाग जेलों में काट चुका है। वह आजकल मेरे पास अक्सर आता रहता है, और सब ख़बरें देता है। प्रकाशकों से रुपया भी ला देता है...

मैं तुम्हारी ओर से पत्रों के इन्तजार में हूं। यदि 'मोलोदाया ग्वार्दिया' लेनिनग्राद में नहीं मिलती, तो मैं तुम्हें अपनी प्रूफ की प्रतियां भेज दूंगा। मुझे सब कुछ लिखो—एक अच्छा लम्बा ख़त। लेनिनग्राद से किसी

खबर का एक युग से इन्तजार कर रहा हूं। हमारे सारे परिवार की ओर से अभिवादन। ल्योन्या को मेरा प्यार।

तुम्हारा
निकोलाई।

क्या तुम मेरी लिखाई पढ सकती हो? मैंने यह तुमसे पहले भी पूछा था। और क्या तुम एक एक शब्द पढते थकती तो नही हो? अगर पढने मे कठिनाई होती है तो मै और भी ज्यादा ध्यान से लिखा करूंगा।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[मास्को], २० मई, [१९३२]

परम प्रिय शूरोच्का,

जान पडता है लीग की केन्द्रीय समिति के सस्कृति तथा प्रचार विभाग मे मेरे उपन्यास को पढा गया है, और उसके बारे मे अच्छी राय कायम की गयी है। और वहा यह भी निश्चय हुआ है कि अपना रचनात्मक कार्य जारी रखने मे मेरी मदद की जाय।

. . निश्चय हुआ है कि मुझे फौरन मास्को से सोची भेजा जाय—पहले फ्रून्जे के चिकित्सालय मे, बाद मे मेरे अपने स्थान पर। मुझे गर्मी का सारा मौसम सोची मे रहना होगा, फिर सर्दी मे मास्को वापिस भेजा जाऊगा, और इसी तरह हर साल होगा... इस सबकी व्यवस्था बहुत जल्द कर दी जायेगी। केन्द्रीय समिति तार भेजकर सोची मे मेरे लिए कमरे ठीक करवा देगी, इत्यादि।

अत्यन्त प्यारी शूरोच्का, इसका अर्थ है हम सोची मे मिलेंगे। मुझे तुमसे मिलकर बेहद खुशी होगी।

मुझे लिखो कि तुम्हारे पास 'मोलोदाया ग्वार्दिया' का चौथा अक है या नहीं। मै तुम्हें यहा से भेज दूगा। उपन्यास से पहले (मैं इसे केवल एक कहानी का नाम देना चाहता था) उन्होंने मेरा संपादक-मण्डल के नाम लिखा पत्र छाप दिया है। उन्होंने इसके लिए मेरी कोई इजाजत नहीं मागी। यह उचित नही जान पड़ता—अपना विज्ञापन करने की सी बात है। छापे मे कहीं कहीं भयानक गलतिया हैं। लापरवाही से काम हुआ है। पाच

किस्तों मे किताब छपकर आयेगी–'मोलोदाया ग्वार्दिया' के पाच अंको में। आखिरी हिस्से को उन्होने काट दिया है–कहते हैं बहुत लम्बा है, और कागज की कमी है। इसी कारण उन्होने अन्दर से भी जहा-तहा हिस्से निकाल दिये हैं। किताब किसी हद तक खराब हुई है, पर कोई क्या कर सकता है? आखिर यह तो मेरा पहला ही प्रयास है...

तुम्हारी चिट्ठियो की प्रतीक्षा मे हूं। कोई नयी बात हुई तो लिखूगा।

सप्रेम अभिवादन,

तुम्हारा

निकोलाई।

सारे परिवार की ओर से हार्दिक अभिवादन।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, ७ अगस्त, [१९३२]

मेरी प्यारी शूरोच्का,

सारा दिन ताजा हवा मे, बलूत के पेडो के नीचे, काटता हू।

मैंने फिर काम करना शुरू कर दिया है। मुझे नवा अध्याय चाहिए। कृपया रजिस्ट्री करवा के भेज दो।

शूरोच्का, मैं यहा तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूं। कोशिश करो कि वे तुम्हे 'क्रास्नाया मोस्क्वा' चिकित्सालय मे भेज दे। यहा से वह केवल २० कदम के फासले पर है। सितम्बर का महीना बडे मजे मे गुजरेगा। मा और मैं, हम दोनो तुमसे मिलने के लिए बड़े उत्सुक है। आजकल तो मौसम बहुत अच्छा है, पर जुलाई मे १८ दिन तक लगातार बारिश होती रही। कामरेड फ़ेदेनेव यहा पहुंच गये हैं, और खबरो का एक पूरा पार्सल साथ लाये हैं।

यहा समाप्त करूंगा। मुझे नवा अध्याय भेज देना। सम्पादको ने इसका आधा भाग (अन्त का) कागज की तगी के कारण काट दिया है, और उसे मैं दूसरे भाग मे ले जा रहा हूं।

मा की ओर से प्यार। खत लिखना।

तुम्हारा

कोल्या।

पाण्डुलिपि पर कोई राय मिली हो तो भेज दो।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची,] १६ दिसम्बर, [१६३२]

शूरा, प्रिय मित्र,

दूसरे भाग पर बहुत मेहनत करता रहा हूं। इसी कारण पत्र नही लिख पाया। कल एक लम्बा अध्याय समाप्त किया, और आज 'छुट्टी' मना रहा हू।

अगले कुछ दिनों में अपनी पुस्तक की दस प्रतियां मुझे मास्को से भेजी जायेंगी। और प्यारी शूरा, उनके मिलते ही, एक कापी सीधी तुम्हे रवाना कर दूगा।

एक प्रति आ भी चुकी है। उन लोगों ने काम अच्छा किया है... तुम खुद देखोगी। पहले संस्करण में १०,३०० प्रतिया छपी है, सजिल्द। और पुस्तक मे तुम्हारे शुभचिंतक की तस्वीर भी दी गयी है।

दूसरे भाग का एक चौथाई हिस्सा लिख चुका हूं, और इस कोशिश मे हूं कि उसमे साहित्यिक गुण आ पायें। कही कही पर पुस्तक के पहले भाग पर विचार प्रकट हो रहे हैं। उसकी बहुत निंदा नही की जा रही। 'मोलोदाया ग्वार्दिया' वाले इसपर एक गंभीर आलोचनात्मक विवरण देना चाहते हैं। देखें क्या होता है।

आजकल यहा सोची मे हमारे परिवार मे ३ व्यक्ति हैं: मां और मेरे अलावा मेरे बडे भाई की बेटी जीना, उम्र १० वर्ष, हमारे पास आयी हुई है। मौसम सर्द है। मेरी सेहत बुरी नही, मै काम कर सकता हूं। पर मां सारा वक्त ठण्डी सासे भरती रहती हैं। वह काफी दुबली हो गयी है, और उनकी वह पहले-सी संकल्प-दृढ़ता भी नही रही...

मैं पार्टी मे छटनी का सामना करने के लिए अब फिर एक श्रमिक के रूप मे आया हूं—अकर्मण्य आलसी अब नही रहा।

यदि कोई ताजा खबर हुई तो लिखूगा। मा सप्रेम अभिवादन भेजती है।

तुम्हारा
कोल्या।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची], २२ दिसम्बर, [१९३२]

प्रिय शूरोच्का,

अभी अभी तुम्हारा खत मिला। मैं नहीं लिख पाया, क्षमा करना। आजकल जितनी मेहनत कर सकता हूं, कर रहा हूं। आज तुम्हें डाक द्वारा अपनी किताब भेज रहा हूं।

सारी गर्मियां तुमसे मिलने के लिए बेताब रहा। अब यह आस लगाये हूं कि शायद १९३३ में मुलाकात हो जाय।

जिन परिस्थितियों में मैं काम कर रहा हूं वे आसान नहीं, पर मैं लड़े जा रहा हूं। पहले कुछ अध्याय तुम्हें भेजूंगा।

मेरी उत्कट इच्छा है कि मेरे पास सच्चे शक्तिशाली लोग रहें।

मां का स्वास्थ्य अब ठीक नहीं रहा। बेचारी दिन भर ठंडी सांसें भरती रहती है, जो मेरे लिए बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं। रुकावटों के विरुद्ध मेरे पास एक ही हथियार है—दृढ़ाग्रह। और रुकावटें असंख्य हैं। जीवन निर्दयी और कठोर हो रहा है, पर मेरा एक एक दिन, मेरी सारी शक्ति मेरी किताब को अर्पित है। मैं खुद अपने हाथ से भी लिखता हूं।

मुझे अपनी याद में बनाये रखना। कितना अच्छा हो यदि तुम यहां मेरे पास आ सको। मेरे पास समय कम है, मित्र, जब तक हृदय में धड़कन है, मैं कुछ न कुछ लिख डालना चाहता हूं।

अब पत्र लिखता रहूंगा।

तुम्हारा
कोल्या।

आ० अ० करावायेवा* को

सोची, २३ दिसम्बर, १९३२

प्रिय कामरेड आन्ना,

आज आप को 'अग्नि-दीक्षा', भाग २ की दो प्रतियां डाक द्वारा भेज रहा हूं। आपसे मैं यह नहीं छिपाऊंगा कि उसपर आपका निर्णय जानने

---

*आन्ना अलेक्सान्द्रोवना करावायेवा—लेखिका, 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका की प्रधान सम्पादिका, जिन्होंने 'अग्नि-दीक्षा' प्रकाशित की।

के लिए मैं कितना उत्सुक हूं। आप इतना तो बता सकेंगी कि इसका स्थान किस ओर है–ऊपर की ओर या नीचे की ओर। मेरा मतलब है पहले भाग के साहित्यिक स्तर इत्यादि की तुलना में। यदि यह बुरा है, तो निर्दयता से निर्णय देना। मेरे पाव नहीं उखड़ जायेंगे। कैसी भी आलोचना क्यों न हो, मैं बरदाश्त कर सकता हूं। इससे मुझे सहायता ही मिलेगी–मैं अपनी कमजोरियां दूर कर सकूंगा। सामग्री का कुछ हिस्सा अभी तक तैयार नहीं। मैंने अपना वचन निभाया है कि मैं आपको बार बार पत्र लिखकर तंग नहीं करूंगा–हालांकि आपको पत्र लिखने की मेरी तीव्र इच्छा रही है। आदमी को दूसरों के वक्त का ख्याल रखना चाहिए और उनपर अपने फजूल 'साहित्यिक प्रयास' नहीं ठोसने चाहिए। मैं आपको और कोलोसोव को अपनी विशेष शुभकामनाएं अपनी पहली किताब की प्रतियों के रूप में भेज रहा हूं... काम बराबर ईमानदारी से किये जा रहा हू। रुकावटें बहुत हैं, पर इसमें मेरा कोई दोष नहीं। मेरी काम करने की इच्छा और मेरी काम करने की सभावनाएं एक दूसरे के प्रतिकूल अनुपात में हैं। पर तो भी–उन्नति ज़रूर हुई है।

आप नहीं जानतीं कि आपकी प्रस्तावना के बारे में उन लोगों की लापरवाही से मैं कितना क्षुब्ध हुआ। प्रकाशन गृह में काम करनेवाले साथी, जान पड़ता है, हर किताब को किसी न किसी तरह बिगाड़े बिना नहीं रह सकते, भले ही किताब टकनीक की दृष्टि से कितनी ही अच्छी क्यों न बन पायी हो (यदि छपाई की अनगिनत भूलों को ध्यान में न लाया जाय तो।)

मेरी सेहत मेरे काम में कोई रुकावट पैदा नहीं करती। सोची में मौसम सर्द और बुरा है।

रचनात्मक ओज मुझमें जैसे छलकने लगा है। पर अक्सर ऐसा होता है कि मैं इस ओज को कागज़ पर व्यक्त नहीं कर पाता क्योंकि मेरे पास कोई आदमी नहीं होता जिससे मैं लिखवा पाऊं। इससे मैं पागल हो उठता हूं। यदि खुद लिखूं तो कछुए की चाल से लिख पाता हूं। और मन के चित्रों को व्यक्त कर पाने से पहले ही शरीर थक जाता है। मेरे 'दफ्तर में कर्मचारी' रोज बदलते रहते हैं। यह स्थिति बड़ी भयंकर है। पर मैंने हथियार नहीं डाल दिये हैं, कामरेड अान्ना। जो द्वेषभरी अफवाहें उड़ रही हैं, उनमें विश्वास नहीं करना–कि मुझे 'सन्निपात' हो गया है, या

कुछ ऐसी ही, या कि मैंने विपादपूर्ण कहानियां लिखनी शुरू कर दी है। मैं, डाक्टरों की भविष्यवाणियों के बावजूद, जो वे मुझे मेरी मौत और विपत्तियों के बारे में देते रहते हैं, न केवल बड़े दृढाग्रह से जी रहा हूं, बल्कि कभी कभी तो मुझे हसी भी आ जाती है। मेरे विद्वान डाक्टर भूल जाते है कि उनका मरीज किस धातु का बना हुआ है। और यह गुण ही मुझे बचाये जा रहा है। आपका शिष्य न केवल जी रहा है, बल्कि काम भी कर रहा है। पाव्ल कोर्चागिन ने १९२१ मे अपने एक जोशीले भाषण मे कहा था कि "जिनके दिल विद्युत्-यन्त्रों के समान हैं, वे विजय प्राप्त किये बिना नही रह सकते।" और वह बात मुझपर भी लागू होती है।

मैं आपके ख़त के इन्तजार में हूं। याद रखना: ज्योंही दूसरे भाग के पहले अध्याय पढ चुको, मुझे फौरन अपने विचार लिखना।

कामरेड मार्क को मेरा अभिवादन।

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची], २९ जनवरी, [१९३३]

परम प्रिय शूरोच्का,

मैने २५ दिसम्बर को एक छोटा-सा पार्सल तुम्हे डाक द्वारा भेजा था। क्या तुम्हे मिल गया है? उसमे मैंने अपनी किताब भेजी थी.

स्वास्थ्य ने फिर मुझे कुछ रोज के लिए धोखा दिया, जिस कारण मुझे बुखार रहा। सर्दी लग गयी थी। २० रोज तक एक पंक्ति नही लिख पाया। अब फिर से काम करने लगा हू। आलोचको ने मेरी किताब की आवश्यकता से अधिक प्रशसा की है। मिसाल के तौर पर, पत्रिका 'क्नीगा मोलोद्योजी' (युवको के लिए पुस्तक) का अक १२ (दिसम्बर) पृष्ट २०।

सप्रेम अभिवादन।

कृपया पत्र लिखती रहना।

तुम्हारा

निकोला।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, २० अप्रैल, १९३३

प्रिय कामरेड आन्ना,

अब तक मैं पत्रिका को ६ अध्याय भेज चुका हूं—टाइप किये हुए लगभग २३० पन्ने। शेष दो अध्याय भी १५ मई तक तैयार हो जायेंगे। प्रकाशन गृह ने दूसरे भाग के लिए अस्थायी तौर पर १५ फ़र्में तक लेना स्वीकार किया है, और इसका अधिकांश भाग मैं दे चुका हूं। अब केवल आख़िर का हिस्सा देना बाकी है।

'अग्नि-दीक्षा' के दूसरे भाग के बारे मे आपके निर्णय की प्रतीक्षा करूंगा। मैं इसका मूल्य बढा-चढाकर नही आकता। मैं इसकी सब त्रुटिया जानता हू, और यह भी समझता हूं कि केवल अत्यधिक अध्ययन द्वारा ही मैं इससे अच्छा लिख सकता हू।

'अग्नि-दीक्षा' पहले सांचे मे ढली है और ऐसी परिस्थितियों मे इसकी रचना हुई है जो एक हृष्ट-पुष्ट आदमी भी कठिनता से सहन कर पाता। सौभाग्यवश, मेरे पास अब भी काफी शक्ति संचित है और उन्नति करने की तीव्राकांक्षा भी। केवल प्रश्न यही है कि मैं ३–४ वर्ष तक और जिन्दा रह सकूंगा या नही जो उसके लिए बहुत जरूरी है। अगर जिन्दा रहा तो एक और किताब लिखूंगा। पुस्तक की एक आलोचना जो मेरे देखने मे आयी है, आपको भेज रहा हू। शायद आपकी नजर से भी गुजरी हो। इसके साथ ही लेखक संघ की संगठन समिति के नाम एक अर्जी भी भेज रहा हूं। अगर आपको अवसर मिले तो कृपया पहुंचा देना।

अन्तिम अध्यायों के लिए जुटकर काम करने की ज़रूरत है और मैं ईमानदारी से इसपर लगा हुआ हूं। पर मेरे 'दफ़्तर के कर्मचारी' मुझे धोखा दे जाते हैं। सेहत साथ दे रही है। मेरे काम में रुकावट नही डालती—मेरे लिए यही बहुत है।

वसन्त नही आ रहा। ठण्ड और बारिश रहती है। मई महीने में धूप खिलेगी और अपने साथ नया ओज और ख़ुशिया लायेगी।

सप्रेम अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

भाई और पिता को

सोची ६ मई, १९३३

प्रिय मीत्या और पूज्य पिताजी,

मुझे खारकोव से समाचार मिला है कि उक्राइनी लीग की केन्द्रीय समिति ने मेरी किताब को हमारी देशीय भाषा में अनुवाद करने का निश्चय किया है। अनुवाद बहुत जल्दी होगा, और छपाई जून के अन्त में शुरू कर दी जायेगी ताकि किताब लीग की पन्द्रहवीं वर्षगांठ पर प्रकाशित होकर आ जाय। इसमें मेरी बहुत बड़ी जीत है। अब, शीघ्र ही, किताब अपनी भाषा में देखने को मिलेगी। जीवन को और समाजवाद के लिए किये गये संघर्ष को बारंबार प्रणाम!

मेरा कम्युनिस्ट अभिवादन पहुंचे।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

ख्रि० पा० चेर्नोकोजोव* को

सोची, १५ मई, १९३३

मेरे प्रिय मित्र ख्रिसान्फ पाव्लोविच,

आज यह जानकर कितनी खुशी हुई कि तुम अब भी संघर्ष किये जा रहे हो, कि तुम्हारी बीमारी तुम्हें पराजित नहीं कर पायी। तुम्हारे बारे में इससे बेहतर खबर और क्या जानने की इच्छा हो सकती थी? दो कामरेड, ग्रित्सेंको और ओदिनेत्स, जो ग्रोज़नी में काम किया करते थे, बड़े आदर के साथ 'बुजुर्ग' के–अर्थात् तुम्हारे–काम की चर्चा करने लगे। हमारी बोल्शेविक मैत्री ने हमें सदा के लिए अटूट संबंध में बांध दिया है–क्यों नहीं, क्या हम दोनों, नये और पुराने बोल्शेविक दलों के विशिष्ट प्रतिनिधि नहीं हैं? तीन बरस से मुझे कुछ मालूम न था कि तुम कहां हो, केवल दो बार तुम्हारा नाम अख़बार में पढ़ने को मिला था। तुम्हें मेरा हार्दिक अभिवादन, पुत्र और मित्र दोनों के नाते! क्या तुम्हें वह खत याद है जो तुमने कामरेड जेम्ल्याच्का को लिखा था? मुझे तो अच्छी तरह याद है। उसमें तुमने लिखा था: "मुझे विश्वास है, पूर्ण

---

*ख्रिसान्फ़ पाव्लोविच चेर्नोकोजोव–ओस्त्रोव्स्की का एक मित्र। 'अग्नि-दीक्षा' में इसी नाम से चित्रित।–सं०

विश्वास है, कि अन्धा और शरीर से लाचार होने के बावजूद कामरेड ग्रोस्त्रोव्स्की अब भी पार्टी के लिए उपयोगी हो सकता है, और होगा।"

आज तुम्हे यह लिखते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मैं तुम्हारे और बहुत-से पुराने बोल्शेविको के विश्वास को सच्चा प्रमाणित कर पाया हू, कि मै लड़नेवालों की श्रेणी में लौटूगा, गतिशील सर्वहारा की अग्रगामी पंक्ति मे मेरा स्थान होगा। इसके विपरीत हो भी कुछ न सकता था। कोई बीमारी, कोई यातना उस बोल्शेविक को तोड नहीं सकती जिसका सारा जीवन संघर्ष मे बीता हो, और अब भी अथक संघर्ष मे बीत रहा हो। यह ठीक है कि दो बरस से मैं बिस्तर पर पड़ा हुआ हूं। मेरा स्वास्थ्य सुधर नही पाया। अब भी मैं पहले की तरह खाट के साथ जुड़ा हूं। पर मैं पिछली पंक्तियों से हटकर अगली पंक्तियो मे आ गया हू। अब की बार मोर्चा साहित्य का मोर्चा है--एक ही मोर्चा जिसपर अब मैं लड सकता हूं।

१९३२ मे मैंने 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका मे, उसके एक साहित्यिक सम्पादक के नाते नियमित रूप से काम करना शुरू कर दिया। साथ ही मैंने अपना काम एक बड़ी किताब पर जारी रखा जो मैं लिख रहा था। इसमे हमारी पिछली लड़ाई की चर्चा है, युवा कम्युनिस्ट लीग के गृह-युद्ध मे संघर्ष की चर्चा है। १९३२ मे मैंने 'अग्नि-दीक्षा' का पहला भाग समाप्त किया। यह पुस्तक पहले 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका मे १९३२ मे--४, ५, ६, ७, ८ तथा ९ अंकों मे छपी, और फिर अक्तूबर में पुस्तक के रूप मे भी छपकर आ गयी। इस समय मैं 'अग्नि-दीक्षा' के दूसरे भाग पर, जो १९२१ से १९३० तक की अवधि से सम्बन्धित है, काम कर रहा हू। यह जुलाई महीने मे पुस्तक के रूप मे छप जायेगी। पहला भाग उक्रइनी भाषा मे भी छप रहा है। पिछले साल जुलाई महीने मे डाक्टरो ने मुझे मास्को से निर्वासित कर सोची मे भेज दिया। यह तब की बात है जब मुझे निमोनिया हुआ और मैं मरते मरते बचा। मुझे भेजने मे केन्द्रीय समिति ने सहायता की। और अब मैं यहा हूं, दूसरे भाग को खत्म करने के अलावा और कोई काम नहीं।

मा यहा मेरे पास है। राया मास्को मे है और डिव्वावन्दो की एक फैक्टरी मे पार्टी का काम कर रही है। यह है पिछले तीन साल का चिट्ठा। अगर तुम सोची आग्रो तो मुझे मिले विना नहीं जाना, वरना मैं कभी माफ नहीं करूंगा।

तुम्हारी पत्नी को सस्नेह अभिवादन। मेरी किताब किसी पुस्तकालय में से लेकर जरूर पढ़ना। मेरा हार्दिक अभिवादन, मेरे प्रिय, अति प्रिय मित्र।

तुम्हारा
निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

मैं तुम्हारी ओर से पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में हूं।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, [१० जून, १९३३]

मेरी अपनी, मेरी प्यारी मित्र शूरा,

पिछले कुछ महीने मैं कड़ा परिश्रम करता रहा हूं। इसी कारण मैं खत नहीं लिख पाया।

'अग्नि-दीक्षा' का सारा का सारा दूसरा भाग मैं समाप्त करके—३३० टाइप किये हुए पन्ने—मास्को भेज चुका हूं। और अब मैं बहुत थक गया हूं। जो रातें जागकर काटी हैं, अब उनके बदले सोने की चेष्टा कर रहा हूं। जब मैं कुछ आराम कर लूंगा तो तुम्हें एक लम्बा खत लिखूंगा। मुझे जल्दी जल्दी पत्र लिखो और उसमें अपना सारा हाल दो। हम कब मिलेंगे?

मेरे पास यहां दो बढ़िया कमरे हैं। मैं तुम्हारे पत्रों की प्रतीक्षा में हूं। तुम कब आओगी? मा तुम्हें प्यार भेजती है।

तुम्हारा
निकोलाई।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, २२ जून, [१९]३३

मेरी अपनी, मेरी प्यारी मित्र शूरोच्का,

तुम्हे लम्बा पत्र लिखे मुद्दत हो चली है। कारण—कड़ी मेहनत। साहित्यिक मोर्चे पर मुझे अपने बहुत-से कारनामों और जीतों का जिक्र करना है। 'अग्नि-दीक्षा' का दूसरा भाग समाप्त कर दिया है। पाण्डुलिपि मास्को पहुच गयी है और वे उसे छापने की तैयारी कर रहे हैं। युवा कम्युनिस्ट

लीग की पन्द्रहवी वर्षगाठ पर किताब छपकर आयेगी। उक्रइनी लीग की केन्द्रीय समिति ने दोनों भागो को एक ही पुस्तक के रूप में उक्रइनी भाषा में छापने का निश्चय किया है। 'मोलोदोय बोल्शेविक' प्रकाशन गृह (ख़ारकोव) इसे लीग की पन्द्रहवीं वर्षगांठ पर छापेगा। १०,००० प्रतियां छपेंगी। पुस्तक को प्रकाशकों की बन्द अलमारियों में से सुगमता से निकालने में पान्कोव ने मेरी बड़ी मदद की, और मानना पड़ता है कि उसने नौकरशाही और फीताबन्दी के विरुद्ध मोर्चा लिया है। आज मैंने पाण्डुलिपि उक्रइना भेज दी है, और अब मेरा अधिकार है कि मैं थोड़ा आराम कर लूं...

मैं बड़े मजे में हूं। और मुझे होना भी चाहिए। साल भर का काम समाप्त हुआ, और परिणाम भी बुरा नहीं। मैंने पूरी तत्परता से काम किया है–जहां तक रफ़्तार और कड़े परिश्रम का सवाल है। पर जो कुछ मैं लिख पाया हू, उसमे गुण कितना है, भविष्य ही बतायेगा। यह सच है कि मैं थककर चूर हो गया हूं। परन्तु यह थकावट भी दूर हो जायेगी।

दूसरे भाग में तुम्हारा और चेर्नोकोज़ोव दोनों का चित्रण हुआ है। यह सच है कि मैंने तुमसे स्वीकृति नही ली। पर पुरानी कहावत है कि: जो कुछ क़लम लिख गयी है उसे कुल्हाड़ा भी नहीं मिटा सकता।

अब मैं पत्र लिखता रहूंगा। मैंने अपने आपको थोड़ा "अवकाश" दे रखा है। मैं तुम्हारे पत्र के इन्तज़ार में हूं।

आर्थिक दृष्टि से स्थिति बहुत कुछ सुधर गयी है।

सप्रेम अभिवादन। तुमसे पुनः मिलने तक–और आशा है हम जल्दी ही मिलेंगे।

तुम्हारा
कोल्या ओस्त्रोव्स्की।

रो० बो० ल्याख़ोविच को

[सोची], १५ अक्तूबर, १९३३

रोज़ोच्का,

याल्ता से तुम्हारा पत्र मिला। यहां पर युवकों के जाल में फंस गया हूं। तुम्हें शायद मालूम न हो, पर मैं यहां नगर लीग संस्था का मान्य सदस्य हूं। सोची की सभी टुकड़ियां आजकल लीग की पन्द्रहवी वर्षगांठ

की तैयारी में मेरी पुस्तक पर विचार कर रही है। स्थानीय रेडियो से इसे सुनाया जा रहा है। और – किताबें इतनी नहीं कि सभी पढ़ सकें। बुरा फंसा! टुकड़ियों के मन्त्री मेरे पास पुस्तकों के लिए आते हैं, और मेरे पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं होता।

रोज़ोच्का, मेरा एक छोटा-सा काम कर दो, किसी बड़े-से पुस्तकालय से ख़ुद जाकर, या किसी को भेजकर, किताब की एक प्रति ले लो, अगर अधिक नहीं मिल सकती तो। और उसे मेरे पास भेज दो। जितनी जल्दी हो सके। यह मेरी बहुत बड़ी सहायता होगी। आजकल मेरा घर क्लब बना हुआ है। ज़िला समिति, लीग के कार्यकर्ताओं इत्यादि की बैठकें होती हैं। मैं व्यस्त रहता हूं, लेख लिखता हूं, एक अध्ययन-मण्डल चला रहा हूं। दूसरा भाग जल्दी प्रकाशित होगा।

मां की ओर से अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

[सोची], २५ अक्तूबर, १९३३

प्रिय शूरोच्का,

तुम्हारा पत्र पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई; एक तो इसलिए कि तुम्हारा समाचार मिला, दूसरे यह जानकर कि तुम आ रही हो। सच कहूं, मैं तो निराश हो चला था। अब तो मैं पत्र लिखना भी अनावश्यक समझता हूं: हम जल्दी ही मिल पायेंगे। और फिर अपने हाथ से लिखने और दूसरे के हाथ से लिखवाने मे बड़ा फ़र्क है।

संक्षेप में रिपोर्ट यह है। उक्रइनी लीग की केन्द्रीय समिति ने, लीग की वर्षगांठ पर मुझे पुरस्कार देने का निश्चय किया है। क्या पुरस्कार होगा, यह मैं अभी नहीं जानता। (वह इसे गुप्त रखे हुए हैं।) मास्को से खबर आयी है कि मेरी पुस्तक का अनुवाद बहुत-सी सोवियत भाषाओं मे हो रहा है। वर्षगांठ पर एक लेख-संग्रह निकल रहा है जिसमें लीग के साथियों ने मुझे आसमान पर चढ़ा दिया है कि सारे लीग के साथियों में इसे पराजित करना सबसे कठिन है। सोची लीग ने मेरा पुराना संघर्षकालीन सदस्यता का कार्ड बदल दिया है। अब मेरे पार्टी-सदस्यता के कार्ड के साथ,

एक छोटा-सा कार्ड रखा रहता है जो "नि० म० ओस्त्रोव्स्की, १९१९ से युवक कम्युनिस्ट लीग के सदस्य" के नाम पर बना है। कार्ड पर संख्या ८१४४६११ अंकित है।

मैं क्या बहुत तुम्हें लिखना चाहता हूं। हमें मिले तीन साल हो चुके हैं, और इस काल में क्या कुछ हो गया। मैं बड़ी उत्सुकता से उस घड़ी का इन्तजार कर रहा हूं जब मैं तुम्हें मिल पाऊंगा। सब भूली हुई बातों की याद फिर से ताजा हो जायेगी। क्योंकि सचमुच तुम मुझे भूलने लग गयी थी, और तुम्हारे मन में मेरा चित्र फीका पड़ने लगा था। फिल्म के बारे में जो कुछ भी बातें पता चलें, लिखना। अब तुम्हारे इन्तजार में हूं, प्रिय शूरा।

तुम्हारा
कोल्या।

ख्रि० पा० चेर्नोकोजोव को

सोची, १५ दिसम्बर, १९३३

प्रिय ख्रिसान्फ़ पाव्लोविच,

शूरा और मैं एक साथ तुम्हें यह पत्र लिख रहे हैं, क्योंकि हमे यह जानकर बेहद ख़ुशी हुई है कि तुम जीवित हो। (शूरा यहा सोची में इलाज के लिए आयी हुई है। कल वह लेनिनग्राद चली जायेगी।) बात यों हुई कि सोची सोवियत के अध्यक्ष, जो तुम्हें ग्रोज्नी में जानते थे, मुझे एक दिन मिलने आये और कहने लगे: "चेर्नोकोजोव तो पहाड़ों पर कही मारा गया था।" तुम समझ सकते हो, यह जानकर मुझे कितना दुःख हुआ। फिर कुछ रोज हुए हमे पता चला कि वह ख़बर गलत थी। शूरा जिस चिकित्सालय मे थी, वहां इसे एक इंजीनियर मिला, एक साथी जो पार्टी का सदस्य नही था और ग्रोज्नी के तैल-क्षेत्रों से आया था। उसने बतलाया कि तुम जिन्दा हो और काम पर डटे हुए हो। प्रिय मित्र, तुम्हे हमारा सप्रेम अभिवादन!

क्या तुम्हे मेरा वह लम्बा-चौडा ख़त मिल गया था जिसमे मैंने तुम्हे अपने जीवन के पिछले तीन सालो का विवरण दिया था? मैंने वह पत्र तुम्हें प्रादेशिक ट्रेड-यूनियन परिषद् के पते पर भेजा था। अपने किसी मित्र को भेजकर पुस्तकालय से मेरी किताब 'अग्नि-दीक्षा' मंगवा लो।

दूसरा भाग ज्योंही छपकर आया, मैं तुम्हे भेज दूगा। यह महीने भर तक संभव होगा। दूसरे भाग मे तुम्हारा भी थोड़ा जिक्र है। मैं तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूंगा। अपना घर का पता लिखो जो मैं शूरा जिगिर्योवा को लेनिनग्राद में भेज दूगा। भूलना नही। मैं ख़त का इन्तजार कर रहा हूं। जब तुम्हारा ख़त आयेगा तो फिर मैं अन्य बाते अपने बारे में तुम्हें लिखूगा। मै जिन्दा हूं, सापेक्षतया ठीक हूं, और मेरा साहस अभी टूटा नही है। गत वर्ष का काम बुरा नही रहा—कम से कम मै तो यही समझता हूं। मैं अतीत के बारे मे, अपने युवको के लिए लिख रहा हूं। आजकल सोची में हूं, और मास्को में चले जाने का विचार है।

शूरा जिगिर्योवा पहले की तरह अब भी काम किये जा रही है, कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय में काम करती है, पार्टी के कर्मचारियों के शिक्षण का काम, युवको के पालन-पोषण का काम। मेरी ओर से और शूरा जिगिर्योवा की ओर से अपनी पत्नी को हमारा अभिवादन कहना, यदि वह हमे भूल नही गयी तो। शुभकामनाएं।

तुम्हारे

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की व शूरा जिगिर्योवा।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, २५ दिसम्बर, १९३३

प्रिय कामरेड आन्ना,

अभी अभी इन्होंने आपका विशेष पत्र मुझे पढ़कर सुनाया है... कितनी ही चिट्ठियां है जो मुझे मिली तक नही। आपकी और सोन्या* की चिट्ठियों का खो जाना मेरे लिए कोई छोटी बात न थी। मैं अपना ही अंदाज लगाता रहा, और मैं जरूर स्वीकार करूंगा कि मेरा अंदाज कोई अच्छा नही था। अब जो मैं इसकी चर्चा करने लगा हूं, तो हमारे सामान्यतया आपसी साहित्यिक सम्बन्ध के बारे मे भी दो शब्द कह ही दूं। प्रिय कामरेड आन्ना, यह सम्बन्ध नही के बराबर है। पिछले पन्द्रह महीनों से मुझे आपकी

---

*सोफ्या मार्कोवना स्तेमिना—'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका के सम्पादकीय दफ्तर में काम करनेवाली एक महिला।—सं०

ओर से केवल एक पत्र ऐसा आया है जिसमे कोई गम्भीर विवेचना थी। और आप भली भाति जानती है कि मै यह जानने का कितना इच्छुक रहता हू कि मेरे काम मे क्या त्रुटिया हैं और क्यों है – और यह इसी समय जानने की जरूरत है जब कि काम चल रहा है, बाद में नही। इसी लिए मैंने अपनी दर्जन भर चिट्ठियों में बार बार आपसे प्रार्थना की है कि मेरे पत्र का जवाब फौरन दे और मुझपर आलोचना के "प्रहार" करे। ज़रा सोचिये तो, आपने किस कदर मेरी आशाओं को चकनाचूर किया है। सेनापति का काम होता है कि युद्ध के दौरान ही, न कि उसके समाप्त होने पर, सेना का निर्देशन करे। अगर आप, जब मै किताब लिख रहा था, अपनी आलोचना भेजती तो इसका मुझे बेहद लाभ पहुंचता। मैंने सदैव अपने से बडे बोल्शेविकों से, जो मुझसे अधिक जानकारी रखते थे, संघर्ष के हर क्षेत्र मे सीखने की कोशिश की है। मेरे अन्दर जानकारी की भूख कभी शान्त नही होती। मै हृदय से उन लोगो का मान करता हूं जिन्होंने मुझे हमारे आदर्श के लिए एक अच्छा सैनिक बनना सिखलाया। आपसे भी, प्रिय साथियो, मुझे वैसी ही शिक्षा की आशा रहती है।

आलोचनाओं के बारे में – ये तभी सहायक हो सकती है जब पुस्तक के छपने के फ़ौरन बाद मिलें और जब लेखक कोई दूसरी पुस्तक शुरू करनेवाला हो, पर मुझे अपनी पहली पुस्तक की आलोचना तब मिलती है जब मै दूसरी किताब भी लिख चुका हूं। और दूसरी में पहली किताब की सभी त्रुटियां है। मेरी स्थिति में, कामरेड आन्ना, सबसे बड़ी रुकावट यह है कि हम एक दूसरे से बहुत दूर हैं। हमारा आपस में जो वार्तालाप हुआ था, जो मुझे आज तक अच्छी तरह याद है, यदि उसे उस समय कोई लिखता जाता तो कितने पन्ने भर जाते। आपने यह कैसे कह दिया था: "हम सबको एक स्तर पर नही लाना चाहते।" यह बात हर क्षेत्र के लिए सच है, कम से कम जैसा बर्ताव मेरे साथ 'मोलोदाया ग्वार्दिया' में हुआ है, उससे यही विदित होता है। एक साथी ने – उसका नाम मुझे याद नहीं – एक बार पत्रिका की आलोचना करते हुए कहा था कि जिन युवकों को पत्रिका ने आगे बढ़ाया है, उन्हे इसने ठीक तरह गौरवान्वित नही किया। मै इससे सहमत नही हूं – कम से कम जहा तक मेरा अपना सम्बन्ध है। शायद ही कोई 'मोलोदाया ग्वार्दिया' का ऐसा अंक हो जिसमे आपके इस शिष्य के बारे में कुछ सराहना के शब्द न कहे गये हों। और अब आपका

यह पत्र—इससे वह उपेक्षाभाव दूर हो गया है, जिसका मुझे ग्राभास होने लगा था। इसके प्रेम-भाव से मुझे अत्यन्त सुख प्राप्त हुआ है, और इससे भी बढ़कर—मुझे अपना काम जारी रखने की नयी प्रेरणा मिली है। आपको इस बात पर हैरान होने की जरूरत नही, कामरेड आन्ना, कि मै इतना सवेदनशील हू। दोष मेरे जीवन की परिस्थितियों का है। आपकी इस सूचना से कि मेरी पुस्तक जनवरी अंक से प्रकाशित होनी शुरू हो जायेगी, मुझे गहरी आन्तरिक सांत्वना मिली। कहने की आवश्यकता नही कि यदि पत्रिका ने छापने से इनकार कर दिया होता तो यह मेरे लिए एक पराजय होती, एक ऐसी पराजय जिसका घाव इसके मास्को और खारकोव में भी प्रकाशन से न भर पाता। पर ख़तरा अब भी मौजूद है। उसे मैंने समझ लिया है, और उसपर काफ़ी विचार किया है। आपने व्यवस्थापक समिति मे जो कुछ कहा वह ठीक था कि "समय गुज़रने के साथ साथ प्रकाशन और भी कठिनतर होता जाता है।" कठिनतर, इसलिए नही कि इसमे रुचि नही, बल्कि इसलिए कि हमारे पाठकों की माग, जिनकी संख्या करोड़ों में है, उच्चतर होती जाती है। मै बहुत पढ रहा हूं। अकेले मे यह आसान नही। सामग्री की यहा कमी है, और कोई भी यहां ऐसा जानकार साथी नही जो मेरी मदद कर सके। पर तो भी मै महसूस करता हूं कि मेरे अल्प अनुभव तथा सीमित सांस्कृतिक शिक्षा की परिधि फैलने लगी है। अगर मैं किसी आकस्मिक घटनावश या किसी मनहूस बीमारी के कारण मर न गया, तो आशा है मैं किसी दिन आपको भी सन्तुष्ट कर पाऊंगा, और जो निराशा आपको मेरी पुस्तक के दूसरे भाग से हुई है, उसे दूर कर सकूंगा।

आपने पूछा है कि मैंने यह पिछले तीन महीने किस तरह बिताये है। मैं साहित्यिक अध्ययन से अपना बहुत-सा समय चुराकर युवकों को देता रहा हूं। अकेला रहने के बजाय मैं जनता में काम कने लगरा हूं। नगर समिति के कर्मचारियो की बैठकें मेरे कमरों में होती है। मैं एक पार्टी अध्ययन-मण्डली चला रहा हूं, और मुझे जिले की सांस्कृतिक परिषद् का अध्यक्ष बनाया गया है। संक्षेप में, मैं पूर्ण रूप से पार्टी के रचनात्मक कार्य मे लग गया हूं, और किसी हद तक एक उपयोगी आदमी सिद्ध हो रहा हूं। यह ठीक है कि इसपर मेरी बड़ी ताकत ख़र्च होती है। पर इससे जीवन में उतना ही अधिक आनन्द भी मिलता है! युवा लीग के लोग

मेरे आस-पास रहते हैं। और सांस्कृतिक मोर्चे पर काम की कमी नहीं! नगर के पुस्तकालयों ही को लो – उनके प्रति बुरी तरह लापरवाही बरती गयी है, पैसे की तंगी है और उनकी लिस्टें और आलमारियां अस्त-व्यस्त दशा में हैं। अब धीरे धीरे उनमें फिर से व्यवस्था आने लगी है और काम होने लगा है। एक साहित्यिक मण्डली की भी मैंने व्यवस्था की है, और जितनी योग्यता मुझमें है, उसके अनुसार उसका संचालन कर रहा हूं। पार्टी तथा लीग की समितियां मेरी बहुत सहायता करती हैं, और मेरा तथा मेरे काम का बड़ा ध्यान रखती हैं। पार्टी के मुख्य सदस्य मुझसे अक्सर मिलने आते हैं। मैं जीवन की धड़कन फिर से महसूस करने लगा हूं। पिछले तीन महीनों में जो रचनात्मक कार्य मैंने किया है, वह किसी निश्चित लक्ष्य को सामने रखके किया है। मैं वक़्त की आवाज़ को सुनना चाहता हूं, जानना चाहता हूं कि आज मेरे इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। जितना कुछ मैं आपको बताना चाहता हूं वह इस एक ख़त में नहीं समा सकता। मैं फिर कभी आपको पत्र लिखूंगा – यदि मेरे पत्रों से आप ऊब नहीं उठी हैं तो। जितना काम करता हूं, उसके अनुसार काफी अध्ययन भी कर लेता हूं। इन महीनों में मैं बालजाक की 'पो दि शैग्रिन', वेरा फ़िग्नर की पुस्तक 'स्मृतियां', गेर्मन का 'एक्सैशन', 'उदेगे का अन्तिम मनुष्य', 'तीखी चढ़ाई', 'आन्ना करेनिना', 'साहित्यिक परम्परा', 'साहित्यिक आलोचना' का प्रत्येक अंक, तुर्गेनेव का 'कुलीन घराना' और इनके अलावा और बहुत कुछ पढ़ता रहा हूं। मैं चाहता हूं कि आप मुझे बतायं कि आगे मैं किस विषय पर काम करूं। कैसा प्रसंग हो? आप मुझे अच्छी तरह जानती हैं, इसलिए आप मुझे कोई रुचिकर विषय सुझा सकती हैं। आप क्या समझती हैं – मैं किस तरह के विषय पर अच्छा लिख सकूंगा? इसका उत्तर ज़रूर देना। इस बारे में आपके विचार जानने की मेरी प्रबल इच्छा है। आपके इस परामर्श पर मैं अवश्य विचार करूंगा कि मैं पत्रिका के 'पाठक और लेखक' स्तम्भ के लिए लेख लिखूं।

मेरा सस्नेह अभिवादन, कामरेड आन्ना। कामरेड मार्क को भी सप्रेम अभिवादन। कल से मैं उनकी 'चुनी हुई कहानियां' पढनी शुरू करूंगा। हमारी रचनात्मक मैत्री चिरंजीवी हो और सदा फले-फूले!

सादर, सस्नेह,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

मेरी प्रार्थना पर लिखा गया।

अ० इ० पुजिरेव्स्की* को

सोची, २६ दिसम्बर, १६३३

प्रिय अलेक्सान्द्र,

रोजा लिखती है कि उसने तुम्हें केन्द्रीय समिति की बैठक मे देखा था। हा, भाईजान, मैं ज़िन्दा हूं और यह आशा करता हूं कि जब कभी तुम सोची आओगे तो हमारी मुलाकात होगी। न केवल ज़िन्दा हूं, बल्कि फिर से काम भी करने लगा हूं। 'अग्नि-दीक्षा' नामक एक उपन्यास के दो भाग भी मैंने लिखे है। इसमे तुम्हे कुछ पंक्तियां एक व्यक्ति अलेक्सान्द्र पुजिरेव्स्की के बारे मे लिखी मिलेंगी, जो सर्वहारा के सैनिकों मे किसी से कम न था। मेरे दिल मे तुम्हारे लिए अगाध प्रेम है, मेरे भाई। और मुझे आशा है कि हम एक दिन मिलेगे। उम्मीद है तुम उसी तरह ओजस्वी होगे जैसे कि पहले हुआ करते थे। जीवन अब मेरे प्रति भी दयालु हो रहा है। अब मैं पीछे की पंक्तियो मे घिसटनेवाला आलसी नही हूं। अब मैं फिर अगली पक्तियों में लड़नेवाला सैनिक हूं।

तुम्हारा

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० इ० पुजिरेव्स्की को

सोची, १६ जनवरी, १६३४

प्रिय अलेक्सान्द्र,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे आशा है अब हमारी चिट्ठी-पत्री जारी रहेगी, पर यह तुमपर निर्भर है। मुझे तुम्हें मिलकर बडी खुशी होगी। तुमने लिखा है कि तुम्हें किसी भी दूकान पर मेरी किताब नही मिलती। इसमे आश्चर्य की कोई बात नहीं। मैं खुद उसे सारे सोवियत सघ मे ढूढ चुका हू मगर कहीं भी नही मिलती। है न मजे की बात? 'अग्नि-दीक्षा' के पहले भाग की १०,००० प्रतिया छपी थी। यह संख्या में बहुत नही। दूसरा जन-संस्करण एक लाख प्रतियो मे जल्दी ही छपकर

---

*अलेक्सान्द्र इओसिफोविच पुजिरेव्स्की—ओस्त्रोव्स्की का एक मित्र। 'अग्नि-दीक्षा' में इसी नाम से चित्रित।—सं०

आयेगा। पुस्तक का दूसरा भाग कुछ ही दिनों मे मास्को मे प्रकाशित होगा, और मैं उसकी एक प्रति तुम्हे फ़ौरन भेज दूगा। पहले भाग की प्रति नही भेज सकता क्योकि मेरे पास जितनी प्रतियां थी, मैंने सब की सब दे डाली। हा, अप्रैल महीने में दोनों भाग ख़ारकोव मे उक्रइनी भाषा में प्रकाशित हो रहे है। दोनों भाग एक ही पुस्तक मे छपेंगे। प्रकाशन-संख्या – १०,००० प्रतियां। साथ ही, पहला भाग 'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका मे, १९३२ के ४, ५, ६, ७, ८ तथा ९वें अंकों में प्रकाशित हुआ था। दूसरा भाग भी उसी पत्रिका मे प्रकाशित हो रहा है। और यह समझ लो कि दूसरे भाग के पहले अध्याय मे एक व्यक्ति अलेक्सान्द्र पुज़िरेव्स्की नाम का चित्रित हुआ है। पहले भाग मे तुम आठवे अध्याय मे रेजिमेंट कमाडर के रूप में आते हो (दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे की उमान शाखा, सन् १९२०)। तुम्हें पुस्तकालय के अलावा कहीं से किताब नही मिलेगी।

पुस्तक की आलोचनाओं के लिए देखो: 'रोस्त' (वृद्धि) पत्रिका के अंक ११–१२ (१९३३) और 'मोलोदाया ग्वार्दिया' अंक ५ (१९३३); और नाम नहीं गिनाऊंगा। यह है स्थिति साहित्यिक मोर्चे पर।

बहुत मेहनत कर रहा हूं, और बहुत कुछ पढ रहा हूं। सारा वक़्त युवाजन, युवा लीगवाले, मेरे आस-पास रहते है। जीवन का रुख़ बिल्कुल बदल गया है। एक ही बुरी चीज है, और वह है मेरा स्वास्थ्य, पतले कागज की तरह नाजुक हो गया है। १९३२ मे निमोनिये के कारण मृतप्राय हो गया था, और डाक्टरों ने मास्को से धकेलकर सोची भेज दिया। वे कहने लगे कि बिना हवा-बदली के तेरे अंग मुड़ जायेंगे। तो अब, मैं चाहूं या न चाहूं, मुझे सोची में ही रहना पड़ेगा, हालांकि मेरा दिल मुझे मास्को की ओर खींचता रहता है। साशा, जब तुम आओगे तो यह देखकर ख़ुश होगे कि तुम्हारे इस भाई ने हार नहीं मानी। नही, उसने सबको हैरान कर दिया है – दुर्बलता के गढ़े मे से निकलकर खुली प्रशस्त सड़क पर चलने लगा है, और विजयी सर्वहारा पर अब बोझ बनकर नही रहता। आख़िरी वाक्य केवल इसलिए लिखा है कि देखें सुनने मे कैसा है।

मुझे अपने घर का पता लिखो, और अपनी पत्नी से मेरा परिचय करा दो। जब मेरी किताब मिले तो उसे भी पढ़ने के लिए कहना और कहना कि उसपर अपने विचार लिखे। कल एक ख़त ख़ारकोव से आया। उससे मालूम हुआ कि वहा 'मोलोदोय बोल्शेविक' प्रकाशन गृह में

राष्ट्रवादियों का एक दल है जो इस कोशिश में है कि मेरी किताब न छपे। लेकिन अब उनका पर्दाफाश हो गया है। अब घटनाएं द्रुतगति से घटेंगी। वह पेत्लूरा के समर्थक हैं—उन्हें क्यों मेरी किताब पसन्द आने लगी।

यदि कोई समाचार हुआ तो लिखूगा।

तुम्हारा

नि० ओस्त्रोव्स्की।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, १ अप्रैल, १९३४

प्रिय कामरेड आन्ना,

अभी अभी आपका खत मुझे पढ़कर सुनाया गया। आज कितना शुभ दिन है कि एक खत आपकी तरफ़ से आया और एक दूसरा खत भी मिला जिसमे यह खबर आयी कि मक्सिम गोर्की जल्दी ही एक लेख आपके शिष्य के दुष्कृत्यों के बारे में लिखनेवाले हैं। मेरी अच्छी मरम्मत होगी, कामरेड आन्ना, क्योंकि मैंने अपनी पहली साहित्यिक चेष्टा मे काफ़ी गड़बड़ की है। मैं जरूर कुछ डरा हुआ हूं, मानता हूं। हमारा महान शिक्षक बडे जोर की लगाता है, खास तौर पर पिछले इन कुछ दिनों से ख्याति-प्राप्त लेखकों की कटु आलोचना करने लगा है। हां, मैं ख्याति-प्राप्त नहीं हूं, फिर भी मैं थोड़ा अशान्त जरूर हूं, कि गोर्की क्या कहेंगे।

हां, आपके खत के बारे में। मैं खुशी से साहित्यिक भाषा के विषय पर पत्रिका के लिए लेख लिखूंगा। यह इतनी बड़ी और इतनी जरूरी समस्या है—और केवल आज की ही नही। मैं पहले से इस विषय पर लिखने की सोच रहा हूं। इसका खाका तो अब भी मेरे दिमाग में तैयार है—जिसका मतलब है कि काम का सबसे जरूरी हिस्सा तो कर डाला गया है। मैं कल इसे लिखना शुरू करूंगा, और कल से हफ़्ते भर बाद मै इसे टाइप करवाके आपके घर के पते पर भेज दूंगा और ऊपर लिख दूगा कि फ़ौरन चिट्ठी पहुंचा दी जाय।

शायद, कामरेड आन्ना, आपको मालूम हो कि मैं फिर मरते मरते बचा हूं। और ऐसी बेहूदा बीमारी से जिसकी कोई कल्पना नही कर

सकता। और यह आयी कहा से, यह भी कोई नही जानता। महीना भर इससे जूझता रहा। पर अब बला टल गयी है, और मैं फिर से कुछ कुछ तन्दुरुस्त होने लगा हूं।

मेरी नयी किताब का विषय क्या होगा–इसके बारे में बाद मे लिखूगा। आपका भेजा हुआ विवरण अत्यन्त रोचक है। यह तो एक अक्षय विषय है–'हमारे युग का एक नायक', वह शानदार, तरुण युवक! मेरा इरादा अब आपको बाकायदा ख़त लिखते रहने का है, कामरेड आन्ना। कभी कभी मेरे मन मे अपने विचारो-और इरादों के बारे मे आपको लिखने के लिए बहुत कुछ होता है।

पत्रिका का पहला और दूसरा अंक मिल गये। दफ़्तरवालो को कहिये कि अगले अंकों के निकलने पर भी ऐसा ही करें–ज्योंही वे छपकर निकलें, मुझे भेज दे।

मैंने जब पहले कुछ अध्याय पढ़े तो देखा कि कही कही आपकी 'कैंची' चली है। मैं उन निरर्थक अंशों के बारे में शिकायत नही करता जिनका निकाल देना ही ठीक था–विद्यार्थियों की टोली और ऐसे ही अन्य कई स्थल, पर मेरी शिकायत उन अंशो के बारे मे है जिन्हे काट देने से मूल ग्रन्थ बिगड़ता है, जिन्हे केवल कागज की बचत के लिए निकाला गया है। पर सब-मिलाकर मुझे कोई शिकायत नही। हा छपाई की कुछ एक भद्दी-सी गलतिया हुई हैं जिनसे अर्थ बिगडते हैं। मिसाल के तौर पर दूसरे अध्याय मे जहा लिखा होना चाहिए: "और यह सब समूह की सहायता से," वहां लिखा है: "यह सब समूह की यातना से..."

कामरेड आन्ना, मेरी आपसे और मार्क से सानुरोध प्रार्थना है कि आप जन-संस्करण के प्रकाशन मे योग दें। मुझे बीसियो ख़त उग्रइना तथा देश भर की लीग-संस्थाओं की ओर से आते हैं। और सबमे यही शिकायत रहती है: कि किताब नही मिलती। पाठको के अथाह सागर मे डूब गयी है। किताब न मिलने पर लोग अधिकतर पत्रिका मे छपे संस्करण को पढ़ते हैं। शेपेतोव्का के पास, मसलन, किताब की एक प्रति भी नही।

एक बात और। आप मेरे मित्रों को तो जानती है, कामरेड आन्ना। वे मुझे, जहा कही भी आर्थिक प्रश्न उठते हैं, 'कम्युनिस्ट आदर्शवादी' या ऐसे नाम देते फिरते है जिनसे मुझे चिढ़ है। वे शायद, बिना मुझसे

पूछे आपको तंग करने लगें। यह मुझे बहुत बुरा लगता है। जो कुछ भी वे कहे या करे उसमे मेरी स्वीकृति नही समझना।

आपका

निकोलाई ओ०

प्रिय कामरेड आन्ना,

यह ऐन मुमकिन है कि मेरे पत्रों मे, जो मैने आपको लिखे है, या सामान्यतया मेरे सभी पत्रो मे व्याकरण तथा हिज्जों की बहुत सी गलतियां रह जाती हैं। मेरे लिए लिखने वालो मे, दुर्भाग्यवश, कोई भी बहुत पढ़ा-लिखा व्यक्ति नही है।

नि० ओ०

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, ६ मई, १६३४

मेरी प्यारी शूरोच्का,

सदियो से तुम्हे पत्र नही लिख पाया। तुमने भी खत नही लिखा। पर मैं तुम्हें क्षमा कर सकता हूं क्योंकि हमारी मित्रता ख़तो की संख्या के आधार पर कभी भी नही आकी गयी।

मेरा स्वास्थ्य बुरा नही। मै अब पूर्णतया ठीक हो गया हूं। जल्दी ही काम शुरू कर दूंगा।

मौसम बहुत सुहावना है। हा, थोड़ी-सी और बारिश हो जाय तो फसल के लिए ज्यादा अच्छा होगा। यह ख़ुश्क मौसम फ़सल के लिए हानिकर है।

किताब के नये संस्करण के लिए जो जून में प्रकाशित हो रहा है, सम्पादनार्थ मैंने पहले भाग को फिर से साफ़ किया है। दोनों भाग एक ही जिल्द में, जिसे सम्पादक लोग घमण्ड से बढ़िया संस्करण कहते हैं, छप रहे है। किताब के लिए एक रंगदार डिब्बे का भी आयोजन हो रहा है। लेखक सम्मेलन पर प्रदर्शित करने की चेष्टा है, और क्या। पुस्तक पर गोर्की की राय का इन्तजार है। परसों [illegible] मिलने आये थे। जगह जगह से मुझे बड़ी प्रशंसात्मक चिट्ठियां आती हैं। मैं नाटक

लोग लिखते हैं, यदि मैंने पीना और लोगों के दोष निकालने न शुरू कर दिये तो शायद किसी रोज कुछ बन निकलूगा...

सर्दियों में मैं मास्को जरूर जाना चाहता हूं। मुझे पढ़ने की, अनुभवी परामर्श की, और साहित्यिक वातावरण वग़ैरा वगैरा की बहुत जरूरत है। आजकल मैं बहुत पढ रहा हूं।

तुम्हारी क्या ख़बर है?.. यदि इन गर्मियों में तुम आ सको, तो बहुत अच्छा हो। कोशिश करो और आ जाओ, शूरोच्का!..

जन-कमिसार परिषद् ने मेरे लिए एक ख़ास पेन्शन निर्धारित की है।

सारे परिवार की ओर से सप्रेम अभिवादन।

दूसरे भाग का इन्तज़ार है, किसी रोज भी आ जाय। ज्यों ही पुस्तक पहुंची, तुम्हे फ़ौरन भेज दूंगा।

तुम्हारा

नि० ओस्त्रोव्स्की।

रो० बो० ल्याखोविच को

सोची, २४ जून, १९३४

रोज़ोच्का,

अभी अभी तुम्हारी चिट्ठी मिली। नन्ही लड़की, तुम कहती हो कि मैंने तुम्हें भुला दिया है, और अपने आपको बहुत कुछ समझने लग गया हूं, और भी न जाने क्या क्या। यह सब सर्वथा निर्मूल है। मेरी याददाश्त बहुत अच्छी है, और मैं स्वभाव से ही दम्भी नहीं हूं। मुसीबत यह है, कि मेरे पास इतना समय नहीं, न ही इतनी शक्ति है कि मैं मित्रों की चिट्ठियों का जवाब नियमानुसार वक़्त पर दे सकूं। मेरे पास रोज ढेर चिट्ठियां आती हैं—बहुत-सी उनमें जरूरी चिट्ठियां होती हैं जिनमें फ़ौरन अपना निश्चय लिखने की मांग होती है। और मुझमें इतनी ताक़त नहीं होती कि मैं यह सब सम्भाल पाऊं। इसलिए, कृपया इस किस्म की फ़िज़ूल बात मत लिखा करो। अब तो तुम ख़ूब बड़ी हो गयी होगी, क्यों, नहीं? अब तुम बच्ची तो नहीं हो जैसी कि बरसों पहले हुआ करती थी।

...तो तुम कीयेव में जाकर रहने की सोच रही हो। उसके साथ कितनी ही प्यारी स्मृतियां जुड़ी हैं। जीवन के हमारे श्रेष्ठतम वर्ष वहां

गुजरे हैं। दूसरे भाग के पहले तीन अध्यायों का घटनास्थल कीयेव ही है। कोई विशेष समाचार देने को नहीं। मुझे सोवियत लेखक संघ का सदस्य बना लिया गया है। अगले कुछ दिनों मे उक्रइनी संस्करण छपकर आ जायेगा, और ख्याल है अच्छा ही होगा। और दूसरा मास्को संस्करण भी जल्दी ही प्रकाशित होनेवाला है। मैं सोच रहा हू कि सर्दियों मे मास्को चला जाऊं, अगर वहा मुझे रहने को कमरे मिल गये तो। अपने अध्ययन और साहित्यिक उन्नति के लिए मुझे मास्को की ज़रूरत है। जब भी दूसरे भाग की प्रतिया पहुंची तुम्हें फौरन एक प्रति भेज दूगा। राया अगस्त महीने में यहां आने की सोच रही है। कात्या का स्वास्थ्य अच्छा नही। डाक्टर कहते हैं कि तपेदिक है। मुझे उसको इलाज के लिए कही भेजना पड़ेगा। मा का स्वास्थ्य भी बहुत बिगड गया है, और मैं उन्हें किसी चिकित्सालय मे भेजने का प्रबन्ध कर रहा हूं। पिता बहुत बूढ़े हो गये हैं, उनका चल-फिर सकना कठिन हो रहा है। हममे से सचमुच अगर कोई सजीव व्यक्ति है तो वह कात्या। अब तुमने देख लिया कि मेरा वातावरण रचनात्मक शक्ति का पोषक नही। पर इसका यह मतलब नही कि मैं निराश होकर बैठ गया हूं। नही–जीवन एक सघर्ष है, अपने लक्ष्य के मार्ग मे आयी रुकावटों पर काबू पाने का संघर्ष।

मैं किताबें पढ़ता रहता हूं। बहुत कुछ पढ़ता हू, और हमारे साहित्य की महान विरासत का बाकायदा अध्ययन कर रहा हूं। पढ़े बिना, मानसिक विकास के बिना, मैं किस भाति कोई नयी पुस्तक लिख सकता हूं, जो पहली से अधिक सजीव, अधिक सशक्त हो?

रोज़ा! मुझे हाल ही मे मालूम हुआ है कि पेत्या और मेरे अन्य पार्टी मित्र मेरे बारे मे केन्द्रीय समिति मे फिर कोई प्रश्न उठा रहे हैं। मैंने पेत्या को एक पत्र लिखा है जिसमें इसका कड़ा विरोध किया है। कितनी बार मैंने अपने मित्रों से प्रार्थना की है, माग की है कि मुझे अकेला छोड़ दें और मुझे शान्ति से काम करने दें। मै लोहे का बना हुआ नही हूं–यह मत भूलो। तुम समझ सकते हो, कि जब कभी मुझे इस तरह की बाते पता चलती हैं तो मैं बहुत ही क्षुब्ध हो उठता हूं। केन्द्रीय समिति के साथी क्या सोचेंगे? और यह सब है किसलिए? आज मेरे लिए जीवन अद्भुत हो उठा है। मेरा चिरवांछित स्वप्न साकार हुआ है। मैं फिर से एक सैनिक बन गया हूं, अपनी पार्टी के लिए

निरर्थक नही रह गया। देश के जीवन में मैने फिर से अपना स्थान पा लिया है। तो मेरे मित्र क्यों मुझे यों दुःखी करते है। जो ताकत किसी अच्छे काम मे लग सकती है, उसे क्यों केन्द्रीय समिति से मेरे जीवन और उसके तुच्छ अंशों के बारे में सवाल पूछ पूछकर बरबाद कर रहे है? वे जानते है कि मैं नही चाहता कि कोई भी इस किस्म की कोई भी बात करे। बस—इतना ही कहना था। मेरा सप्रेम अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

यदि तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें कुछ तस्वीरें भेजूं—टोलियों की और मेरी तथा सेरफ़िमोविच की—तो अब्राम को कहो कि मुझे कुछ अच्छा कागज़ जुटा दे।

सारे परिवार की ओर से अभिवादन।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, २६ जून, [१९]३४

प्रिय शूरोच्का,

अभी अभी तुम्हारा ख़त मिला। मैं सब समझता हूं—मै नाराज नही हूं। मुझे यह जानकर अत्यन्त चिन्ता हुई है कि तुम इतनी बीमार हो। हम लोगों के लिए बीमारी सबसे बुरी, सबसे घृणित चीज है।

तुमने समाचार पूछा है।

मुझे लेखक संघ का सदस्य बना लिया गया है। इसका मुझे गर्व है। उन्होंने मुझे इस उम्मीद पर ही ले लिया है कि मैं आगे चलकर अच्छी पुस्तके लिखूंगा।

मैं काम करने के लिए उत्सुक हूं—यह सच है। कई बार बाधाएं आती है, पर इसमे मेरा क्या दोष? तुमने ठीक कहा है—मुझे मिलने के लिए बहुत ही अधिक संख्या मे लोग आते है। ऐसे ऐसे दिन भी आते है जब मैं बिल्कुल थककर चूर हो जाता हूं, और फिर सुबह चार चार बजे तक लेटा रहता हूं, सो नही पाता। यह सीमा को लांघनेवाली बात है। मैंने मिलनेवालों की सूची देखी है, और उसमे से आधे नाम काट दिये है—फिर भी वे मेरा आधा वक़्त ले जाते हैं।

मुझे और पचास प्रतिशत इसे कम करना पड़ेगा। एक घण्टा मेरे लिए क़ीमती है।

मैं बड़ी मेहनत से पढ रहा हूं और बड़े विस्तृत स्तर पर किताबें पढ रहा हूं, और इस तरह एक बड़े पैमाने पर नयी रचना की तैयारी कर रहा हूं। ऐसे समय मे गप्पें हाकने और निरर्थक वार्तालाप मे वक़्त जाया करना पाप है, विशेषकर जब कि मेरा स्वास्थ्य इतनी जल्दी गिर रहा है...

कुछ ही दिनो में पुस्तक का दूसरा भाग तुम्हे भेजूगा...

सर्दी के दिनों मे मैं मास्को जाना चाहता हूं। मेरे अध्ययन के लिए यह जरूरी है। अगर मुझे कमरे मिल जायं, तो मैं अवश्य चला जाऊंगा।

सोची का निर्माण बड़ी तेजी से हो रहा है। लोग कहते हैं कि रास्ते में इतने बल्ली-तख्ते पड़े रहते हैं, कि समुद्र के किनारे तक पहुंचना कठिन हो जाता है।

मां की सेहत अच्छी नही। हम उन्हे किसी चिकित्सालय में भेजने की सोच रहे है। मै उनके लिए किसी जगह की तलाश मे हूं। कम से कम जीवन मे एक बार तो उन्हे आराम मिले, उनका इलाज हो पाय।

जुलाई में मास्को से एक दूसरा संस्करण निकलेगा – उत्कृष्ट संस्करण! मैं तुम्हे उसकी एक प्रति भेजूगा। और साल के आखिर मे तीसरा, जन-संस्करण – १,००,००० प्रतिया।

...यहा बारिश भी होती रही है, हालाकि मौसम गर्म है। फ़सल अच्छी है। सूखा जल्दी ख़त्म हो गया था।

खेद इस बात का है कि मै केवल एक ही बार पेड़ो की छाया का आनंद ले पाया हूं। पर जल्दी ही मै वहा अपना अधिक समय व्यतीत किया करूंगा।

हां फिल्म के बारे में सूचना के लिए बहुत धन्यवाद। कोई नयी बात हुई तो मै लिखूगा। यह जानकर बडी निराशा हुई कि इस बरस मै तुम्हे नही देख पाऊंगा...

सबकी ओर से अभिवादन।

तुम्हारा

कोल्या।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, २६ अगस्त, १६३४

प्रिय कामरेड आन्ना,

अभी अभी आपका पत्र मुझे पढ़कर सुनाया गया है। जैसे सूरज चमके और मेरे दिल को गर्मा दे! मै यह आस लगाये रहूंगा कि आपकी योजनाओ तथा कोशिशों मे जो आप मुझे मास्को भेजने के लिए कर रही हैं आपको सफलता मिले। मैं कल्पना में भी असफलता की नही सोचूगा। इतने उत्कृष्ट जनों का प्रयास विफल क्योकर होगा?

मेरा सप्रेम अभिवादन, मेरी अपनी अच्छी कामरेड करावायेवा।

सादर,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

उक्रइनी लीग की केन्द्रीय समिति ने निश्चय किया है कि 'अग्नि-दीक्षा' उक्रइना की सभी लीग की इकाइयों, स्कूलों तथा अध्ययन-मण्डलियो मे पढ़ी जाय और उसपर बहस हो। मुझे आशा न थी कि यहा तक होगा। मैंने सभी भाषण पढ़े हैं। हृदय मे मै आपके निकट हूं। जीवन किस भांति हमें जीवित रहने का आह्वान देता रहता है!

ब्रो० गे० मर्ख्लेव्स्काया* को

सोची, १७ अक्तूबर, १६३४

प्रिय कामरेड मर्ख्लेव्स्काया,

कामरेड फ़ेदेनेव ने आपका स्नेह भरा और मैत्रीपूर्ण पत्र भेजा है।

यदि मेरी आशाएं पूरी उतरी और मै मास्को वापिस जा सका तो मुझे आपसे मिलकर हार्दिक ख़ुशी होगी। तब मैं आपसे हमारे अविस्मरणीय अतीत की, उन विलक्षण लोगों की वीर-गाथा सुनने का आनन्द लूगा जिस पर कोमिण्टर्न तथा हमारे युवकों को गर्व है, जिन्होंने अपना जीवन सर्वहारा क्रान्ति के ध्येय पर निछावर कर दिया था।

---

*ब्रोनिस्लावा गेनरिख़ोवना मर्ख्लेव्स्काया – प्रमुख पोलिश क्रान्तिकारी यू० म० मर्ख्लेव्स्की की विधवा। – स०

जहां तक मेरा सवाल है, मैं हर मुमकिन कोशिश करूंगा कि इस गौरवमय अतीत का कम से कम कुछ अंश साहित्यिक रूप में अंकित कर पाऊं।

सस्नेह अभिवादन।

यदि वे साथी जो मुझे मास्को भेजने की कोशिश मे है दृढ़ाग्रही रहे तो हम जल्दी ही मिलेगे।

सादर,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, १७ नवम्बर, १६३४

प्रिय कामरेड आन्ना,

परसो मेरे एक मित्र मास्को जा रहे है। मैंने उनसे कहा है कि जो भी किताबें पोलिश व्हाइट्गार्ड के विरुद्ध हमारी लड़ाई के विषय पर मिलें, लेते आवें।

मैं अपनी नयी पुस्तक पर काम शुरू कर रहा हूं, उसका पहला ख़ाका बना रहा हूं।

मेरी सेहत अच्छी है। हां, मैं मानता हू, मन कुछ कुछ चिन्तित रहता है।

आप यहां आयी और हमारी मैत्री और भी गहरी और अटूट हो गयी। कैसा स्नेहपूर्ण मैत्रीभाव आप अपने पीछे छोड़ गयी है।

आपके सभी साहित्यिक छात्रो मे से, जो आपकी सहायता से साहित्यिक संसार मे प्रवेश कर पाये हैं, मैं ही शायद सबसे अधिक तंग करनेवाला हूं। जो कष्ट मैं आपको देता हूं उसका कोई अन्त नही। पर एक दिन आयेगा जब आप इस कष्ट और चिन्ता से मुक्त हो जायेंगी, और आप आराम से रहेंगी।

सप्रेम अभिवादन,

सादर,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

हमारे सारे 'कोलखोज' की ओर से आपको और कामरेड करावायेव को अभिवादन।

ओ० गे० मर्ख्लेव्स्काया को

[सोची], २२ नवम्बर, १६३४

प्रिय कामरेड मर्ख्लेव्स्काया,

आपका पत्न मिल गया। हित-चिन्तन के लिए आभारी हूं।

सब शक्तियां मास्को मे इकट्ठी हो गयी है, और मैं उनके निर्णय की प्रतीक्षा मे हूं। कमरों का सवाल सचमुच बडा टेढ़ा-सा है, और इतनी जल्दी सुलझने का नही।

जो भी हो, मुझे काम पर जुट जाना चाहिए। पर शुरू करते ही एक बहुत बड़ी रुकावट मेरे सामने आ खड़ी होती है, और वह है ऐतिहासिक सामग्री का नितान्त अभाव। न मेरे पास किताबे है, न पैम्फ़लैट, न लेख – न सैनिक, न राजनीतिक, जिनसे १६१८, १६१६, १६२० मे पोलैण्ड के साथ हमारे सम्बन्धों का पता चल सके। जो कुछ मैंने इस बारे मे मुद्दत हुई पढ़ा था, या जो कुछ मैंने ख़ुद देखा या दूसरों से सुना, वह मुझे याद है, पर एक राजनीतिक उपन्यास के आधार के लिए यह सब अपर्याप्त है। मुझे सब कुछ फिर से पढ़ना होगा, पूर्णतया उसका अध्ययन करना होगा, तब कही जाकर मैं उसमें से व्यापक निष्कर्ष निकाल पाऊंगा।

मै आपका बहुत आभारी हूंगा यदि आप कामरेड बुत्केविच या अन्य साथियों से जो इन बातों के बारे में जानकारी रखते हों यह पता लगा दें कि इन प्रश्नों से सम्बन्धित कौन कौनसी पुस्तके रूसी भाषा मे प्रकाशित हो चुकी है, और वे कहां से मिल सकती है।

शायद कही कोई संस्मरण मिल जायं – जिनका अनुवाद भी, संभव है, पोलिश से रूसी में हो चुका हो – जो पिल्सूद्स्की या पोलिश व्हाईट्स के किसी अन्य नेता ने किये हों। मुझे इस फ़ासिस्ट साहित्य को पढने से लाभ होगा। दुश्मन को अच्छी तरह समझना चाहिए ताकि प्रहार ठीक बैठ सके। विशेष तौर पर मैं आरंभिक घटनाओं और फिर हमारी बिरादराना पोलिश कम्युनिस्ट पार्टी की शक्तियों के इकट्ठा होने का उल्लेख करना चाहता हूं।

पर जो बातें मुझे जीते-जागते लोग उस समय के लोगों के बारे मे बता सकते है, उनका स्थान किताबें नहीं ले सकतीं, चाहे संख्या मे कितनी ही क्यों न हों। क्योंकि उपन्यास में चित्रित लोगों का सबसे अधिक महत्व होता है। इसलिए मेरा मास्को जाना जरूरी है, ताकि मैं आपको मिल सकूं, और आप मेरा पोलिश बोल्शेविकों से सम्पर्क करा सकें...

इतनी प्रार्थनाएं एक साथ करके जो मैं आपको कष्ट दे रहा हूं, उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं, और जिस भांति मुझे मास्को पहुंचाने के लिए मेरे मित्रों ने आपसे सहायता मांगी है, उसके लिए भी।

सादर, सस्नेह अभिवादन,

निः ओस्त्रोव्स्की।

अ० इ० पुजिरेव्स्की को

सोची, २३ नवम्बर, १९३४

प्रिय साश्को,

नहीं, मैं तुम्हे कभी भी नही भूला हूं, न पहले, न अब। कारण केवल यही है कि मैं अधिकाधिक बीमार रहने लगा हूं। पर इस सबके बावजूद मैं अपने आपको संभाले हुए हूं। साथियों को मिलकर बड़ी खुशी हुई। मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं मास्को जाऊं। पर मैं यह नही जानता कि इसका कुछ लाभ होगा या नही। इसका निश्चय अगले कुछ दिनो मे होगा। वह मुझपर निर्भर नहीं। पर यदि मैं सर्दी का मौसम सोची मे बिता पाया तो तुमसे मिलकर बड़ी खुशी होगी। जरूर आओ। मौसम कुछ कुछ खराब होने लगा है। बारिश और नमी रहती है। पर हम तुम्हारे स्वागत के लिए ख़ास तौर पर धूप का आर्डर करेंगे। और साश्को, साश्को! जीवन कितना सुखमय है! केवल एक चीज का अभाव है: थोड़ा-सा शारीरिक बल और होता!

यहां बस करूंगा। सब बात का निश्चय हो जाने पर फिर लिखूगा। मेरी शुभकामनाएं तथा सस्नेह अभिवादन।

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

तुम्हारे परिवार को अभिवादन। और मुझे ख़त लिखना। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे सदैव ख़ुशी होती है।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, २ फ़रवरी, [१९]३५

प्रिय शूरोच्का,

'अग्नि-दीक्षा' के नये सस्करण के दोनों भाग तुम्हे डाक द्वारा भेज दिये है। पर जान पड़ता है वे तुम तक नही पहुंचे। कल दोनो फिर डाक द्वारा भेज रहा हूं।

मैं चाहता हूं, यूरोच्का, यदि संभव हो, तो तुम पुराने बोल्शेविकों की उस मीटिंग में ज़रूर जाओ और 'बुज़ुर्गों' की बहस में से जितना कुछ भी लिख सको, लिख लाओ। मेरा मतलब है, पुस्तक के बारे में उनके विचार। मेरे लिए इसका बड़ा महत्व है।

मेरा स्वास्थ्य सन्तोषजनक है। आजकल अपने नये उपन्यास पर काम कर रहा हूं।

कल्पना में तुम्हारे नन्हे से हाथ से हाथ मिला रहा हूं।

कोल्या।

युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सदस्या-पाठिका खार्चेन्को को

[सोची], १६ फ़रवरी, १६३५

. . जिस निर्दयता से 'अग्नि-दीक्षा' के लेखक ने अपने एक पात्र—*पावेल कोर्चागिन को पंगु बना दिया, उसके विरुद्ध तुमने रोष प्रकट किया* है। मैं तुम्हारी रोष-भावना को समझ सकता हूं। उत्साह और ओज से अनुप्राणित यौवन की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। हमारे देश के वीरों की न केवल आत्मा ही बल्कि शरीर भी स्वस्थ है। और यदि यह मेरे बस की बात होती—अर्थात् यदि कोर्चागिन केवल मात्र मेरी कलम की उपज होता—तो जैसा उसका साहस था वैसा ही हृष्ट-पुष्ट उसका शरीर भी होता।

पर, काश, कोर्चागिन जीवन से लिया गया है। और यह पत्र भी उसी के कमरे में से लिखा जा रहा है। मैं उसे मिलने आया हूं। पाव्लूशा कोर्चागिन मेरा पुराना मित्र है, सैनिक-साथी है। *यही कारण है कि मैं उसे इतने प्यार के साथ चित्रित कर पाया।*

वह मेरे सामने लेटा है, उसके होंठों पर मुस्कान है और वह मज़े में है।

पिछले छः साल से अब वह खाट से जुड़ा है। उसने एक दूसरा उपन्यास लिखना शुरू कर दिया है जिसे हम शीघ्र ही प्रकाशित रूप में देख पायेंगे।

इस नये उपन्यास के नायक तरुण युवक हैं, सुन्दर, स्वस्थ, बलवान। हमारे देश के विलक्षण युवक!

पावेल तुम्हारा अभिवादन करता है। "उसे लिखो," वह कह रहा है, "कि अपने लिए सुखमय जीवन का निर्माण करे। खुशी नये जीवन के निर्माण में है, मनुष्य को फिर से बनाने, फिर से सिखलाने के काम मे। उस समाजवादी मनुष्य को, जो आज अपने देश का मालिक है, जो नवीन है, महान और विद्वान है। कम्युनिज्म के स्थापनार्थ संघर्ष, सच्ची मित्रता, प्रेम, यौवन–ये सब मनुष्य के लिए हैं, ताकि उसका जीवन सुखमय हो सके।"

तुम एक कुशल सैनिक बनो, कामरेड यार्चेन्को।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० इ० पोद्गायेत्स्काया* को

सोची, २० फ़रवरी, १९३५

नमस्कार, कामरेड पोद्गायेत्स्काया,

तुम्हारा पत्र पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। तुमने लिखा है कि युवकों ने मेरी पुस्तक को बड़े प्रेम से पढ़ा है। इससे मुझे और भी खुशी हुई।

मैं बड़ी मेहनत से अपनी दूसरी पुस्तक 'तूफ़ान के जाये' पर काम कर रहा हूं। बहुत-से अध्याय लिखे जा चुके हैं। यह पुस्तक भी युवकों के लिए है, और इसका घटनाकाल भी वही १९१८ का तूफ़ानी काल है। अगस्त तक यह समाप्त हो जायेगी, फिर उसपर केन्द्रीय समिति, जो कि एक निष्ठुर आलोचक है, अपना निर्णय देगी।

उक्रइनी केन्द्रीय समिति से ख़बर मिली है कि दल की सभी इकाइयों में मेरी पुस्तक पर बहस हुई है। बेरेज्निकी तथा लेनिनग्राद से भी यही ख़बर आयी है। आज के सुखमय दिनों मे जीने का सचमुच आनंद है। मुझे केवल खेद है तो इस बात का, कि जीवन के दिन बहुत थोडे हैं और मुझमें

---

*अन्तोनीना इवानोवना पोद्गायेत्स्काया–'मोलोदाया ग्वार्दिया' प्रकाशन गृह के कर्मचारी मण्डल की एक सदस्या।–सं०

मैं चाहता हूं, शूरोच्का, यदि संभव हो, तो तुम पुराने बोल्शेविकों की उस मीटिंग मे जरूर जाओ और 'बुजुर्गों' की बहस मे से जितना कुछ भी लिख सको, लिख लाओ। मेरा मतलब है, पुस्तक के बारे में उनके विचार। मेरे लिए इसका बड़ा महत्व है।

मेरा स्वास्थ्य सन्तोषजनक है। आजकल अपने नये उपन्यास पर काम कर रहा हूं।

कल्पना मे तुम्हारे नन्हे से हाथ से हाथ मिला रहा हूं।

कोल्या।

युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सदस्या-पाठिका खार्चेन्को को

[सोची], १९ फ़रवरी, १९३५

. . जिस निर्दयता से 'अग्नि-दीक्षा' के लेखक ने अपने एक पात्र–पावेल कोर्चागिन को पंगु बना दिया, उसके विरुद्ध तुमने रोष प्रकट किया है। मैं तुम्हारी रोष-भावना को समझ सकता हूं। उत्साह और ओज से अनुप्राणित यौवन की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। हमारे देश के वीरों की न केवल आत्मा ही बल्कि शरीर भी स्वस्थ है। और यदि यह मेरे बस की बात होती–अर्थात् यदि कोर्चागिन केवल मात्र मेरी कलम की उपज होता–तो जैसा उसका साहस था वैसा ही हृष्ट-पुष्ट उसका शरीर भी होता।

पर, काश, कोर्चागिन जीवन से लिया गया है। और यह पत्र भी उसी के कमरे मे से लिखा जा रहा है। मैं उसे मिलने आया हूं। पाव्लूशा कोर्चागिन मेरा पुराना मित्र है, सैनिक-साथी है। यही कारण है कि मैं उसे इतने प्यार के साथ चित्रित कर पाया।

वह मेरे सामने लेटा है, उसके होंटों पर मुस्कान है और वह मजे में है।

पिछले छः साल से अब वह खाट से जुड़ा है। उसने एक दूसरा उपन्यास लिखना शुरू कर दिया है जिसे हम शीघ्र ही प्रकाशित रूप मे देख पायेंगे।

इस नये उपन्यास के नायक तरुण युवक हैं, सुन्दर, स्वस्थ, बलवान। हमारे देश के विलक्षण युवक!

पावेल तुम्हारा अभिवादन करता है। "उसे लिखो," वह कह रहा है, "कि अपने लिए सुखमय जीवन का निर्माण करे। खुशी नये जीवन के निर्माण में है, मनुष्य को फिर से बनाने, फिर से सिखलाने के काम में। उस समाजवादी मनुष्य को, जो आज अपने देश का मालिक है, जो नवीन है, महान और विद्वान है। कम्युनिज्म के स्थापनार्थ संघर्ष, सच्ची मित्रता, प्रेम, यौवन—ये सब मनुष्य के लिए हैं, ताकि उसका जीवन सुखमय हो सके।"

तुम एक कुशल सैनिक बनो, कामरेड ख़ार्चेन्को।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० इ० पोद्‌गायेत्स्काया* को

सोची, २० फ़रवरी, १९३५

नमस्कार, कामरेड पोद्‌गायेत्स्काया,

तुम्हारा पत्र पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। तुमने लिखा है कि युवकों ने मेरी पुस्तक को बड़े प्रेम से पढ़ा है। इससे मुझे और भी खुशी हुई।

मैं बड़ी मेहनत से अपनी दूसरी पुस्तक 'तूफान के जाये' पर काम कर रहा हूं। बहुत-से अध्याय लिखे जा चुके हैं। यह पुस्तक भी युवकों के लिए है, और इसका घटनाकाल भी वही १९१८ का तूफानी काल है। अगस्त तक यह समाप्त हो जायेगी, फिर उसपर केन्द्रीय समिति, जो कि एक निष्ठुर आलोचक है, अपना निर्णय देगी।

उक्रइनी केन्द्रीय समिति से ख़बर मिली है कि दल की सभी इकाइयों मे मेरी पुस्तक पर बहस हुई है। बेरेज़्निकी तथा लेनिनग्राद से भी यही ख़बर आयी है। आज के सुखमय दिनों मे जीने का सचमुच आनंद है। मुझे केवल खेद है तो इस बात का, कि जीवन के दिन बहुत थोड़े हैं और मुझमें

---

*अन्तोनीना इवानोवना पोद्‌गायेत्स्काया—'मोलोदाया ग्वार्दिया' प्रकाशन गृह के कर्मचारी मण्डल की एक सदस्या।—सं०

मैं चाहता हूं, शूरोच्का, यदि संभव हो, तो तुम पुराने बोल्शेविकों की उस मीटिंग में जरूर जाओ और 'बुजुर्गों' की बहस में से जितना कुछ भी लिख सको, लिख लाओ। मेरा मतलब है, पुस्तक के बारे में उनके विचार। मेरे लिए इसका बड़ा महत्व है।

मेरा स्वास्थ्य सन्तोषजनक है। आजकल अपने नये उपन्यास पर काम कर रहा हूं।

कल्पना में तुम्हारे नन्हे से हाथ से हाथ मिला रहा हूं।

कोल्या।

युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सदस्या-पाठिका खार्चेन्को को

[सोची], १६ फ़रवरी, १६३५

. . जिस निर्दयता से 'अग्नि-दीक्षा' के लेखक ने अपने एक पात्र – पावेल कोर्चागिन को पंगु बना दिया, उसके विरुद्ध तुमने रोष प्रकट किया है। मैं तुम्हारी रोष-भावना को समझ सकता हूं। उत्साह और ओज से अनुप्राणित यौवन की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। हमारे देश के वीरों की न केवल आत्मा ही बल्कि शरीर भी स्वस्थ है। और यदि यह मेरे बस की बात होती – अर्थात् यदि कोर्चागिन केवल मात्र मेरी कलम की उपज होता – तो जैसा उसका साहस था वैसा ही हृष्ट-पुष्ट उसका शरीर भी होता।

पर, काश, कोर्चागिन जीवन से लिया गया है। और यह पत्र भी उसी के कमरे में से लिखा जा रहा है। मैं उसे मिलने आया हूं। पाव्लूशा कोर्चागिन मेरा पुराना मित्र है, सैनिक-साथी है। यही कारण है कि मैं उसे इतने प्यार के साथ चित्रित कर पाया।

वह मेरे सामने लेटा है, उसके होंठों पर मुस्कान है और वह मज़े में है।

पिछले छः साल से अब वह खाट से जुड़ा है। उसने एक दूसरा उपन्यास लिखना शुरू कर दिया है जिसे हम शीघ्र ही प्रकाशित रूप में पायेंगे।

इस नये उपन्यास के नायक तरुण युवक है, सुन्दर, स्वस्थ, बलवान। हमारे देश के विलक्षण युवक!

पावेल तुम्हारा अभिवादन करता है। "उसे लिखो," वह कह रहा है, "कि अपने लिए सुखमय जीवन का निर्माण करे। ख़ुशी नये जीवन के निर्माण मे है, मनुष्य को फिर से बनाने, फिर से सिखलाने के काम मे। उस समाजवादी मनुष्य को, जो आज अपने देश का मालिक है, जो नवीन है, महान और विद्वान है। कम्युनिज्म के स्थापनार्थ संघर्ष, सच्ची मित्रता, प्रेम, यौवन – ये सब मनुष्य के लिए हैं, ताकि उसका जीवन सुखमय हो सके।"

तुम एक कुशल सैनिक बनो, कामरेड खार्चेन्को।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० इ० पोद्गायेत्स्काया* को

सोची, २० फ़रवरी, १९३५

नमस्कार, कामरेड पोद्गायेत्स्काया,

तुम्हारा पत्र पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। तुमने लिखा है कि युवको ने मेरी पुस्तक को बड़े प्रेम से पढ़ा है। इससे मुझे और भी ख़ुशी हुई।

मै बड़ी मेहनत से अपनी दूसरी पुस्तक 'तूफान के जाये' पर काम कर रहा हूं। बहुत-से अध्याय लिखे जा चुके हैं। यह पुस्तक भी युवको के लिए है, और इसका घटनाकाल भी वही १९१८ का तूफानी काल है। अगस्त तक यह समाप्त हो जायेगी, फिर उसपर केन्द्रीय समिति, जो कि एक निष्ठुर आलोचक है, अपना निर्णय देगी।

उत्रइनी केन्द्रीय समिति से ख़बर मिली है कि दल की सभी इकाइयों मे मेरी पुस्तक पर बहस हुई है। बेरेज़िनकी तथा लेनिनग्राद से भी यही ख़बर आयी है। आज के सुखमय दिनो मे जीने का सचमुच आनंद है। मुझे केवल खेद है तो इस बात का, कि जीवन के दिन बहुत थोड़े है और मुझमे

---

*अन्तोनीना इवानोवना पोद्गायेत्स्काया – 'मोलोदाया ग्वार्दिया' प्रकाशन गृह के कर्मचारी मण्डल की एक सदस्या। – सं०

इतनी शक्ति नही कि मैं अनन्त के एक छोटे-से अंश को भी अंगीकार क
पाऊं। उसे अंगीकार किया ही नही जा सकता। मैं जरूर उन साथियों व
मिलूगा जो मुझसे भेंट करना चाहते हैं। मुझे उनको मिलकर बडी ख़ुश
होगी। उन्हें मेरा अभिवादन कहना।

इतना बताओ, कामरेड पोद्गायेत्स्काया, क्या तुम पाठकों के ख़तों को
जिनमे वे मेरी पुस्तक के बारे मे विचार प्रकट करते हैं, किसी तरह एव
जगह इकट्ठा रख पाती हो? उनका मेरे लिए बड़ा महत्व है। मैं उन सबव
एक दिन पढना चाहता हूं।

हमे एक दूसरे से सम्पर्क बनाये रखना चाहिए। कोई दिलचस्प चीज
नजर से गुज़रे तो मुझे लिखना। और मुझे 'कोमुनिस्तिचेस्काया मोलोद्योज
(कम्युनिस्ट युवक) का चौथा अंक भेजना न भूलना – जिस अंक में वह लेख
छपा था।

सस्नेह, कम्युनिस्ट अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

इ० पा० फ़ेदेनेव* को

सोची, ५ अप्रैल, १९३५

प्रिय इन्नोकेन्ती पाव्लोविच,

मैं अचानक बीमार पड़ गया हूं। दोनों फेफड़ों मे प्लूरिसी हो गयी
है। बुखार, दिल की धड़कन, अनिद्रा, और ऐसी ही 'ख़ुशगवार' उलझनें।
डाक्टरो ने बिल्कुल काम करने से, पढ़ने तक से मनाही कर दी – और वह
ऐसे वक़्त जब मेरी रचनात्मक प्रेरणा शिखर पर है। तुम मेरी यन्त्रणा
समझ सकते हो। उक्रइनी फिल्म-स्टूडियो की चिट्ठी की नकल साथ भेज
रहा हूं। समूचा जीवन मुझे काम करने को, क्रियात्मकता की चुनौती दे रहा
है – और मैं चुपचाप बैठा सुन रहा हूं। हम बीमारी का मुकाबला कर
रहे हैं। मैं डाक्टरों की आज्ञा का पूर्णतया पालन कर रहा हूं, इस उम्मीद
पर कि मैं जितनी जल्दी हो सके फिर से अपना काम करने लग जाऊं।

---

*इन्नोकेन्ती पाव्लोविच फेदेनेव – ओस्त्रोव्स्की का एक मित्र जो लेदेनेव
के नाम से 'अग्नि-दीक्षा' मे चित्रित हुआ है। – सं०

मेरा सस्नेह अभिवादन।

आशा है कि मैं जल्दी ही अपने आरोग्यलाभ की तथा फिर से अपने काम पर लग जाने की सूचना तुम्हें दे पाऊंगा।

तुम्हारा

कोल्या।

उक्रइनी क० पा० (बो०) की वीन्नित्सा प्रादेशिक समिति के समाचारपत्र 'बोल्शेवीस्तस्काया प्राव्दा' के सम्पादक-मण्डल को

सोची, १४ अप्रैल, १९३५

प्रिय साथियो,

कल आपका पत्र मिला। आपने लिखा है कि मैं अपने नये उपन्यास में से कुछ पन्ने आपको भेजूं और लिखूं कि मेरा काम कैसे चल रहा है। मैं फौरन उत्तर देने बैठ गया हूं। 'तूफान के जाये' (नाम अभी निश्चित नहीं) के चौथे अध्याय का पहला मसौदा डाक द्वारा भेज रहा हूं। प्रकाशन के लिए, मेरी राय में, अध्याय के अन्त का हिस्सा ठीक रहेगा—उतना ही भाग, कम या अधिक, जिसके लिए आपके समाचारपत्र में गुंजाइश हो।

कहानी का संक्षिप्त विवरण यों है। इसे आप भूमिका के रूप में दे सकते हैं।

'तूफान के जाये' एक फासिस्ट-विरोधी उपन्यास है। समय: १९१८ का अन्त। स्थान: पश्चिमी उक्रइना का एक नगर तथा पूर्वी गैलीशिया। जर्मन फ़ौजें जो उक्रइना पर कब्जा किये हुए थीं, लाल छापेमारों के हमलों से बेचैन होकर उक्रइना से भाग खड़ी होती हैं। पोलिश व्हाईट्स—जमींदार, कारखानेदार तथा बैंकों के मालिक—नगर का शासन हाथ में ले लेते हैं और आनेवाले क्रान्तिकारी दस्तों का मुकाबला करने की तैयारी करने लगते हैं। पोलिश फासिस्टों का नेतृत्व काउण्ट मोगेल्नीत्स्की, शाहजादा ज़ामोइस्की, चीनी का कारखानेदार बरन्केविच, ज़मींदार ज्योंत्कोव्स्की,

कप्तान ब्रोना, लेफ्टिनेण्ट जरेम्बा तथा एक कैथोलिक पादरी फादर हीरोनिम के हाथ मे है।

कम्युनिस्ट भी लडाई की तैयारी करते हैं। एक गुप्त प्रादेशिक पार्टी समिति की स्थापना की जाती है। पार्टी काम में गुप्त युवा कम्युनिस्ट लीग की एक टोली सच्चे अर्थ मे सहायक सिद्ध होती है। पोलिश फासिस्टवाद के विरुद्ध जिसके हाथ खून से रंगे हैं, पिता और पुत्र कड़ा संघर्ष करने के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े हो जाते हैं। युवा पात्र हैं: ओलेस्या, एक गुप्त सैनिक, पम्प-घर के मिस्त्री कोवाल्लो की बेटी, राइमन्द रयेव्स्की, पोलिश कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के एक सदस्य का पुत्र, आन्द्रेई प्ताखा, भट्टी मे कोयला झोंकनेवाला, जिसे गुप्त संस्था फ़ौलाद की तरह मजबूत बनाती है और नियन्त्रित करती है।

कम्युनिस्ट अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

'अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य' पत्रिका के सम्पादक-मण्डल को

सोची, २० अप्रैल, १९३५

प्रिय साथियो,

जब आपकी चिट्ठी पढकर मुझे सुनायी गयी, तो अतीत की याद, जो मेरे मन मे अभी तक बनी थी ताजा हो आयी। रिसाले के सात सौ सवार, घोड़ों पर, मूर्तिवत् बैठे हुए, एक दूसरे से सटकर खड़े हुए। घोड़े भी अविचल, आज्ञाकारी। ब्रिगेड का कमाण्डर, संघर्ष का मंजा हुआ, दृढ़ाग्रही, जल्दी भावुकता में न पड़नेवाला, दिन का आदेश पढ़कर सुनाता है। सीधे-सादे, सरल शब्द हैं। परन्तु दिल बल्लियों उछलने लगता है, सभी आगे बढ़ने को अधीर हो उठते है। जब वह ये शब्द पढ़ता है: युद्ध मे जो साहस तथा समझ-बूझ दिखायी गयी उसके लिए कमाण्डर की ओर से धन्यवाद..." और नीचे वह प्रभावशाली हस्ताक्षर है। आप घोड़े की रास को इतना जकड़के पकड़ते है कि उंगलियों के जोड़ों मे दर्द होने लगता है। ये शब्द एक आह्वान है... मुझे आशा है कि आपने यह पत्र जो मुझे लिखा है, आपका आख़िरी पत्र न होगा। मुझसे अधिक कोई भी आदमी ऐसे व्यक्तियों से मिलने के लिए उत्सुक और अधीर

न होगा जिनके अनुभव एक नौसिखिये के लिए इतने जरूरी हैं। मुझे विश्वास है कि आप मुझे लिखेंगे कि आपने जो अनुवाद करने का निश्चय किया था उसका क्या बना? आप समझ सकते हैं कि मैं आपके पत्रों का कितनी उत्सुकता से इन्तज़ार करता हूं। मेरा दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगता है जब मैं यह सोचता हूं कि 'अग्नि-दीक्षा' देश के बाहर भी जायेगी।

मैं एक बेहूदा और बिल्कुल अनावश्यक रोग के कारण पूरे छः हफ़्ते बेकार पड़ा रहने के बाद अब फिर से काम करने लगा हूं। अब मैं पूरे तन-मन से काम कर रहा हू—काम मुश्किल है, पर अद्भुत, सुन्दर, आनंददायक!

अगले कुछ दिनो मे मुझसे मिलने के लिए कीयेव से कुछ लोगों के आने की संभावना है—उक्रइनी फिल्म-स्टूडियो से 'अग्नि-दीक्षा' के फिल्मी रुपांतर पर काम करने के लिए लोग आयेंगे। बेलोरूस की केन्द्रीय समिति ने मुझे ख़बर दी है कि किताब का बेलोरूसी में अनुवाद हो रहा है। यह सोवियत संघ के अन्दर छठी भाषा होगी। परसों मेरे घर में सोची पार्टी समिति की बैठक होगी, जिसमे मैं अपने काम की रिपोर्ट पेश करूंगा।

मुझे स्वप्न मे भी यह ख़्याल न था कि जीवन मेरे लिए इतना अधिक सुखमय हो उठेगा। मेरा भयानक दु:ख खदेड़ दिया गया है। जीवन रचनात्मक श्रम के सर्वविजयी हर्ष से छलक उठा है। और कौन कह सकता है कि मैं कब अधिक खुश था—अपने छुटपन के दिनों मे जब मैं मजबूत और स्वस्थ था, या आज?

मेरा सप्रेम अभिवादन स्वीकार हो।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

मि० जि० फ़िन्केलश्तैन को

सोची, २६ अप्रैल, १९३५

प्रिय मिशा तथा नन्ही*,

मैं जी रहा हूं, मेरी बीमारी पराजित हुई है। एक कर्तव्यनिष्ठ बैल की तरह काम कर रहा हूं—सुबह से शाम तक, जब तक कि ताक़त की

---

*मिशा—मिख़ाईल जिनोव्येविच फ़िन्केलश्तैन ओस्त्रोव्स्की का एक मित्र; नन्ही, उसकी पत्नी।—सं०

आखिरी बूंद भी खर्च नहीं हो जाती। उसके बाद बड़े सन्तोष से सो जाता हूं, यह जानते हुए कि आज का दिन उचित ढंग से व्यतीत हुआ है।

प्रिय मित्रो, मैं ख़त नहीं लिख पाता इसके लिए क्रुद्ध न होना।

जान पड़ता है मेरा सूचनालय – मां और कात्या – अपना काम ठीक तरह नहीं कर पाता। मैंने उनसे कह रखा है कि मेरे सब मित्रों को स्थिति से परिचित कराती रहा करें। शायद तुम्हें मालूम होगा कि 'अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य' पत्रिका ने जर्मन, फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी में मेरी किताब का अनुवाद करने का निश्चय किया है। साथ ही, मिन्स्क में पुस्तक बेलोरूसी भाषा में अनूदित हो रही है। ३ मई को उक्रइनी स्टूडियो से एक डायरेक्टर तथा एक पटकथा-लेखक मेरे साथ 'अग्नि-दीक्षा' के फ़िल्मी मसौदे पर काम करने के लिए आ रहे हैं।

मैं बिल्कुल अपने काम में डूबा हुआ हूं। बाकी हर चीज़ गौण है। समाजवाद की भूमि पर श्रम की जय!

प्रिय मित्रो, मैं आपको कभी नहीं भूल सकता। मैं चाहता हूं कि आप यह समझ लें। यदि भगवान अन्धा नहीं तो वह इस बात का साक्षी है कि मैं अकर्मण्य नहीं हूं।

मुझे जल्दी जल्दी जीना है – यह याद रखिये। एक अच्छे फ़ौजी घोड़े की तरह मुझे अपने लक्ष्य पर जीवन समाप्त हो जाने से पहले पहुंच जाना है।

मैं एक सुखी व्यक्ति हूं – जिसे इस काल में जीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरे पास रुकने के लिए कोई समय नहीं। मेरे लिए एक एक मिनट कीमती हो उठा है। हां, यह सोचकर ख़ुश होता हूं कि सारा अतीत फिर से मेरा हो गया है – संघर्ष और श्रम, निर्माण-कार्य में सहयोग, विजय का उल्लास, पराजय की तड़प। क्या इसमें सुख नहीं है?

मेरे दिल पर अपना हाथ रखो। तुम उसकी धड़कन सुन पाओगे, एक मिनट में १२० बार, कभी भी इससे कम नहीं, क्योंकि हमारे इस देश में जीवन इतना विलक्षण हो उठा है!

कभी बीमार नहीं पड़ना मिशेन्का! गर्मी आया चाहती है, और उसके साथ मास्को की खिली धूप। मई दिवस पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मेरा सप्रेम अभिवादन!

हमारे संघर्ष, हमारी ख़ुशी, तथा हमारी मैत्री का जाम पियो।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, २ मई, १९३५

प्रिय आन्ना अलेक्सान्द्रोवना,

आपका तार मिला। जिस अंश की आपने अनुमति दी है वह मैंने 'काम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' को भेज दिया है। मुझे उनकी ओर से दो एक्सप्रेस तारें मिली हैं कि मैं अपनी नयी किताब के जितने भी अध्याय पूर्ण कर चुका होऊं उन्हें भेज दूं ताकि वे उन्हें अपने सामचारपत्र में धारावाहिक रूप में छाप सकें। आज मैं उन्हें लिख रहा हूं कि यदि वे छापना चाहते हैं तो पहले आपकी स्वीकृति ले लें। इसके बिना नहीं। यह ठीक है कि उनका प्रस्ताव बड़ा आकर्षक है। पर, एक तो मैं 'मोलोदाया ग्वार्दिया' के लिए लिखता हूं, मेरे लिए अनुशासन सबसे पहले है, दूसरे, इस वक़्त किताब लिखने में व्यस्त हू जो अभी आपकी आलोचना की अग्नि-परीक्षा में से उत्तीर्ण नहीं हो पायी। और यही बात मैं 'को० प्रा०' के साथियों को भी लिख रहा हूं। पहले अध्यायों पर आपकी आलोचना की प्रतीक्षा में हूं। मई दिवस शानदार रहा। प्रदर्शन के बाद नगर पार्टी समिति के मुख्य सदस्य, सीमावर्ती सैनिक टुकड़ी के अफ़सर तथा प्रादेशिक समाचारपत्र 'मोलोत' के सम्पादक सभी मेरे साथ दिन भर बिताने के लिए आये। एक फिल्म डायरेक्टर तथा एक फ़िल्मी पट-कथा लिखनेवाला कीयेव से मेरे साथ 'अग्नि-दीक्षा' पर काम करने के लिए आ रहे हैं।

उक्रइनी लीग की केन्द्रीय समिति के ब्यूरो की एक बैठक की कार्यवाही के कुछ अंश मुझे भेजे गये हैं, जिसमें निश्चय किया गया था कि मेरे उपन्यास की फिल्म बनायी जाय। उसमें उन साथियों के नाम दिये गये थे जिनके जिम्मे यह काम सौंपा गया है। यह ख़त मैं जल्दी में, थोड़ा-सा समय मिलने पर, लिख रहा हूं। स्थानीय दल के सदस्य जल्दी ही पहुंचनेवाले हैं। बड़े मजे में वक़्त कटेगा। पार्टी-समिति ने मुझे "साहित्यिक मोर्चे पर साहसपूर्ण कार्य करने के लिए" एक ग्रामोफोन इनाम में दिया है।

सस्नेह अभिवादन। सारे परिवार की ओर से शुभकामनाएं।

तुम्हारा

नि० ओस्त्रोव्स्की।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, २५ मई, १६३५

प्रिय आन्ना अलेक्सान्द्रोवना,

आज सोची पार्टी-समिति आपकी पत्रिका को ब्यूरो की उस बैठक का आशुलिपि मे लिखा हुआ विवरण भेज रही है, जिसमें मैंने अपने काम की रिपोर्ट दी थी। यदि आप उचित समझे तो पत्रिका में छाप दें। मेरी जिन्दगी के दिन जल्दी जल्दी गुजर रहे हैं। जीवन, आग्रहपूर्ण और अदम्य, बडी धृष्टता से यह माग कर रहा है कि मैं अपना सर्वस्व इसे सौंप दूं, अपने स्वास्थ्य और शक्ति का अन्तिम कण भी अर्पण कर दूं। आप कहेंगी यह ग़लत है, कि मेरा वामपक्ष की ओर अत्यधिक झुकाव हो गया है। पर मुझमे मुकाबला करने की शक्ति नही। उन चिट्ठियों के पुलिन्दो का ही सोचो जो लीग की संस्थाओ और भिन्न भिन्न साथियो की ओर से आते हैं। उनका जवाब देना जरूरी होता है। वे बेहद ख़ूबसूरत चिट्ठिया होती हैं, दिल को छूनेवाली। अब मेरी समझ मे आने लगा है कि इस पुस्तक ने कैसी महत्वाकाक्षाएं युवकों के दिलों में जगायी है। इनमे से दो चिट्ठिया मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हूं।

आपको मालूम है कि मुझे एक महीने की छुट्टी का हुक्म हुआ है। डाक्टरों ने कुछ कहा है और साथी चिन्तित हो उठे है। मुझे इसके आगे सिर झुकाना पडेगा।

केवल – फिल्म के साथी आ गये हैं और पट-कथा लिखना जरूरी है।

इस किस्म के काम के लिए तो मै बिल्कुल अनाड़ी हूं। पर उक्रइना की केन्द्रीय समिति ने मुझसे मदद देने को कहा है। हमारे लिए यह गर्व की बात होगी यदि युवा कम्युनिस्ट लीग की फिल्म सजीव और हृदय-स्पर्शी बन पायी। इन सब कामों के लिए शरीर में बल होना चाहिए। और मैं अपनी शक्ति को अन्तिम कण तक खपा बैठा हूं। मेरे लिए कुछ देर के लिए काम बन्द कर देना बहुत जरूरी है ताकि मैं फिर कुछ शक्ति संचय कर पाऊं। इसके अलावा एक और बात भी है – मिलनेवालों का ताता लगा रहता है, जिससे मैं बच नही सकता।

इन सब बातों के बावजूद, कामरेड आन्ना, मै बेहद ख़ुश हूं। मेरा जीवन यों पलटा खायेगा, इसका मुझे स्वप्न मे भी ख़याल नही था।

जब मेरी छुट्टियां शुरू होंगी तो मैं आपको अधिक पत्र लिख सकूंगा, और अधिक ठोस बातों के बारे में। अब मेरा मन एकाग्र हो पाता। बहुत बातो के बारे मे सोचना पड़ता है।

सबको मेरा अभिवादन।

आपको मेरी सस्नेह शुभकामनाएं।

सामान्यतया, मैं आपकी आलोचना से सहमत हूं। मैंने जहां जहा तबदीली की जरूरत समझी, कर दी है, और वह सब कूड़ा-करकट निकाल दिया है जो कहीं से मेरी किताब मे घुस आया था।

अतीव श्रद्धा से,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, ३१ मई, १६[३५]

आज मेरे काम का आख़िरी दिन है। कल से छुट्टी शुरू होगी। मेरे सब साहित्यिक कार्यो की व्यवस्था कर दी गयी है। मित्रो को पत्र लिखने मे व्यस्त हू। अगले सारे महीने मे कोई भी गभीर काम करने की इजाजत नही। 'शरीर और दिमाग' दोनों को आराम देने का आदेश है।

यदि मैं इन आगामी हफ़्तों मे पत्र नही लिख पाऊं तो हैरान नही होना। हा, दूसरो के पत्र मुझे मिलते रहे, अधिकाधिक संख्या में। मै स्वय बहुत कम लिख पाऊगा।

प्रादेशिक समिति ने मुझे एक बढ़िया रेडियो-सेट भेज दिया है। समूचा यूरोप मेरे कमरे मे आ गया है।

मुझे तुम्हारे ख़तो का इन्तजार रहेगा। मुझे हर बात और हर एक के बारे मे लिखना।

सस्नेह अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, २ अगस्त, १९३५

प्रिय आन्ना अलेक्सान्द्रोवना,

सोवियत लेखक संघ के केन्द्रीय बोर्ड की ओर से आगामी साहित्यिक गोष्ठी के बारे मे सूचना मिली है जिसमें नि० ओस्त्रोव्स्की की रचनाओं पर विचार होगा और जिसमे आप रिपोर्ट पढ़ेंगी। उसके विवरण की मैं बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करूंगा। आपको पत्र लिखे काफ़ी देर हो गयी है। क्षमाप्रार्थी हूं।

आप जानती हैं जीवन ने मेरे संकल्प को पुरस्कृत किया है, मुझे ख़ुशी देकर – ख़ुशी जो अनन्त, अविश्वसनीय तथा विलक्षण है। और सुनिये, मुझे डाक्टरों की सभी चेतावनियां और घुड़कियां भूल गयी हैं। मुझे यह भूल गया है कि मेरी शारीरिक शक्ति इतनी क्षीण थी। मिलनेवालो का हर वक़्त तांता लगा रहता था – लीग के युवक, फ़ैक्टरियों तथा खानो मे काम करनेवाले प्रसिद्ध कामगार, हमारे सुख के वीर निर्माता, सभी मुझे 'अग्नि-दीक्षा' के कारण मिलने आते। उन्होने फिर उस शिखा को प्रज्वलित कर दिया जो मैं सोचता था बुझ रही है। मैं फिर एक उत्साही प्रचारक और आन्दोलनकारी बन गया। बार बार मुझे सैनिकों की पंक्ति मे अपना स्थान भूल जाता रहा, जहां मेरा कर्तव्य मुझे कलम के द्वारा काम करने का आदेश देता था, न कि भाषणों द्वारा। एक बार फिर मेरे स्वास्थ्य ने मुझे धोखा दिया। एकदम मेरी हालत ख़तरनाक हो उठी। अब महीने भर से डाक्टर उसकी क्षति-पूर्ति करने की कोशिश मे हैं, और हर तरह की दवाइयां मेरे मुह मे उंडेले जा रहे हैं। पर अभी तक वे सफल नहीं हो पाये। मैं यह याद करके ठंडी सासें भरता हूं, कि कुछ ही समय पहले मैं दिन में पन्द्रह घण्टे काम कर सकता था। अब मुश्किल से तीन घण्टे तक उक्रइना में हुए गृह-युद्ध पर कुछ सामग्री सुन सकता हूं और थोड़ा-सा काम फ़िल्मी पट-कथा पर कर पाता हूं।

समूचे संघ के कोने कोने से हज़ारों पत्र मुझे संघर्ष में अग्रसर होने का आह्वान देते है – और मैं हूं कि यहां पड़ा हूं और अपने अन्दर के विद्रोह को दबाने की चेष्टा कर रहा हूं। इस सब ख़तरे के बावजूद मैं इस बार

भी [illegible] नहीं—क्योंकि मैं [illegible] काम को पूरा नहीं कर पाया जो पार्टी ने सौंपा है। [illegible] प्रधान ध्येय समझता है। उसे केवल लिखना ही नहीं — [illegible] हृदय को कला से पुनर्जीवित कर देना। फिर, मुझे '[illegible]' [illegible] लिखने हैं। ये काहिदे, लिखने में योग देना है। [illegible] एक नाटक भी मुझे जरूर लिखना है। मैं उसका नाम [illegible] अपना रखूंगा। और फिर, जरूर ही, एक किताब [illegible] के मुख्य चरित्र के बारे में। यह पांच साल का काम है—इसे [illegible] और बोल्शेविक ढंग से सम्पन्न करने का। और अपने जीवन में [illegible] के यह कम से कम कार्य हैं जो अपने ऊपर ले रहा हूं। शायद आप हंसेंगे; पर और कोई रास्ता नहीं। डाक्टर भी हंसते हैं—वे व्यंग्य और आश्चर्यचकित हो उठते हैं। पर मेरे सामने सबसे मुख्य बात मेरा कार्य है। इसलिए मैं कम से कम पांच साल और मांगता हूं।

आप मुझे बताइये साथी—कौन ऐसा पागल होगा जो ऐसे अद्भुत समय में जिन्दगी से छुट्टी लेना चाहता हो? यह तो देश के प्रति विश्वासघात होगा, धोखा होगा। आप एक कृपा करें। मेरे नाम से आप आलोचकों से आग्रह करें कि वे अपने बोल्शेविक प्रहार पहले पांच अध्यायों पर करें। उन्हें कहिये कि कड़े शब्द प्रयोग करने में वे बिल्कुल न झिझकें, जहां भी उनकी जरूरत समझें, करें। मैं सब कुछ सह सकता हूं, और जो बात भी मेरे लिए जाननी जरूरी है, वह मुझे बतायी जाय। मैं सच सच जानना चाहता हूं। और इसके लिए आप स्वयं मिसाल कायम कीजिये। मैं आपका शिष्य तथा मित्र हूं। मेरे काम की आलोचना कीजिये।

सस्नेह अभिवादन।

इस पतझड़ में मास्को लौटना चाहता हूं। पर जान पड़ता है कि भाग्य इसकी आशा नहीं देगा।

'मोलोदाया ग्वार्दिया' में काम करनेवाले सभी साथियों, भाई तथा सोन्या को मेरा सस्नेह अभिवादन।

अतीव श्रद्धा से

[illegible]

ग्रि० इ० पेत्रोव्स्की* को

सोची, १५ सितम्बर, १६३५

मेरे अतीव प्रिय ग्रिगोरी इवानोविच,

आपका विलक्षण पत्र मिला। कई बार मनुष्य अपने दिल के भाव व्यक्त नही कर पाता। परन्तु—मैंने आपके प्रेम भरे, मैत्रीपूर्ण स्पर्श का अनुभव किया, अपने दिल के समीप अनुभव किया। मनुष्य को जो सबसे महान सुख मिल सकता है, वह मुझे प्राप्त हुआ है। घोर शारीरिक यातना के बावजूद, ऐसी यातना जो क्षण भर के लिए मुझे चैन नही लेने देती, मैं प्रसन्नचित्त रहता हूं और दिन भर काम करता हूं, हालाकि अंधी आंखो के सामने सदा काली रात छायी रहती है। मेरे आस-पास जीवन सूर्य के प्रकाश और तरह तरह के रंगों से प्रफुल्लित है। मैं जी-जान से यह चाहता हूं कि अपनी नयी पुस्तक के पन्नों में अपने दिल की आग और उत्साह भर दू। मैं एक ऐसी पुस्तक लिखना चाहता हूं जो युवको को संघर्ष के लिए तत्पर करे, जो उन्हें हमारी महान पार्टी की नि.स्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करे।

जब मुझे चिट्ठियां आती है कि हमारे देश के बोल्शेविक युवक, हमारी दूरपूर्वी सेना के सैनिक सरकार से इस बात का आग्रह कर रहे हैं कि मुझे लेनिन पदक दिया जाय, तो मैं सोचता हूं कि वे नहीं जानते कि मुझे सबसे ऊचा पुरस्कार मिल चुका है, और वह है हमारे नेता का अनुमोदन, जिसने मेरे अन्दर फिर अथाह शक्ति भर दी है। इससे प्रिय और क्या होगा? मैंने अपना वचन निभाया है, जो मैंने आपको उस समय दिया था, जब हम मिले थे। 'अग्नि-दीक्षा' की फ़िल्मी पट-कथा तैयार है। उक्रइनी फिल्म-स्टूडियो के साथी यहां उसपर विचार करने के लिए आये थे। फिल्म अगले साल के मध्य में तैयार हो जायेगी।

सस्नेह अभिवादन,

आपका अनन्य भक्त

नि० ओस्त्रोव्स्की।

---

*ग्रिगोरी इवानोविच पेत्रोव्स्की—उस समय उक्रइनी सो० स० जनतन्त्र की केन्द्रीय प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष तथा अखिल सोवियत संघ की केन्द्रीय प्रबन्धकारिणी समिति के उपाध्यक्ष।—सं०

जो किताब आपने भेजी थी – उऋइनी सो० स० ज० की सरकार के निर्णय – वह मुझे मिल गयी है। बहुत बहुत धन्यवाद।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, २८ अक्तूबर, १९[३५]

मेरी अपनी, मेरी प्यारी शूरोच्का,

तुम्हारा स्नेह भरा, प्रेम भरा पत्र मिला। हां, हम जरूर मास्को में मिलेंगे। मैं सोचता हूं कि मैं यहा से दस नवम्बर के क़रीब चल पड़ूंगा।

तुम नही जानती कि मैं कैसे पागलों की तरह जी रहा हूं। सुबह से लेकर गहरी रात गये तक एक क्षण भर की भी फुरसत नही। इसलिए, मेरी परम प्यारी शूरोच्का, तुम्हें मुझपर नाराज न होना चाहिए कि मैंने तुम्हें ख़त नही लिखा। मेरी शूरोच्का सदा मेरे दिल मे बसती है। पर जीवन की गति अत्यन्त तेज है, अत्यन्त घटनापूर्ण है। भोजन तक के लिए समय नही मिलता। एकान्त मे बैठने का समय नही मिलता।

मैं वक़्त पर तुम्हें अपना मास्को का पता लिख दूगा। कोई यहां नयी बात नही हुई। सारे परिवार की ओर से शुभकामनाए।

सप्रेम अभिवादन,

कोल्या।

इ० पा० फ़ेदेनेव को

सोची, ६ नवम्बर, १९३५

प्रिय इन्नोकेन्ती पाव्लोविच,

रात अधिक बीत चुकी है। कल हम अपनी सुन्दर सोवियत भूमि की अठारहवी वर्षगाठ मनायेंगे।

तुम्हे हमारा सप्रेम अभिवादन, प्रिय मित्र।

इस वर्षगांठ पर मैं सबसे अधिक प्रसन्न हूं। इन्ही नवम्बर के दिनों में हमारा जनतन्त्र मेरे उल्लसित हृदय पर, मेरी छाती पर लेनिन पदक लगायेगा। जीवन कितना विलक्षण है!

तुम्हे मेरा सालिंगन प्यार।

मेरी मां तथा बहिन की ओर से हार्दिक अभिवादन।

तुम्हारा

कोल्या।

ग्रा० ग्र० करावायेवा को

सोची, २ दिसम्बर, १९३५

प्रिय ग्राग्ना ग्रलेक्सान्द्रोवना,

ग्रापका पत्र मिला। इस समय मेरे लिए ग्रपने विचारों तथा भावों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना किसी प्रकार भी संभव नहीं। मन ग्रत्यधिक उद्विग्न है। पर जैसी कि कहावत है, ख़ुशी से कोई नहीं मरता। मैं ग्रब धीरे धीरे कण कण करके ग्रपनी शक्ति संचय कर रहा हूं जो मैंने समारोह के दिनों में इतनी लापरवाही से ख़र्च कर डाली थी। ग्रब भी मुझे ग्राशा है कि हम जल्दी मिलेंगे। मैं सब बातें ग्रापको बताऊंगा।

हम इस प्रतीक्षा में हैं कि चेकोस्लोवाकिया वाले क्या निश्चय करते हैं। प्रसंगवश, कुछ रोज़ हुए मुझे चेकोस्लोवाकिया से कुछ लोग मिलने ग्राये थे। वे एक प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्य थे जो ७ नवम्बर के समारोह में भाग लेने सोवियत संघ में ग्राया था। मा ने दिल खोलकर चेक भाषा में बातें कीं!

मिख़ाईल बोरीसोविच जत्स* ने ग्रापको फ़िल्म की पट-कथा भेजी है। हम दोनों की प्रार्थना है कि इसका प्रकाशन, यदि सम्भव हो तो, स्थगित कर दिया जाय। यह ग्रभी कच्चा माल है। ग्रगले कुछ दिनों में वह वास्तव में पूरा ग्रौर साफ़ हो पायेगा, ग्रौर तब हम उसका प्रकाशन शुद्ध ग्रन्तःकरण के साथ कर पायेंगे...

'मोलोदाया ग्वार्दिया'—यह नाम मुझे ग्रत्यन्त प्यारा है। 'मोलोदाया ग्वार्दिया' ने मेरा साहित्य संसार से परिचय कराया था। ग्रौर मैं प्रेम की उन कड़ियों को जो मुझे उसके साथ जोड़े हुए हैं, कभी नहीं तोड़ूंगा...

ग्राठ या दस दिन तक मास्को जाने का इरादा है। ग्राशा है कुशलपूर्वक पहुंच जाऊंगा।

लाल फ़ौज की मुख्य कमान तथा 'गृह-युद्ध का इतिहास' के

---

*मिख़ाईल बोरीसोविच जत्स—उक्रइनी फ़िल्म-स्टूडियो में काम करनेवाला एक पट-कथा लेखक, जिसने 'ग्रग्नि-दीक्षा' का फ़िल्मी रूपान्तर तैयार करने में ग्रोस्त्रोव्स्की की सहायता की थी।—सं०

सम्पादक-मण्डल ने मुझे वचन दिया है कि वे पोलिश व्हाईट्स के विरुद्ध हमारी लड़ाई से सम्बन्धित सामग्री इकट्ठी करने में मेरी सहायता करेंगे। उस स्थिति में मैं साहस के साथ कह सकता हूं कि मेरा उपन्यास दस्तावेजी तथ्यों पर आधारित होगा।

इस समय इतना कुछ ही लिखूगा। बाक़ी मिलने पर, जो किसी भी पत्र से अधिक सन्तोषजनक होगा।

सस्नेह अभिवादन,

आपका

कोल्या।

मि० बो० ज़त्स को

सोची, २ दिसम्बर, १६३५

प्रिय मिशेन्का,

नमस्कार! तुम्हारे दोनों पत्र मिले। आन्ना करावायेवा को खत लिखा है कि जब तक पट-कथा को साफ न कर लिया जाय, उसे छापें नहीं।

कल 'रद्यान्स्के किनो' (उक्रइनी भाषा में: सोवियत सिनेमा) पत्रिका को तथा ओदेसा स्टूडियो को ख़त लिखे हैं। साफ़ की हुई पट-कथा का बड़ी अधीरता से इन्तजार कर रहा हूं। दो प्रतियां भेजना। मैं कुछ ही दिनों मे मास्को जाने की सोच रहा हूं।

कड़े दृढ़ाग्रही संघर्ष के बाद मैंने यह दौरा करने के लिए डाक्टरों की "इजाजत" ले ली है। पहले तो वे सुनते ही न थे। मुक़ाबला बहुत कड़ा था, पर जीत हो ही गयी। अब भी वे कहे जा रहे हैं कि रास्ते मे मर जाओगे। रेलवेवाले मुझे एक ख़ास गाड़ी दे रहे हैं (जिसे वे सैलून कहते हैं)। पिछले कुछ दिन, जैसा कि तुम जानते हो, मेरे लिए अविस्मरणीय समय था। बहुत मानसिक तनाव रहा है जिसने बहुत-सी शक्ति सोख डाली है। परन्तु—ख़ुशी से कोई मरता नहीं। और अब मेरी छाती पर उस व्यक्ति का चित्र है जिसने तूफानों के बीच हमारी अगुआई की...

मैं अक्सर पत्र नहीं लिख पाता, इसके लिए नाराज नहीं होना। यह परिस्थितियों का दोष है।

यह मत भूलना कि मैं बड़ी बेताबी से इन्तजार कर रहा

हू। ज्योही टाइपराइटर पर से पहली प्रतियां उतरें, झपटकर उन्हे उठा लो और सीधा एक्सप्रैस डाक द्वारा मुझे भेज दो। दूसरी पट-कथा पर स्टूडियो मे साथियो के क्या विचार है, इस बारे में तुमने बहुत कम लिखा है।

मुझे खूब लम्बे लम्बे खत लिखो, और सारा विवरण दो। मुझे उन्हे पढकर बडा आनन्द आता है।

और खत खूब लिखा करो।

चाहे चन्द इने-गिने शब्द ही क्यों न हो, सैनिक आदेश की तरह।

मेरा स्वास्थ्य? सहनशीलता की इस कड़ी परीक्षा में से उत्तीर्ण होकर निकला है, विजय पताका लहराते हुए।

बस अब ख़तरा है तो इस सफ़र का। अगर मै जिन्दा न रहा, तो बदनामी होगी।

कोई भी मुझे क्षमा नही करेगा।

इसलिए मेरे लिए सही सलामत पहुंचना अत्यन्त आवश्यक है।

सारे परिवार तथा अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना की ओर से सस्नेह अभिवादन।

तुम्हारा

निकोलाई।

पैसे के बारे में स्टूडियो बेशक जल्दी न करे। रुपया काफी है। हर तरह ख़ुशहाली है।

खि॰ पा॰ चेर्नोकोज़ोव को

सोची, ४ दिसम्बर, १९३५

प्रिय ख़्रिसान्फ पाव्लोविच,

अब कही तार द्वारा तुम्हारी ख़बर मिली। इतने बरस बीत गये, बुजुर्गवार, तुम्हारा कुछ पता न मिलता था।

और अब तुम्हारे थोड़े-से प्यार भरे शब्द... उन्हें पाकर मुझे अत्यन्त ख़ुशी हुई।

हममे से कोई भी, न ही मै और न ही मेरा परिवार, तुम्हे एक क्षण के लिए भी भूले है। जो सूत्र हमे तुमसे जोड़े हुए है वह बहुत दृढ है—तुम पुराने बोल्शेविक वीर योद्धा हो।

प्रिय मित्र, क्या तुम्हें वे शब्द याद हैं जो तुमने केन्द्रीय समिति को लिखे थे: कि ग्रोस्त्रोव्स्की ग्रब भी पार्टी के लिए उपयोगी होगा, कि यह युवक ग्रभी ख़त्म नहीं हुग्रा है ग्रौर न ही ख़त्म होगा। किसी ग्रौर को मुझपर इतना विश्वास नहीं था कि मुझमें रचनात्मक शक्ति है जैसा कि तुम्हें। ग्रौर ग्राज मैं गर्व से कह सकता हूं कि मैं तुम्हारे विश्वास का ग्रधिकारी सिद्ध हुग्रा हूं।

मुझे कुछ मालूम नहीं कि तुम्हारा जीवन कैसे कट रहा है–इतना भी नहीं जानता कि तुम काम कहां पर करते हो। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? ग्रौर कितनी ही बातें जानने को मेरा जी चाहता है। 'मां' ग्रौर तुम्हारी प्रिय रोजोच्का का क्या हाल है? मुझे हर एक बात के बारे में लिखना। ग्रौर तुम लिखने में चूकोगे भी नहीं। हालांकि मैं जानता हूं कि तुम्हें चिट्ठियां लिखने का शौक नहीं है, या यों कहो कि तुम्हारे पास समय नहीं है। 'मां' से लिखवा लिया करो। मैं तुम्हें ग्रपनी किताब भेजूंगा। यदि तुमने मेरा वह भाषण पढ़ा है जो मैंने लेनिन पदक ग्रहण करने के ग्रवसर पर दिया था, तो तुम जान जाग्रोगे कि उसका तात्पर्य तुमसे भी था। तुम पुराने बोल्शेविक ग्रौर मेरे शिक्षकों में से हो।

मेरा हृदय रचनात्मक महत्वाकांक्षाग्रों से, काम करने के उत्सुक संकल्प से भरा हुग्रा है।

मेरा इरादा शीघ्र ही मास्को जाने का है जहां जाकर मैं गृह-युद्ध पर ग्रभिलेख पढ़ना चाहता हूं। फिर, मई महीने में लौटकर सोची ग्रा जाऊंगा ग्रौर ग्रपने नये मकान में जो सरकार मेरे लिए बनवा रही है, रहने लगूंगा।

यदि तुम ग्रगले साल सोची ग्राग्रो तो तुम मेरे ग्रतिथि होगे–यह निश्चित बात है; इसके विपरीत भी कुछ हो सकता है, मैं उसकी कल्पना नहीं कर सकता। ग्रौर ग्रब मेरे प्यारे, ग्रति प्यारे दोस्त, मैं तुम्हारे जवाब के इन्तज़ार में हूं। 'मां' को ग्रभिवादन।

सप्रेम,

तुम्हारा

ग्रोस्त्रोव्स्की।

अ० इ० पुज़िरेव्स्की को

सोची, ४ दिसम्बर, १९३५

प्रिय साशा,

पत्र-व्यवहार के मामले मे हम दोनो दोषी हैं, और बुरी तरह। पर मतलब की चीज़ एक ही है – दोस्ती। और वह चिट्ठी-पत्री मे विलम्ब होने के बावजूद भी बडी दृढता से क़ायम है।

रेल के साथियो द्वारा मुझे तुम्हारा खत मिला। जो कुछ तुमने इसमे लिखा है, मैंने कर दिया है। मेरा इरादा जल्दी ही मास्को चले जाने का है, जहा मैं सारा सरदी का मौसम बिताऊंगा और अपने नये उपन्यास के लिए अभिलेख-सामग्री का अध्ययन करूंगा।

मई महीने मे मैं सोची लौट आऊंगा और अपने नये घर में, जो उस वक्त तक तैयार हो जायेगा, आकर रहने लगूंगा।

यह घर एक प्यारे और विलक्षण उपहार स्वरूप उक्रइनी सरकार की ओर से मुझे मिल रहा है।

मैंने तुम्हे प्रादेशिक समिति के पते पर सोची के सभी समाचारपत्रों के 'जयन्ती' अंक भेज दिये हैं। अब मेरा सारा चिन्तन नयी प्रगति तथा नयी सफलताओं पर केन्द्रित है।

मैं सच्चे अर्थ में उस विश्वास के योग्य बनना चाहता हूं जो पार्टी ने मुझे सौंपा है।

जिस नयी जगह पर तुम काम करने लगे हो, कृपया वहां से खत लिखना, और अपना पता भी। तब मैं अपनी नयी किताब मे से तुम्हे कुछ रोचक टुकड़े चुनकर भेजूंगा।

तुम मेरी चिट्ठियां छापते रहे हो, तुम – क्या कहूं तुम्हे! अब मुझे तुम्हें खत लिखते भी डर लगता है (इसे मज़ाक ही समझना)।

प्यारे साशा, रोज़ा ल्याखोविच की तो कुछ मुद्दत हुई मृत्यु हो गयी थी।

आशा है गरमियों में मुलाकात होगी। वक़्त है, साशा, कि थोड़ा आराम कर लो और अपना इलाज करवा लो। आगे चलकर बहुत काम

करना होगा। अपने आपको इतना नही थका डालो कि फिर काम करना मुश्किल हो जाय।

सारे परिवार की ओर से अभिवादन।

सप्रेम,

तुम्हारा

कोल्या ओस्त्रोव्स्की।

अ० अ० जिगिर्योवा को

सोची, ५ दिसम्बर, [१९]३५

मेरी अपनी, मेरी प्यारी शूरोच्का,

अगले कुछ दिनों मे मेरा मास्को चले जाने का इरादा है। मई महीने तक वहां काम करूंगा जिसके बाद लौटकर सोची आ जाऊंगा और अपने नये घर में रहने लगूगा जो वसन्त तक तैयार हो जायेगा...

मुझे आशा है कि मेरी यात्रा सही सलामत कट जायेगी और मेरे मित्रों तथा घरवालो की शंकाएं तथा डर निर्मूल साबित होंगे। सब यही कह रहे हैं कि मैं रास्ते मे ही सर्दी से मर जाऊंगा।

मास्को में मैं सैनिक अभिलेख पढ़ सकूगा जिससे मुझे मेरी दूसरी पुस्तक 'तूफ़ान के जाये' को लिखने मे मदद मिलेगी। जब गर्मियां आयेंगी तो मैं सोची में तुम्हारा इन्तजार करूंगा। मैं चाहता हूं कि तुम आओ, अपना इलाज करवाओ, आराम करो, और मेरे नये बंगले मे रहो।

सारे परिवार की ओर से हार्दिक अभिवादन।

सप्रेम,

तुम्हारा

कोल्या।

मरीया देमचेंको तथा मरीना ग्नातेंको को

सोची, ५ दिसम्बर, १९३५

प्रिय लड़कियो, मरीया और मरीना,

तुम्हारा मैत्रीपूर्ण पत्र जो तुमने मेरे नाम 'कोम्सोमोलेत्स उक्रइनि' मे लिखा है, मिल गया है। मैंने उसी वक़्त तुम्हें इस हार्दिक मित्रता के

कुछ शब्द तार द्वारा भेजने की कोशिश की, परन्तु सोची के तारघर में काम करनेवाले बाबू भूगोल की पर्याप्त जानकारी नही रखते, और उन्हे अपनी तालिकाओ मे तुम्हारे गाव का नाम नही मिला। तो भी, देख रही हो कि हमारी मित्रता मे तनिक भी फर्क नही आया।

तुम्हारे पत्र का औपचारिक-सा उत्तर देने के बजाय मेरी इच्छा होती है कि मैं तुमसे हाथ मिलाऊं, तुम्हारे दृढ, युवा, कठोर हाथों को अपने हाथो मे लू।' (क्या वे कठोर नही हैं? मुझे विश्वास है कि जरूर होगे। काम मे बिना कड़े परिश्रम के उन्हें पांच सौ प्रतिशत सफलता प्राप्त नही हो सकती!)

मैं कुछ ही दिनो में मास्को जा रहा हूं। वहां मैं सर्दियों में अपने नये उपन्यास 'तूफान के जाये' पर काम करूंगा।

फिर, वसन्त ऋतु मे, जब सारा सोची फूलों से खिला होगा और आकाश मे सूर्य चमकेगा जिसकी स्निग्ध गरमी बदन को सहलायेगी, मैं फिर यहा लौट आऊंगा और अपने नये बंगले मे जो उक्रइना की सरकार मेरे लिए बना रही है, आकर बस जाऊंगा। उस समय तुम सब यहां आओ, मेरे पास ठहरो, आराम करो, और समुद्र मे नहाने का आनंद लूटो। यह बहुत अच्छी जगह है। जब तुम यहां आओगी तो हम मिल-बैठ दिल की बाते करेगे। मैं चाहता हूं कि गान्ना शिवद्को भी तुम्हारे साथ आय जो तुममे सबसे छोटी है।

यह नन्ही-सी वीर लड़की गान्ना उस समय पैदा हुई थी जब मेरी पीढी के लोग युवा कम्युनिस्ट लीग मे सम्मिलित हो रहे थे। हां, उक्रइना की युवा कम्युनिस्ट लीग ने ही हमे शिक्षा दी। आज हम जो कुछ हैं, उसी के बनाये हुए हैं।

हमारे देश ने हमें लेनिन पदक से पुरस्कृत किया है। हमारा यह गर्वपूर्ण कर्तव्य है कि जिस विश्वास को हमारी क्रान्तिकारी सरकार ने हमे सौपा है, हम उसके अधिकारी बनें और हम अवश्य अधिकारी बनेंगे। इसमे असफल होने का सवाल ही नही उठता।

प्रिय वीर युवतियो, मेरी ओर से सप्रेम अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

'सोचीन्स्काया प्राव्दा' समाचारपत्र के यु० क० लीग का पन्ना पढ़नेवाले युवकों को

सोची, १६३५

मैं कुछ शब्द इस पन्ने के पाठकों को, अपने लीग के साथियों को कहना चाहता हूं।

यह आप पर निर्भर है कि इस समाचारपत्र के लीग सम्बन्धी पन्ने को न केवल आप, लीग के सदस्य, ही पढ़ें बल्कि समूचे श्रमिक वर्ग के युवाजन पढ़ें। यह कैसे संभव हो सकता है?

हर उद्योग तथा निर्माण-स्थल पर लीग के सदस्य अवकाश के समय युवकों को इकट्ठा करें और उनके सामने युवकों का यह पन्ना ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनायें और उस पर बहस करे।

विचार-विमर्ष सजीव और रोचक होना चाहिए। इस तरह अवश्य ही युवाजन श्रमिक संवाददाताओं के आन्दोलन की ओर आकर्षित होंगे। युवकों मे केवल रुचि जगाने की जरूरत होती है, एक बार वह जग जाय तो वे जल्दी ही अपनी ज़रूरतों तथा इच्छाओं के बारे मे लिखने लगेंगे।

और यह रुचि अवश्य जगेगी यदि लीग के इस पन्ने पर ऐसी बाते लिखी होंगी जो युवकों के लिए रुचिकर है।

अपनी ओर से, मैं इस रोचक तथा उपयोगी काम में सहायता देने के लिए तैयार हूं।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

सोची नगर सोवियत के अध्यक्ष-मण्डल को

सोची, १६३५

प्रिय साथियो,

सोची के बाल-पुस्तकालय का नाम मेरे नाम पर रखकर आपने मुझे बड़ा गौरवान्वित किया है। पुस्तकालय के सांस्कृतिक विकास में जो भी सहायता मैं दे पाऊंगा, खुशी से दूगा। इस दिशा में पहले क़दम के तौर पर मेरी यह प्रार्थना है कि आप पुस्तकालय को किसी अच्छे भवन में

रखें। इसके यथेष्ट विकास के लिए तथा नयी पीढ़ी के यथोचित प्रशिक्षण के लिए यह बहुत जरूरी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसके लिए आप पूरी कोशिश करेंगे।

सस्नेह, कम्युनिस्ट अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

पुस्तकालय के संचालक की ओर से एक पत्र साथ भेज रहा हूं। मेरी इच्छा है कि इसे बैठक में पढकर सुनाया जाय।

अ० पे० लाज़रेवा* को

मास्को, २२ जनवरी, १९३६

प्रिय अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना,

...मैं बड़ी मेहनत कर रहा हूं। तुम ठीक कहती थी, मास्को ने मेरे साथ बड़ी दयालुता की है और वह सब कुछ दिया है जिसकी मुझे लालसा थी। मुझे अपने काम मे अतीव आनंद आ रहा है, और यदि जीवन मेरे रास्ते मे बीसियो रुकावटे—छोटी व बड़ी—न खड़ी कर दे, यदि जीवन भी दयालु हो जाय और मेरे दिल को बरबाद न करे, तो मैं समझता हूं मैं अपने साहित्यिक काम में बड़ी तेजी से उन्नति कर पाऊंगा।

इस पत्र की शैली की परवाह मत करना। मैं बड़ा तेज तेज़ यह ख़त लिखवा रहा हूं, और टाइपराइटर युद्ध में मशीनगन की तरह तड़ा-तड़ चल रहा है। इसलिए शैली सम्बन्धी त्रुटियां और अन्य दोष जो लेखकों के लिए निषिद्ध है तुम्हे माफ करने ही होंगे।

आठवां अध्याय समाप्त हो गया है। यह मैंने छलांग लगायी है, जब कि छठा और सातवां अभी तक नही हो पाये। अस्तव्यस्तता? पर यह अध्याय लिखने की मेरी तीव्र उत्कण्ठा थी। टाइप करके ४२ पन्ने बनते हैं। और अब मैं प्शिगोद्स्की और उसकी दु:खान्त कहानी मे निमग्न हूं। इस गंभीर, दिल के कोमल तथा उत्कृष्ट सैनिक के पारिवारिक जीवन मे सुख नही है। अक्सर, युद्ध के समय, या लम्बी, कड़ी मार्च के समय इसे अपनी प्रिय मित्र, स्वस्थ, प्रसन्नचित फ़्रासीस्का की याद आने लगती है। उसे

*अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना लाज़रेवा—ओस्त्रोव्स्की की सेक्रेटरी।—सं०

उसका प्रेम, उसका विनीत समर्पण याद आता है तो उसका दिल दर्द से भर उठता है। किसी दूसरी स्त्री के प्रति वह आकर्षित नहीं हो पाता। तो भी, मेरे सामने अभी तक प्शिगोद्स्की तथा फ़ासीस्का की स्थिति का कोई स्पष्ट परिणाम नहीं। कलाकार के लिए यह एक कड़ी समस्या होती है। मैं समझता हूं, जानता हूं कि प्शिगोद्स्की किसी अन्य स्त्री को प्यार नहीं कर सकता, फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता कि फ़ासीस्का के प्रति इसका प्रेम पहले-सा आतुर हो उठेगा, और उसके 'जीवन के घाव भर पायेंगे। देखें क्या होता है। यह सब इस बात पर निर्भर है कि वह जग मे मरता है या नहीं। यह जानते हुए, कि उपन्यास के इस पहलू पर मुझे कितनी चिन्तापूर्ण तथा कड़ी खोज करनी पड़ी है, तुम समझ सकती हो कि मेरा ध्यान क्यों इस तरफ़ इतना लगा हुआ है। यह अनोखा तो जरूर जान पड़ता होगा, पर मैं इसे बड़ी तीव्रता से महसूस करता हू, जैसे प्शिगोद्स्की मेरा कोई अपना मित्र हो, और बड़ा प्यारा मित्र हो। हालांकि, सब कह सुनकर, वह केवल उस किताब का एक पात्र है, जिसे मैं लिख रहा हूं...

मैं यहां बड़ी शान्ति से एकान्त में रहता हू। केवल उन्हीं लोगों से मिलता हूं जिनका मेरे काम से सम्बन्ध है। और अपनी शक्ति का बड़ा उचित प्रयोग कर रहा हूं।

कल फ़ोनोग्राफ पर मैं 'अग्नि-दीक्षा' के दो उद्धरण पढ़ूंगा जिन्हें रेकार्ड किया जायेगा।

सप्रेम अभिवादन,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

रोमां रोलां को

मास्को, २६ जनवरी, १९३६

मेरी हार्दिक इच्छा है कि इन शब्दों द्वारा आपके प्रति अपने दिल की समूची आदर भावना, समूची मैत्री भावना व्यक्त कर सकू।

प्रिय रोमां रोलां,

कई बरस हुए जब आपके घोषणापत्र की भावोद्वेलित पंक्तियां मैंने पढ़ी थी, तो मेरा हृदय विह्वल हो उठा था। पंक्तियों मे एक विलक्षण और साहसी पुरुष ने, एक महान सुसंस्कृत पुरुष ने, सारे संसार के सामने

ललकारकर कहा था कि वह किस चीज़ से प्रेम करता है, और किससे घृणा।

रोमा रोलां ने अपना प्रेम हमें सौंपा था—हमें, जो श्रमिक जनता के सपूत हैं, जिन्होंने पूंजीवाद की बेड़ियों को तोड़ डाला है, और अब सच्चे और अथक परिश्रम के साथ अपने देश को नवीन और सुन्दर बनाने के काम मे लगे हुए हैं। इस प्रेम का अधिकारी हमे समझा गया था—हमें, जो धरती माता के सच्चे सपूत, संस्कृति के रक्षक, स्वतन्त्र जनता की नवीन संस्कृति के निर्माता हैं। और अपने घृणा और रोष भरे शब्दों में मनुष्य के शत्रुओं—फ़ासिस्टवाद तथा पूंजीवाद—को ललकारा था।

यह एक सैनिक का घोषणापत्र था, जो लड़ाई के लिए तैयार है।

हमारे देश में आपको दलित मानवता के मित्र माना जाता है।

प्रिय बन्धु, मेरा सादर अभिवादन स्वीकार हो। मैं अपने युवा सैनिको तथा निर्माताओ के नाम पर, श्रमिक जनता के सपूतो के नाम पर, आपकी सत्तरवी वर्षगाठ पर आपको हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं भेजता हूं। हम यह भली भाति जानते है कि रोमां रोला न केवल एक महान कलाकार हैं, बल्कि प्रचण्ड साहसी पुरुष हैं, जिनकी निष्कपट आखों ने सत्य का दर्शन कर लिया है।

हमारी हार्दिक कामना है कि आपकी तेजस्वी वाणी अबाध उत्साह के साथ मानवता की स्वतन्त्रता के लिए मनुष्य-मात्र को सदैव संघर्ष की प्रेरणा देती रहे।

आपका

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

अ० पे० लाज़रेवा को

मास्को, ७ मार्च, १६३६

प्रिय अलेक्सान्द्रा पेत्रोवना,

आठवी मार्च पर शुभकामनाएं। कल अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मैं महान स्त्री-जाति के प्रति अपना आदर भाव तथा मित्रता प्रकट करने के लिए पहली बार अपनी लाल फ़ौज के कमिसार की वर्दी पहनूगा। मैं चाहता हूं कि हमारे घर का बहुमत—स्त्रिया—मुझे मेरे

वास्तविक रूप में देखें, एक सैनिक के रूप में, एक पार्टीज़ान के रूप में जिसे अभी तक फ़ौज से पूर्णतया बरख़ास्त नहीं किया गया। उनकी आखे मेरे लाल सितारों और चमकते बटनों को देखें, मेरे कालर पर लगे सम्मानप्रद अधिकार-चिन्ह को तथा उन सब आकर्षक चीजो को देखे जो सुन्दर स्त्रियों के दिल के लिए जाल का काम करती हैं। तुम हंसो मत।

लिखने को कोई अच्छी ख़बर नही है। अख़बारों से तुम्हें काच्चेको के लेख का पता चल गया होगा। फिर – अवेर्बाख़ मेरी आखो को देखने आये थे। उन्होंने कहा कि मेरे लिए अपनी दायी आख निकलवा देना नितान्त आवश्यक है। सो तुम देख रही हो, कि मेरी परीक्षाएं अभी समाप्त नही हो पायी। जीवन में ऐसे कड़वे घूट भरने पड़ेगे। जान पड़ता है जैसे यह सचमुच मेरे भाग्य मे बदा है – अपने शरीर का एक एक अंग खोते जाना। इसका एक अच्छा पहलू यह है कि इस शारीरिक क्षति के बदले मे सौगुना अधिक मुझे आध्यात्मिक शक्ति रचनात्मक कार्य के रूप मे प्राप्त होती है – इस तरह मैं कभी भी नुकसान मे नही रहता। नही, जीवन कदापि मुझे हरा नही सकता। इतनी उसमे क्षमता नही है। मेरी पुस्तक का अनुवाद डच, चेक, यूनानी तथा बुल्गारियन भाषाओं में हो रहा है। इसे इंगलैंड तथा फ़्रांस मे छापने के बारे मे जो बातचीत चल रही थी, वह लगभग पूरी हो चुकी है। इसे स्वीडन, नार्वे तथा डेनमार्क मे छापने का प्रस्ताव है।

सस्नेह अभिवादन,

निo ओस्त्रोव्स्की।

अपनी मां को

मास्को, २६ मार्च, १९३६

प्यारी अम्मी,

तुम्हारे सभी पत्र मुझे पढ़कर सुनाये गये है। मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मैं तुम्हें थोड़ा सुख पहुंचा पाया हूं। आज मैं एक गंभीर विषय पर तुमसे बात करना चाहता हूं। मेरी प्यारी अम्मी, मैं अपने दिल के समूचे आग्रह के साथ तुमसे यह प्रार्थना करता हूं, कि तुम सब बोझिल काम करना छोड़ दो। मैं बार बार याचना करता हूं कि हर ऐसा काम जो तुम्हारी शक्ति के बाहर का हो, बिल्कुल बिल्कुल छोड़

दो। तुम सदा मनमानी करती हो—सुबह से शाम तक घरेलू धन्धों मे पिसती रहती हो जो तुम्हें थका मारते हैं, और उनके लिए कोई तुम्हारा आभारी नही होता। पर अब तुम्हारी सेहत बिल्कुल बरबाद हो चुकी है, और अब यह न चलेगा। दो एक रोज में मैं तुमको लगभग एक हज़ार रूबल भेज सकूंगा। मैं यह तार द्वारा भेजूंगा। मैं चाहता हूं कि वह रकम तुम परिवार के लिए अच्छी ख़ुराक तथा अपनी सब ज़रूरतों पर ख़र्च करो। यह रकम केवल अच्छी ख़ुराक का प्रबन्ध करने के लिए भेज रहा हू। किसी को अपनी मदद के लिए रख लो। इधर-उधर जाने से काम बढ़ेगा ही। प्यारी अम्मी, मैं जैसे कहता हूं वैसे ही करो। हम लोग जल्दी ही, कुछ एक दिन मे, तुम्हारे पास पहुंच जायेंगे। एक मोटर और एक पियानो जल्दी ही नये घर पर भेज दिये जायेगे। जो किताबो के बक्से मैंने भेजे है, उन्हें खोलना नही। उन्हे ज्यों का त्यों ले जाना ज्यादा आसान रहेगा। उसके बाद जब मैं वहा पहुंच जाऊंगा, तो हम अपनी लायब्रेरी ठीक कर लेंगे। मुख्य बात तो यह है कि तुम अपना ख़्याल रखो। कोई भी चीज इतनी ज़रूरी नही जितनी कि तुम्हारी सेहत।

और अम्मी, तुम चिकित्सालय के बारे में क्या सोचती हो? क्या तुम्हारे लिए वहां कुछ देर रहना सबसे उपयुक्त बात न होगी? यदि तुम्हे मजूर हो तो मुझे तार दे दो, मैं फौरन इसका प्रबन्ध करने की कोशिश करूंगा। इसपर विचार करके मुझे फ़ौरन जवाब देना। जो तुम कहोगी, मै वही करूंगा। हां, और यह भी लिखो कि मैं जब आऊं तो तुम्हारे लिए क्या लाऊं। मेरी प्यारी प्यारी मा, यह ज़रूर लिखना।

मेरी प्यारी, अथक परिश्रम करनेवाली मां को हृदय से लगाकर, मेरा सप्रेम अभिवादन।

तुम्हारा
कोल्या।

एक पाठिका, म० पा० येगोरोवा को

सोची, १६ जून, १९३६

प्रिय मरीया पाव्लोवना,

आपका पत्र मिला। मेरे लिए जवाब मे कुछ भी लिखना कठिन है। कभी कभी ऐसा भी होता है जब सान्त्वना के सब शब्द मनुष्य का दुःख-दर्द

कम करने में असफल रह जाते हैं। और यह अवसर तब होता है जब दर्द सीधा दिल के घाव से उठता हो, और घाव किसी अपने सबसे प्रिय व्यक्ति द्वारा पहुंचाया गया हो। मैं आपको सान्त्वना के औपचारिक शब्द नहीं लिख सकता। मैं केवल इतना भर कह सकता हूं: जीवन में मुझे भी कपट और विश्वासघात का कड़वा अनुभव हो चुका है। पर एक चीज़ ने, केवल एक ही चीज़ ने मेरी रक्षा की है: मेरे सामने सदैव जीवन का एक लक्ष्य रहा है, और इसी में जीने की सार्थकता तथा प्रयोजन मैंने माना है और वह है समाजवाद को स्थापित करने का सतत प्रयत्न एवं संघर्ष। इससे बढ़कर किसी वस्तु का मुझे मोह नहीं है। परन्तु यदि मनुष्य को अपने निजी धन्धे ही बड़े नज़र आने लगें, और सार्वजनिक जीवन उसकी चेतना में बहुत छोटा स्थान रखता हो—तो उसके निजी जीवन को लगी एक भी चोट विपत्ति के समान हो उठती है। फिर उसके मन में प्रश्न उठता है: जीने का लाभ ही क्या है? किसके लिए जिऊं? एक सैनिक के सामने यह प्रश्न कभी उपस्थित नहीं होता। एक सैनिक के दिल को भी चोट पहुंचेगी, जब वे लोग उसे धोखा दे जाय जिन्हे वह प्यार करता है। पर जो चीज़ सदा उसके साथ रहती है वह उन सब चीज़ों से महत्तर और श्रेष्ठतर होती है जिन्हे वह खो बैठता है।

देखो तो, हमारा जीवन कितना सुन्दर हो उठा है। इस भूमि को फिर से नया और सम्पन्न बनाने का संघर्ष कितना आकर्षक है! —संघर्ष जिससे नये मानव का जन्म होगा! इसे अपना जीवन सौंप दो, आपके जीवन मे फिर से सुख का सूर्य प्रकाशमान होगा।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

ग्रि० इ० तथा दो० प्यो० पेत्रोव्स्की को

सोची, १ जुलाई, १९३६

प्रिय ग्रिगोरी इवानोविच तथा दोमिनीका प्योदोरोवना,

मैं पत्र नही लिख पाया, क्षमा करना। इसका एकमात्र कारण यही था कि मैं तुम्हें तंग नही करना चाहता था। उस आदमी से बढ़कर बुरा कोई नही जो दूसरों के आराम में ख़लल डालता है...

मैं दिन का सारा वक़्त खुले छज्जे पर व्यतीत करता हूं। सारा

वक़्त समुद्र की ओर से स्वच्छ हवा बहती रहती है, स्निग्ध, सहलाती हुई। मैं खूब लम्बे लम्बे सांस लेता हूं फिर भी मेरी तृप्ति नहीं होती। यहां, इस नये घर में रहने मे बड़ा आनन्द है। यहां एक बुलबुल भी है, जो प्रातः समय गाती है। मेरी खिड़की के निकट एक देवदार की शाखा पर बैठकर इतना सुन्दर गाती है कि मैं उसे सुनने का मोह संवरण नहीं कर सकता। हां, वह सुबह जरा जल्दी ही आ पहुंचती है, पांच बजे—जब मुझे सोये होना चाहिए।

मैं काम तो कर रहा हूं, परन्तु बहुत मेहनत नहीं कर रहा। तुम्हारी नसीहत पर अमल कर रहा हूं। सच तो यह है, कि अब मुझमें परिश्रम करने की शक्ति ही नही रही। महीने भर में, ख़्याल है, 'तूफ़ान के जाये' का पहला भाग समाप्त कर पाऊंगा।

पाण्डुलिपि तुम्हें भेज दूंगा। यदि तुम्हारे पास समय हो तो इसे पढ़ना और अपने विचार लिखना।

और बेशक कड़ी आलोचना करना।

मेरा दिल बहुत उदास है। गोर्की की मृत्यु से मुझे विशेष सदमा पहुंचा है। उसने मेरी नीद और आराम छीन लिया है। केवल उनकी मृत्यु ने हमें यह भास कराया है कि वह हमें कितने प्रिय थे, और उनके चले जाने से हमें कितनी बड़ी हानि हुई है। उनके बिना हम अनाथ हो गये हैं। इस समय मेरी सब चिन्ताएं उस उत्तरदायित्व पर केन्द्रित हैं जो हम, युवा लेखकों पर आ पड़ा है जो अभी अभी साहित्य-क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। मेरा दिल बहुत भारी हो रहा है। दिल पर से अवसाद की छाया हटाये नहीं हटती। परसों लाहूती* ने मुझे कहा कि जब अप्रैल महीने के अन्त में वह गोर्की के पास ठहरे तो उन्होंने गोर्की को 'अग्नि-दीक्षा' पर एक लेख लिखते देखा। मैं नही जानता कि गोर्की के पुस्तक के बारे में क्या विचार थे। यह लेख उनकी साहित्यिक देन का एक हिस्सा रहेगा, जो मुझे अत्यन्त प्रिय है, और जिसकी अपने काम मे मुझे अत्यन्त आवश्यकता है।

कितनी भी कड़ी आलोचना उस महान शिक्षक ने मेरी पुस्तक की क्यों न की हो, उनका लेख मुझे सबसे प्रिय है, वह मेरे विकास में, मेरे सुधार के लिए सबसे अधिक प्रेरक होगा।

---

*अबुल कासिम लाहूती—सोवियत ताजिक कवि।—सं०

हम सब – मैं और मेरा सारा परिवार, आपके आने की राह देखेंगे। दोस्तो, जल्दी आओ।

सप्रेम अभिवादन।

सादर,

नि० ओस्त्रोव्स्की।

पत्नी को

सोची, ६ अगस्त, १९३६

प्रिय राया,

इस छोटे-से पत्र के लिए माफ़ करना, प्यारी राया, और यदि मैं अगले कुछ दिन, शायद १८ तारीख़ तक, ख़त न लिख पाऊं तो चिन्ता नही करना।

आजकल काम जोरों पर है। किताब के आख़िरी पन्ने लिख रहा हूं। और सारी पुस्तक का सम्पादन भी कर रहा हूं। अ० पे०* तथा बाकी सब लोग दो पालियों में काम कर रहे हैं। घर टाइप करनेवालों से भरा रहता है। मैं, सदा की तरह, उनके पीछे पड़ा रहता हूं, और मेरा ख़्याल है वे लोग बड़ी बेताबी से उस दिन का इन्तजार कर रहे हैं जब यह जनून ख़त्म होगा।

और सबसे बढ़कर यह कि मैंने उड़ती उड़ती ख़बर सुनी है कि पार्टी की नगर समिति शीघ्र ही मुझे आराम करने का आदेश देनेवाली है। इसलिए मैं उस आदेश के आने से पहले ही जल्दी जल्दी किताब ख़त्म करने में लगा हुआ हूं क्योंकि आज्ञा भंग करने का मेरा कोई अधिकार नही...

मैं मन ही मन तुमसे हाथ मिला रहा हूं।

मुझे जल्दी जल्दी चिट्ठी लिखा करो, और चिट्ठियां लम्बी होनी चाहिए और उनमें सब कुछ लिखा होना चाहिए।

सप्रेम

निकोलाई।

---

*अ० पे० लाजरेवा।–सं०

व्ला० पे० स्ताव्स्की* को

सोची, १७ अगस्त, १९३६

प्रिय साथी व्लादीमिर,

इस ख़त के साथ ही, हवाई डाक द्वारा मैं तुम्हें 'तूफ़ान के जाये' की पाण्डुलिपि भेज रहा हूं। मेरी एक ही प्रार्थना है—तुम इसे जितनी जल्दी हो सके पढ़ जाओ, और बाक़ी साथी भी पढ़ लें, और अपनी स्पष्ट और निष्पक्ष राय लिखो। तुम्हारे पत्र की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करूंगा।

तुम्हारा ख़त मिला। अक्तूबर के अन्त तक मास्को पहुंच जाऊंगा। सबको सस्नेह अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

तार, २१ अगस्त, १९३६

मिख़ाईल शोलोख़ोव को

वेशेन्स्काया बस्ती

आपके मैत्रीपूर्ण पत्र मिले। आज मैंने पुस्तक समाप्त की है। जब कुछ आराम मिलेगा तो पत्र लिखूंगा। हम जल्दी मिलेंगे। साथी लीदा व साथी मरीया को सस्नेह अभिवादन।

आपका

निकोलाई।

तार, २५ अगस्त, १९३६

रा० पी० ओस्त्रोव्स्काया को

स्वेर्दलोव विश्वविद्यालय से प्रवेश-परीक्षा पास करने पर बधाई हो। तुम्हारे लिए यह बहुत बढ़िया बात हुई है। २३ अगस्त को एक साथी के हाथ तुम्हें पाण्डुलिपि भेजी है। इसके पहुंचने की ख़बर देना।

निकोलाई।

---

*व्लादीमिर पेत्रोविच स्ताव्स्की (१९००–१९४३)—एक सोवियत लेखक।—सं०

मिख़ाईल शोलोख़ोव को

सोची, २८ अगस्त, १६३६

प्रिय कामरेड मिशा,

मेरा पहला प्रश्न यह है–तुम सपरिवार सोची कब आओगे? गरमी का मौसम ढलने लगा है, और पतझड़ के उदास दिन, बिन बुलाये, हमपर टूट पड़े हैं, और हर चीज़ को ठण्डा और तर बनाये जा रहे हैं। पर इस बुढ़िया पतझड़ को निकाल भगाया जायेगा, और गरमी का मौसम कम से कम महीना भर तो और टिका रहेगा। पर तुम इस इन्तजार मे घर पर ही न बैठे रहना। जितनी जल्दी हो सके, वहां से चल पड़ो।

याद रहे मिशा, मेरे जीवन का कोई भरोसा नही, और यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ हाथ मिला पाऊं तो अभी चले आओ। अगले साल तक इसे मत स्थगित करो।

मैं सचमुच बड़ा ढीठ हूं, एक सच्चे उऋइनी की तरह, और मैं अन्त तक डटा रहूंगा। परन्तु फिर भी–बहुत भरोसा मत रखो। मै समय पर तुम्हें चेतावनी दे रहा हूं, ताकि तुम बाद में न कह सको कि "देखो, वह निकोलाई, कैसा धोखा दे गया!"

प्रारम्भिक बातें काफ़ी कह लीं...

मैं तुम्हें 'तूफान के जाये' की पाण्डुलिपि भेज सकता हूं, परन्तु एक शर्त पर, कि तुम इसे शुरू से आख़िर तक पढ़कर अपने विचार लिखो। और सच सच लिखो। यदि तुम्हें पसन्द नहीं आया तो बुरा भला कहो। "न कड़वा, न मीठा" कुछ ऐसी बात न हो। "निरा कीचड़ है" जैसा कि सन् बीस के दिनों में लोग कहा करते थे। हां, मिशा, मैं सचमुच ऐसे साथी की तलाश में हूं जो साफ साफ मेरे दोष मुझे बताये। हमारी बिरादरी-वालों को–लेखकों को–दिल की बात कहने का अभ्यास नहीं रहा। और मित्र–मित्र लोग किसी का दिल नही दुःखाना चाहते। यह बहुत बुरा है। प्रशंसा मनुष्य को बिगाड़ती है। दृढ़-चरित्र पुरुष भी, यदि उन्हें हद से ज्यादा प्रशंसा मिले तो पथभ्रष्ट हो जायेंगे।

सच्चे मित्रों को सदा सच कहना चाहिए, चाहे वह कितना ही कड़वा क्यों न हो। और उन्हें त्रुटियों के बारे में अधिक और गुणों के बारे मे कम बतलाना चाहिए। जो कुछ अच्छा लिखा गया है, उसकी लोग निन्दा नही करेंगे।

तो, मिशा, तुम उस पुस्तक के साथ यथोचित व्यवहार करो, यह मत भूलो मिशा, कि मेरा धन्धा भट्टी में कोयला झोंकना है। पर–साहित्य के क्षेत्र मे यह भी ठीक तरह नहीं कर सका हूं। इस धन्धे के लिए प्रतिभा की जरूरत है। और जैसा कि चेक कहावत है "जो इनसान को ऊपर से नही मिला, उसे वह दूकानों पर से ख़रीद नही सकता"।

तो यह बात है, मेरे वेशेन्स्काया में रहनेवाले भालू-मित्र!

और, क्या तुम मुझे वह ढंग नही बतलाओगे जिससे मैं तुम्हें वेशेन्स्काया की कन्दरा में से बाहिर खीचकर ला सकूं? मैंने देख लिया है कि बिना साथी मरीया और लीदा के तुम नही पसीजोगे...

मैं २५ अक्तूबर को मास्को जा रहा हूं, और सारा सर्दी का मौसम वही रहूंगा।

तुम अपनी 'अवस्था के बोझ' को भूल जाओ, मिशेंका, और सीधे चले आओ। और यदि तुम्हारा कोई विचार आने का न हो, तो फिर लिख दो।

सस्नेह अभिवादन। साथी मरीया तथा लीदा को नमस्कार और छोटी बच्ची को बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा
नि० ओस्त्रोव्स्की।

तार, २६ अगस्त, १६३६

अलेक्सेई स्तखानोव को

तुम्हारा प्रेम भरा तार मिला। उसने अभिभूत कर दिया। मेरी भ्रातृभावपूर्ण शुभाकांक्षाएं स्वीकार हों। कल्पना में तुम्हारे पौरुष भरे, श्रम-कठोर हाथों से हाथ मिला रहा हूं।

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

'केन्द्रीय-इर्मीनो' समाचारपत्र को*

'केन्द्रीय-इर्मीनो' खान के साहसी श्रमिकों के नाम

सोची, ३० अगस्त, १९३६

मेरी यही इच्छा है कि आप मेरी हार्दिक भावनाओं को, आपके प्रति मेरे भ्रातृभावपूर्ण अभिवादन को, महसूस कर पायें।

अतीव श्रद्धा से

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

आ० अ० करावायेवा को

सोची, १ सितम्बर, १९३६

प्रातः नमस्कार, आन्ना अलेक्सान्द्रोवना,

कल मैंने 'तूफ़ान के जाये' का छठा अध्याय पत्रिका को डाक द्वारा भेज दिया है। बहुत लम्बा अध्याय है—पूरे १२४ टाइप किये हुए पन्ने हैं। लगभग छः फ़र्मे बनेंगे।

यदि आप उचित समझें तो इसे छापें। मैं इसके प्रकाशन के लिए कोई आग्रह नहीं कर रहा हूं—हरगिज़ नहीं। यह केवल इसलिए कि मैंने पहला भाग समाप्त कर दिया है, और उसका अब वह हिस्सा भेज रहा हूं जो पत्रिका में पहले नहीं छप पाया, ताकि आप जैसा उचित समझें कर सकें।

मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं। और मुझे आदेश हुआ है कि मैं छः सप्ताह के लिए बिल्कुल आराम करूं। यह पत्र कुछ फीका-सा है। क्षमा करना।

कल 'अग्नि-दीक्षा' के जापानी संस्करण की प्रति मिली। इसे तोक्यो से 'विज्ञान' प्रकाशन गृह ने निकाला है। सारी पुस्तक चित्रलिपि में है, एक शब्द भी पल्ले नहीं पड़ता।

'अग्नि-दीक्षा' अब निम्नलिखित देशों में छप रही है: इंगलैण्ड, फ्रांस (प्रकाशक—'सोसिआल इण्टेरनासिओनाल'), हालैण्ड, चेकोस्लोवाकिया और जापान। न्यूयार्क में 'अग्नि-दीक्षा' एक दैनिक पत्र में धारावाहिक रूप में छप रही है।

---

*स्तख़ानोवाइट आन्दोलन की वर्षगांठ पर भेजी गयी शुभकामनाएं।—सं०

मेरा इरादा २५ अक्तूबर को मास्को जाने का है। दूसरे भाग पर काम फौरन शुरू कर दूंगा। जिस सामग्री की मुझे जरूरत है, वह मैंने पहले ही इकट्ठी कर ली है। बस, केवल मेरा स्वास्थ्य धोखा न दे जाय–धिक्कार है इसे!

जैसा कि आपको शायद मालूम होगा, मैं दो महीने हुए मरते मरते बचा था। पित्ताशय में से पथरी काटकर निकल आयी जिससे नाड़ी फट गयी और शरीर में जहर फैल गया। सब डाक्टर एक स्वर में गा उठे–"बस, अब नहीं बचेगा।"

पर उनके अनुमान फिर ग़लत निकले। मैं फिर चिकित्सा के सभी सिद्धान्तों को भंग करता हुआ घिसटता हुआ किसी तरह बाहिर निकल आया। पर समझिये कि कोई भी किसी वक़्त मर सकता है...

मैंने 'तूफ़ान के जाये' की पाण्डुलिपि कई एक विशिष्ट साथियों को, उनकी राय जानने के लिए, भेजी है। यदि उन्होंने कहा कि पुस्तक छापने योग्य है, तो ठीक, वरना मैं इसे लिखना छोड़ दूंगा। मेरी कोई इच्छा एक शुष्क, रुचिहीन किताब लिखने की नहीं।

हमारे सभी साथियों को सस्नेह अभिवादन।

नि० ओस्त्रोव्स्की।

पत्नी को

सोची, १४ सितम्बर, १९३६

प्राणप्यारी राया,

तुम्हारे दो पत्र एक साथ मिले, उनमें से एक के साथ पुस्तकों की तालिका भी मिली।

यहां की कोई विशेष ख़बर नहीं। कल हम तुम्हारे लिए डाक द्वारा दो बक्से किताबों के भेजेंगे।

हमारे साहसी वीर हवाबाज* मिलने के लिए आये। अब यहां सर्दी पड़ने लगी है, और मैं अन्दर ही रहता हूं। मेरा स्वास्थ्य सन्तोषजनक है। परिवार के सभी लोग बीमार है, विशेषकर मां। लेव आस्नाया पोल्याना में बीमार पड़ गया और बड़ी बुरी हालत में उसे यहां लाया गया। वह

*विख्यात सोवियत हवाबाज़ च्कालोव, बेल्याकोव तथा बाइदुकोव।–सं०

विस्तर में है। फ़ेदेनेव और ब्रोनिस्लावा मर्ख्लेव्स्काया यहां सोची में इलाज के लिए आये हुए हैं।

मैं अपना समय अपने साहित्यिक मामलों को व्यवस्थित करने तथा पढने और हर प्रकार के पत्र लिखने मे व्यतीत कर रहा हूं।

मेरी बड़ी ख़्वाहिश है कि तुम संगीत सीखना शुरू कर दो। एक शिक्षक ढूंढ़ लो, और बस शुरू कर दो।

जैसी तुम स्वभाव से उद्यमी और प्रसन्नचित्त हो, वैसी ही बनी रहना। और ख़ूब पढ़ना। फ़िज़ूल छोटी छोटी बातों के बारे में न सोचा करो। ज़रूरत इस बात की है कि मुख्य उद्देश्य सदा सामने रहे। बाक़ी सब चीज़ें गौण हैं।

मुझे यह जानकर बड़ी ख़ुशी हुई कि तुमने इतने सालों के बाद, फिर से बाक़ायदा पढ़ाई शुरू कर दी है। पहले सब नौसिखियों के तरीक़े थकानेवाले ही थे।

मेरी शुभकामनाएं।

यदि कोई गड़बड़ न हुई तो हम २५ अक्तूबर को एक नयी उत्तरी मुहिम पर—अर्थात् मास्को, चल पड़ेंगे।

निकोलाई।

पुनश्च:—मुझे लिखो कि दिन में किस वक़्त तुम्हें टेलीफ़ोन करना ठीक होगा।

तार, ११ अक्तूबर, १६३६

अलेक्सान्द्र फ़देयेव को

सोवियत लेखक संघ,

५२, वोरोव्स्की स्ट्रीट, मास्को

प्रिय कामरेड अलेक्सान्द्र, स्ताव्स्की से 'तूफ़ान के जाये' के पहले भाग की पाण्डुलिपि मांग लेना। इसे पढ़ डालो। मैं २४ अक्तूबर को मास्को पहुंच रहा हूं। हमें ज़रूर इकट्ठे बैठकर दोस्ताना ढंग से उपन्यास की त्रुटियों पर विचार करना होगा।

सप्रेम अभिवादन,

तुम्हारा

निकोलाई

तार, १४ अक्तूबर, १९३६

स्ताव्स्की तथा लाहूती को

सोवियत लेखक संघ,
५२, वोरोव्स्की स्ट्रीट, मास्को

२४ अक्तूबर को मास्को पहुंचने का विचार है। सानुरोध प्रार्थना है कि 'तूफान के जाये' पर बहस सम्मिलित रूप में की जाय जिसमें लेखक सघ का अध्यक्ष-मण्डल, 'प्राव्दा', 'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' तथा युवा लीग की केन्द्रीय समिति शामिल हों। यह बैठक मेरे मास्को पहुंचने के थोड़े ही दिन बाद मेरे घर पर करने का प्रबन्ध कर दें।

कम्युनिस्ट अभिवादन।

तुम्हारा
निकोलाई ओस्त्रोव्स्की।

तार, १४ अक्तूबर, १९३६

करावायेवा तथा कोलोसोव को

'मोलोदाया ग्वार्दिया' पत्रिका,
नोवाया प्लोश्चद, मास्को

प्रिय साथियो, कृपया 'तूफ़ान के जाये' पर सोवियत लेखक संघ के अध्यक्ष-मण्डल की बैठक के लिए तैयारी शुरू कर दें, जो मेरे घर पर मास्को में होनी निश्चित हुई है। मेरा इरादा २४ अक्तूबर को मास्को पहुंचने का है।

तुम्हारा
निकोलाई।

मां को

मास्को, १४ दिसम्बर, १९३६

प्राणप्यारी माताजी,

आज मैंने 'तूफान के जाये' के पहले भाग पर काफ़ी काम समाप्त कर दिया है। इस तरह मैंने अपना वचन पूरा कर दिया है जो लीग की

केन्द्रीय समिति को दिया था कि मैं १५ दिसम्बर तक किताब ख़त्म कर दूंगा।

पिछले सारे महीने में हर रोज़ 'तीन पाली' काम किया; अपने साथ काम करनेवालों को बुरी तरह थका मारा। सुबह से लेकर गहरी रात गये तक उनसे काम लेता रहा, और बीच में कोई छुट्टी तक नहीं दी। बेचारी लड़कियां! न मालूम वे मेरे बारे में क्या सोचती होंगी। मैंने सचमुच उनपर बहुत जुल्म किया है।

पर अब यह और नहीं होगा। मैं बयान नहीं कर सकता कि कितना थक गया हूं, पर किताब ख़त्म हो गयी है। और यह आज से ३ हफ़्ते बाद तक छपकर निकल आयेगी—डेढ़ लाख प्रतियां होंगी और काग़ज़ की साधारण जिल्द होगी। बाद में बहुत-से प्रकाशन गृह इसे छापेंगे और संख्या लगभग ५ लाख होगी।

मेरा ख़्याल है तुमने आन्द्रे जीड के विश्वासघात के बारे में पढ़ा होगा। कैसे उसने हमारे दिलों को बहकाया! किसे यह ख़्याल आ सकता था कि उसका व्यवहार इतना नीच और खोटा निकलेगा? जिस तरह का व्यवहार उसने किया है, उसके लिए बुढ़ापे में वह लज्जित हो तब ही अच्छा होगा। उसने मुझे और तुम्हें ही केवल बेवक़ूफ़ नहीं बनाया, उसने सारे देश की जनता को बेवक़ूफ़ बनाया है। और अब उसकी किताब जिसका नाम उसने 'रूस से वापसी' दे रखा है समाजवाद तथा मजदूर वर्ग के दुश्मनों के हाथों में हथियार का काम देगी। मेरे बारे में निजी तौर पर उसने कुछ 'अच्छे' शब्द कहे हैं। यदि मैं यूरोप में होता तो मुझे 'सन्त' समझा जाता इत्यादि, इसी तरह की बातें लिखी हैं।

पर उसका ज़िक्र छोड़ो। उसके विश्वासघात से मुझे बहुत बड़ा सदमा पहुंचा है, क्योंकि जब वह यहां था तो मैं सच्चे हृदय से उसकी बातों पर विश्वास करता रहा। और उसके आंसुओं पर और उसके उत्साह पर जो वह हमारी सब सफलताओं तथा साधनाओं के प्रति प्रकट करता रहा।

अब आगे एक महीना आराम ही आराम होगा। मैं बहुत कम काम करूंगा—यदि मुझसे यह निष्क्रियता बरदाश्त हो सकी तो। इस बात में मां, तुम और मैं बहुत मिलते हैं—क्यों, नहीं? पर तो भी मैं आराम करूंगा। मैं पढ़ सकता हूं, संगीत सुन सकता हूं, और कुछ देर सो सकता हूं। छः घण्टे काफी नहीं जान पड़ते।

क्या तुमने हमारे नेता का भाषण सुना था जो उन्होंने सोवियतों की आठवीं कांग्रेस पर दिया? क्या हमारा रेडियो ठीक काम कर रहा है?

मेरी प्यारी मा, मुझे क्षमा करना कि मैं पिछले कई हफ़्तों से ख़त नहीं लिख पाया। मुझे तुम कभी नहीं भूलतीं। अपना ध्यान रखना और सदा ख़ुश रहने का प्रयत्न करना। सरदी का मौसम जल्दी समाप्त हो जायेगा, और वसन्त आने पर मैं तुम्हारे पास फिर वापस पहुंच जाऊंगा। मैं दिल ही दिल में तुम्हारे हाथों को, उन परिश्रमी हाथों को सहला रहा हूं।

मेरा सप्रेम अभिवादन।

तुम्हारा

नि० ओस्त्रोव्स्की।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

शीघ्र ही छप रही हैं!

मास्को का प्रगति प्रकाशन बहुत शीघ्र ही हिन्दी में निम्न पुस्तकें प्रकाशित करनेवाला है—

म० गोर्की, 'बचपन'

'बचपन'—यह अपने बेटे को समर्पित गोर्की की तीन खण्डोंवाली आत्मकथा का पहला खण्ड है। अन्य दो खण्ड हैं—**'जनता के बीच'** और **'मेरे विश्वविद्यालय'**। इसमें बालक अल्योशा पेश्कोव ने निज्नी नोवगोरोद नगर में (जिसे बाद में गोर्की का नाम दिया गया) अपने नाना काशीरिन के घर में बीते हुए जीवन की कहानी कही है।

"बड़ा ही दबा-घुटा, अटपटा और ऐसा अजीब सा जीवन था यह, कि बयान से बाहर," गोर्की ने लिखा है। "एक ऐसी भयानक परी-कथा की भांति मुझे इसकी याद आती है, जो किसी दयालु और बहुत ही सच्चे व्यक्ति ने सुनायी हो। पाठक इसमें १९ वीं शताब्दी के रूस का "गतिशील दृश्यपटल" और वे चित्र देख सकेंगे जो बालक के मन पर अंकित होकर रह गये।

पुस्तक सचित्र है।

मो० सिमाश्को, 'मरुस्थल'

आधी सदी पहले तुर्कमेनिया के एक गांव में एक घटना घटी जो बुजुर्गों को आज भी याद है। स्थानीय ख़ान के बेटे ने एक चरवाहे की खूबसूरत बेटी, बीबीताज, से बलात्कार किया और लड़की ने लज्जावश अपने को जिन्दा जला डाला। क़बीले की परम्परा के अनुसार लड़की के भाई चारी को उसकी मौत का बदला लेना था। ख़ान के धनी रिश्तेदार दिन-रात उसकी खोज करते रहे ताकि चारी को प्रतिशोध लेने का अवसर न मिले। यदि क्रान्ति न होती, तो जाने चारी का क्या अन्त होता। किन्तु जीवन की नयी धारा उसे स्तेपी में ले गयी, जहां ज़ोरदार संघर्ष होनेवाला था।

सोवियत लेखक मो० सिमाश्को उमर ख़ैयाम और महान तुर्कमानी कवि मखतूमक़ुली के जीवन के सम्बन्ध में प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक हैं। 'मरुस्थल', यह उनकी एक सर्वश्रेष्ठ कहानी है।